Hornbill Classes

2026



Tribal Insights at your Finger tips

जनजातीय अध्ययन



MPPSC

MADHYA PRADESH

STATE FOREST SERVICE

2026

Module – 5

Congratulations

To all our successful candidates in

MPPSC STATE FOREST SERVICE



Shashank Jain

Comprehensive Forestry Course + CIGP



Jyoti Thakur

Comprehensive Forestry Course + CIGP



Shivam Gautam

Comprehensive Interview Guidance Programme



Nitin Patel

Comprehensive Forestry Course + CIGP



Ravi Kumar

Comprehensive Interview Guidance Programme + Test Series



Ankur Gupta

Comprehensive Forestry Course



Deependra Lodhi

Comprehensive Interview Guidance Programme



Kapil Chauhan

Comprehensive Forestry Course



Alok Kumar Jhariya

Comprehensive Forestry Course + CIGP



Tarun Chouhan

Comprehensive Interview Guidance Programme + Test Series



Raghvendra Thakur

Comprehensive Forestry Course + CIGP

11 Out of 12 Total Selections in

Assistant Conservator of Forest (ACF) – 2023

MPPSC

जनजातीय अध्ययन

STATE CIVIL / FOREST SERVICE

EDITION : 2026

+917223970423 **Hornbillclasses.com**

Gole ka mandir, Morar, Gwalior (MP) 474005

SYLLABUS

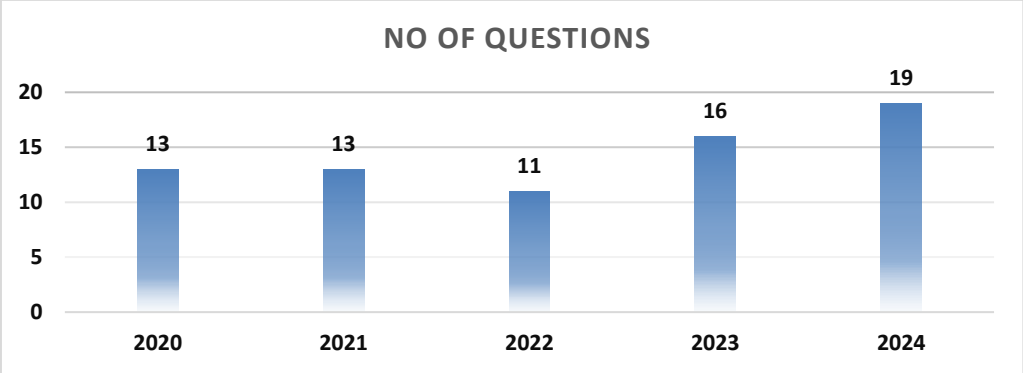
MPPSC **Civil / Forest** (Prelim) Examination	**[Unit – 2] मध्य प्रदेश का इतिहास, संस्कृति एवं साहित्य** • मध्यप्रदेश के प्रमुख जनजातीय व्यक्तित्व। **[Unit – 10] मध्य प्रदेश की जनजातियाँ – विरासत, लोक संस्कृति एवं लोक साहित्य** ◈ मध्यप्रदेश में जनजातियों का भौगोलिक विस्तार, जनजातियों से संबंधित संवैधानिक प्रावधान। ◈ मध्यप्रदेश की प्रमुख जनजातियाँ, विशेष पिछड़ी जनजातियाँ एवं घुमन्तू जातियाँ, जनजातियों के कल्याण के लिए योजनाएँ। ◈ मध्यप्रदेश की जनजातीय संस्कृति- परम्पराएँ, विशिष्ट कलाएँ, त्यौहार, उत्सव, भाषा, बोली एवं साहित्य। ◈ मध्यप्रदेश की जनजातियों का भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान एवं राज्य के प्रमुख जनजातीय व्यक्तित्व। ◈ मध्यप्रदेश में जनजातियों से संबंधित प्रमुख संस्थान, संग्रहालय, प्रकाशन। ◈ मध्यप्रदेश की लोक संस्कृति एवं लोक साहित्य।
MPPSC **One Day** Exams	**[Section – A/Unit – 1] मध्य प्रदेश का इतिहास** • मध्यप्रदेश का जनजातीय इतिहास एवं जनजातीय साहित्य **[Section – A/Unit – 4] मध्य प्रदेश की जनजातियाँ – विरासत, लोक संस्कृति एवं लोक साहित्य (म.प्र. के विशेष संदर्भ में)** ◈ मध्यप्रदेश में जनजातियों का भौगोलिक विस्तार, जनजातियों से संबंधित संवैधानिक प्रावधान। ◈ मध्यप्रदेश की प्रमुख जनजातियाँ, विशेष पिछड़ी जनजातियाँ एवं घुमन्तू जातियाँ, जनजातियों के कल्याण के लिए योजनाएँ। ◈ मध्यप्रदेश की जनजातीय संस्कृति : परम्परायें, विशिष्ट कलाएँ, त्यौहार, उत्सव, भाषा, बोली एवं साहित्य। ◈ मध्यप्रदेश की जनजातियों का भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान एवं राज्य के प्रमुख जनजातीय व्यक्तित्व। ◈ मध्यप्रदेश में जनजातियों से संबंधित प्रमुख संस्थान, संग्रहालय, प्रकाशन। ◈ मध्यप्रदेश की लोक संस्कृति एवं लोक साहित्य।
MPPSC **Forest Service** **(Main)** Examination	**[Unit – 1] मध्य प्रदेश का इतिहास, संस्कृति एवं साहित्य** • मध्यप्रदेश की प्रमुख जनजातियाँ एवं बोलियाँ। **[Unit – 5] मध्यप्रदेश की जनजातियां** ◈ मध्यप्रदेश की प्रमुख जनजाति एवं उनकी उपजातियाँ – भील, गोंड, बैगा आदि। ◈ मध्यप्रदेश की विशेष पिछड़ी जनजातियाँ – बैगा, भारिया, सहरिया। ◈ म.प्र. की जनजातियों की भाषा एवं बोलियों का सामान्य परिचय, क्षेत्र एवं विशेषताएँ। ◈ मध्यप्रदेश में जनजातियों से संबंधित प्रमुख संस्थान, म्यूजियम आदि। ◈ म.प्र. की जनजातियों के पर्व, त्योहार, उत्सव व धार्मिक आस्थाएँ. संस्कृति एवं परंपराएँ। ◈ जनजातियों के लिये शासन की कल्याणकारी योजनाएँ। ◈ वनों के रक्षण में जनजातियों की भूमिका।
MPPSC **Civil Service** **(Main)** Examination	**[Paper – 1 /Unit – 5]** मध्यप्रदेश के जनजातीय नायकों का संघर्ष एवं इतिहास में योगदान – राजा शंकरशाह, रघुनाथ शाह, रानी दुर्गावती, भीमाजी नायक, खाज्यानायक, टंट्या भील, गंजनसिंह कोरकू, बादल भोई, पेमा फाल्या। **[Paper –2 /Unit – 5]** मध्यप्रदेश में जनजातियों की स्थिति एवं सामाजिक संरचना, रीति-रिवाज। जनजातियों में विश्वास, विवाह, रिश्तेदारी, धार्मिक विश्वास, परंपराएँ, त्यौहार और उत्सव। **[Paper –3 /Unit – 5]** पर्यावरण संरक्षण में मध्यप्रदेश की जनजातियों की भूमिका (बैगा, सहरिया, भारिया, भील, गोंड इत्यादि।)

Module - 5

CONTENTS



SN	Chapter	Page No
1.	जनजातियां और उनका सांस्कृतिक वितरण	1 – 7
2.	जनजातियों से संबधित संवैधानिक उपबंध, परिषद, प्राधिकरण तथा आयोग	8 – 15
3.	जनजातीय संभाग, जिले, विकासखंड और जनगणना आंकडे	16 – 18
4.	गोंड जनजाति का इतिहास	19 – 20
5.	गोंड जनजाति	21 – 32
6.	बैगा जनजाति	33 – 41
7.	भारिया जनजाति	43 – 50
8.	कोरकू जनजाति	51 – 58
9.	भील जनजाति	59 – 71
10.	सहरिया जनजाति	72 – 78
11.	कोल जनजाति	79 – 82
12.	विमुक्त, घुमक्कड़ एवं अर्द्ध घुमक्कड़ जनजाति	83 – 87
13.	जनजाति वर्ग से संबंधित निगम/मण्डल, कला और प्रसिद्ध व्यक्ति कलाकार	88 – 98
14.	आदिवासी शोध केन्द्र, संग्रहालय एवं निगम	99 – 104
15.	जनजाति शिक्षा, उनके विकास के लिये संचालित कल्याणकारी योजनायें और पुरस्कार	105 – 118
16.	स्वतंत्रता संग्राम में जनजाति वर्ग की भूमिका	119 – 126
17.	मध्यप्रदेश से संबंधित अन्य जनजातियां और युवा गृह	127 – 136
18.	मध्यप्रदेश के लोकनृत्य एवं संगीत	137 – 157
19.	मध्यप्रदेश में संस्कृति की विभिन्न विधायें, साहित्य और साहित्यकार, संगीत और संगीतकार	158 – 169
20.	साहित्य, संगीत तथा कला क्षेत्र में स्थापित संस्थायें, समारोह और प्रमुख मेले	170 – 176
21.	मध्यप्रदेश के प्रमुख चित्रकार, लोकचित्र परंपरा	177 – 181



राज्य वन सेवा (मुख्य) परीक्षा वर्ष 2020, 2021, 2022, 2023, 2024 में पूछे गये प्रश्न की संख्या

Copyright © by Hornbill classes

All rights are reserved. No part of this document may be reproduced, stored, or transmitted in any form or by any electronic, photocopying, recording, or otherwise, without prior permission of Hornbill classes.

वैधानिक चेतावनी

यह पुस्तक व सामग्री आपके व्यक्तिगत उपयोग के लिये प्रदान की गई है और इसे आपके व्यक्तिगत Contact No. से Watermark किया गया है। इस पुस्तक को किसी अन्य व्यक्ति / संस्था / समूह के साथ साझा करना, फोटो कॉपी कराना आदि पूर्णत: वर्जित है, यदि आप इस प्रकार की किसी भी गतिविधि में सम्मिलित पाये जाते हैं, तो ऐसी स्थिति में आपका Registration समाप्त कर दिया जायेगा और आपके विरूद्ध उचित दण्डात्मक कार्यवाही की जायेगी।

CHAPTER

1

जनजातियां और उनका सांस्कृतिक वितरण

1.1 जनजाति किसे कहते है?

जनजाति **परिवारों** से मिलकर बने ऐसे **सामाजिक समूह** हैं, जो एक **निश्चित भौगोलिक क्षेत्र** में निवास करते है। प्रत्येक जनजाति का अपना एक विशेष **पहचान**, **नाम**, **क्षेत्रीय भाषा** या **बोली** होती है। जनजाति के सदस्य एक-दूसरे से एक **साझा संस्कृति, आर्थिक, धार्मिक** और **सामाजिक परंपराओं** द्वारा घनिष्ठता से जुड़े होते हैं। इनकी सामाजिक व्यवस्था में **विवाह, व्यवसाय और अन्य सामाजिक क्रियाओं से जुड़ी अपनी मान्यतायें** और नियम होते हैं।

सामान्य लक्षण

- यह प्राय **पर्वतीय** और **दुर्गम वन क्षेत्रों** में निवास करते हैं। उदाहरण के लिये, 'गोंड' शब्द की उत्पत्ति द्रविड़ भाषा के 'कोंड' शब्द से हुई है, जिसका शाब्दिक अर्थ है पर्वत या पहाड़ । और जो गोंड जनजाति के सदस्य पहाड़ों पर निवाश करते है, उन्हें '**कोयातुर**' कहा जाता है।
- यह एक स्पष्ट और **निश्चित भौगोलिक क्षेत्र** में रहते हैं। उदाहरण के लिये, मध्य प्रदेश की भारिया जनजाति छिंदवाड़ा ज़िले के पातालकोट में रहती है।
- किसी एक जनजाति के सदस्य **प्रायः एक ही भाषा या बोली** बोलते हैं। अधिकांश जनजातीय भाषाओं की अपनी कोई लिपि नहीं होती, जैसे कोरकू जनजाति की 'कोरू' भाषा और भील जनजाति की 'भीली' भाषा। हालाँकि, कुछ जनजातियों की अपनी विशेष लिपियाँ भी होती हैं, जैसे गोंड जनजाति की 'गोंडी लिपि' तथा संथाल जनजाति की 'चिकी लिपि'।
- एक जनजाति के सदस्यों के **उपनाम सामान्यतः एक जैसे** होते हैं।
- मान्यता है, कि यह **एक ही पूर्वज से उत्पन्न** हुये हैं, इसलिये प्रायः आपस में रक्त संबंधी होते है।
- समूह की अपनी विशेष **सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक पहचान** होती है। इनके नियम जनजातीय सभा द्वारा बनाये जाते हैं, जिसमें शांति, न्याय और दंड की व्यवस्था की जाती है। आम तौर पर जनजाति का मुखिया जनजातीय सभा के सहयोग से जनजाति का संचालन करता है, और उसके निर्णय अंतिम होते हैं।
- अधिकांश जनजातियाँ **अंतर्विवाह (Endogamy)** के सिद्धांत का पालन करती हैं। अर्थात इसके सदस्य अपनी जनजाति के अंदर ही विवाह संबंध बनाते हैं। अन्य जनजातियों या समूहों में विवाह करना सख़्त प्रतिबंधित होता है। (विवाह व व्यवसायों के संदर्भ में कुछ वर्जनाओं का पालन करते हैं।)
- इनके जीवन में **भूतों** तथा **आत्माओं की पूजा** का विशेष महत्व होता है।
- इनकी आजीविका मुख्यतः वनों पर निर्भर होती है। स्थानांतरित कृषि (Shifting Cultivation), शिकार और वन उत्पादों का संग्रह (Food Gathering) इनके जीवन का मुख्य हिस्सा होते हैं।
- अधिकांश जनजातियाँ **माँसाहारी** होती हैं।
- **मदिरा** (शराब) का इनके सामाजिक और धार्मिक जीवन में महत्वपूर्ण स्थान होता है।

1.2 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान और परंपराओं के लिये जानी जाती हैं। प्राचीन संस्कृत ग्रंथों में इन्हें "**वनवासी**" या "**अत्विका**" कहा गया है।

- मध्य प्रदेश में जनजातियों का पहला विस्तृत आधिकारिक विवरण सन् 1916 में **रसेल** और **हीरालाल** द्वारा लिखित "**दि ट्राइब्स एंड कास्ट्स ऑफ सेंट्रल प्रोविंसेज़**" में मिलता है।
- औपचारिक रूप से "अनुसूचित जनजाति" शब्द का उल्लेख पहली बार **भारत सरकार अधिनियम, 1935** में हुआ, जिसे बाद में भारतीय संविधान (1950) में सम्मिलित कर लिया गया।
- जनजातियों के हितों की सुरक्षा के लिये भारत सरकार ने सन् 1956 में "**शेड्यूल्ड ट्राइब्स लिस्ट्स मॉडिफिकेशन ऑर्डर**" जारी किया। इसमें जनजातियों को उनकी मूल जाति और उप-जातियों के आधार पर वर्गीकृत किया गया। पहले जहाँ कुल **550 जनजातियाँ** थीं, उनकी संख्या अब बढ़कर **705** हो गई हैं।

भारतीय इतिहास में 'अतविक राज्य' के नाम से किसे जाना जाता है? [SSC CHSL 2020 (Held on: 6 Aug 2021)]

(a) दक्षिण भारतीय साम्राज्य
(b) वन साम्राज्य
(c) मुगल साम्राज्य
(d) गणतंत्रात्मक राज्य

समुद्रगुप्त ने मध्य भारत में वन राज्यों (अतविका राज्य) के राजाओं को अपना सेवक बनाया।

- सन् 1956 में ही, मध्य प्रदेश में 46 समुदायों को सूचीबद्ध किया गया था। परंतु **8 जनवरी 2003 की अधिसूचना द्वारा कोर, मीना और पारधी जनजातियों को इस सूची से हटा दिया** गया। इस प्रकार वर्तमान में **मध्य प्रदेश में 43 अनुसूचित जनजातियाँ** निवास करती हैं।
- विश्व आदिवासी दिवस = 9 अगस्त (पहली बार 9 अगस्त 1995 को मनाया गया था)

जनजाति वर्ग से संबधित पुस्तके

पुस्तक	लेखक	परीक्षा
दि ट्राइब्स एण्ड कास्ट्स ऑफ सेंट्रल प्रोविंस आफ इंडिया Tribes and Castes of the Central Provinces of India	Russell & हीरा लाल	[MPPSC Civil/Forest (Pre) 2025]
पेपर्स रिलेटेड टू दि एबोरिजिनल ट्राइब्स ऑफ सेंट्रल प्रोविंस Papers relating to the Aboriginal Tribes of the Central Provinces	स्टीफेन हिस्लप (1886)	
सेन्सस ऑफ इंडिया (बैगा जनजाति पर)	रॉबर्ट्सन (1893)	
मारिया गोंड ऑफ बस्तर	ग्रिगसन (1949)	
कोरकू	बसंत निरगुणे	
भिम्मा	शेख गुलाब	
ट्राइबल इकॉनमी : एन इकानमिक स्टडी ऑफ बैगा	डॉ दयाशंकर नाग	
मुरिया और उनका घोटुल	वॉरियर एल्विन (1947)	[MP Vyapam 2017]
द बैगा	वॉरियर एल्विन (1939)	[MPPSC Animal Husb. & Veterinary Science 2021; MPPSC Civil/Forest (Pre) 2025]]
Tribes of India	ठक्कर बापा	

गोंड्स ऑफ दी सेंट्रल इंडियन हाईलैंड्स	डॉ. बेहराम मेहता	
द भील	*T.B. Nair*	[MPPSC Civil/Forest (Pre) 2025]
द सहरिया	*T.B. Nair*	

1.3 जनजातियों का सांस्कृतिक वितरण

- मध्य प्रदेश के **पश्चिमी क्षेत्र** कि प्रमुख **जनजाती तथा उसकी उप जनजातियों के नाम** लिखिये? [MPPSC Civil (Main) GS–II, 2021 | 3 M]
- मध्य प्रदेश कि **जनजातियों के वितरण** कि व्याख्या कीजिये? [MPPSC Civil (Main) GS–I, 2019 | 15 M]
- मध्य प्रदेश के **जनजातीय क्षेत्रों का उल्लेख** करते हुये उनकी **समस्याओं का वर्णन** कीजिये। [MPPSC Civil (Main) GS–I, 2018 | 15 M]
- मध्य भारत में जनजातियों के **भौगोलिक वितरण** का वर्णन कीजिये। [MPPSC Civil (Main) GS–I, 2017 | 6 M]

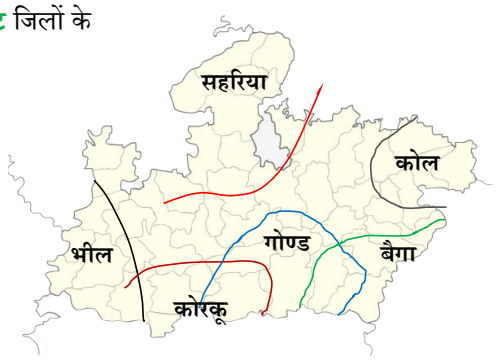
मध्यप्रदेश को **भौगोलिक परिवेश**, **वन संसाधन**, **सांस्कृतिक विविधता** और **ऐतिहासिक पृष्ठभूमि** में भिन्नता के आधार पर मध्यप्रदेश को **चार जनजातीय सांस्कृतिक प्रदेशों** में विभाजित किया गया है।

यह विभाजन मुख्य रूप से मध्यप्रदेश में जनजातीय जनसंख्या के असमान वितरण, और क्षेत्रीय संसाधनों के वितरण के कारण हुआ है।

1. पूर्वी जनजातीय सांस्कृतिक प्रदेश
2. मध्य जनजातीय सांस्कृतिक प्रदेश
3. पश्चिमी जनजातीय सांस्कृतिक प्रदेश
4. उत्तरी जनजातीय सांस्कृतिक प्रदेश

पूर्वी जनजातीय सांस्कृतिक प्रदेश

- **भौगोलिक क्षेत्र** : यह मुख्य रूप से **मंडला**, **डिंडोरी**, **उमरिया** और **बालाघाट** जिलों के कुछ हिस्सों (विशेषकर बैगा चक क्षेत्रों) में फैला हुआ है।
- **प्रमुख जनजातियाँ और उपजातियाँ** : इस क्षेत्र में **बैगा** (बिंझवार, भरोतिया, नरोतिया, रायमैना, कटमैना, कुण्डी), **कोल** और **गोंड** (ओझा, परधान, भाट, सोलहास, अगरिया) जनजातियाँ और उनकी उपजातियाँ प्रमुख रूप से निवास करती हैं। ये जनजातियाँ अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और परंपरागत जीवनशैली के लिये जानी जाती हैं।



- **विशेषतायें** : ◈ प्राचीन समय से **गोंडवाना** के रूप में विख्यात यह प्रदेश ऐतिहासिक रूप से गोंड राजाओं द्वारा शासित रहा, जिन्होंने यहां गढ़-मंडला जैसे प्रसिद्ध साम्राज्य स्थापित किये थे। ◈ यह क्षेत्र अत्यधिक सघन वनों और विशेष रूप से बाँस के जंगल से आच्छादित है, यहाँ बाँस के जंगल बैगा जनजाति की आजीविका का मुख्य श्रोत है। ◈ अन्य जनजातीय समूह जैसे गोंड कृषक हैं। ◈ प्रसिद्ध पुरातात्विक स्थल जैसे **रामनगर (मंडला), अमरकंटक (अनूपपुर)** ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहरों के लिये विख्यात हैं।
- **समस्यायें** : ◈ एनीमिया आदिवासी महिलाओं और बच्चों में एक आम समस्या है। ◈ खनन(जैसे कोयला, बॉक्साइट, मैंगनीज आदि), बांध परियोजनाओं (जैसे बरगी, नर्मदा परियोजनाएं आदि) के कारण बड़ी संख्या में जनजातीय समुदाय अपनी मूल भूमि से विस्थापित हुए हैं, जिससे इनकी सांस्कृतिक एवं सामाजिक संरचना प्रभावित हुई है।

मध्य जनजातीय सांस्कृतिक प्रदेश

- **भौगोलिक क्षेत्र** : नर्मदा घाटी के आसपास के जिलों में फैला क्षेत्र है। इनमें **सागर**, **रायसेन**, **मंडला**, **होशंगाबाद**, **सिवनी**, **बैतूल**, **छिंदवाड़ा** और **डिंडोरी** जिले शामिल हैं।
- **प्रमुख जनजातियाँ और उपजातियाँ** : इस क्षेत्र में **गोंड** और **कोरकू** जनजाति तथा कोरकू की उप-जनजातियाँ जैसे **रूमा**, **पोतडया**, **ढुलरिया**, **बोवई** या **बन्दोरिया बोन्डई** प्रमुख रूप से निवास करती हैं।

- **विशेषतायें :** ◈ यह क्षेत्र **मेकल** और **सतपुड़ा पर्वत** श्रृंखलाओं से घिरा हुआ है। ◈ गोंड जनजाति **नर्मदा नदी के दोनों ही किनारों पर विस्तृत** है, जो इस क्षेत्र की सांस्कृतिक और सामाजिक पहचान को दर्शाता है। ◈ इस क्षेत्र की अर्थव्यवस्था और जीवनशैली मुख्य रूप से कृषि पर आधारित है। स्थानीय लोग **खेती** और **प्राकृतिक संसाधनों** पर निर्भर हैं।
- **समस्यायें :** ◈ जीवनयापन के लिये **जल**, **जंगल**, **ज़मीन** पर निर्भरता होने के बावजूद इन संसाधनों तक पहुँच में कठिनाइयाँ बनी रहती हैं। ◈ स्थानीय भाषाओं और बोलियों को शिक्षा का माध्यम न बनाने से बच्चों के पढ़ाई में पिछड़ने की समस्या रही। ◈ कुपोषण और मातृ-शिशु मृत्यु दर की अधिकता भी इस क्षेत्र की गंभीर समस्या है।

पश्चिमी जनजातीय सांस्कृतिक प्रदेश

- **भौगोलिक क्षेत्र** : **धार**, **झाबुआ**, **खरगोन**, **खंडवा**, **बड़वानी** और **रतलाम** जिलों में फैला हुआ है।
- **प्रमुख जनजातियाँ** : इस क्षेत्र में भील जनजाति और उनकी उपजातियाँ (भिलाल, पटेलिया, बारेला, राठ) प्रमुख रूप से निवास करती हैं।
- **विशेषतायें :** ◈ यह क्षेत्र **मालवा पठार** और **विंध्याचल कगार** के पास स्थित है, जो इसे प्राकृतिक सुंदरता और भौगोलिक महत्व प्रदान करता है। ◈ इस क्षेत्र में आदिवासी संस्कृति का गहरा प्रभाव देखा जा सकता है, जो पिठोरा चित्रकला, दाबू, बाघ और बुटीक प्रिंट जैसी कलाओं में प्रकट होता है। ◈ **ताड़ी के वृक्षों** की बहुतायत के कारण भील जनजाति के **पारंपरिक पेय** के रूप में ताड़ी अत्यधिक लोकप्रिय है।
- **समस्यायें :** ◈ कृषि आधारित अर्थव्यवस्था होने के कारण यह क्षेत्र मुख्यतः वर्षा पर निर्भर है, जिससे सूखे एवं फसल विफलता का खतरा बना रहता है। ◈ बाल विवाह और शराबखोरी जैसी सामाजिक समस्यायें। ◈ गर्मियों में पेयजल की गंभीर कमी के कारण जल संकट एक प्रमुख चुनौती बनकर उभरता है।

उत्तरी जनजातीय सांस्कृतिक प्रदेश

- **भौगोलिक क्षेत्र** : **श्योपुर**, **भिंड**, **मुरैना**, **गुना**, **शिवपुरी** और **ग्वालियर** जिलों में फैला हुआ है।
- **प्रमुख जनजातियाँ और उपजातियाँ :** सहरिया जनजाति तथा उसकी उपजातियाँ (शबर, सौर) प्रमुख रूप से निवास करती हैं।
- **विशेषतायें :** ◈ यह क्षेत्र **कँटीले वनों** (**खैर के वृक्ष**) और **कम उपजाऊ** भूमि से घिरा हुआ है, जिसके कारण स्थानीय जनजाति मुख्य रूप से **जड़ी बूटी संग्रहण** तथा **कत्था** निकालने का कार्य करती है। ◈ सहरिया जनजाति का "**लंहगी नृत्य**" इस क्षेत्र की प्रमुख सांस्कृतिक पहचान में से एक है।
- **समस्यायें :** ◈ कुपोषण, अत्यधिक मदिरापान, और कृषि मज़दूरी पर अत्यधिक निर्भरता, जिसके कारण उन्हें ऋणग्रस्तता का सामना करना पड़ता है।

दुर्गम और सामान्य पहुँच से बाहर होने के कारण इन सांस्कृतिक क्षेत्रों की परंपरागत मान्यतायें और जीवनशैली आधुनिकीकरण के प्रभाव से अभी तक लगभग अछूती रही थी। हालांकि आज के दौर के ***Internet connectivity***, **पर्यावरणीय बदलाव**, **चावल के बदले में धर्म बदलना** और **अपनी ही सभ्यता/संस्कृति के प्रति हीन भावना** से बचाना मुश्किल होता जा रहा है।

1.4 अत्यंत महत्वपूर्ण तथ्य [PYQ's Summery]

- बाणभट्ट (7th Century ***Sanskrit scholar***) ने "कादंबरी" नामक ग्रंथ में शबर जनजाति का वर्णन किया है।
- बिट्रिश काल में जार्ज ग्रियर्सन जिन्होंने औपनिवेशिक काल के दौरान भारतीय भाषाओं और जनजातियों का व्यापक सर्वेक्षण किया, आदिवासियों के लिये "**पहाडी जनजाति**" शब्द उपयोग किया।
- **महात्मा गांधी** ने इन्हे **गिरिजन** तथा **गोबिन्द सदाशिव घुरिये** ने इन्हे **पिछडे हिन्दू** कहा है।

- जनजाति समुदाय के लिये **प्रथम बार आदिवासी***** (मूल निवासी) **शब्द का प्रयोग ठक्कर बापा** (अमृतलाल ठक्कर) ने किया। उन्होंने आदिवासी कल्याण के लिये व्यापक रूप से काम किया। इनके अहम योगदान के कारण उन्हें अक्सर जनजातियों का **पितृ पुरुष***** कहा जाता है।
- प्रोफेसर **श्यामचरण दुबे***** एवं इनकी पत्नी **लीला दुबे** ने तत्कालीन मध्य प्रदेश के छत्तीसगढ़ वाले क्षेत्र में गोंड जनजाति का सामाजिक एवं संस्कृतिक अध्ययन किया है।
- मामा बालेश्वर दयाल को **भीलों का गांधी** कहा जाता है।
- महेश शर्मा को **झाबुआ का गांधी** कहा जाता है। [MPPSC Forest (Interview) 2023]

वेरियर एल्विन : परिचय

वेरियर एल्विन भारत में ईसाई धर्म के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से एक पादरी के रूप में आये थे। उनके पिता ब्रिटिश ऐंग्लिकन चर्च के बिशप थे। धर्मांतरण करने के लिये यह आवश्यक है कि जिन लोगों का धर्मांतरण करना है, सबसे पहले उनके धर्म, मान्यताओं, रीति-रिवाजों और उनके सोचने के तरीके को समझा जाये और फिर उसका एक हथियार की तरह उपयोग करके उनका धर्मांतरण किया जा सके।

भारत आने के बाद एल्विन ने जनजातीय संस्कृति का गहराई से अध्ययन करने के उद्देश्य से जनजातीय क्षेत्रों का भ्रमण किया। उनके साथ घुलने-मिलने में आसानी हो, इसके लिये उन्होंने एक अस्पताल और एक स्कूल भी खोला। लेकिन फिर भी आदिवासी समुदाय अपने धर्म, मान्यताओं और विश्वासों को लेकर उनके जैसे बाहरी व्यक्ति, विशेषकर *British* नागरिक से खुलकर बात करने से हिचकते रहे।



वेरियर एल्विन

काफी समय तक प्रयास करने के बाद भी जब उन्हें सफलता नहीं मिली, तो उन्होंने एक पुराना और चिर-परिचित तरीका अपनाया—धर्मांतरण के लिये विवाह करने की नीति। उन्होंने एक 13 वर्षीय आदिवासी कन्या **कोशी बाई बैगा** (मूल नाम **कौशल्या**) से विवाह कर लिया, जो उन्हीं के द्वारा चलाये जा रहे स्कूल में पढ़ती थी। उस समय एल्विन लगभग 40 वर्ष के थे। विवाह के बाद, आदिवासी समुदाय से उनकी दूरी थोड़ी कम हुई, तो अब उनके धर्म, मान्यताओं, रीति रिवाजों पर खुलकर बातचीत हो सकती थी।

एल्विन ने पहले उनकी मान्यताओं की प्रशंसा की और स्वयं को जनजातीय जीवनशैली में धर्मांतरित बताया। उन्होंने दावा किया कि वे सदैव आदिवासी हितों की रक्षा करेंगे, जैसा कि उन्होंने अपनी आत्मकथा **"दि आइडियल वर्ल्ड ऑफ वेरियर एल्विन"** में लिखा है।



कोशीबाई बैगा

धीरे-धीरे अब उन्होंने उनकी धार्मिक मान्यताओं में कुछ तत्व अपने विचार भी जोड़ने शुरू कर दिया और फिर कुछ समय बाद उन्हीं परंपराओं को अंधविश्वाश और हास्यास्पद बताकर उनके विश्वासों पर कुठारघात करना प्रारंभ कर दिया। ऐसा ही उन्होंने **घोंटूल प्रथा** के मामले में किया। प्रारंभ में उन्होंने इसे समझा, उसमें कुछ बदलाव करवाये और बाद में इसे केवल यौन संबंध बनाने की जगह के रूप में प्रचारित कर बदनाम करने का प्रयास किया। जबकि यह प्रथा आदिवासियों की शिक्षा, परंपरा और सामाजिक व्यवस्था को बनाये रखने की रीढ़ थी। यदि कोई इसका विरोध करता, तो प्रशासन उसे दंडित कर देता, इसलिये किसी में इसका विरोध करने का ज्यादा साहस नहीं हुआ।

धर्मांतरण के उनके प्रयासों में सबसे बड़ी समस्या हिन्दू साधु-सन्यासियों का हस्तक्षेप था, जो चमत्कार, झाड़-फूँक और आयुर्वेद के माध्यम से आदिवासियों को पुनः हिन्दू धर्म में लौटा लाते थे। इससे परेशान होकर एल्विन ने तत्कालीन प्रशासन को **"नेशनल पार्क स्कीम"** का सुझाव दिया, ताकि आदिवासियों को साधु-संन्यासियों से अलग करके ईसाई मिशनरियों के प्रभाव में लाया जा सके। ऐसा तरीका नागालैंड में पहले से ही चल रहा था।



लीला एल्विन

विवाह के बाद कोशीबाई के दो पुत्र हुये – **जवाहर एल्विन** और **विजय एल्विन**। दोनों ने ईसाई धर्म अपनाया, न कि अपनी माँ के जनजातीय हिन्दू धर्म को। कुछ समय साथ रहने के बाद, सन् 1949-50 में एल्विन ने कोशीबाई को बिना सुने ही कलकत्ता हाई कोर्ट से एकपक्षीय (एक्स पार्टी) तलाक दे दिया। उस समय उनका छोटा बेटा केवल डेढ़ वर्ष का था। तलाक के बाद एल्विन शिलांग चले गये और वहाँ की एक अन्य जनजातीय युवती **लीला** से विवाह कर लिया। (कुछ लेखकों का मानना है कि लीला गोंड समुदाय की थी जो एल्विन के साथ शिलांग गईं। वहाँ उन्होंने दो अन्य क्षेत्रीय आदिवासी युवतियों से भी विवाह किया।)

दूसरी ओर, कोशीबाई जीवन भर अभावों और संघर्ष से जूझती रही। अशिक्षा और आदिवासी समाज की सरलता के कारण वह एल्विन की ठगी का शिकार हुई। दोनों बेटों की असमय मृत्यु हो गई, जिससे वह पूरी तरह अकेली रह गई। अपने अंतिम दिनों में वह डिंडोरी जिले के घने जंगलों के पास स्थित **रैतवार गाँव** में अत्यंत विपन्नता में रहने लगी। वहाँ वह अक्सर अपने बचपन, दिल्ली-मुंबई की यात्राओं और **जवाहरलाल नेहरू** से हुई मुलाकातों के किस्से सुनाया करती थी। उन्हें बहुत बाद में पता चला कि 1964 में एल्विन का निधन हो चुका है। उन्हें कभी गुजारा भत्ता भी नहीं मिल सका।

कोशीबाई की दुर्दशा पर न तो सरकार ने ध्यान दिया (सिवाय विधवा पेंशन के) और न ही वे लोग, जो एल्विन को आदिवासियों का हितैषी मानते थे। और जब 90 वर्ष की उम्र में कोशीबाई की मृत्यु हुई, तब उनके बैगा समुदाय ने भी उनकी अंतिम यात्रा में शामिल होने से इनकार कर दिया, क्योंकि उनका मानना था कि उन्होंने एक विदेशी व्यक्ति से विवाह करके न केवल समुदाय की परंपराओं का उल्लंघन किया, बल्कि उन्हें कमजोर करने का रास्ता भी खोला। जबकि यह विवाह 9-10 वर्षों में ही टूट गया था।

मध्य प्रदेश में लगभग 12 वर्षों तक रहते हुए एल्विन ने आदिवासियों पर 26 से अधिक पुस्तकें लिखीं। **"द बैगाज़" (*The Baigas*)** इन पुस्तकों में प्रमुख थी। उन्होंने बैगा आदिवासियों के जीवन, रीति-रिवाजों और विश्वासों पर शोध किया और उनकी नग्न तस्वीरों के माध्यम से देश-विदेश में ख्याति प्राप्त की। उन्हें **साहित्य अकादमी पुरस्कार** जैसे कई सम्मान भी मिले।

तत्कालीन प्रधानमंत्री नेहरू जी ने **NEFA** में उभरती जनजातीय समस्याओं को देखते हुए उन्हें जनजातीय मामलों के सलाहकार के रूप में नियुक्त किया (1954)। जहाँ उन्होंने अपने प्रभाव से पूर्वोत्तर राज्यों में हिन्दू पुजारियों और साधु-संन्यासियों के प्रवेश पर लगी रोक को और अधिक सख्ती से लागू करवाया जिससे **NEFA** क्षेत्र में धर्मांतरण का काम तेजी से बढ़ सका।

अपने जीवन के अंतिम वर्षों में वे अरुणाचल प्रदेश के क्षेत्र में अधिक सक्रिय रहे, संभवतः 1950 के बाद इस क्षेत्र में उत्पन्न नई परिस्थितियों और जनजातीय समस्याओं के कारण। इसी दौरान वे पूरी तरह से **बौद्ध धर्म** के प्रभाव में आ गये और अपने अंतिम दिनों में औपचारिक रूप से बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया। उन्होंने अपनी वसीयत में लिखा कि मृत्यु के बाद उनकी अस्थियों का विसर्जन उसी भारतीय धरती पर किया जाये, जहाँ उन्होंने जीवनभर आदिवासियों के साथ रहकर बिताया। वे मरने के बाद भी स्वयं को 'भारतीय' कहलाना पसंद करते थे।

Exercise -1

1. मध्यप्रदेश में कुल कितनी अनुसूचित जनजाति निवास करती है? [MPPSC Tourism 2013; MPPSC Assistant Registrar Exam 2022]

(a) 46
(b) 47
(c) 48
(d) 49

✍ इसका सही उत्तर **43** है। पहले 46 हुआ करती थी। 8 जनवरी 2003 की अधिसूचना द्वारा कीर, मीना और पारधी जनजातियों को इस सूची से हटा दिया गया। इस प्रकार वर्तमान में मध्य प्रदेश में 43 अनुसूचित जनजातियाँ निवास करती हैं।

MPPSC Official Answer-key : (a) 46

2. गोंड जनजाति का सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन निम्न में से किसने किया है? [MPPSC Forest (Main) 2010]

(a) प्रोफेसर श्यामचरण दुबे
(b) डॉ. आर. के. मुखर्जी
(c) हाबहाउस
(d) बेरियर एलविन

3. चम्बल क्षेत्र में रहने वाली विशेष पिछड़ी जनजाति कौन-सी है? [MPPSC Forest Service (Main) 2021]

(a) सहरिया
(b) मुरिया
(c) कोरकू
(d) भारिया

4. आदिवासी शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम किसने किया था। [MP Vyapam 2017]

(a) ठक्कर बापा
(b) महात्मा गांधी
(c) जवाहरलाल नेहरू
(d) सरदार वल्लभभाई पटेल

5. मुरिया और उनका घोटुल नामक पुस्तक के लेखक कौन है? [MP Vyapam 2017]

(a) ठक्कर बापा
(b) बेरियर एलविन
(c) महात्मा गांधी
(d) डॉ. आर. के. मुखर्जी

6. द बैगा, व द अगरिया पुस्तक के लेखक कौन है। [MPPSC Animal Husbandry & Veterinary Science 2021; MPPSC Forest Service (Main) 2023]

(a) वैरियर एल्विन
(b) हरीश चन्द्र उप्रेती
(c) नदीम हस्सन
(d) मजूमदार एवं मदान

7. द अगरिया पुस्तक के लेखक है? [MPPSC State Forest Service (Main) 2023]

(a) ऐलिस एक्का
(b) के० एस० सिंह
(c) वेरियर एल्विन
(d) एस० सी० दुबे

1. (a) 2. (a) 3. (a) 4. (a) 5. (b) 6. (a) 7. (c)

CHAPTER 2

जनजातियों से संबधित संवैधानिक उपबंध, परिषद, प्राधिकरण तथा आयोग

2.1 अनुसूचित एवं जनजातीय क्षेत्रों में प्रशासन

भारतीय संविधान के **भाग X** में **अनुच्छेद 244** के तहत "**अनुसूचित क्षेत्रों**" और "**जनजातीय क्षेत्रों**" के प्रशासन के लिये एक विशेष प्रणाली की परिकल्पना की गयी है।

Article (244)

Article 244 (1)

पांचवीं अनुसूची के प्रावधान चार पूर्वोत्तरीय राज्यों – असम, मेघालय, त्रिपुरा और मिजोरम को **छोड़कर अन्य राज्यों के अनुसूचित क्षेत्रों** और **अनुसूचित जनजातियों** के **प्रशासन** और **नियंत्रण** पर लागू होते हैं।

Article 244 (1)

छठी अनुसूची के अंतर्गत – **असम**, **मेघालय**, **त्रिपुरा** और **मिजोरम** में आदिवासी बहुल क्षेत्रों को अलग से प्रशासित किया जाता है।

पांचवीं अनुसूची

यह अनुसूची भारतीय संविधान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो अनुसूचित और अनुसूचित जनजातिय क्षेत्रों के प्रशासन व कल्याण से संबंधित है। यह अनुसूची मुख्य रूप से **आदिवासी बहुल क्षेत्रों** के **सामाजिक**, **आर्थिक** और **सांस्कृतिक विकास** को सुनिश्चित करने के लिये विशेष प्रावधान प्रदान करती है। इसमें राज्यों को **जनजाति सलाहकार परिषद का गठन** करने का अधिकार प्रदान किया गया है।

- किसी क्षेत्र को अनुसूचित क्षेत्र घोषित करने के **मुख्य मापदंड ?**
  - आदिवासी आबादी की प्रधानता हो,
  - एक बड़ा आदिवासीय क्षेत्र हो और उसमें उनकी सघनता अधिक हो
  - एक व्यवहार्य प्रशासनिक इकाई हो जैसे जिला, ब्लॉक या तहसील, तथा
  - पड़ोसी क्षेत्रों की तुलना में उनमें आर्थिक पिछड़ापन हो
- अनुसूचित क्षेत्र घोषित करने की **प्रक्रिया** ? (Check on Next page)
- **पांचवीं अनुसूची में शामिल मध्यप्रदेश के क्षेत्र?**
  - पूर्ण रूप से शामिल जिले = 5 = अलीराजपुर, झाबुआ, मंडला, डिंडोरी एवं बड़वानी।
  - आंशिक रूप से सम्मिलित जिले = धार, खरगोन, खंडवा, रतलाम, बैतूल, सिवनी, बालाघाट, होशंगाबाद, शहडोल, उमरिया, श्योपुर, छिंदवाड़ा, सीधी, अनूपपुर, बुरहानपुर। ¾
- **जनजाति सलाहकार परिषद**?

  अनुसूचित क्षेत्रों के प्रशासन में जनजाति सलाहकार परिषद की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जिन राज्यों का क्षेत्र पाँचवी अनुसूची में सामिल है, उनका संवैधानिक उत्तरदायित्व है, कि वह एक **जनजाति सलाहकार परिषद** का गठन करे। इस परिषद में सदस्यों की संख्या **20 से अधिक नहीं** हो सकती, तथा इनके **¾ सदस्य उस राज्य की विधानसभा** से **अनुसूचित जनजाति के प्रतिनिधि** हों।

इस अनुसूची के तहत वर्तमान में 10 राज्यों आंध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़, गुजरात, हिमाचल प्रदेश, झारखंड, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, ओडिशा, राजस्थान और तेलंगाना में आदिवासी क्षेत्रों के प्रशासन के लिये जनजातीय सलाहकार परिषद का गठन किया गया है।

संसद (Parliament) या राज्य विधानमंडल (State legislative assembly) द्वारा बनाये गये विधानों (Acts & Policies) को अब इन विशेष क्षेत्रों में सीधे लागू नहीं किया जा सकता।

विधानों को अब लागू करने के लिये राज्यपाल या तो सीधे अनुमति प्रदान कर सकते हैं या आवश्यकतानुसार कुछ संशोधनों के साथ उन्हें वहाँ लागू करने की अनुमति दे सकते है।

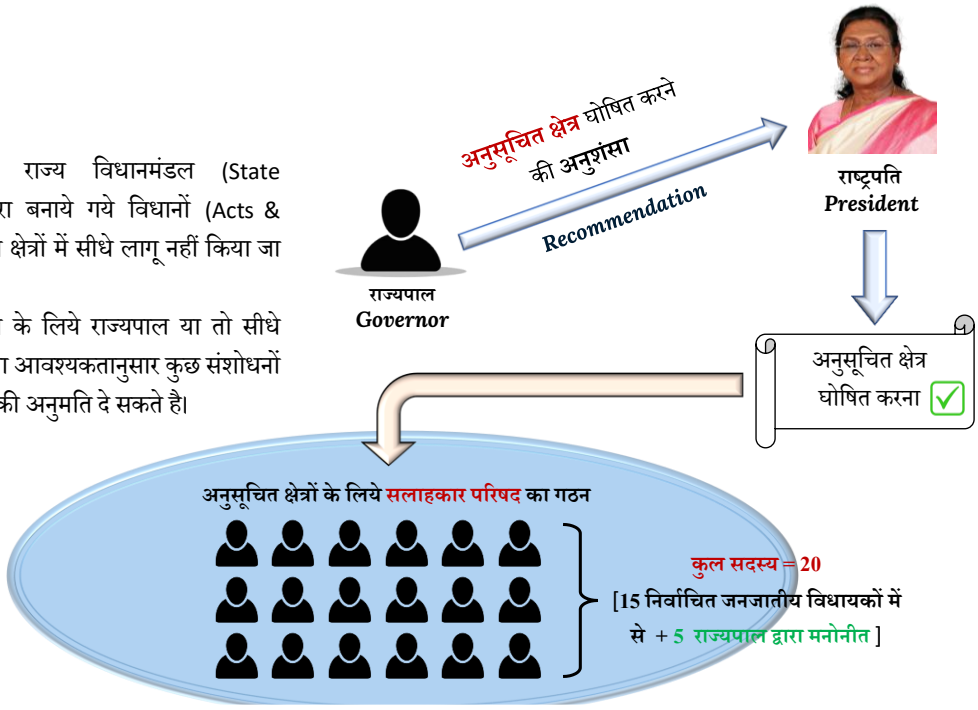
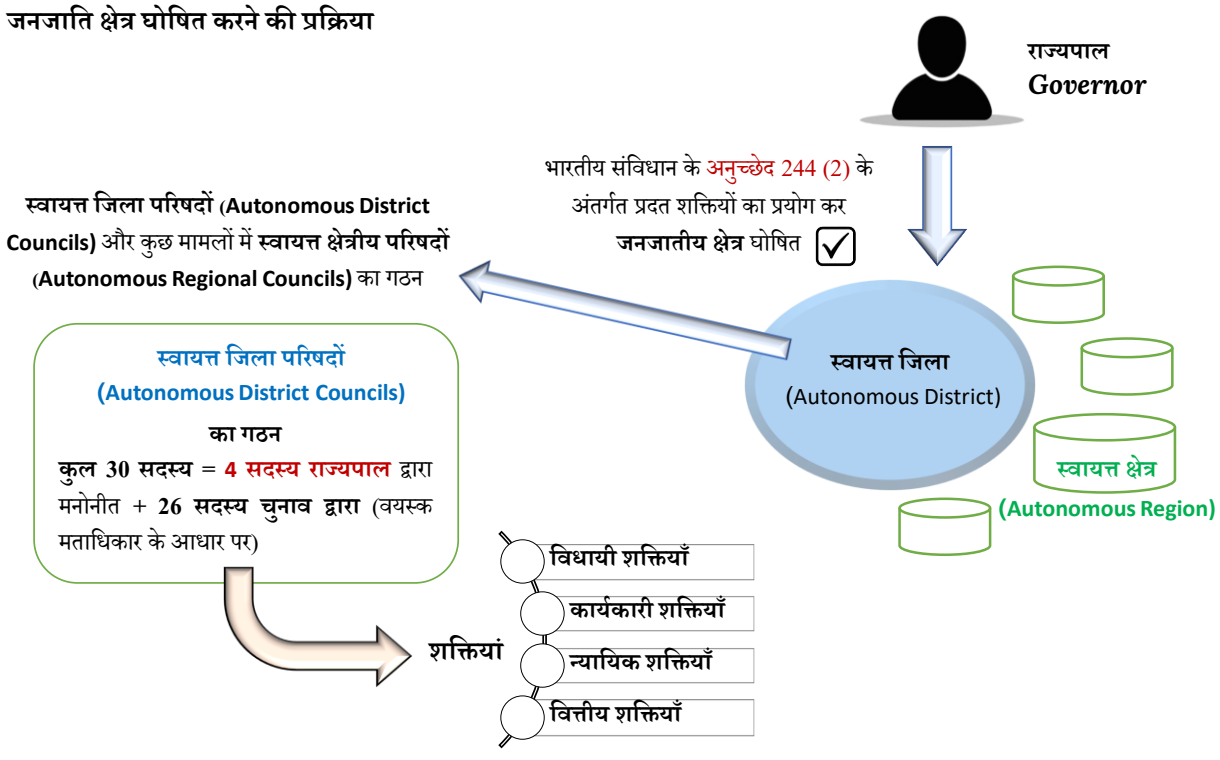


Figure 2.2 : अनुसूचित क्षेत्र घोषित करने की प्रक्रिया

छठी अनुसूची

यह अनुसूची असम, मेघालय, मिजोरम और त्रिपुरा राज्यों में जनजातीय क्षेत्रों के प्रशासन के लिये विशेष प्रावधान करती है। इसका मुख्य उद्देश्य इन क्षेत्रों में रहने वाले जनजातीय समुदायों को स्वशासन का अधिकार देना और उनकी विशिष्ट **ऐतिहासिक**, **सांस्कृतिक**, **सामाजिक** और **आर्थिक** पहचान को संरक्षित करना है।

▷ जनजाति क्षेत्र घोषित करने की प्रक्रिया

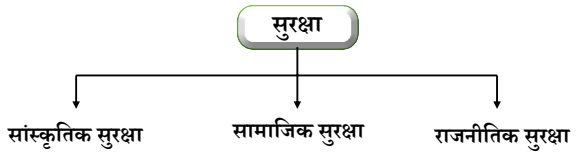


इस अनुसूची के तहत, इन चार राज्यों के कुछ जनजातीय क्षेत्रों को **'स्वायत्त जिलों'** (Autonomous districts) के रूप में गठित किया गया है। यदि किसी स्वायत्त जिले में अलग-अलग अनुसूचित जनजातियाँ रहती हैं, तो राज्यपाल उस जिले को **'स्वायत्त क्षेत्रों'** (Autonomous regions) में भी विभाजित कर सकते हैं।

- ये स्वायत्त जिले और क्षेत्र संबंधित राज्य सरकार के **प्रशासनिक अधिकार (Executive Authority)** क्षेत्र में ही आते हैं, लेकिन इन्हें अपने स्थानीय मामलों के प्रबंधन में विशेष स्वायत्तता प्राप्त होती है।
- राज्यपाल को इन स्वायत्त जिलों और क्षेत्रों की सीमाओं को निर्धारित करने, बदलने या मौजूदा जिलों या क्षेत्रों का नाम बदलने का अधिकार दिया गया है।
- इन स्वायत्त क्षेत्रों के प्रशासन के लिये **'स्वायत्त जिला परिषद'** (Autonomous District Council) और **'स्वायत्त क्षेत्रीय परिषद'** (Autonomous Regional Council) का गठन किया जाता है। इन परिषदों को संविधान द्वारा कुछ **विधायी** (कानून बनाने संबंधी), **कार्यकारी** (प्रशासनिक) और **वित्तीय शक्तियाँ** प्रदान की गई हैं। ये परिषदें भूमि, वन प्रबंधन, ग्राम प्रशासन, जल-प्रवाह के उपयोग, झूम खेती के नियमन, संपत्ति का उत्तराधिकार, विवाह और तलाक, सामाजिक रीति-रिवाज जैसे विषयों पर कानून बना सकती हैं, हालाँकि इन कानूनों को राज्यपाल की मंजूरी आवश्यक होती है।
- संसद या राज्य विधानमंडल द्वारा बनाये गये कानून इन स्वायत्त जिलों और क्षेत्रों में या तो **लागू नहीं होते**, या **निर्दिष्ट संशोधनों** और **अपवादों के साथ** लागू होते हैं।
- राज्यपाल को स्वायत्त जिलों या क्षेत्रों के प्रशासन से संबंधित किसी भी मामले की जांच और रिपोर्ट करने के लिये एक आयोग नियुक्त करने का अधिकार है। आयोग की सिफारिश पर राज्यपाल जिला या क्षेत्रीय परिषद को भंग भी कर सकता है।

2.2 संविधान में जनजातीय समुदायों से संबंधित प्रावधान

शैक्षिक और सांस्कृतिक सुरक्षा



Article 15 (4) : यह अनुच्छेद (Article) राज्य को यह अधिकार देता है कि वह सामाजिक और शैक्षिक रूप से पिछड़े वर्गों, विशेष रूप से अनुसूचित जाति (SC), अनुसूचित जनजाति (ST) और अन्य पिछड़ा वर्ग (OBC) के उत्थान के लिये विशेष प्रावधान कर सके। इसके अंतर्गत, राज्य शैक्षणिक संस्थानों में आरक्षण (Reservation) और अन्य सुविधाएँ (Scholarship, free coaching, etc.) प्रदान कर सकता है, जिससे इन वर्गों को समान अवसर प्राप्त हो सकें।

Article 19(5) : संविधान का Article 19(5) राज्य को यह अधिकार देता है, कि वह नागरिकों के freedom of movement (अनुच्छेद 19(1)(d)) और freedom to reside and settle (अनुच्छेद 19(1)(e)) पर reasonable restrictions (उचित प्रतिबंध) लगा सकता है। ये प्रतिबंध दो प्रमुख कारणों से लगाये जा सकते हैं

- In the interests of the general public (सार्वजनिक हित में)
- For the protection of the interests of any Scheduled Tribe (किसी अनुसूचित जनजाति के हितों की रक्षा के लिये)

उद्देश्य (Purpose) : इस प्रावधान का मुख्य उद्देश्य आदिवासी समुदायों की Distinct Culture, Language, Customs, और Traditional Lifestyle की रक्षा करना है। यह उन्हें बाहरी प्रभावों से बचाने और उनके Social & Economic Interests को सुरक्षित रखने में मदद करता है।

Article 46 : Promotion of Educational and Economic Interests

अनुच्छेद 46, जो कि राज्य के नीति निदेशक तत्वों (Directive Principles of State Policy) का हिस्सा है, राज्य को निर्देश देता है कि वह समाज के कमजोर वर्गों, विशेष रूप से अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के शैक्षिक और आर्थिक हितों को बढ़ावा दे और उन्हें सामाजिक अन्याय और शोषण से संरक्षण प्रदान करे।

सामाजिक सुरक्षा

Article 17 : Abolition of Untouchability

अनुच्छेद 17 के अनुसार, **"अस्पृश्यता"** (untouchability) को भारत में पूरी तरह से **अवैध (illegal)** घोषित किया गया है। इसका अर्थ है कि किसी भी व्यक्ति के साथ जाति के आधार पर भेदभाव करना या उसे सामाजिक रूप से बहिष्कृत करना **दंडनीय अपराध** है।

राजनीतिक सुरक्षा

Article 16(4A) : Reservation in Promotions

यह अनुच्छेद राज्य को यह अधिकार देता है, कि वह अनुसूचित जाति (SC) और अनुसूचित जनजाति (ST) के कर्मचारियों को सरकारी सेवाओं में पदोन्नति (promotion) में आरक्षण प्रदान कर सके, यदि वे सेवाओं में पर्याप्त रूप से प्रतिनिधित्व (adequately represented) नहीं करते हैं।

Article 164 (1) : Minister for Tribal Welfare

इस अनुच्छेद के अनुसार, छत्तीसगढ़, झारखंड, मध्य प्रदेश और ओडिशा राज्यों में जनजातीय कल्याण (*Tribal Welfare*) के लिये एक विशेष मंत्री का प्रावधान है। यह मंत्री अनुसूचित जाति और पिछड़े वर्गों के कल्याण का कार्य भी देख सकता है।

Article 243T : Reservation in Municipalities

यह अनुच्छेद नगरपालिकाओं (Municipalities) में अनुसूचित जाति (SC) और अनुसूचित जनजाति (ST) के लिये सीटों के आरक्षण का प्रावधान करता है। यह आरक्षण उनकी जनसंख्या के अनुपात में होता है।
उदाहरण: यदि किसी नगर में ST की जनसंख्या 10% है, तो नगरपालिका की 10% सीटें ST के लिये आरक्षित होंगी।

Article 330 : Reservation in Lok Sabha

यह अनुच्छेद लोकसभा (House of the People) में SC और ST के लिये सीटों के आरक्षण का प्रावधान करता है। यह आरक्षण उनकी जनसंख्या के अनुपात में होता है।
उदाहरण: मध्य प्रदेश में लोकसभा की 6 सीटें ST के लिये आरक्षित हैं।

Article 332 : Reservation in State Legislative Assemblies

यह अनुच्छेद राज्य विधानसभाओं में SC और ST के लिये सीटों के आरक्षण का प्रावधान करता है। यह आरक्षण उनकी जनसंख्या के अनुपात में होता है।
उदाहरण : मध्य प्रदेश विधानसभा में 47 सीटें ST और 35 सीटें SC के लिये आरक्षित हैं।

Article 335 : Claims of SCs and STs in Services

यह अनुच्छेद कहता है कि SC और ST के दावों को सरकारी सेवाओं और पदों में प्रशासनिक दक्षता (administrative efficiency) के साथ संतुलित किया जाना चाहिये। यह सुनिश्चित करता है कि आरक्षण से प्रशासन की गुणवत्ता प्रभावित न हो।
उदाहरण : सरकार SC/ST उम्मीदवारों के लिये योग्यता मानकों में छूट दे सकती है, लेकिन यह सुनिश्चित करना होगा कि प्रशासनिक कार्यों की गुणवत्ता बनी रहे।

Article 342 : Scheduled Tribes

यह अनुच्छेद राष्ट्रपति को यह अधिकार देता है, कि वह किसी राज्य में किन समुदायों को अनुसूचित जनजाति (Scheduled Tribes) के रूप में मान्यता देगा, इसकी सार्वजनिक अधिसूचना जारी कर सके।

Article 366(25) : Definition of Scheduled Tribes

यह अनुच्छेद "अनुसूचित जनजाति" की परिभाषा प्रदान करता है। इसके अनुसार, वे जनजातियाँ या जनजातीय समुदाय जो अनुच्छेद 342 के तहत अनुसूचित जनजाति के रूप में माने गये हैं, उन्हें अनुसूचित जनजाति कहा जायेगा।

Article 338A : National Commission for Scheduled Tribes

यह अनुच्छेद अनुसूचित जनजाति आयोग (National Commission for Scheduled Tribes) की स्थापना का प्रावधान करता है। यह आयोग ST समुदायों के अधिकारों और कल्याण की रक्षा के लिये जिम्मेदार है।

उदाहरण : यदि किसी ST समुदाय के अधिकारों का उल्लंघन होता है, तो यह आयोग जांच कर उचित कार्रवाई करता है।

अधिनियम (Acts)

- अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम, 1989
- पंचायत (विस्तारित क्षेत्रों पर लागू) अधिनियम (PESA) 1996 : मध्यप्रदेश में 15 नवंबर 2022 को अधिसूचित तथा 15 मार्च 2023 से लागू।
- अनुसूचित जनजाति और अन्य परंपरागत वन निवासियों (वन अधिकारों की मान्यता) अधिनियम, 2006

2.3 विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह (PVTG)

चौथी पंचवर्षीय योजना (1969-1974) के दौरान भारत सरकार ने अनुसूचित जनजातियों के भीतर एक उप-श्रेणी बनायी। इसका उद्देश्य उन सबसे कमजोर समूहों की पहचान करना था, जिन्हें विकास के सबसे निचले स्तर पर माना जाता था। इन समूहों की पहचान करने के लिये **ढेबर आयोग** की रिपोर्ट के आधार पर 1973 में एक मापदंड स्थापित किया गया। इस आयोग ने सबसे कम विकसित जनजातियों को **'आदिम जनजातीय समूह'** (**Primitive Tribal Groups**, PTG) के रूप में वर्गीकृत किया।

▷ पहचान के मापदंड (Identification Criteria)

- कृषि-पूर्व प्रौद्योगिकी स्तर (Pre-agricultural level of technology)
- साक्षरता का निम्न स्तर (Low level of literacy)
- आर्थिक पिछड़ापन (Economic backwardness)
- घटती या स्थिर जनसंख्या (Declining or stagnant population)

समय के साथ, इन समूहों की स्थिति और उनके विकास की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुये, भारत सरकार ने 2006 में PTG का नाम बदलकर **'विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह'** (***Particularly Vulnerable Tribal Groups***, **PVTG**) कर दिया। यह नाम परिवर्तन केवल शब्दों का परिवर्तन नहीं था, बल्कि इन समुदायों की विशिष्ट चुनौतियों और उनके संरक्षण एवं विकास के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

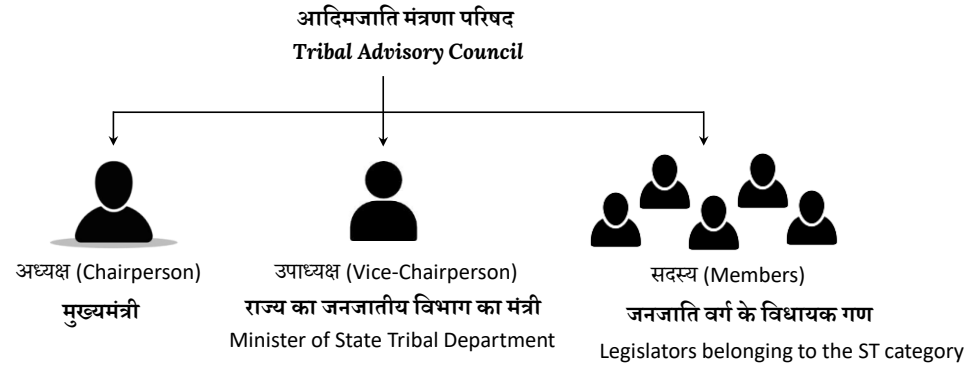
- जनगणना 2011 के अनुसार, भारत में **705 अनुसूचित जनजातियों** में से कुल **75 PVTG** हैं, जो 17 राज्यों और एक केंद्र शासित प्रदेश (अंडमान और निकोबार द्वीप समूह) में फैले हुए हैं। इनमें से सबसे अधिक 13 PVTG ओडिशा में पाये जाते हैं, जबकि 12 आंध्र प्रदेश में हैं।
- मध्यप्रदेश में **बैगा (*Baiga*)**, **भारिया (*Bharia*)** और **सहरिया (*Sahariya*)** — को विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह (PVTG) के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

सरकारी पहल (Government Initiatives)

- **प्रधानमंत्री जनजातीय न्याय महा अभियान (PM JANMAN) :** इस मिशन का उद्देश्य PVTGs को बुनियादी सुविधायें जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास, सड़क, बिजली, और पानी प्रदान करना है।
- जनजातीय गौरव दिवस, विकसित भारत संकल्प यात्रा
- ***PM PVTG Mission*** : पीएम-पीवीटीजी विकास मिशन कार्यक्रम का उद्देश्य कमज़ोर जनजातीय समूहों (पीवीटीजी) की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार करना है।

आदिम जाति मंत्रणा परिषद

मध्यप्रदेश सरकार ने संविधान के ***Article 244 (1)*** और पाँचवीं अनुसूची के प्रावधानों के तहत "**म.प्र. आदिम जाति मंत्रणा परिषद नियमावली, 1957**" लागू की। इस नियमावली के अनुसार, राज्य में अनुसूचित जनजातियों के कल्याण और विकास से संबंधित सुझाव देने हेतु एक **आदिम जाति मंत्रणा परिषद** की स्थापना की गई। इस परिषद में **अधिकतम 20 सदस्य** होते हैं, जिनमें से लगभग **तीन-चौथाई सदस्य राज्य विधानसभा से अनुसूचित जनजातियों के प्रतिनिधि** होते हैं।



इस परिषद की अनुशंसा पर, मध्यप्रदेश सरकार ने राज्य की 3 PVTGs—बैगा (***Baiga***), भारिया (***Bharia***), और सहरिया (***Sahariya***) — के कल्याण के लिये राज्यस्तरीय अभिकरणों का गठन किया। इन अभिकरणों का उद्देश्य इन जनजातियों के **सामाजिक**, **आर्थिक**, और **शैक्षिक** विकास के लिये योजनाओं का निर्माण और क्रियान्वयन करना है।

क्र.	विशेष पिछड़ी जनजाति समूह	मुख्यालय	कार्य क्षेत्र
1.	सहरिया विकास अभिकरण	ग्वालियर (दतिया), शिवपुरी, गुना, (अशोकनगर) श्योपुर (मुरैना, भिण्ड)	ग्वालियर (दतिया), शिवपुरी, गुना, (अशोकनगर) श्योपुर (मुरैना, भिण्ड)
2.	बैगा विकास अभिकरण	शहडोल, अनूपपुर, उमरिया, मण्डला, डिण्डौरी एवं बालाघाट	शहडोल, अनूपपुर, उमरिया, मण्डला, डिण्डौरी एवं बालाघाट
3.	भारिया विकास अभिकरण	तामिया छिंदवाड़ा	जिला छिंदवाड़ा के विकासखण्ड तामिया के पातलकोट क्षेत्र के 12 ग्राम

2.4 जनजातीय कार्य मंत्रालय (Ministry of Tribal Affairs)

स्थापना : **अक्टूबर 1999** में सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता **मंत्रालय** के विभाजन के उपरांत।

- **स्थान** : New Delhi
- **उद्देश्य** : अनुसूचित जनजातियों के समेकित सामाजिक-आर्थिक विकास पर अधिक ध्यान केन्द्रित करने के लिये।
- **पूर्ववर्ती संस्थायें** : स्वतंत्रता प्राप्ति से *Sept.* 1985 तक गृह मंत्रालय के "जनजातीय प्रभाग" नामक एक विभाग; *Sept.* 1985 से *May* 1998 तक कल्याण मंत्रालय के रूप में; *May* 1998 से *Sept.* 1999 तक सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के रूप में कार्यरत रहा।
- यह मंत्रालय वर्ष 2002 से प्रतिवर्ष अपना प्रतिवेदन (Annual Report) प्रकाशित कर रहा है।

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग (National Commission for Scheduled Tribes)***

भारतीय संविधान के अनुच्छेद ***338A (Article 338A)***** के तहत, **राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग (NCST)** की स्थापना की गई है। यह आयोग अनुसूचित जनजातियों (*Scheduled Tribes - STs*) के अधिकारों और हितों की रक्षा के लिये कार्य करता है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि (*Historical Background*)

- राष्ट्रीय जनजाति आयोग कि संरचना और शक्तियों को स्पष्ट कीजिये [MPPSC (Civil Main) GS-II, 2020 | 5 M]
- राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग की शक्तियों का वर्णन कीजिये [MPPSC (Civil Main) GS-II, 2019 | 6 M]
- भारत में राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग की संरचना एवं कार्यों की विवेचना कीजिये। [MPPSC GS-II (Main), 2018 | 15 M]

1978 : सरकार ने अनुसूचित जातियों और जनजातियों के लिये एक **गैर-सांविधिक बहुसदस्यीय आयोग** की स्थापना की।

1990 : 65वें संविधान संशोधन अधिनियम द्वारा अनुसूचित जातियों एवं जनजातियों के लिये एक राष्ट्रीय आयोग की स्थापना की गई।

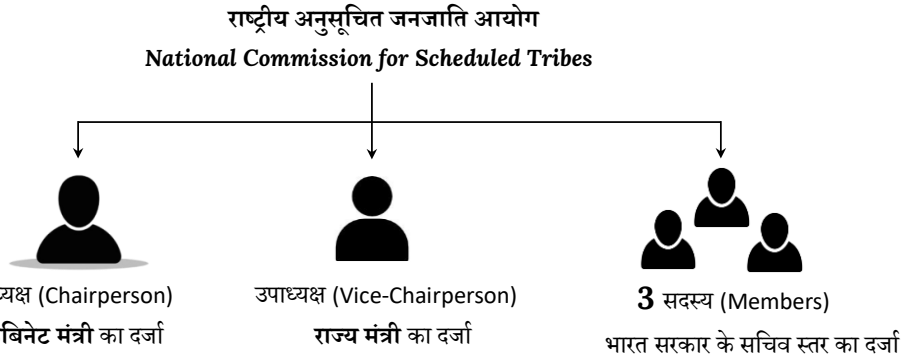
2003 : 89वें संविधान संशोधन अधिनियम द्वारा *Article 338A* जोड़ा गया, जिससे अनुसूचित जातियों और जनजातियों के लिये अलग-अलग आयोगों की स्थापना संभव हुई।

19 February 2004 : राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग (NCST) अस्तित्व में आया।

संरचना और कार्यकाल (Structure and Tenure)

आयोग में एक अध्यक्ष (Chairperson), एक उपाध्यक्ष (Vice-Chairperson) और तीन अन्य सदस्य (Members) होते हैं।

सभी सदस्य 3 वर्षों के लिये नियुक्त होते हैं और वे 2 कार्यकाल से अधिक के लिये नियुक्ति के पात्र नहीं होते हैं।



कार्य और शक्तियाँ (Functions and Powers)

कार्य (Function) : ◈ संविधान और अन्य कानूनी प्रावधानों के तहत अनुसूचित जनजातियों के लिये प्रदान किये गये संरक्षणों की निगरानी करना। ◈ अनुसूचित जनजातियों के अधिकारों के हनन से संबंधित शिकायतों की जांच करना। ◈ अनुसूचित जनजातियों के सामाजिक-आर्थिक विकास की योजना प्रक्रिया में भाग लेना और सलाह देना। ◈ राष्ट्रपति को वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत करना।

शक्तियां (Power) : ◈ आयोग को अपनी कार्यविधि को विनियमित करने की शक्ति है। ◈ किसी विषय की जांच करते समय या किसी परिवाद के मामले में, आयोग को उन सभी शक्तियों का अधिकार होगा जो **सिविल न्यायालय** को वाद के विचारण के दौरान प्राप्त हैं।

मध्य प्रदेश राज्य अनुसूचित जनजाति आयोग

- मध्यप्रदेश शासन के द्वारा वर्ष **1995** में "मध्यप्रदेश राज्य अनुसूचित जनजाति आयोग" का गठन किया गया है।
- **संरचना (Structure)** : ◈ अध्यक्ष (Chairperson) – केबिनेट मंत्री का दर्जा प्राप्त होता है। ◈ सदस्य (Members) – दो अशासकीय सदस्य होते हैं। ◈ पदेन सदस्य (Ex-officio Member) – आयुक्त, जनजातीय कार्य विभाग।

EXERCISE – 2

1. राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के अध्यक्ष और उपाध्यक्ष के अतिरिक्त, सदस्यों की कुल संख्या कितनी है ? [MPPSC Civil/Forest (Prelim) 2023]

(a) 1 सदस्य
(b) 2 सदस्य
(c) 3 सदस्य
(d) 4 सदस्य

2. मध्य प्रदेश विधानसभा में अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के लिये कितने स्थान आरक्षित हैं? [MPPSC Forest (Main) 2023]

(a) अनुसूचित जाति – 34, अनुसूचित जनजाति – 48
(b) अनुसूचित जाति – 35, अनुसूचित जनजाति – 47
(c) अनुसूचित जाति – 36, अनुसूचित जनजाति – 46
(d) अनुसूचित जाति – 37, अनुसूचित जनजाति – 45

3. संविधान के किस अनुच्छेद में जनजातीय सलाहकार परिषद की स्थापना का प्रावधान किया गया है। [MPPSC Forest (Main) 2019]

(a) 365
(b) 340
(c) 244
(d) 342

4. भारतीय संविधान के किस अनुच्छेद के अन्तर्गत राष्ट्रपति राज्य विशेष के लिये अनुसूचित जनजाति समुदायों के लिये लोक अधिसूचना जारी करते हैं? [MPPSC Civil (Prelim) 2025]

(a) अनुच्छेद 340
(b) अनुच्छेद 349
(c) अनुच्छेद 342
(d) अनुच्छेद 338

5. भारतीय संविधान के किस अनुच्छेद में अनुसूचित जनजातियों के लिये राज्य की विधानसभा में सीटों के आरक्षण का प्रावधान है ? [MPPSC Civil/Forest (Prelim) 2025]

(a) अनुच्छेद 339
(b) अनुच्छेद 332
(c) अनुच्छेद 334
(d) अनुच्छेद 243D

6. जनजातिय सलाहकार परिषद की व्यवस्था भारतीय संविधान की निम्नलिखित में से किस अनुसूची में है। [MPPSC Forest (Main) 2019]

(a) पांचवी अनुसूची
(b) छठी अनुसूची
(c) सातवी अनुसूची
(d) आठवी अनुसूची

7. भारतीय संविधान के किस अनुच्छेद के अन्तर्गत राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग का गठन किया गया है ? [MPPSC Civil/Forest (Prelim) 2023]

(a) अनुच्छेद 338
(b) अनुच्छेद 338(क)
(c) अनुच्छेद 338 (ख)
(d) अनुच्छेद 333

8. ____ सदस्यों की मध्यप्रदेश में जनजातीय सलाहकार परिषद (TAC) बनी है। [MPPSC Forest (Main) 2020]

(a) 21
(b) 20
(c) 22
(d) 19

9. निम्नलिखित में से कौन मध्यप्रदेश के विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों (PVTG) के अंतर्गत नहीं आते हैं? [MPPSC Civil/Forest (Prelim) 2025]

(a) सहरिया
(b) बैगा
(c) भारिया
(d) असुर

1. (c), 2. (b), 3. (c), 4. (c), 5. (b), 6. (a), 7. (b), 8. (b), 9. (d)

CHAPTER 3

जनजातीय संभाग, जिले, विकासखंड और जनगणना आंकडे

3.1 जनजातीय संभाग, जिले और विकासखंड

मध्यप्रदेश (Madhya Pradesh) में वर्तमान में **7 संभाग** (Divisions) और **20 जिलों** (Districts) को **अनुसूचित जनजातीय संभाग** और **जिलों** (Scheduled Tribal Divisions and Districts) के रूप में नामित किया गया है।

- इन जिलों के अंतर्गत **89***** **विकासखण्ड/मण्डल (Blocks/Mandals)** अनुसूचित जनजातीय विकास खण्ड (Scheduled Tribal Development Blocks) के रूप में वर्गीकृत है।
- सर्वाधिक अनुसूचित जनजाति **विकासखण्ड (मण्डल) धार जिले** में 12*** हैं
- सर्वाधिक अनुसूचित जिले **इंदौर संभाग** में 7 है।

संभाग	जिला	मण्डल (विकासखण्ड)
1. इंदौर संभाग	खण्डवा	1
	खरगौन	7
	बड़वानी	7
	झाबुआ	6
	अलीराजपुर	6
	बुरहानपुर	1
	धार	12
2. जबलपुर	मण्डला	**9** **
	सिवनी	5
	छिंदवाड़ा	4
	बालाघाट	3
	डिण्डौरी	7
3. नर्मदापुरम	नर्मदापुरम	1
	बैतूल	7
4. उज्जैन संभाग	रतलाम	2
5. शहडोल	शहडोल	4
	अनूपपूर	4
	उमरिया	1
6. रीवा संभाग	सीधी	1
7. चम्बल संभाग	श्योपुर	1

3.2 जनगणना आंकडे (2011)

वर्तमान में मध्य प्रदेश में **1,53,16,784 व्यक्ति** जनजाति वर्ग के निवास करते हैं।

- मध्य प्रदेश की कुल जनसंख्या का **21.10%** हिस्सा अनुसूचित जनजाति वर्ग से है। जबकि, राष्ट्रीय स्तर पर अनुसूचित जनजाति कुल जनसंख्या का औसत **8.6%** है।
- देश की कुल अनुसूचित जनजाति जनसंख्या का लगभग **14.69%** भाग मध्यप्रदेश में निवास करता है। हालांकि, प्रतिशतता के आधार पर मध्य प्रदेश का देश में 13वां स्थान है।
- जनसंख्या की दृष्टि से मध्यप्रदेश देश में सबसे अधिक अनुसूचित जनजाति जनसंख्या वाला राज्य है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से, मध्य प्रदेश के लगभग **15% भू-भाग** पर अनुसूचित जनजातियाँ निवास करती हैं।
- मध्य प्रदेश (म.प्र.) में सर्वाधिक अनुसूचित जनजाति जनसंख्या **धार** जिले में निवास करती है, जबकि प्रतिशत की दृष्टि से **अलीराजपुर** जिले में सर्वाधिक अनुसूचित जनजाति जनसंख्या निवास करती है।
- जनजाति जनसंख्या और प्रतिशत दोनों ही दृष्टिकोण से **भिण्ड** जिले में न्यूनतम जनसंख्या निवास करती है।

अनुसूचित जनजाति ग्रामीण का लिंगानुपात	986
अनुसूचित जनजाति नगरीय का लिंगानुपात	956
अनुसूचित जनजाति का सर्वाधिक साक्षर जिला	बालाघाट
सर्वाधिक जनजाति जनसंख्या वाला जिला	धार (1222814)
सर्वाधिक जनजाति **जनसंख्या %** वाला जिला	अलीराजपुर (89%)
न्यूनतम जनजाति जनसंख्या वाला जिला	भिण्ड (6131)
न्यूनतम जनजाति जनसंख्या प्रतिशत वाला जिला	भिण्ड (0 .4%)

- सर्वाधिक अनुसूचित जनसंख्या की दशकीय प्रतिशत वृद्धि वाला जिला **छतरपुर** है, जबकि न्यूनतम दशकीय वृद्धि वाला जिला **मंदसौर** है।
- मध्य प्रदेश में आदिवासी जनसंख्या की साक्षरता दर 50.6 प्रतिशत*** है। जिसमें पुरुष साक्षरता दर 59.6 प्रतिशत और महिला साक्षरता दर 41.5 प्रतिशत है। यह आंकड़े सम्पूर्ण भारत के साक्षरता दर से कम हैं, जहां साक्षरता दर 59.00 प्रतिशत है। भारत में पुरुष साक्षरता दर 68.50 प्रतिशत और महिला साक्षरता दर 49.40 प्रतिशत है।

> जनगणना 2011 के अनुसार, मध्य प्रदेश में अनुसूचित जनजातियों कि जनसंख्या कितनी है ?
> [MPPSC Civil (Main) GS–I, 2022 | 3 M]

- प्रदेश की सबसे बड़ी जनजाति **भील** है, जबकि सबसे छोटी जनजाति **कमार** है।



जनसंख्या के आधार पर जिले



जनसंख्या प्रतिशत के आधार पर जिले



वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार जनसंख्या(लाख में)

► जनगणना 2011 पर आधारित अनुसूचित जनजाति के आंकड़ो का विवरण

क्र.	विवरण	भारत	मध्यप्रदेश
1.	कुल जनसंख्या	1,21,05,69,573	7,26,26,809
	पुरुष जनसंख्या	62,31,21,843	3,76,12,306
	महिला जनसंख्या	58,64,47,730	3,50,14,503
2.	अनुसूचित जनजाति जनसंख्या	104,281,034	1,53,16,784
	अनुसूचित जनजाति पुरुष जनसंख्या	5,24,09,823	77,19,404
	अनुसूचित जनजाति महिला जनसंख्या	5,18,71,211	75,97,380
3.	अनुसूचित जनजाति का कुल जनसंख्या से प्रतिशत	8.60	21.09***
	म.प्र. में अ.ज.जा. जनसंख्या का देश की अ.ज.जा. की जनसंख्या से प्रतिशत	-	14.64
4.	अनुसूचित जनजाति की ग्रामीण क्षेत्र की जनसंख्या	94,083,844 90 %	1,42,76,874 92 %
5.	अनुसूचित जनजाति की शहरी क्षेत्र की जनसंख्या	10,461,872 10 %	10,39,910 8 %
6.	कुल जनसंख्या में दशकीय वृद्धि	17.69 %	20.35 %
	अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या में दशकीय वृद्धि	23.66 %	25.20 %
7.	समस्त परिवारों की संख्या	24,66,92,667	1,49,67,597
	अनुसूचित जनजाति के परिवारों की संख्या	2,33,29,105	31,22,061
8.	लिंगानुपात – समस्त	943	931
	लिंगानुपात - अनुसूचित जनजाति	990	984
9.	साक्षरता दर समस्त	73.00 %	69.32 %
	साक्षरता दर समस्त पुरुष	80.90 %	78.73 %
	साक्षरता दर समस्त महिला	64.60 %	59.24 %
10.	साक्षरता दर अनुसूचित जनजाति	59.00 %	50.55 %***

	साक्षरता दर अनुसूचित जनजाति पुरुष	68.50 %	59.55 %
	साक्षरता दर अनुसूचित जनजाति महिला	49.40 %	41.47 %
11.	कुल क्षेत्रफल (लाख वर्ग किमी में)	32.87	3.08
12.	जनसंख्या घनत्व (प्रति वर्ग कि.मी.)	368	236
	अनुसूचित जनजातीय जनसंख्या घनत्व (प्रति वर्ग कि.मी.)	32	50
13.	आदिवासी उपयोजना क्षेत्र की कुल जनसंख्या		156.35 लाख
	आदिवासी उपयोजना क्षेत्र में अनु. जनजाति की जनसंख्या		101.15 लाख
14.	आदिवासी उपयोजना क्षेत्र का क्षेत्रफल (लाख वर्ग किमी में)	6.41	0.93
15.	कुल अनुसूचित जनजातियाँ	705	43***

EXERCISE – 3

1. 2011 की जनगणना के अनुसार, मध्य प्रदेश की जनजातियों में सर्वाधिक जनसंख्या (59.9 लाख) किन जनजातियों की है? [MPPSC Forest (Main) 2023]

(a) बिंझवार एवं कँवार
(b) कोल एवं कोरकू
(c) भील एवं भीलाला
(d) बैगा एवं भारिया

2. 2011 की जनमणना के अनुसार मध्य प्रदेश में न्यूनतम जनजाति जनसंख्या वाला जिला कौन-सा है? [MPPSC Forest (Main) 2024]

(a) भिण्ड
(b) मुरैना
(c) डिंडोरी
(d) टीकमगढ़

3. मण्डला जिले में कितने जनजातीय खण्ड है। [MPPSC Forest (Main) 2020]

(a) 9
(b) 8
(c) 10
(d) 7

4. 2011 की जनगणना अनुसार मध्यप्रदेश के जनजातियों की साक्षरता दर ___ है। [MPPSC Forest (Main) 2020]

(a) 50.6%
(b) 49.6%
(c) 48.6%
(d) 51.6%

5. 2011 की जनगणना के अनुसार मध्यप्रदेश की कुल जनसंख्या में जनजातियों की जनसंख्या प्रतिशत में कितनी है। [MPPSC Forest (Main) 2019; MPPSC Social Work 2021]

(a) 20.1%
(b) 21.1%
(c) 21.9%
(d) 23.7%

1. (c), 2. (a), 3. (a), 4. (a), 5. (b)

Chapter

4

गोंड जनजाति का इतिहास

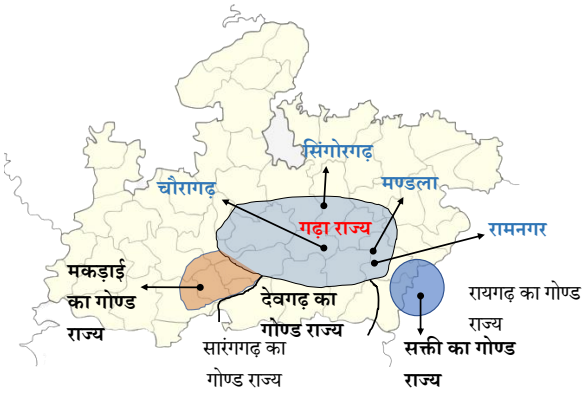


भारत के इतिहास में गोंड जनजाति की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। **कलचुरियों की दक्षिणी शाखा**, जिसने दूरस्थ प्रदेशों में विजय प्राप्त की थी, उनकी सेना में बड़ी संख्या में गोंड सैनिक शामिल थे। ये सैनिक सेनाओं के साथ एक बड़े भू-भाग में फैल गये और विभिन्न क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति दर्ज करायी। मध्यकाल के दौरान, गोंड जनजाति ने मध्य प्रदेश के एक बड़े भू-भाग पर लंबे समय तक शासन किया। सम्पूर्ण गोंडवाना को कालांतर में तीन प्रमुख राजवंशों में विभाजित किया गया

- **उत्तरी गोंडवाना (गढ़ा - मंडला) का गोंड राज्य** : यह राज्य मध्य प्रदेश के **मंडला क्षेत्र** में स्थित था। यह गोंड राजवंशों में सबसे प्रमुख था और इन्होंने लंबे समय तक शासन किया।
- **मध्य गोंडवाना (देवगढ़ - छिंदवाड़ा या नागपुर) का गोंड राज्य** : **देवगढ़** का गोंड राजवंश सोलहवीं शताब्दी के अंत से अठारहवीं शताब्दी के मध्यकाल तक चला। इस राजवंश का इतिहास **फारसी ग्रंथों** और **मराठी इतिहासों** से प्राप्त होता है।
- **दक्षिणी गोंडवाना (चंद्रपुर) का गोंड राज्य** : इस राजवंश के संस्थापक का नाम **"कोल भील"** था, हालांकि कोल और भील दो अलग-अलग जनजातियाँ हैं। यह राजवंश **आटरम वंश** का था, जिसका प्रसिद्ध राजा भील बल्लाल था। उसने मालवा तक के क्षेत्र को विजित किया और नर्मदा तट पर बलारेश्वर नामक शिव मंदिर बनवाया। चंद्रपुर के गोंड राज्य की एक छोटी रियासत **मकड़ाई** 1948 तक अस्तित्व में रही।

4.1 उत्तरी गोंडवाना गढ़ा (मंडला) का गोंड राज्य

मध्य प्रदेश का गढ़ा गोंड राज्य एक अत्यधिक समृद्ध और शक्तिशाली राज्य था। यह राजवंश उत्तर मध्यकाल से प्रारंभ होकर आधुनिक काल तक चला। इस राज्य का वर्णन **रामनगर अभिलेख** में मिलता है, जो गोंड राजा हृदयशाह के कार्यकाल में खुदवाया गया था। गढ़ा राज्य ने अपने शासनकाल में सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।



गढ़ा गोंड राज्य के शासकों का वर्णन दो प्रमुख स्रोतों से प्राप्त होता है :-

- **रामनगर (मण्डला) के शिलालेख** : इस शिलालेख में गढ़ा राज्य के **54 शासकों** की जानकारी मिलती है। यह अभिलेख गोंड राजवंश के इतिहास को समझने के लिये एक महत्वपूर्ण स्रोत है।
- **गढेशनृ पवर्णनम् नामक संस्कृत ग्रंथ** : इस संस्कृत ग्रंथ के श्लोकों में गढ़ा राज्य के **63 शासकों** का वर्णन है। यह ग्रंथ गोंड राजवंश की विस्तृत जानकारी प्रदान करता है।

गढ़ा राज्य के संस्थापक **राजा यादवराय** या **जादूराय** जी थे। उन्होंने लगभग **14वीं शताब्दी के उत्तरार्ध** में अपना राज्यारोहण किया। कलचुरी वंश के पतन के बाद गोंड राज्य की स्थापना हुई, जिसने मध्य प्रदेश के एक

संग्राम शाह

- पिता- अर्जुनदास
- बचपन का नाम - आमहणदास
- राज्याभिषेक -1510 ई.
- गोंड राज्य वंश का प्रथम पितृहन्ता (पिता को मारने वाला) शासक - संग्राम शाह
- 52 गढ़ो का स्वामी कहा जाता है। इसने चौरागढ़ (नरसिंहपुर) के किले का निर्माण किया।
- सोने और चांदी के सिक्के चलवाये, वाजपेय यज्ञ किया।

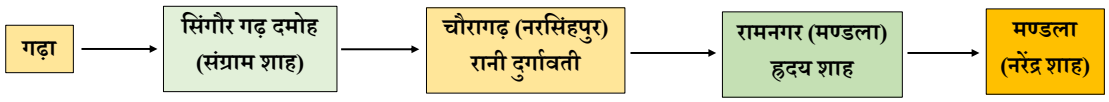
बड़े भू-भाग पर शासन किया। उनके शासनकाल में गोंड समाज ने राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास की नयी ऊँचाइयों को छुआ।

- **दलपत शाह** *** (पुत्र संग्राम शाह) का विवाह राठ महोबा के **चंदेल राजा** *** **सालवाहन** *** की पुत्री दुर्गावती से हुआ।
- गढ़ा राज्य पर मुगलों के द्वारा 1564 में आसफ खॉ जो उस समय (कड़ा मानिकपुर का मुगल सूबेदार) के नेतृत्व में आक्रमण किया गया। तथा रानी के वीरगति के प्राप्त होने के बाद मुगलों से चौरागढ़ पर आक्रमण किया था, जिसमे वीर नारायण को वीरगति प्राप्त हुई।
- रानी दुर्गावती के प्रधानमंत्री का नाम आधार सिंह व उनका प्रिय **सफेद हाथी सरमन** था। जबलपुर के निकट **बरेला** ***में रानी दुर्गावती की समाधि है।
- **मधुकर शाह** ने चन्द्रशाह (पिता) और अपने बड़े भाई की हत्या कर दी।
- 1634 में गढ़ा राज्य पर पुनः भीषण आक्रमण हुआ। जिसका नेतृत्व जुझार सिंह बुन्देला ने किया।
- चोरागढ़ से राजधानी रामनगर, नर्मदा के किनारे सतपुड़ा के पहाडो में हृदयशाह ने बनायी।
- **रामनगर शिलालेख** गोंड राजा हृदयशाह के समय **जयदेव** ने लिखा। यह शिलालेख शुद्ध संस्कृत भाषा और देवनागरी लिपि में लिखा गया है। तथा इसमे 52 श्लोक है।
- गोंड साम्राज्य से सम्बन्धित विवरण रामनगर व बटियागढ़ (दमोह) शिलालेख से मिलता है।
- रामनगर शिलालेख का लेखक **जयदेव** था। नरेन्द्र शाह ने राजधानी रामनगर से मंडला स्थांनातरित कर दी।
- गोंड वंश के राजाओं द्वारा लडे गये युद्ध
  - **नरई या चोरागढ़ का युद्ध** =1564 (रानी दुर्गावती व अकबर) **अबुल फजल** *** ने अपनी पुस्तक अकबरनामा में रानी दुर्गावती की राजधानी चौरागढ़ की लूट का वर्णन किया है।
  - **चौरागढ़ का युद्ध** = 1634 (प्रेमशाह व जुझार सिंह बुंदेला)

महल	निर्माता
1. भगवत राय का महल	हृदयशाह
2. मदन महल	मदन शाह
3. मोती महल	हृदयशाह
4. बघेलिन रानी का महल	हृदयशाह
5. मंडला का दुर्ग	नरेन्द्र शाह



- **गढ़ा राज्य** की **राजधानी का क्रम**



▶ गोंड राज्य की कला व संस्कृति

रचना	रचनाकार	राज्याश्रय
रस रत्नमाला (राजाओ के लिये संक्षिप्त विश्व कोष भी कहाँ जाता है। ***	संग्रामशाह	
दिव्यनिर्णय नृसिंह चम्प	केशव लौगाक्षि	दलपतशाह
दुर्गावती प्रकाश, समयावलोक	पदमनाथ भट्टाचार्य	दुर्गावती
संग्राम साहीय, दिव्यनिर्णय	दामोदर ठाकुर	दुर्गावती
आलोक दर्पण	महेश ठाकुर	दुर्गावती
गजेन्द्र मोक्ष	लक्ष्मी प्रसाद	निजामशाह
सुदामा चरित्र	वीर वाजपेयी	निजामशाह
प्रेमदीपिका	वीर वाजपेयी	निजामशाह
हृदय कौतुक, हृदय प्रकाश ***	हृदयशाह	हृदयशाह
रामविजय महाकाव्य व गढेशनृप वर्णनम्	कवि रूपनाथ झा	नर हरिशाह

4.2 देवगढ़ राज्य

देवगढ़ राज्य का उदय सोलहवीं शताब्दी के अंत में हुआ। इस राज्य की स्थापना के समय यह क्षेत्र **गोंड जनजाति** के अधीन था। गोंड शासकों ने इस क्षेत्र में अपनी सत्ता स्थापित की और देवगढ़ को एक स्वतंत्र राज्य के रूप में विकसित किया। **1564 में, गढ़ा** पर मुगल सम्राट **अकबर** की विजय के बाद, देवगढ़ राज्य मुगल साम्राज्य का हिस्सा बन गया। हालांकि, देवगढ़ के शासकों ने अपने क्षेत्र की दुर्गम भौगोलिक स्थिति और मुगलों से दूरी का लाभ उठाकर अपनी स्वतंत्र सत्ता बनाये रखी। अठारहवीं शताब्दी के मध्य तक देवगढ़ राज्य अपनी स्वतंत्रता बनाये रखने में सफल रहा। लेकिन अंततः **भोसले शासकों** ने देवगढ़ के शासकों को सिंहासन से हटा दिया और इस क्षेत्र को **नागपुर राज्य** में मिला लिया। इसके साथ ही देवगढ़ राज्य का स्वतंत्र अस्तित्व समाप्त हो गया।

- देवगढ़ राज्य के अवशेष वर्तमान में छिंदवाड़ा जिले से महज 40 किमी की दूरी पर स्थित हैं।
- देवगढ़ राज्य का मुख्यालय **हरया** या **हरयागढ़** था।
- इसका वास्तविक उल्लेख **1564** के बाद मिलता है, जब **गढ़ा राज्य** की शक्ति और प्रभाव क्षीण हो गया।
- प्रारंभ में देवगढ़ के राजा **जमीदार** कहलाते थे। देवगढ़ राज्य का पहला शासक **तुलोबा** था। तुलोबा का उल्लेख **1578** में जारी की गई एक सनद में मिलता है। इससे पहले किसी राजा का विवरण प्राप्त नहीं है।



- **जाटबा** के समय देवगढ़ राज्य और **गौंड वंश** की कीर्ति चारों दिशाओं में फैली।
- इसने **तांबे के सिक्कों** का प्रचलन शुरू किया, जिन पर "**श्री राजा जाटबा प्रतिराज**" लिखा गया था।
- जाटबा ने अपने राज्य का विस्तार **दक्षिण** और **पूर्व** की ओर **खरेला (बालाघाट)** तक किया।
- उसने राजधानी को **हरयागढ़** से **देवगढ़** स्थानांतरित किया और वहाँ एक किले का निर्माण करवाया।
- 1637 में कोकशाह के समय देवगढ़ पर मुगल सेना ने आक्रमण किया। इस युद्ध का नेतृत्व **खानदौरान** ने किया परन्तु जीत कर राजस्व वसूल कर राज्य वापस कर दिया।
- 1648 में केसरीशाह के समय पुनः मुगल शाही फौज ने देवगढ़ पर आक्रमण किया। जिसका नेतृत्व शाहवाज खान ने किया।
- महीपत शाह राज्य प्राप्त करने के लिये औरगजेब के पास गया । उसकी शर्त के अनुसार उसे मुस्लिम धर्म स्वीकार करना पड़ा ।
- गोंड वंश का पहला शासक **महीपत शाह** था जिसने मुस्लिम धर्म स्वीकार्य किया। ओर देवगढ़ का नाम परिवर्तित कर **इस्लामगढ़** तथा खुद का नाम महीपत शाह से परिवर्तित कर **बख्त बुलन्द** कर लिया।
- 1691 में बख्त बुलन्द को हटाकर मुगलों ने दीदर को इस्लाम गढ़ का राजा बनाया।

4.3 मकडाई रियासत

मकडाई रियासत वर्तमान म.प्र. के **हरदा*** जिले में है। जिसका संस्थापक राजा **करकटराय** या **महाराज सिंह** था । जो चन्द्रपुर का निवासी था। मकड़ाई महात्म नाम की एक छोटी पुस्तक में इस राज्य का विवरण मिलता है। मकड़ाई महात्म में करकटराय के पश्चात 25 पीढ़ियों के राजा के नामों का वर्णन किया गया है। बाद में मकरंदशाह ने अपना मुख्यालय कालीभीत से हटाकर मकडाई कर लिया तथा किले का निर्माण करवाया।



गोंडवाना राज्य के अंतर्गत आने वाले बालाघाट, छिंदवाडा और सिवनी जिले में जो भी व्यक्ति तालाब का निर्माण करवाता था, उसे राज्य की ओर **से तालाब के नीचे की ओर की भूमि राजा की ओर से बिना किसी मूल्य के प्रदान की जाती थी**, जिस पर **लगान माफी** दी जाती थी।

ऐसे प्रोत्साहन के फलस्वरूप वैनगंगा घाटी क्षेत्र में बहुत बड़ी संख्या में सिंचाई हेतु तालाबों का निर्माण हुआ। उस समय में निर्मित ऐसे तालाब आज भी अस्तित्व में हैं इसी कारण यहाँ वर्तमान में अत्यधिक संख्या में तालाब पाए जाते है।

- मध्यप्रदेश सरकार के वनमंत्री म.प्र. सरकार विजयशाह का संबंन्ध भी मकडाई रियासत के गोंड वंश से है।

❖ **अन्य गोंड रियासते** : ◈ कवर्धा रियासत ◈ रायगढ़ रियासत ◈ सक्ती रियासत

EXERCISE – 4

1. वीरांगना दुर्गावती की शादी निम्न लिखित में से किस गोंड शासक के साथ हुई थी? [MPPSC Forest Service (Main) 2021]
(a) रघुनाथ शाह
(b) चंपत शाह
(c) शंकर शाह
(d) दलपत शाह

2. सिंगोरगढ़ का किला मध्यप्रदेश के किस जिले में स्थित है। [MPPSC Civil Prelims 2021; MPPSC Dental Surgeon Exam 2022]
(a) सागर
(b) दमोह
(c) जबलपुर
(d) छतरपुर

3. गढ़ मण्डला का अंतिम यशस्वी और प्रतापी राजा कौन था। [MPPSC Dental Surgeon Exam 2022]
(a) राजा शाह
(b) विक्रम शाह
(c) शंकर शाह
(d) विष्णु शाह

4. रानी दुर्गावती के पिता का नाम क्या था। [MPPSC DSP Radio 2020]
(a) दधिवाहन
(b) शालिवाहन
(c) दतिवाहन
(d) बलवाहन

5. मध्य प्रदेश का कौन-सा स्थान, गोंड शासकों से जुड़ा हुआ है?[MPPSC Forest Service (Main) 2023]
(a) ग्वालियर किला
(b) धामनार गुफाएँ
(c) भोजेश्वर महादेव मंदिर
(d) रामनगर का मोती महल

6. निम्नलिखित में से किस संस्कृत काव्य साहित्य की रचना गोण्ड राजा संग्राम शाह ने किया था? [MPPSC Principal Assistant Director (Technical) Exam 2023; MPPSC Assistant Veterinary Surgeon Exam 2023]
(a) संग्रामसाहीय विवेकदीपिका
(b) रसरत्नमाला
(c) हृदय कौतुक
(d) हृदय-प्रकाश

7. निम्नलिखित में से किस लेखक ने रानी दुर्गावती की राजधानी चौरागढ़ की लूट का वर्णन किया है। [MPPSC ADPO 2021]
(a) बरनी
(b) अबुल फज़ल
(c) फैज़ी
(d) फिरदौसी

8. जबलपुर में स्थित महत्वपूर्ण किला,..... है? [MP Vyapam Patwari 2017]
(a) मदनमहल किला
(b) महाराजा किला
(c) राणा सांगा किला
(d) आमला किला

9. मंडला जिले का ऐतिहासिक किला ___ में है? [MP Vyapam Patwari 2017]
(a) राम नगर
(b) घुघरी
(c) बिछिया
(d) मवाई

10. देवगढ़ किला किसने बनाया? [MP Vyapam Patwari 2017]
(a) गोंड राजा-राजा जाराव
(b) चंद्रगुप्त मौर्य
(c) भोपाल का नवाब
(d) सम्राट अशोक

उपरोक्त प्रश्न में दिये गये विकल्प में विकल्प (a) सही है परंतु नाम गलत लिखा गया है, सही नाम जाटबा है।

11. दमोह में पहाड़ी किला कहां स्थित है? [MP Vyapam Patwari 2017]
(a) सिंगौरागढ़
(b) बौरबरी
(c) फतेहपुर
(d) असीरगढ़

12. मध्यप्रदेश के किस जिले में गढ़ाकोटा किला है? [MP Vyapam Patwari 2017]
(a) होशंगाबाद
(b) ग्वालियर
(c) रायसेन
(d) सागर

1. (d), 2. (b), 3. (b), 4. (b), 5. (d), 6. (b), 7.(b), 8. ( ), 9. ( ), 10. ( ),

CHAPTER 5

गोंड जनजाति

गोंड जनजाति भारत की सबसे बड़ी और प्राचीन जनजातियों में से एक है, जो मुख्य रूप से मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश और ओडिशा राज्यों में निवास करती है। यह जनजाति **द्रविड़ियन समूह** से संबंधित है और अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत तथा विशाल इतिहास के लिये प्रसिद्ध है।

- "**गोंड**" शब्द की उत्पत्ति **द्रविड़ भाषा के** "**कोंड**" शब्द से हुई है, जिसका अर्थ "**पर्वत**" होता है। गोंड लोग स्वयं को "**कोयतुर**" (पर्वतवासी मनुष्य) कहलवाना पसंद करते हैं, जिससे उनकी पर्वतीय संस्कृति और जीवनशैली का अंदाज़ा लगाया जा सकता है।

आंध्र जनजाति का इतिहास तथा मध्यप्रदेश के गोडो के साथ संबंध

आंध्र जनजाति द्रविड समूह की जनजाति है, जो मुख्यतः आंध्र प्रदेश में पाई जाती है। हालांकि मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ में यह जनजाति वैनगंगा नदी की घाटी में निवास करती है। इनका उल्लेख *ऐतरेय ब्राह्मण*, **मत्स्यपुराण** और **वायुपुराण** में मिलता है। इतिहासकारों के अनुसार सातवाहन राजाओं की उत्पत्ति आंध्र जनजाति से हुई थी। इस वंश का प्रथम **राजा सिमुक** था। इस वंश के 30 राजाओ ने 460 वर्ष तक राज किया। मध्यकाल के समय इसी जनजाति को गोंड कहा जाने लगा तथा अपनी सांस्कृतिक प्रवाह अवरोध (सांस्कृतिक धरोहर को बचाने) के लिये एवं अपनी पहचान को सुरक्षित रखने के लिये इन्होंने खुद को देवताओ की संख्या के आधार पर **4 भागों** में बाँट लिया है।

- **सात देव** वाले गोंड : इस वर्ग का पूज्य प्राणी '**सेही**' है।
- **छः देव** वाले गोंड : वर्ग का पूज्य प्राणी **बाघ** है।
- **पाँच देव** वाले गोंड : वर्ग का पूज्य प्राणी **सारस** पक्षी है
- **चार देव** वाले गोंड : वर्ग का पूज्य प्राणी **कछुवा** है।

5.1 उत्पत्ति, भोगौलिक वितरण

गोंड जनजाति की उत्पत्ति से जुड़ी कई पारंपरिक कथाएँ है। प्रचलित कथा के अनुसार, एक तुम्बे (लौकी) से दो व्यक्ति निकले। एक व्यक्ति ने **टंगिया** (एक कृषि उपकरण= कुल्हाड़ी) लेकर जंगल काटने चला गया और दूसरा व्यक्ति ने बस्ती का प्रबंधन संभाल लिया। जंगल काटने वाला व्यक्ति **बैगा** तथा बस्ती का प्रबंधन वाला व्यक्ति **गोंड** कहलाया।



तुम्बा (तूमा)

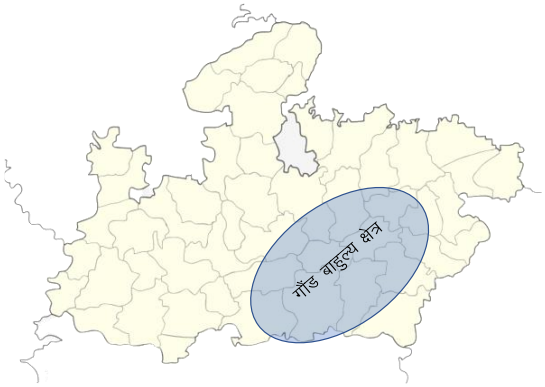
एक दुसरी कथा के अनुसार, भगवान के हाथ में उत्पन्न एक फोड़े से महादेव और पार्वती का जन्म हुआ। पार्वती के गर्भ से गोंडों की उत्पत्ति हुई। प्रारंभिक समय में गोंड व्यक्ति मांसाहारी थे, और गंदे तरीके से रहते थे। इसी कारण महादेव ने उन्हें किसी तरह एक गुफा में बंद कर दिया। कुछ समय बाद पार्वती जी को जब गोंडों की कोई सूचना नहीं मिली, तो उन्होंने महादेव से उनके उद्धार की प्रार्थना की। फलस्वरूप, महादेव ने लिंगों को उत्पन्न किया। लिंगो ने सबसे पहले गुफा में बंद गोंडों को बाहर निकाला और उन्हें सभ्य बनाने का प्रयास किया। उन्होंने गोंडों को कृषि के उपकरण प्रदान किये और खेती करना सिखाया। साथ ही, अग्नि की जानकारी देकर मांस व अन्य भोज्य पदार्थों को पकाकर खाने की विधि भी समझायी। इस प्रकार, लिंगो ने गोंडों को एक अधिक व्यवस्थित और बेहतर जीवन जीने की राह दिखायी।



लिंगों कथा

महादेव के द्वारा धवलगिरि (धौलगिरी) पर्वत पर **याहिन्दो** नामक पीला फूल खिलाया गया। फिर वहाँ तूफान और बिजली भेजकर उस फूल में गर्भ स्थापित कर दिया। सबसे पहले उस फूल से हल्दी या केसर का एक ढेर प्रकट हुआ। भोर होते ही, एक पुष्प प्रस्फुटित हुआ, जिससे **लिंगो** का जन्म हुआ। लिंगो एक पूर्ण शिशु के रूप में प्रकट हुए, जिनकी नाभि में हीरा जड़ा था और माथे पर चंदन का टीका लगा हुआ था। जैसे ही वह पुष्प से बाहर आए, वे हल्दी की ढेरी पर जा गिरे।

▶ भोगौलिक वितरण



यह जनजाति लगभग **सम्पूर्ण मध्य प्रदेश में निवासरत***** में निवास करती है, परंतु इनकी सर्वाधिक आबादी नर्मदा नदी के दोनों किनारों पर देखने को मिलती है। राज्य के गोंड बाहुल्य जिलों में बैतूल, छिंदवाड़ा, होशंगाबाद, बालाघाट, शहडोल, मंडला और सागर प्रमुख हैं। इन जिलों में गोंड जनजाति की आबादी अपेक्षाकृत अधिक पायी जाती है।

▶ गोंडो की उपजाति

वैसे तो मध्य प्रदेश में गोंड जनजाति की लगभग 50 उपजातियाँ पाई जाती हैं। लेकिन मुख्य रूप से **गये** ही वर्ग है।



- **राजगोंड** : ये शासक वर्ग से संबंधित थे और कृषक हिन्दुओं के समान जीवनशैली अपनाते थे। ये **जनेऊ धारण** करते थे और हिन्दू रीति-रिवाजों का पालन करते है।
- **धुरगोंड** : ये सैनिक वर्ग से संबंधित थे और 'ठेठ गोंड' या सामान्यजन होते है । **व्यवसाय** करने के आधार पर **गोंड जनजाति कई उपजनजातियो** में विभाजित है।

उपजनजाति	व्यवसाय
अगरिया ***	लोहे का काम करने वाला
प्रधान, पंडिताई	पूजा पाठ करने वाला
ओझा ***	तांत्रिक क्रियायें करने वाला
कोइलाभूतिस	नाचने गाने वाले गोंडो को कहा जाता है।
सोलाहास	बढ़ईगिरी का काम करने वाले को कहा जाता है।



▶ **भाषा/बोली** : गोंडी भाषा मुख्य रूप से भारत के मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, तेलंगाना और ओडिशा जैसे क्षेत्रों में बोली जाती है। आधुनिक समय में यह भाषा प्रायः देवनागरी या तेलुगु लिपि में लिखी जाती है। गोंडी भाषा, गोंड जनजाति की सांस्कृतिक व ऐतिहासिक धरोहर का एक महत्वपूर्ण अंग मानी जाती है।

प्रारंभ में गोंडी भाषा की अपनी कोई मूल या जन्मजात लिपि नहीं थी। परंतु, सन् 2014 में हैदराबाद विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं द्वारा "**गुंजल गोंडी लिपि**" की खोज ने इस धारणा को बदल दिया। इससे पहले, सन् 1918 में मध्य प्रदेश के बालाघाट जिले के

निवासी **मुंशी मंगल सिंह मासाराम** ने गोंडी भाषा के लिये एक लिपि बनाई, जिसे **मंगल सिंह मासाराम लिपि** या **मासाराम लिपि** कहा जाता है। यह लिपि ब्राह्मी से व्युत्पन्न विभिन्न भारतीय लिपियों के चयनित वर्णों पर आधारित थी। इसके अलावा गोंड जनजाति के लोग **डोरली**, **हल्बी** और **भतरी** भाषाएँ भी बोलते हैं।

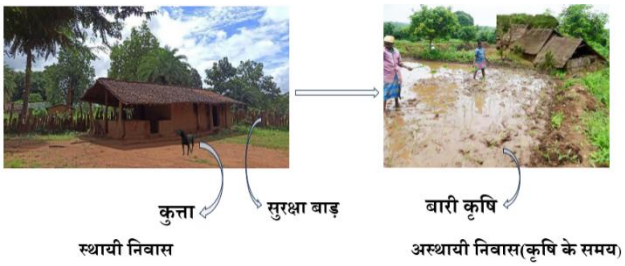
- **जन्म संस्कार** : गोंड समुदाय में नवजात शिशु का जन्म एक अत्यंत शुभ घटना माना जाता है। संतान के आगमन से परिवार और समुदाय में खुशी का माहौल बन जाता है। गोंड जनजाति में पुत्र और पुत्री, दोनों को समान महत्त्व दिया जाता है, जो उनकी समानतावादी सोच को दर्शाता है। जब पहली बार गर्भधारण के लक्षण दिखाई देते हैं, तो कुल देवी या कुल देवता की पूजा का उत्सव मनाया जाता है। यह उत्सव गर्भवती महिला और उसके परिवार के लिये आशीर्वाद और सुरक्षा की कामना के रूप में किया जाता है। प्रसव का कार्य गाँव की दो-चार अनुभवी और स्यानी महिलायें कराती हैं। ये महिलायें प्रसव के दौरान गर्भवती महिला की देखभाल और सहायता करती हैं, जिससे प्रसव सुगमता से सम्पन्न हो सके। छठे दिन **सोवर उठाई** की रस्म होती है, जिसे **छठी** भी कहा जाता है। इस दिन जच्चा (माँ) और बच्चे को नहलाकर शुद्ध किया जाता है। रात्रि में ध्रुवतारा दिखाने की रस्म पूरी की जाती है, जो नवजात शिशु के भविष्य के लिये शुभकामनाओं का प्रतीक है। बारहवें दिन **बारसा** (नामकरण) का कार्य किया जाता है। इस अवसर पर नवजात शिशु का नाम रखा जाता है और परिवार व समुदाय के सदस्य मिलकर इस शुभ घड़ी को हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं।



- **शारीरिक विशेषता** : गोंड जनजाति के लोगों की कद-काठी सामान्यतः छोटी होती है और त्वचा का रंग काला होता है। इनके होंठ मोटे और बड़े होते हैं, जबकि नाक चपटी और चौड़ी दिखाई देती है। उनका मुँह भी अपेक्षाकृत चौड़ा होता है। इनके बाल सामान्यतः सीधे होते हैं। ये सभी शारीरिक विशेषताएँ इनके **द्रविड़ियन मूल** की पहचान को स्पष्ट रूप से दर्शाती हैं।
- **वेशभूषा और आभूषण** : गोंड जनजाति की वेशभूषा और आभूषण उनकी सांस्कृतिक पहचान और परंपराओं को दर्शाते हैं। गोंड पुरुष अधिकतर कमर के नीचे वस्त्र पहनते हैं। यह वस्त्र सादे और सुविधाजनक होते हैं, जो उनकी दैनिक गतिविधियों के अनुकूल होते हैं। गोंड महिलायें **आभूषण** और **गोदना** (गुदना) का अत्यधिक प्रचलन होता हैं। आभूषणों में **पीतल**, **मोती**, **गिलट**, और **मूंगा** का उपयोग किया जाता है।



- **गोदना (गुदना) की प्रथा** : जनजाति वर्ग के बीच शरीर गुदाने की परंपरा अधिक प्रचलित है। इसके पीछे मान्यता है कि ये स्त्री के सच्चे आभूषण हैं, जो मरते समय भी उसके साथ जाते हैं और देवताओं को प्रसन्न रखते हैं। गोदना शरीर को सुंदर और स्वस्थ बनाता है। यह धारणा प्रायः हर आदिवासी समाज में देखने को मिलती है। गोंड समुदाय में लड़कियाँ करीब छह-सात वर्ष की आयु से ही गोदना गुदवाना शुरू कर देती हैं। वे बाँह, हाथ, पोंहचा, गले, छाती, मस्तक, पैर आदि शरीर के कई अंगों पर गोदना गुदवाती हैं। महिलाओं के गुदनों में अनेक प्रकार के पारंपरिक रूपाकारों का समावेश होता है। बाँह, छाती, मस्तक, पोंहचा आदि अंगों पर अलग-अलग तरह के गुदने बनाये जाते हैं, जिनका उन अंगों पर गुदवाना प्रचलित नियमों के अनुसार अनिवार्य माना जाता है। गोंड समुदाय में गुदने का कार्य बादी जाति की महिलायें, जिन्हें "बदनिन" कहते हैं, संपन्न करती हैं। इन बदनिन का समाज में बड़ा सम्मान है। गुदवाने के लिये इन्हें आमंत्रित किया जाता है और बतौर नेग दक्षिणा भी दी जाती है।
- **खानपान** : इन्हें **मोटे अनाज**, **कंदमूल**, और **मोटे अनाज से बने पेय पदार्थ**, जैसे **पेज**, **अत्यधिक प्रिय** होते हैं। ये पारंपरिक खाद्य पदार्थ न केवल उनके आहार का मुख्य हिस्सा हैं, बल्कि उनकी सांस्कृतिक पहचान को भी दर्शाते हैं। बंजारों ने गोंड जनजाति के लोगों को **नमक** और **गुड़** जैसे नए स्वादों से परिचित कराया। यह पहला मौका था जब गोंड लोगों ने बाहरी दुनिया के साथ संपर्क स्थापित किया। बंजारे ही वे पहले व्यक्ति थे, जिनके साथ गोंड जनजाति का सम्पर्क हुआ। इस संपर्क ने गोंड समुदाय के जीवन में नए बदलाव लाए और उनकी सांस्कृतिक गतिविधियों को प्रभावित किया।



- **निवास** : गोंड जनजाति प्रायः घने जंगलों और ऊँचे पहाड़ों पर निवास करती है। इनके रहने का स्थान ही उनकी

जीवनशैली और संस्कृति को गहराई से प्रभावित करता है। हालाँकि, समतल या मैदानी क्षेत्रों में गोंडों का बसना मुख्यतः कृषि योग्य भूमि और सुरक्षा के दृष्टिकोण से होता है।

गोंड समुदाय के घर सामान्यतः घास, फूस और मिट्टी से बने होते हैं। ये घर सादगी और प्रकृति के प्रति उनके सामंजस्य को दर्शाते हैं। आवासों का निर्माण स्थानीय संसाधनों का उपयोग करके किया जाता है, जिससे पर्यावरण के प्रति उनके सम्मान का पता चलता है।

नोहडोरा चित्रकला के अंतर्गत महिलायें मिट्टी की उभरी हुई रेखाओं के माध्यम से विविध प्रकार के अलंकरण तैयार करती हैं। जब नया घर बनाया जाता है, तब महिलायें दीवारों पर मिट्टी से बने पशु-पक्षी, फूल-पत्तियाँ, पेड़-पौधे और देवी-देवताओं की आकृतियाँ उकेरती हैं। यह कला गीली दीवार पर बनायी जाती है, जिससे चित्र और आकृतियाँ दीवार से जुड़े हुए प्रतीत होते हैं।

ये भित्ति चित्र विशेष रूप से **शिशु जन्म** और **विवाह** जैसे शुभ अवसरों पर भी बनाये जाते हैं। मध्य प्रदेश के शहडोल जिले में इन विशेष चित्रों को **कोहबर** कहा जाता है। विवाह के समय इन्हें चूने और गेरू से और भी अधिक सुंदर तरीके से सजाया जाता है।



गोंड जनजाति की संस्कृति में **कुत्ते** का विशेष महत्त्व है। उनका मानना है कि कुत्ता भू देवी और ठाकुर देव का "कोटवार" या चौकीदार होता है। यदि किसी गाँव में कोई बीमारी या महामारी आती है, तो कुत्ता उसे देखकर भौंकने लगता है, जिससे लोग सतर्क हो जाते हैं। इसलिये गोंड समुदाय में कुत्ता पालना शुभ माना जाता है। गोंड समाज में अतिथियों को विशेष सम्मान दिया जाता है। प्रत्येक घर में अतिथियों के लिये एक साफ-सुथरा और छोटा कमरा बनाया जाता है, जो उनकी मेहमान नवाजी और सामाजिक मूल्यों को प्रदर्शित करता है।

- **सामाजिक व्यवस्था** : गोंड समाज एक पितृवंशीय और पितृसत्तात्मक समाज है। यहाँ परिवार का सबसे वृद्ध पुरुष मुखिया माना जाता है, जो परिवार के सभी निर्णयों में प्रमुख भूमिका निभाता है। परिवार के सदस्य उसकी आज्ञा का पालन करते हैं और उसके निर्देशों का सम्मान करते हैं।

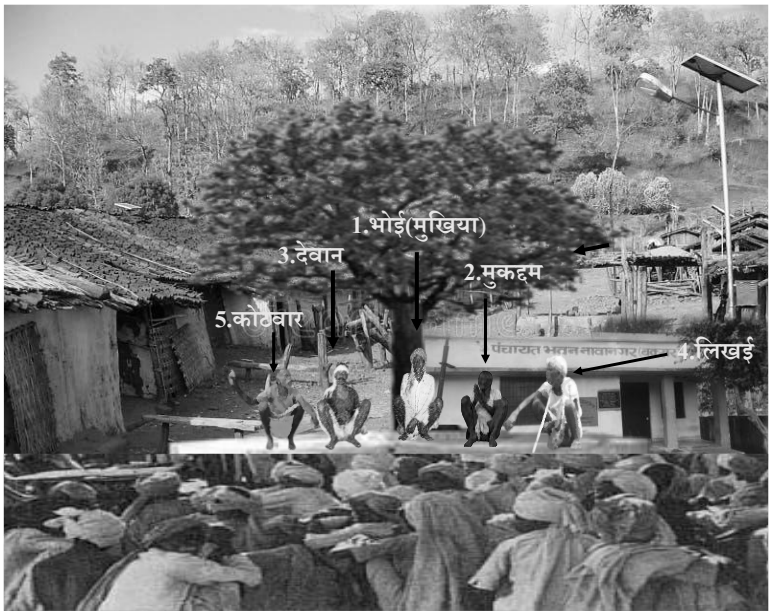
  गोंड जनजाति के अनुसार, बीज (पुरुष) को खेती (महिला) से अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। यह धारणा उनके सामाजिक और आर्थिक जीवन में लैंगिक भूमिकाओं को निर्धारित करती है। हालाँकि, गोंड समाज में महिलाओं का भी अपना महत्त्व होता है। बुजुर्ग महिलाओं को "स्यानी" कहा जाता है और किसी भी महत्वपूर्ण कार्य में उनकी सलाह अवश्य ली जाती है। इससे पता चलता है कि गोंड समाज महिलाओं के अनुभव और ज्ञान का सम्मान करता है।

- **गोंड पंचायत** : गोंड समाज में पंचायत व्यवस्था सामाजिक और प्रशासनिक न्याय का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है। साधारणतः गोंड पंचायत में पाँच सदस्य होते हैं, हालाँकि इनकी संख्या और पदों में परिवर्तनीयता पायी जाती है। यह लचीलापन समाज की आवश्यकता और परिस्थिति के अनुरूप पंचायत के स्वरूप को निर्धारित करता है। गोंड पंचायत को कई क्षेत्रों में **परगना** भी कहा जाता है। यह पंचायत समाज के विवादों को सुलझाने, नियम बनाने और उन्हें लागू करने का कार्य करती है। इस प्रकार गोंड समाज की सामूहिकता और स्वशासन की परंपरा स्पष्ट दिखाई देती है। गोंड पंचायत का **प्रमुख भोई***** कहलाता है। अलग-अलग क्षेत्रों में इसे **मांझी**, **देशमुख**, **मुखिया** या **गोटिया** जैसे नामों से भी जाना जाता है। यही पद पंचायत का नेतृत्व संभालने और प्रशासनिक जिम्मेदारियाँ निभाने का कार्य करता है।

  1. **भोई** : भोई पंचायत के सभी निर्णयों में अहम भूमिका निभाता है। वह समाज के विवादों को सुनता है, न्याय करता है और सामाजिक नियमों को लागू करता है। समाज में भोई का पद सम्मान और अधिकार का प्रतीक माना जाता है।
  2. **मुकद्दम** : पंचायत में मुकद्दम का स्थान दूसरा होता है। मुकद्दम की नियुक्ति परंपरागत होती है, अर्थात पिता के बड़े पुत्र को मुकद्दम बना दिया जाता है। इसका मुख्य कार्य गाँव में मालगुजारी (लगान) एकत्रित करना है। साथ ही, मुखिया को आवश्यकता पड़ने पर

उचित सलाह देना भी मुकद्दम की ज़िम्मेदारी होती है। पंचायत के प्रशासनिक और आर्थिक कार्यों में यह पद महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

3. **देवान** : देवान का मुख्य काम मुकद्दमे से जुड़े दोनों पक्षों के बारे में गुप्त सूचनाएँ एकत्रित करना और उन्हें मुखिया को बताना होता है। इस पद का होना पंचायत में पारदर्शिता बनाये रखने और न्यायपूर्ण निर्णय लेने में सहायता करता है।



4. **लिखई** : जनजातीय पंचायत में **लिखई** एक बुजुर्ग व्यक्ति होता है, जिसका मुख्य कार्य पंचायत के निर्णयों में अपने अनुभव और ज्ञान का योगदान देना है। समाज में लिखई की भूमिका सम्मान और विश्वास का प्रतीक मानी जाती है, क्योंकि उसके मार्गदर्शन से पंचायत उचित निर्णय ले पाती है।

5. **कोटवार** : कोटवार का मुख्य कार्य सरकारी सूचनाएँ एकत्रित करना, गाँव में आने वाले अधिकारियों के रहने और भोजन की व्यवस्था करना, जन्म-मृत्यु का हिसाब रखना तथा चोरी जैसी घटनाओं की जानकारी पुलिस को देना होता है। यह पद गाँव की प्रशासनिक और सुरक्षा संबंधी जिम्मेदारियों को संभालता है।।

6. **अन्य व्यक्ति** : गोंड पंचायत में अन्य महत्वपूर्ण व्यक्तियों में गुनिया, बरुआ/पण्डा शामिल होते हैं।
   a. **गुनिया** : **गुनिया** गाँव में चिकित्सक का कार्य करता है। अधिकतर बीमारियों का इलाज वही करता है।
   b. **बरुआ/ पण्डा** : बरुआ समाज के धार्मिक अनुष्ठानों को संपन्न करवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। समय-समय पर बरुआ को भाव आते हैं, जिसके प्रभाव से वह भूत-प्रेत की बाधाओं को दूर करके गाँव को सुरक्षा प्रदान करता है।

गोंड पंचायत की यह व्यवस्था समाज में न्याय, अनुशासन और एकता को बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। प्रत्येक पद की अपनी विशिष्ट भूमिका होती है, जो पंचायत के सुचारू **संचालन** में योगदान देती है। यह व्यवस्था गोंड समाज की **सामूहिकता** और **स्वशासन** को प्रदर्शित करती है।



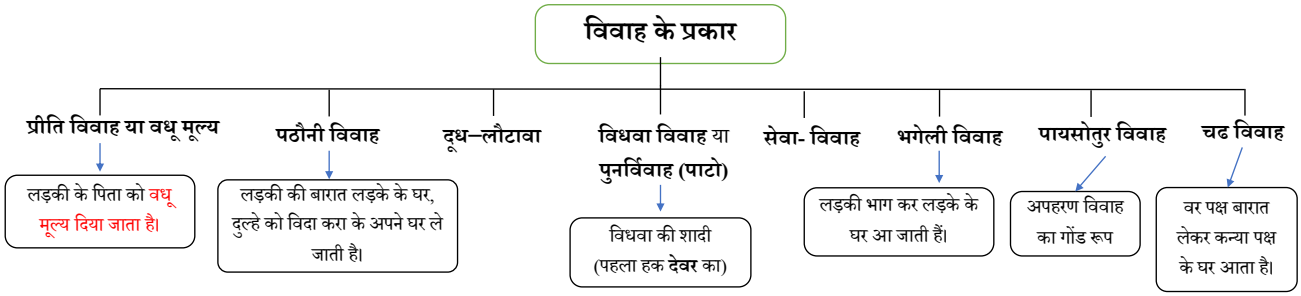
▶ **विवाह प्रथा** : गोंड जनजाति के लिये विवाह केवल वंशवृद्धि का साधन नहीं, बल्कि आदिम प्रेम, परस्पर सहयोग और सहज आकर्षण की अभिव्यक्ति माना जाता है। यह समाज में एक पवित्र बंधन है, जो न केवल दो व्यक्तियों, बल्कि दो परिवारों को भी जोड़ता है। गोंड समाज में विवाह का उद्देश्य सामाजिक और आर्थिक सुरक्षा सुनिश्चित करना ही नहीं, बल्कि जीवन के प्रति साझा दृष्टिकोण और सहयोग की भावना को भी सुदृढ़ करना है। गोंड समाज में विवाह की परंपराएँ मुख्य रूप से सामाजिक और नैतिक मूल्यों पर आधारित होती हैं। इस समाज में **ददिहाल** (पिता का परिवार) और **ननिहाल** (माता का परिवार) के बीच विवाह को नैतिक अधिकार माना जाता है। ऐसा करने से पारिवारिक संबंध मजबूत होते हैं और समाज में एकता बनी रहती है।

दूध – लौटावा***: गोंड समाज में "दूध लौटाना" नामक एक विशेष परंपरा भी पायी जाती है। इसके अनुसार लड़की की शादी उसके ममेरे या फुफेरे भाई से की जाती है। यह परंपरा गोंड समाज की सांस्कृतिक विरासत और सामाजिक मूल्यों को दर्शाती है तथा पारिवारिक बंधनों को गहराई से जोड़ती है।

वधू मूल्य

वर पक्ष द्वारा वधू के परिवार को दिए जाने वाले **धन**, **उपहार** या **संपत्ति** का भुगतान, जो विवाह को संपन्न करने के लिये एक प्रकार का प्रतीक या समझौता होता है।

सेवा विवाह *** : यदि वर (दूल्हा) वधू मूल्य (दहेज) नहीं चुका पाता, तो उसे वधू के माता-पिता की सेवा करनी होती है। यह सेवा वर (दूल्हा) के समर्पण और प्रतिबद्धता को दर्शाती है। इस प्रक्रिया में वर को लामानाई कहा जाता है। लामानाई की अवधि सामान्यतः **3 से 7 वर्ष** तक होती है। इस दौरान वर, वधू के माता-पिता के घर में रहकर उनकी सेवा करता है और घरेलू कार्यों में सहयोग देता है। वधू के माता-पिता वर के समर्पण और मेहनत से प्रसन्न होकर अपनी कन्या का विवाह उसी से कर देते हैं।

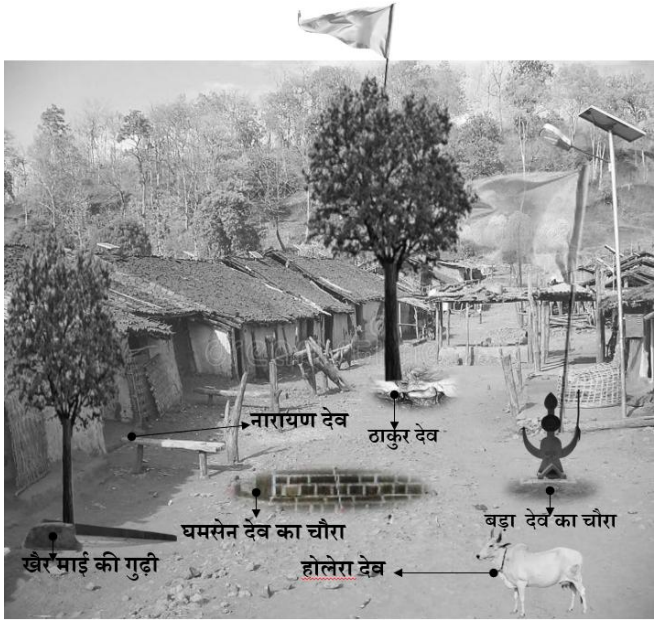


- **अर्थव्यवस्था** : गोंड समाज का मुख्य व्यवसाय कृषि है। यह समाज प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाकर जीवन यापन करता है और कृषि को अपनी आजीविका का प्रमुख साधन मानता है। गोंड समाज द्वारा की जाने वाली कृषि को 'बारी' कहा जाता है। अधिकांश गोंड परिवारों के पास अपनी खेती की जमीन नहीं होती है। इसी कारण वे हरवाही खेती (जिसे बटाईदारी भी कहा जाता है) करते हैं। हरवाही खेती में किसान भूमि मालिक की जमीन पर खेती करता है और उपज का एक हिस्सा भूमि मालिक को देता है। अक्सर हरवाही खेती करने वाले गोंड किसानों को आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, क्योंकि भूमि मालिक का कर्ज लगातार बढ़ता रहता है। इस कारण किसान कर्ज के जाल में फँस जाते हैं और यह कर्ज पीढ़ी दर पीढ़ी चलता रहता है, जिससे गरीबी और आर्थिक असमानता बनी रहती है।

  - कृषि के अतिरिक्त यह जनजाति वनोपज संग्रहण (मुख्यतः तेंदूपत्ता व महुआ) का कार्य भी करती है।
  - महिलाओं का एक प्रिय कार्य वृक्ष से **चिरोंजी** इकट्ठा करना है।
  - **सियारी** : खरीफ की फसल को सियारी कहा जाता है।
  - **उन्हारी** : रबी की फसल उन्हारी कहा जाता है।

> गोंड जनजाति के प्रमुख देवताओं के नाम लिखिये।
> [MPPSC (Civil Main) GS-II 2023, | 3 M]

- **धार्मिक जीवन** : गोंड जनजाति के धार्मिक विश्वास में प्रकृति, पूर्वजों और आत्माओं की पूजा का विशेष स्थान है। उनके धार्मिक जीवन में **टोटम** का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है, जो उनके सामाजिक और धार्मिक जीवन का अभिन्न अंग है। टोटम उनके विश्वास और पहचान को दर्शाता है। गोंड जनजाति अपनी उत्पत्ति लिंगादेव से मानती है, जिनकी पूजा बड़ा देव के रूप में की जाती है। बड़ा देव को कोयापुनेम भी कहा जाता है। यह देवता गोंड जनजाति का प्रमुख देवता है और उनके धार्मिक जीवन का केंद्र बिंदु माना जाता है।

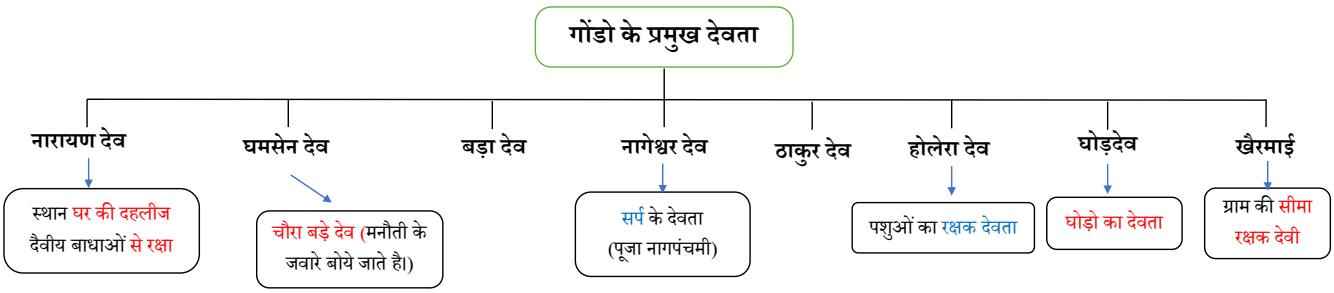


इसके अतिरिक्त, गोंड जनजाति ठाकुर देव, दुल्हादेव, सूरजदेव, नारायण देव,सुरजा देव और घमसेन देव जैसे अन्य देवताओं की पूजा भी करता है। गोंड जनजाति मातृशक्ति की पूजक मानी जाती है। उनके लिये खेरमाई माई, बंजारिन माई, रातमाई, शारदा माई, बूढ़ी माई और मरही माता प्रमुख देवियाँ हैं। माना जाता है कि इन देवियों का निवास गाँव के **मड़ई, चौरा** या **गुडी*** में होता है। गोंड समाज के परंपरागत पुरोहितों बैगा होते है।

- **बड़ा देव :** बड़ा देव सबसे **बड़ा** और **व्यापक देवता***** है। गोंड जनजाति उस शक्ति को सर्वमान्य मानती है, जिसे वे अपना बड़ा देव मानते हैं। बड़ा देव की सवारी सफेद घोड़ा है। उनका स्थान गाँव के पूर्व भाग में स्थित होता है, जहाँ साल में एक बार उनकी पूजा अवश्य की जाती है।

  गोंड जनजाति बड़ा देव (महादेव) को '**बूढ़ा देव**' भी कहते हैं। वस्तुतः गोंडों की अपनी भाषा में 'बूढ़ा' का अर्थ 'अनादि' देव से है, अर्थात् वह देवता जो **कालातीत** है।

- **ठाकुर देव :** ठाकुर देव, गोंड जनजाति के **ग्राम देवता** हैं। वे गाँव के रक्षक के रूप में पूजे जाते हैं। ठाकुर देव अश्व की सवारी करते हुए गाँव की सीमा पर पहरा देते हैं। उनका स्वरूप श्वेत वस्त्रधारी, सौम्य और मनोहारी होता है। ठाकुर देव के बरूआ भी होते हैं, जिन्हें समय समय पर भाव आते है। गाँव में, ठाकुर देव का स्थान एक विशेष वृक्ष के नीचे स्थापित होता है। यहाँ सफेद मुर्गी और नारियल चढ़ाये जाते हैं तथा उस वृक्ष पर सफेद ध्वजा फहरायी जाती है।



- **माई** : बंजारिन देवी (जिसे वन देवी कहा जाता है), रातमाई, अंधेरी माई, शीतला माई (ममतामयी माता) और शारदा माई प्रमुख देवी के रूप में पूजी जाती हैं।इसके अतिरिक्त, बूढ़ी माई को बड़ी चेचक के नाम से और छोटी माता को गोंड कसलाई कहा जाता है। हैजा तथा प्लेग जैसी बीमारियों को मरहीमाता के नाम से संबोधित किया जाता है। वहीं, मलेरिया की बीमारी को हुलकी माई या दलकी माई के रूप में जाना जाता है।

▶ **गोंड जनजाति के प्रमुख पर्व/ त्यौहार** : गोंड समाज में पर्व-त्यौहार बहुत खुशियों से भरे होते हैं और ये उनकी संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग हैं। चाहे कोई भूखा और निर्धन आदिवासी हो या धनवान और सुखी, सभी एक समान उमंग और उत्साह के साथ अपने त्यौहार मनाते हैं।



- **बिदरी :** 'बिदरी' शब्द का संबंध बादलों से माना जाता है। यह पर्व वर्षा ऋतु के आगमन से पहले मनाया जाता है, जिसका उद्देश्य बादलों, भूदेवी (पृथ्वी माता) और अन्न की पूजा करना होता है। बिदरी पर्व का आयोजन **ज्येष्ठ मास** में किया जाता है और इसमें ग्राम के सभी लोग भाग लेते हैं। पर्व के दिन गाँव के लोग **दोने** (पत्तों से बने पात्र) में अनाज भरकर **ठाकुर देव** के स्थान पर एकत्र होते हैं और अनाज को एक स्थान पर इकट्ठा कर देते हैं। सूर्योदय से पहले **बैगा** (पुजारी) स्नान करके एक लोटा जल लेकर पूजा स्थल पर पहुँचता है। वहाँ सबसे पहले ठाकुर देव को **अछत** (हल्दी मिश्रित चावल) अर्पित किया जाता है। इसके बाद सफेद मुर्गों की बलि दी जाती है। पूजा के उपरांत एकत्रित अनाज को गाँव के सभी लोगों में बाँट दिया जाता है। लोग इस अनाज को अपने बीजों में मिलाकर खेतों में बोते हैं और भगवान से अच्छी फसल की प्रार्थना करते हैं। **बिदरी पर्व** गोंड जनजाति का एक प्रमुख **कृषि संबंधी त्योहार** है।

- **नवाखानी** : गोंड समुदाय में **नवाखानी** एक प्रमुख पर्व है, जो **फसल कटाई** और **पितृ-पूजा** से जुड़ा होता है। यह त्यौहार **भाद्रपद मास** के **शुक्ल पक्ष** की किसी भी तिथि को, समुदाय की सुविधा और परंपरा के अनुसार मनाया जाता है। इस पर्व में नई फसल के अन्न को सबसे पहले पूर्वजों को अर्पित किया जाता है, और फिर समुदाय द्वारा उसका सेवन किया जाता है।

- **जवारा** : जवारा एक धार्मिक पर्व है, जो वर्ष में दो बार मनाया जाता है। यह पर्व एक बार **आश्विन (क्वार)** मास में और दूसरी बार **चैत्र** मास में मनाया जाता है। जवारा पर्व दोनों मासों की **शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा (एकम)** से लेकर **नवमी** तिथि तक मनाया जाता है। यह पर्व गोंड जनजाति द्वारा **शक्ति पूजा** के रूप में मनाया जाता है।
- **चैत्र उत्सव*** :** गोंड जनजाति द्वारा चैत्र माह में एक प्रसिद्ध नृत्य उत्सव मनाया जाता है, जिसे **चैत्र उत्सव** कहा जाता है। यह उत्सव फसल कटाई के बाद मनाया जाता है। इस अवसर पर गोंड समुदाय की महिलायें और पुरुष देवी **अन्नपूर्णा** को पहले से प्राप्त फसल के लिये धन्यवाद देते हैं और अगली फसल के लिये उनका आशीर्वाद माँगते हैं।
- **मड़ई** : मड़ई एक पारंपरिक धार्मिक उत्सव है, जिसे दीपावली की प्रतिपदा से लेकर कार्तिक पूर्णिमा तक बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। **'मड़ई' शब्द की उत्पत्ति 'मड़वा' शब्द से मानी जाती है**, जिसका अर्थ होता है एक प्रकार का मंडप या छायादार ढांचा, जहाँ धार्मिक आयोजन किये जाते हैं। समय के साथ मड़ई का स्वरूप बदल गया है और अब यह मेलों के रूप में विकसित हो चुका है। इन मेलों में ग्रामीण जन बड़ी संख्या में भाग लेते हैं और इसे उत्साहपूर्वक मनाते हैं। मड़ई में विशेष रूप से "मंडप" बनाकर **दौगुन** और **गंगाइन देवी** का विवाह रचाया जाता है। मध्यप्रदेश के **मण्डला एवं डिण्डोरी** जिले में मेले आयोजित किये जाते है नारायणपुर का मढ़ई मेला अत्यधिक प्रसिद्ध है।
- **बकबन्धी** : गोंड जनजाति में **आषाढ़ मास की पूर्णिमा**, जिसे **गुरु पूर्णिमा** भी कहा जाता है, विशेष रूप से मनायी जाती है। इस अवसर पर **बैगा** (पुजारी) **पलाश के पौधों** की जड़ों से रेशे निकालता है और उन्हें हल्दी में रंगता है। फिर वह मंत्र पढ़ते हुए इन रेशों को घर के प्रत्येक गोंड युवक की कलाई में बाँधता है। साथ ही, वह इन रेशों को घर और खेत में भी गाड़ देता है। यह परंपरा **प्रकृति जन्य रक्षाबंधन** के रूप में जानी जाती है। इसके पीछे एक **प्राचीन मान्यता** है कि **लिंगादेव** ने जब अग्नि परीक्षा दी थी, तो उन्होंने **नागा बैगा** से यह विशेष धागा बंधवाया था। उसी धागे ने अग्नि से लिंगादेव की रकजाता है। 'हरेली' शब्द वास्तव में 'हरियाली' का अपभ्रंश है, जिसका अर्थ होता है – हरियाली या प्रकृति की ताजगी। मान्यता के अनुसार, इस दिन **टोना-टोटका, टोन्ही और डाइनें** विशेष रूप से सक्रिय होती हैं। इसलिये ग्रामीण क्षेत्रों में इस दिन विशेष सावधानी बरती जाती है और घरों तथा खेतों की सुरक्षा के लिये विशेष उपाय किये जाते हैं।
- **मांडवरा त्योहार***: गोंड आदिवासी समुदाय चैत माह के प्रथम दिन मांडवरा त्योहार मनाता है। इस दिन पशुओं के रहने के स्थान, यानी उनके घरों के दरवाजों पर आम की पत्तियों का तोरण (बंदनवार) बांधकर पूजा की जाती है। यह पूजा पशुओं की सुरक्षा और सुख-समृद्धि के लिये की जाती है। चैत माह में ही गोंड जनजाति **अक्ति**, जिसे **अक्षय तृतीया** भी कहा जाता है, का पर्व भी मनाती है। यह पर्व नई फसल, शुभ आरंभ और प्राकृतिक संतुलन के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है।
- **पोला/ हरढिली** : पोला, सम्पूर्ण गोंडवाना क्षेत्र का एक प्रमुख त्योहार है। यह पर्व भाद्रपद मास की पड़वा (अर्थात अमावस्या के अगले दिन) को मनाया जाता है। इस समय तक धान की खेती के लिये बैलों द्वारा किये जाने वाले सभी प्रमुख कार्य पूर्ण हो जाते हैं। इसलिये इस पर्व को विशेष रूप से बैलों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिये मनाया जाता है। गोंड जनजाति के लोग इस दिन बैलों को अच्छे से नहलाते हैं, सजाते हैं और उन्हें पूजन कर आदरपूर्वक धन्यवाद देते हैं। यह पर्व जनजातीय संस्कृति में पशुओं के साथ प्रेम, सहयोग और सम्मान के भाव को दर्शाता है।



- **भोजली** : 'भोजली' एक पारंपरिक त्योहार है, जो **श्रावण मास** में मनाया जाता है। यह त्योहार अच्छी फसल की कामना के लिये मनाया जाता है। इस पर्व में प्रकृति की शक्तियों के साथ-साथ भूमि और बीजों की प्रजनन शक्ति को जाग्रत करने तथा उनकी आराधना करने की परंपरा है।
- **छेरता** : यह उत्सव **पौष मास की पूर्णिमा** को मनाया जाता है। यह विशेष रूप से **बच्चों का त्योहार** होता है। इस दिन बच्चे टोली बनाकर गाँव में निकलते हैं। प्रत्येक



बच्चे के हाथ में बांस की एक छड़ी होती है और कंधे पर एक झोली टंगी होती है। बच्चे घर-घर के आंगन में खड़े होकर छड़ी की नोंक से ज़मीन को कुरेदते हैं और जोर-जोर से बोलते हैं – **"छेर छित्ता छेरता, छेर छित्ता छेरता!"**

- **दीवाली :** गोंड जनजाति में **दीवाली उत्सव** क्वार मास की अमावस्या से प्रारंभ होकर कार्तिक पूर्णिमा तक पंद्रह दिनों तक मनाया जाता है। इस पूरे उत्सव का विशेष धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व होता है। अमावस्या की रात्रि को गोंड समुदाय के लोग विशेष मंत्रों द्वारा औषधियों को जागृत करते हैं और उन्हें सिद्ध किया जाता है। इस रात को विशेष रूप से शुभ माना जाता है। अमावस्या की रात गोंड बालकों में **"ढर्रा देने"** की एक अनोखी प्रथा होती है।
- **मेघनाद :** गोंड आदिवासी समाज में फाल्गुन महीने के पहले पक्ष में **मेघनाथ त्योहार** मनाया जाता है। यह त्योहार गोंडों के **सर्वोच्च देवता मेघनाथ** के सम्मान में आयोजित किया जाता है। मेघनाथ को गोंड समाज में अन्य नामों से भी जाना जाता है, जैसे—**खंडेरा** और **खट्टा**।
- **लारूकाज :** लारूकाज गोंड आदिवासियों द्वारा **नारायण देव** के सम्मान में मनाया जाने वाला एक प्रमुख त्यौहार है। यह पर्व सुअर के विवाह का प्रतीक माना जाता है। इस विशेष अवसर पर गोंड समुदाय द्वारा सुअर की बलि दी जाती है, जिसे धार्मिक आस्था और परंपरा से जोड़ा जाता है।

▶ **नृत्य/वाद्य** : गोंड जनजाति काफी रंगप्रिय जनजाति है। इनमें अलग अलग आयोजनो पर अलग अलग नृत्य करने की प्रथा है।

नृत्य	विशेष
करमा नृत्य	कर्म पूजा के उत्सव पर
सैला नृत्य	केवल पुरूषों द्वारा किया जाता है।
भडौनी	विवाह नृत्य है। महिलाएं मण्डप के नीचे करती है।
बिरहा	बारात के वापसी के समय
कहरवा	बाराती पुरूष – स्त्री के द्वारा किया जाता है।
सजनी	लड़की को लेने समधी के आने पर
सुआ नृत्य	धान की फसल के पकने पर
विस्तृत व्याख्या *Chapter* -18 में की गयी है।	

बाना : गोंड जनजाति का एक विशेष वाद्य यंत्र होता है, गोंड समुदाय की एक प्रसिद्ध कथा के अनुसार, सबसे छोटे गोंड भाई ने इस वाद्य यंत्र को बजाकर नाराज़ होकर साजा के पेड़ में समा गये **बड़े भाई** को प्रसन्न किया था। इस वाद्य यंत्र को बनाने की पूरी विधि स्वयं बड़ा देव ने एक स्वप्न के माध्यम से गोंड राजा को बतायी थी। यह यंत्र **साजा वृक्ष** की लकड़ी से तैयार किया जाता है, और उसे बजाने के लिये **धनुषाकार हथौड़ी** भी बनायी जाती है।

▶ **गीत / संगीत**

- **ददरिया गीत** : ददरिया गीत गोंड जनजाति की एक लोकगीत शैली है, जिसे बारात के दौरान गाया जाता है। बारात के लोग रास्ते में चलते समय **सेखी बढ़ाने** के लिये इस गीत का गायन तथा ददरिया नृत्य करते हैं। ये गीत **वीर रस** से पूर्ण होते हैं।
- **नहडोरा गीत** : जब लड़का (वर) बारात के लिये तैयार हो रहा होता है, उस समय घर की दीवारों पर **नोहडोरे** के पारंपरिक चित्र बनाये जाते हैं। साथ ही, इस अवसर पर स्त्रियाँ मिलकर **नहडोरा गीत** गाती हैं।
- **झूमा झूमर** : यह प्रेम गीत होते है। प्रियतमा अपने प्रीतम की याद में इन गीतो को गाती है।
- **करमा गीत** : कर्मा नृत्य के दौरान करमा गीत का गायन होता है। करमा गीत 4 प्रकार के होते है। करमा ठाढा, करमा लहकी, करमा लंगडा, करमा रागिनी
- **सैला भडौनी** : गोंड जनजाति में विवाह के अवसर पर गाये जाने वाले कुछ गीतों में एक-दूसरे पर मज़ाक करने और व्यंग्य कसने की परंपरा होती है। इन गीतों के माध्यम से आपसी हास-परिहास किया जाता है। कभी-कभी इन गीतों में हल्की-फुल्की गालियाँ भी दी जाती हैं, जो विवाह की रस्मों का हिस्सा मानी जाती हैं।
- **सजनी** : जब समधी, समधन के घर आता है, उस समय **सजनी गीत** गाये जाते हैं। ये गीत पारंपरिक लोकसंस्कृति का हिस्सा होते हैं और रिश्तों में प्रेम, सम्मान व अपनापन दर्शाते हैं।

खेहुल पाटा/ डोल पाटा/ हनाल पाटा

इस प्रकार के गीतों का गायन गोंडो की उपजाति मुरिया में किसी सम्मानीय मुरिया की मृत्यु होने पर किया जाता है। इन गीतों के दौरान कातुर ढोल नामक वाद्य बजाया जाता है।

- **जस गीत** : जब किसी की प्रशंसा या यश का बखान करना होता है, तब जो गीत गाए जाते हैं, उन्हें **जस गीत** कहा जाता है। इन गीतों का अधिकतर गायन **बूढ़ादेव** के सम्मान में किया जाता है।
- **कहरवा** : बारात की वापसी होती है, उस समय **कहरवा गीत** गाये जाते हैं**फाग** : इनका गायन फाल्गुन मास में किया जाता है।
- **सेताम** : इन गीतों के माध्यम से प्रीतम अपनी प्रीतमा पर प्रेम स्वरूप व्यंग करता है।
- गोंड अपना समय गुजारने, बुद्धि परीक्षण तथा मनोरंजन के रूप में पहेलियां पूछते है। इन पहेलियों को धंधा कहते है।

▶ **मृत्यु संस्कार** : गोंड जनजाति में मृत्यु से जुड़ी दो प्रमुख विधियाँ प्रचलित हैं शव को जलाना और दफनाना। इन दोनों विधियों का उपयोग स्थिति और परंपरा के अनुसार किया जाता है। गोंड समुदाय में **पुनर्जन्म** की मान्यता नहीं होती है। इनकी मान्यता है कि मृत्यु के बाद भी आत्मा का मोह अपने घर और परिवार से बना रहता है। इस आत्मिक मोह को समाप्त करने के लिये गोंड लोग एक विशेष परंपरा का पालन करते हैं। जब शव यात्रा निकाली जाती है, तो रास्ते में जहाँ-जहाँ शव को थोड़ी देर के लिये रखा जाता है, वहाँ वे **बेर** और **बबूल** की झाड़ियों को पत्थर से दबा देते हैं। ऐसा करने का उद्देश्य आत्मा का मार्ग अवरुद्ध करना होता है, ताकि वह वापस न लौटे। मृत्यु के बाद दसवें दिन गोंड समुदाय में **दशमानी** या **दशगात्र** नामक क्रिया-कर्म किया जाता है, जिसे **बड़ा कर्म** भी कहा जाता है। इस अवसर पर न केवल सगोत्री जन, बल्कि अन्य जातियों के लोगों को भी आमंत्रित किया जाता है। आमंत्रित लोग अपने साथ **सहाय** लाते हैं, जिसमें दाल, चावल और कोदई जैसे अन्न शामिल होते हैं। गोंडों में मृत्यु के अवसर पर शोकगीत नहीं गाये जाते, बल्कि **करमा** और **ददरिया** जैसे पारंपरिक गीत गाये जाते हैं। मृत्युदान को **मौर दान** कहा जाता है, जिसे **परधान** या अन्य गोंड **बिरसिया** लेते हैं। यह दान लेने वाला व्यक्ति **नेगी** या **दसौंधी** कहलाता है। दशगात्र के दिन, विधवा स्त्री को **पंचों** के सामने फिर से **चूड़ियाँ पहनाई जाती हैं**। इस रीति को **पाटो प्रथा** कहा जाता है, जो विधवा के सामाजिक जीवन में पुनः सम्मिलन का प्रतीक मानी जाती है।

EXERCISE – 5

1. जनजातीय संस्कृति में मातृदेवियों की उपासना का प्रचलन है। इस संदर्भ में मातृदेवी के मंदिर को किस नाम से जाना जाता है? [MPPSC Forest Service (Main) 2023]

(a) गुड़ी (c) खैरमाता
(b) बीजासन (d) बड़ीदेवी

2. गोंड पंचायत में सर्वप्रमुख स्थान है? [MPPSC Forest Service (Main) 2023]

(a) मुकद्दम (c) लिखई
(b) देवान (d) भोई

3. नये अनाज के प्रथम प्रयोग का त्यौहार कहलाता है? [MPPSC Assistant Geologist exam 2023]

(a) अक्षय तृतीया (c) मामुलिया
(b) लारू काज (d) नवाई

4. बिरहा किस आदिवासी जनजाति की महिलाओं का लोकप्रिय लोकगीत है? [MPPSC Civil/Forest (Prelim) 2024]

(a) गोंड (c) भील
(b) कोल (d) सहरिया

5. गोंडी बोली के लिये प्रचलित लिपि कौन-सी है। [MPPSC Forest Service (Main) 2024]

(a) देवनागरी (c) ग्रांथम
(b) ब्राह्मी (d) सिंहली

6. मांडवरा त्यौहार द्वारा मनाया जाता है। [MPPSC Civil/Forest (Prelim) 2024]

(a) गोंड (c) भारिया
(b) बैगा (d) सहरिया

7. दीवार पर मिट्टी से बनाई जाने वाली 'नोहडोरा' अलंकरण किस जनजाति की विशेषता है ? [MPPSC Civil/Forest (Prelim) 2023]

(a) भील (c) सहरिया
(b) कोरकू (d) गौंड

8. घैला और बीदड़ी त्यौहार किस जनजाति के द्वारा मनाया जाता है? [MPPSC Assistant Professor Exam 2022]

(a) गोंड (c) सन्थाल
(b) भील (d) परधान

1.(a) 2.(d) 3.(d) 4. (a) 5. (a) 6. (a) 7. (d) 8. (a)

Chapter

6

बैगा जनजाति

भारत में अनेक जनजातियाँ अपनी अनूठी संस्कृति, परंपराओं और जीवनशैली के साथ सदियों से निवास करती आ रही हैं। इन्हीं में से एक प्रमुख जनजाति है **बैगा जनजाति**, जो द्रविड़ वर्ग से संबंधित मानी जाती है। यह जनजाति मुख्य रूप से **मध्य भारत** के **छत्तीसगढ़**, **मध्य प्रदेश** और **झारखंड** के कुछ क्षेत्रों में निवास करती है।

बैगा जनजाति का इतिहास अत्यंत रोचक और गौरवशाली रहा है। यह जनजाति **बंगाल** और **बिहार** की **भुइया जनजाति** की एक शाखा मानी जाती है। कालांतर में भुइया जनजाति को "**धरती पुत्र**" के नाम से पहचाना जाने लगा। इसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए, बैगा जनजाति भी स्वयं को **धरती पुत्र** या **बिछवार** कहकर संबोधित करना पसंद करती है। बैगा समुदाय स्वयं को "**जंगल का राजा**" भी कहता है, जो उनके प्रकृति के प्रति गहरे लगाव और उस पर निर्भर जीवनशैली को दर्शाता है। बैगा, गोंड जनजाति के परंपरागत पुरोहित है, इसलिये ये (पुरुष) स्वयं को **दवार** या **देवार** तथा महिला **दवारिन** या **देवारिन** कहलवाना पसंद करते है।

- वेरियर एल्विन ने अपनी पुस्तक 'द बैगा' में बैगा लोगों को **जादूगर** या **वैद्य** (*Sorcerer* or *medicine man*)*** के रूप में वर्णित किया है। यह वर्णन उनकी आध्यात्मिक और चिकित्सीय प्रथाओं को दर्शाता है, जो उनके सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का अभिन्न अंग है।

▶ **उत्पति** : बैगा जनजाति की उत्पत्ति से जुड़ी विभिन्न दंत कथाये प्रचलित है। बैगा जनजाति की उत्पत्ति से जुड़ी पारंपरिक कथायें है :-

1. इसके अनुसार, एक तुम्बे (लौकी) से दो व्यक्ति निकले। एक व्यक्ति ने टंगिया (एक कृषि उपकरण= कुल्हाड़ी) लेकर जंगल काटने चला गया और दूसरा व्यक्ति ने बस्ती का प्रबंधन संभाल लिया। जंगल काटने वाला व्यक्ति बैगा तथा बस्ती का प्रबंधन करने वाला व्यक्ति गोंड कहलाया।
2. प्रारंभ में भगवान ने **नागा बैगा और नागी बैगिन** को बनाया। नागा बैगा और नागी बैगिन से दो संतानें हुईं - पहली संतान बैगा और दूसरी गोंड थी।



तुम्बा (तूमा)

धरती की उत्पत्ति से संबंधित कथा

प्राचीन समय में पृथ्वी पर चारों ओर जल ही जल था। देवता पत्तों पर निवास करते थे। जल राशि के छोर पर जम्बूद्वीप था, जहाँ नागा बैगा निवास करता था। नागा बैगा ने देवताओं के कहने पर कौआ का स्मरण कर उसे धरती की खोज करने के लिये भेजा। धरती की खोज में केकड़े ने कौआ की मदद की। आगे बढ़ते हुए दोनों हाड़न राजा के यहाँ पहुँचे। वहाँ एक तालाब में नाग कन्या स्नान कर रही थी। दोनों ने उसे पृथ्वी समझा। वह सौन्दर्यवती थी। केकड़ा और कौआ उस कन्या को लेकर चल पड़े। केकड़ा और कौआ दोनों देवताओं के पास पहुँचे। जल राशि के ऊपर देवताओं ने उस कन्या का स्वयंवर रचाया। कन्या ने नागा बैगा के गले में वरमाला डाल दी। परंतु नागा बैगा साधु था, इसीलिये वह आग-बबूला हो गया। उसने कहा, "मैं तो इसे पुत्री मान चुका हूँ, इसने ऐसा पाप क्यों किया?" यह कहते हुए उसने फरसे से कन्या के दो टुकड़े कर दिए। कन्या का खून सारे जल में फैल गया। फैले हुए खून को नागा बैगा और देवताओं ने थपथपाया, जिससे वह जम गया और वही पृथ्वी की सतह बन गया। नागा बैगा ने पृथ्वी को बनाया, इसीलिये वह **भूमिया** कहलाया। पृथ्वी उसकी बेटी है, अतः वह उसकी छाती पर हल नहीं चलाता। तथा इस सम्पूर्ण कार्य में कौआ की विशेष भूमिका थी, इसलिये उसे विशेष सम्मान दिया जाता है।

▶ **भौगोलिक वितरण** : बैगा जनजाति मुख्य रूप से **मध्य प्रदेश के पूर्वी भागों** में निवास करती है। यह जनजाति **मंडला**, **डिंडौरी**, **शहडोल**, **अनूपपुर**, **उमरिया** और **बालाघाट** जिलों में विशेष रूप से संकेन्द्रित है। बैगा समुदाय अपनी अनूठी सांस्कृतिक परंपराओं, विशिष्ट जीवनशैली और प्रकृति के साथ गहरे जुड़ाव के लिये जाना जाता है।

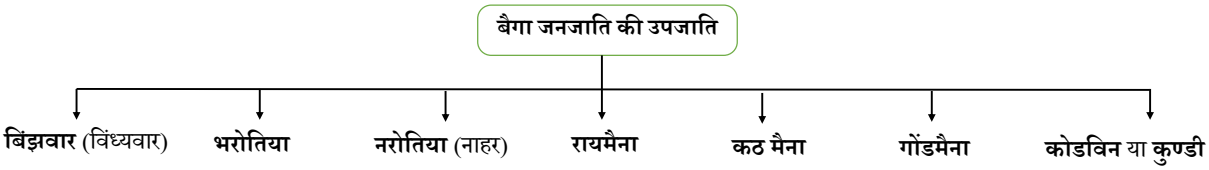
बैगा जनजाति सामान्यतः दुर्गम जंगलों में निवास करती है। वे अन्य जनजातियों के गाँवों में रहने के बजाय अपने अलग गाँव बसाना पसंद करते हैं। यह उनकी स्वतंत्र और स्वायत्त जीवनशैली को दर्शाता है।



- ब्रिटिश शासनकाल में, डिंडौरी जिले के **चाड़ा क्षेत्र** को "**बैगा चक**" के नाम से जाना जाता था।

  बैगा चक एक विशेष भौगोलिक क्षेत्र है, जिसकी चौड़ाई लगभग **60 किलोमीटर** और लंबाई लगभग **300 किलोमीटर** है। यह क्षेत्र **मंडला** और **डिंडोरी** जिले में फैला हुआ है तथा घने **साल वृक्षों** से आच्छादित है। इस क्षेत्र में **बैगा जनजाति** के **80 से अधिक (कुल 92)** गाँव स्थित हैं।

▶ **उपजातियां***: रसेल ने बैगा जनजाति को मुख्यतः सात उपजातियों में वर्गीकृत किया है। बैगा जनजाति में **भरोतिया** को उच्च स्थान प्राप्त है, जबकि **गोंडमैना** (जो बंदर का मांस खाते हैं) को सबसे निम्न स्थान पर रखा गया है। यह वर्गीकरण बैगा समाज की सामाजिक संरचना और परंपरागत मान्यताओं को दर्शाता है।



- **बिंझवार** : एक प्रमुख उपजाति है, जो विंध्याचल की पहाड़ियों और उसके आसपास के वन क्षेत्रों में निवास करती है। यह समुदाय स्वयं को बैगाओं की अन्य उपजातियों से भिन्न और विशिष्ट मानता है। बिंझवार समाज के लोग प्रायः बड़े जमींदार होते हैं। इनकी पारंपरिक अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि और वन संपदा पर आधारित होती है, जिसे वे आज भी सहेजे हुए हैं। इस समुदाय की सामाजिक मान्यताएँ भी विशेष हैं। वे बैल, गाय और नीलगाय जैसे पशुओं का मांस नहीं खाते। यह आदत उन्हें अन्य आदिवासी समुदायों से अलग पहचान देती है। बिंझवार लोग अपनी जातिगत एकता बनाये रखने के लिये अन्य बैगा उपजातियों के साथ विवाह संबंध नहीं करते। इससे उनकी सांस्कृतिक शुद्धता और सामाजिक संरचना सुरक्षित बनी रहती है।
- **भरोतिया** : भरोतिया बैगा जनजाति की एक उपजनजाति है, जो आज भी अपनी मौलिक अवस्था में जीवन यापन करती है। यह समुदाय लंबे बाल और दाढ़ी रखने की परंपरा को आज भी निभा रहा है। इनके रीति-रिवाज एवं परंपराएँ भुमिया बैगाओं से काफी मिलती-जुलती हैं। भरोतिया जनजाति मुख्यतः मध्य प्रदेश के **बैहर तहसील** के **सुपखार परिक्षेत्र** में सघन रूप से निवास करती है। "भरोतिया" शब्द का अर्थ होता है — **भरता** या **भरण-पोषण करने वाला**। यह उपजनजाति अब भी पूरी तरह जंगल पर निर्भर है आज तक इस समुदाय ने खेती करने के लिये **हल** का प्रयोग नहीं किया है।



- **कठमैना** : बैगा जनजाति की यह उपजाति लकड़ी (काठ) का कार्य करती है। ये लोग पारंपरिक औजारों की सहायता से लकड़ी को काटने, गढ़ने और उसका उपयोग घरेलू वस्तुयें या सजावटी सामान बनाने में करते हैं।

▶ **भाषा/ बोली** : बैगा जनजाति मध्य भारत के प्रमुख आदिवासी समुदायों में से एक है। इस समुदाय की अपनी एक विशिष्ट बोली है, जिसे "**बैगानी**", "**भुइयार**" या "**बैगा भाषा**" कहा जाता है। बैगानी बोली मुख्यतः द्रविड़ और आस्ट्रो-एशियाटिक भाषा परिवारों के प्रभाव से विकसित हुई है। इसके साथ-साथ इसमें स्थानीय हिंदी और छत्तीसगढ़ी बोलियों का भी मिश्रण पाया जाता है। यह बोली पूरी तरह से मौखिक परंपरा पर आधारित है, क्योंकि इसकी कोई लिखित लिपि नहीं है। बैगानी बोली को छत्तीसगढ़ी का परिवर्तित रूप भी माना जाता है, जिसमें गोंडी भाषा के अनेक शब्दों का समावेश पाया जाता है। इस बोली में पारंपरिक पहेलियाँ भी प्रचलित हैं, जिन्हें बैगा समुदाय में "**धंदा**" कहा जाता है।

- **जन्म संस्कार** : बैगा जनजाति की स्त्रियाँ गर्भवती होने के बाद भी घर, खेत और जंगल के कार्यों को निरंतर करती रहती हैं। गर्भधारण की सूचना पर घर में किसी प्रकार का उत्सव या धार्मिक आयोजन नहीं किया जाता है। बच्चे का जन्म एक अनुभवी और स्यानी महिला द्वारा कराया जाता है, जिसे स्थानीय भाषा में "**सुनमाई**" कहा जाता है। सुनमाई ही नवजात शिशु की नाल काटने का कार्य करती है। प्रसव के छठे दिन "**छठी पूजन**" किया जाता है, जिसे स्थानीय भाषा में "**सोअर उठाई**" कहते हैं। इस दिन माँ और शिशु की विशेष पूजा-अर्चना की जाती है। अगले दिन, यानी सातवें दिन, शिशु का पिता उसका मुंडन करता है। इस परंपरा को "**झालर प्रथा**" कहा जाता है। शिशु का नामकरण गाँव के **मुकद्दम (प्रधान)** द्वारा किया जाता है। यदि संयोगवश शिशु के जन्म के दिन गाँव में कोई सरकारी अधिकारी आ जाए, तो शिशु का नाम उसी अधिकारी के पद के नाम पर रख दिया जाता है। जैसे— **रेंजर**, **जमादार** आदि।
- **शारीरिक विशेषताएं** : बैगा जनजाति को "**प्रकृति का पुत्र**" कहा जाता है। क्योंकि ये लोग प्रकृति के अत्यंत निकट रहते हैं, इस कारण इनकी त्वचा का रंग प्रायः गहरा काला होता है। स्त्रियों में गोरा रंग बहुत ही कम देखने को मिलता है। बैगाओं की नाक सामान्यतः चौड़ी और होंठ कुछ मोटे होते हैं। इनकी आँखें गहरी काली और कम गोल होती हैं, जो इनके चेहरे को एक विशेष पहचान देती हैं। बैगा समुदाय के स्त्री और पुरुष दोनों के बाल लंबे और घुंघराले होते हैं। पुरुष जन्म से ही बाल बढ़ाते हैं और उन्हें कभी नहीं कटवाते। वे गर्दन के पीछे एक ओर **कौवे की पूँछ** के आकार का जुड़ा बाँधते हैं, जो इनकी पारंपरिक पहचान का मुख्य हिस्सा माना जाता है। बैगाओं के नाक-नक्श सुडौल और आकर्षक होते हैं। इनका कद मध्यम होता है। इनकी टाँगें मजबूत और सशक्त होती हैं, जो उन्हें पहाड़ी और वनाच्छादित क्षेत्रों में लंबी दूरी तय करने में सहायक बनाती हैं।
- **वस्त्र, आभूषण** : **बैगा पुरुष** प्रायः **कमर के नीचे केवल एक वस्त्र** (जैसे पटका या लंगोटी) पहनते हैं और **सिर पर कपड़े का एक छोटा टुकड़ा** बाँधते हैं। परंपरागत रूप से वे जितना हो सके, **कम से कम कपड़े पहनना** पसंद करते हैं। कुछ बैगा पुरुष तो केवल **डेढ़ हाथ लंबा कपड़ा** ही पहनते हैं और अधिकतर समय **उघड़े बदन** रहते हैं। बैगा समाज में **जादू-टोने** पर गहरा विश्वास होता है। इसी कारण प्रत्येक पुरुष कमर में कंदोरा (काले धागे से बना ताबीज़) बाँधता है, जिसे बुरी शक्तियों से रक्षा का साधन माना जाता है।



बैगा स्त्रियाँ शरीर पर सामान्यतः केवल **एक साड़ी** लपेटती हैं, जो **घुटनों से ऊपर** तक होती है। पारंपरिक रूप से वे लुगरा या चित्रा नामक वस्त्र पहनती हैं। यह आमतौर पर **गुलाबी रंग के कपड़े** से बना होता है। पहले इसे **कमर के चारों ओर लपेटा** जाता है, फिर कपड़े को **छाती के ऊपर से दाहिने कंधे पर ले जाकर पीछे की ओर टक (दबाना)** कर दिया जाता है।

बच्चे अक्सर **नग्न अवस्था** में रहते हैं, क्योंकि बाल्यावस्था में कपड़े पहनने की कोई विशेष अनिवार्यता नहीं होती।

- **मुंगी धोती** : बैगा स्त्रियों को **मुंगी धोती** पहनना बहुत पसंद होता है। यह 16 हाथ लंबी लाल रंग की धोती होती है, जिस पर सफेद धागों से सुंदर डिजाइन बने होते हैं। बैगा जनजाति के लिये वस्त्र बनाने का **कार्य पनिका जनजाति** करती है।

- **गुदना** : बैगा स्त्रियों में गुदने का अधिक महत्व है। गोंड स्त्रियों के गुदने में टिपकी (**तीन बिंदियां**) होती है जबकि बैगा जनजाति के गुदने में नहीं होती है। बैगा स्त्रियां अपने सम्पूर्ण शरीर पर गुदना गुदवाती है। सर्वप्रथम बैगा स्त्रीयां अपने माथे पर एक कोणीय आकृति का गुदना गुदवाती हैं। जब बैगा लड़की लगभग पाँच वर्ष की होती है। छाती पर एक मोर या दतरी (टोकरी) और बाजू पर हल्दी-गाँठ (हल्दी की जड़) का गुदना बनवाया जाता है। ये तब बनाये जाते हैं जब लड़की किशोरावस्था में प्रवेश करती है। बैगा जनजाति के लिये गुदनहार का कार्य **बादी जाति** की औरते करती है। जिन्हे बंदनिन कहते है। बैगा जनजाति के पुरुष गुदना का कार्य नहीं करवाते है , लेकिन कभी-कभी **चंद्रमा (चंद्रमा)** को हाथ की पीठ पर और **हिच्छन (बिच्छू)** को अग्रभाग पर बनवाते हैं।



- **खानपान** : बैगा जनजाति के लोग मांसाहारी और शाकाहारी दोनों प्रकार का भोजन करते हैं। उनका आहार जंगल में उपलब्ध संसाधनों पर निर्भर करता है। बैगा लोग शिकार करके विभिन्न प्रकार के मांस का सेवन करते हैंपरंतु शेर, भालू, लकड़बग्घा, बिल्ली, कुत्ता, गौरैया (जिसे वे ब्राह्मण मानते हैं) का मांस खाना बैगा समाज में निषिद्ध है। मक्का से बनने वाला 'पेज' बैगाओं का प्रिय पेय है। यह जनजाति मंद (मदिरा) का सेवन अत्यधिक करती है।
- **आवास व्यवस्था** : बैगा जनजाति अपने स्वभाव के कारण ऊँचे स्थान घने जंगलो में बसना पसन्द करती है। बैगा जनजाति समूह में निवास करती है। इनके मकानों के **समूह को** "**टोला**" या "**पूर्वा**" **कहते है**। तथा प्रत्येक टौला में 6-8 घर होते है। बैगाओ के मकान तक जाने का केवल एक ही रास्ता होता है। जो इन्हे जंगली जानवरो से सुरक्षा प्रदान करता है। बैगा समुदाय नया मकान बनाते समय कच्ची दीवारो पर मिट्टी से '**नोह डोरा**'*** (एक प्रकार का भित्ती चित्र) बनाते है।



  - बैगा जनजाति अपने मकान बनाने के लिये आवश्यक सामग्री जैसे लकड़ी, घास और फूस का संग्रह जंगलों से करती है। मकान निर्माण की प्रक्रिया में सबसे पहले **सरई वृक्ष** के तीन मजबूत खंभों (थांबा) को भूमि में सीधा गाड़ा जाता है। इन खंभों पर तीन **बरेण्डी** (आड़ी लकड़ियाँ) रखी जाती हैं, जो छत और दीवारों को सहारा देती हैं। बैगा समुदाय में लोहे की कीलों का बहुत कम प्रयोग होता है। वे छत और दीवारों को बाँधने के लिये **बक्कल वृक्ष की छाल** का उपयोग करते हैं। यह छाल उनके लिये कील का काम करती है।

- **सामाजिक संगठन** : बैगा समाज सामूहिक जीवन जीने की परंपरा का पालन करता है। इनका सामाजिक ढांचा अंदर से बहुत सुव्यवस्थित और मजबूत होता है। परिवार बैगा समाज की सबसे छोटी और महत्वपूर्ण इकाई है। बैगा समाज पुरुष प्रधान है जहाँ पुरुषों द्वारा बनाये गये नियमों का सभी पालन करते हैं। हालाँकि, महिलाओं को विशेष सम्मान दिया जाता है। किसी भी महिला का अपमान पूरे समाज का अपमान माना जाता है।

  अधिकतर बैगा परिवार एकल होते हैं। जब बेटा बड़ा हो जाता है, तो वह पिता से अलग होकर पास में ही नया घर बना लेता है। परिवार में बुजुर्गों को विशेष आदर दिया जाता है। छोटे सदस्य हमेशा उनकी इज्जत करते हैं और उनकी बात मानते हैं। माता-पिता अपनी मर्जी से किसी भी बेटे के साथ रह सकते हैं। बैगा जनजाति के लोग शेर, सर्प को अपना भाई मानते है।

- **बैगा समाज की पंचायत** : बैगा समाज की पंचायत अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है। पंचों का निर्णय सर्वमान्य होता है। बैगा पंचायत 5 लोगों से मिलकर बनी होती है जिसमे **मुकद्दम**, **दीवान**, **समरथ**, **कोटवार**, **दवार** सम्मिलित होते है। बैगा पंचायत की बैठक को **मांदी** कहा जाता है।

  मुकद्दम : मुकद्दम गाँव का मुखिया होता है। इसकी नियुक्ति परंपरागत ढंग से वंशानुगत होती है, और इसे सरकार से मान्यता प्राप्त होती है। मुकद्दम गाँव का प्रमुख प्रबंधक होता है। वह गाँव के विभिन्न कार्यों को संभालता है, जैसे कि बारात की अगवानी करना और सरकारी कार्यों में शासन की मदद करना।

  दीवान : बैगा समाज की पारंपरिक सामाजिक व्यवस्था में **दीवान**, **मुकद्दम** का सहायक होता है। जब मुकद्दम गाँव में उपस्थित नहीं होता, तब गाँव से जुड़े सभी कार्यों की जिम्मेदारी दीवान निभाता है। दीवान की नियुक्ति सामान्यतः **वंश परंपरा** के आधार पर की जाती है।

  दीवान के कार्य : ◈ पंचायत की बैठक बुलाना। ◈ शादी-विवाह में निमंत्रण देना। ◈ अतिथियों का सत्कार करना।

  दीवान समाज में एक जिम्मेदार पद होता है, जो मुकद्दम के सहयोगी के रूप में गाँव के सामाजिक कार्यों को सुचारु रूप से संचालित करने में मदद करता है।

कोटवार : कोटवार एक शासकीय सेवक होता है, परंतु समाज में उसका स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। गाँव में **सुरक्षा और शांति बनाये रखना** कोतवाल की मुख्य जिम्मेदारी होती है। वह किसी भी जाति या समुदाय से हो सकता है, लेकिन उसके कार्य सभी ग्रामीणों के लिये समान होते हैं।



कोटवार के कार्य : ◈ गाँव में होने वाले **जन्म और मृत्यु** की सूचना शासन को देना। ◈ **ग्राम पंचायत** या समाज की बैठकों में लिये गये मुकदमों के निर्णय की घोषणा करना। ◈ गाँव में **कानून और व्यवस्था बनाये रखने** में प्रशासन की सहायता करना।

कोटवार, गाँव के लोगों और प्रशासन के बीच एक **कड़ी** के रूप में कार्य करता है। उसकी भूमिका न केवल प्रशासनिक होती है, बल्कि सामाजिक दृष्टि से भी वह एक **सम्मानित व्यक्ति** माना जाता है।

दवार/ देवार *** **:** देवार गाँव का **पुरोहित या पंडित** होता है। देवार धार्मिक पूजा-पाठ का कार्य करता है। इसे **भूमिया** भी कहते हैं। **बिदरी पूजा** का आयोजन भी देवार के द्वारा ही किया जाता है।

गुनिया (A medicine man)

गुनिया सभी बीमारियों का इलाज झाड़ फूंक से करते है। कठिन से कठिन बीमारियां गुनिया अपनी हिकमत से ताड (ठीक करना) लेता है।यह **बैगा** समाज का **वैद्य** होता है। वह कई औषधियों का संग्रहण भी करता है। जिसके कारण उसे **जादूगर** या **चिकित्सक पुरूष** भी कहते है।

समरथ : समरथ गाँव के सामाजिक कार्यों और आने वाले अतिथियों के लिये राशन का प्रबंध करता है। वह सरकारी अधिकारियों के भोजन आदि का भी प्रबंधन करता है।

- **अर्थव्यवस्था** : बैगा जनजाति के लोग गाय को लक्ष्मी का प्रतीक मानते हैं और उसका विशेष सम्मान करते हैं। यह समुदाय मुख्य रूप से मक्का की खेती करता है और उसका संग्रहण कर अपने दैनिक उपयोग और आजीविका के लिये रखता है। बैगा समाज बहुत ही सीमित साधनों में जीवन यापन करता है। वे अपने दैनिक जीवन की अधिकांश आवश्यकताएँ प्रकृति से पूरी करते हैं। बैगा समुदाय की महिलायें जंगल से **महुआ के पत्तों** का संग्रह करती हैं, जिनसे वे **थाली और कटोरी** बनाती हैं। इन बर्तनों में वे पारंपरिक भोजन जैसे **पेज** (मक्का से बना भोजन) और **मंद** (एक प्रकार का पेय) का सेवन करती हैं। ये पत्तों के बर्तन बाजार में भी बेचे जाते हैं, जिससे उन्हें **अतिरिक्त आय** प्राप्त होती है।

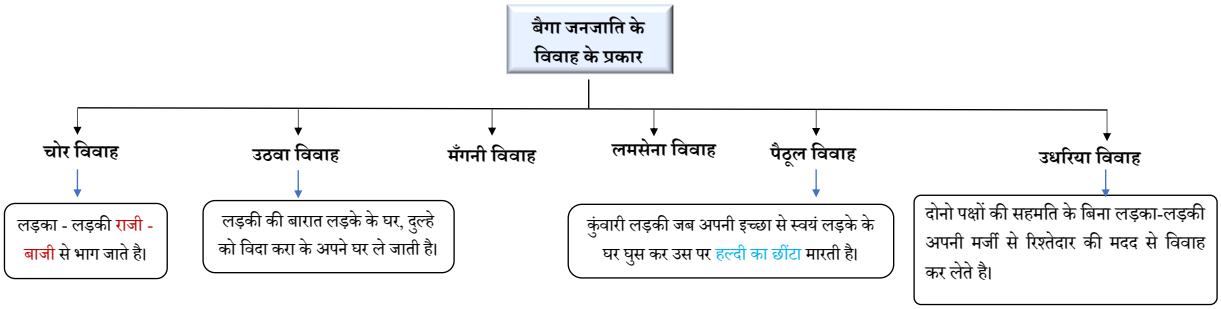
  बैगा लोग बाँस शिल्प में बहुत निपुण होते हैं। वे अपने घरों में ही बाँस से विभिन्न उपयोगी वस्तुएँ जैसे सूपा (चालनी), टोकनी (टोकरी),ओड़ी (टोपी) घर के दरवाजे,चलित टंटिया (एक प्रकार की बाँस की बाड़) बनाते हैं,ये वस्तुएँ न केवल उनके रोजमर्रा के काम आती हैं, बल्कि बाजार में बेचकर वे अपनी आय भी बढ़ाते हैं।

  बैगाओं को **जंगल से विशेष लगाव** होता है। यही कारण है कि वे बहुत कम संख्या में **शहरों में निवास** करते हैं। उनकी पूरी जीवनशैली **प्रकृति के साथ सामंजस्य** बनाकर चलती है।

- **कृषि : बैगा जनजाति खेती में हल का प्रयोग नहीं करती है**। उनकी मान्यता के अनुसार, **नागा बैगा** ने पृथ्वी का सृजन किया था, इस कारण उसे **"भूमिया"** कहा जाता है। इस प्रकार **पृथ्वी नागा बैगा की बेटी है**, और बेटी की छाती पर हल चलाना **पाप** माना जाता है। बैगाओं की खेती की पद्धति में वे सीधे **बीजों को जमीन पर छिड़ककर** बोआई करते हैं। यह परंपरागत कृषि विधि **"बेवर"** कहलाती है। इस पद्धति में जंगल की भूमि को साफ करके, **बिना जुताई के खेती** की जाती है। इस प्रकार, बैगा जनजाति की कृषि प्रणाली केवल आजीविका का साधन नहीं है, बल्कि यह उनकी **धार्मिक आस्था** और **प्रकृति के प्रति गहरे सम्मान** की प्रतीक भी है।

- **विवाह संस्कार :** बैगा समाज में विवाह एक पवित्र बंधन है। एक ही जात में विवाह वर्जित है। परन्तु विवाह में गोत्र एक हो सकता है। बैगा जनजाति के लिये विवाह केवल वंशवृद्धि का साधन नहीं, बल्कि आदिम प्रेम, परस्पर सहयोग और सहज आकर्षण की अभिव्यक्ति

माना जाता है। यह समाज में एक पवित्र बंधन है, जो न केवल दो व्यक्तियों, बल्कि दो परिवारों को भी जोड़ता है। पहला रिश्ता मामा-बुआ के लड़के-लड़की से शुरू होता है, इस रिश्ते को पहली प्राथमिकता दी जाती है। बैगा समाज में विवाह की छः पद्धति **मँगनी विवाह या चढ विवाह**, **उठवा विवाह**, **चोर विवाह**, **पैठूल विवाह** , **लमसेना विवाह**, **उधरिया विवाह** प्रचलित है।



- **मँगनी विवाह** : बैगा जनजाति में विवाह की प्रक्रिया पारंपरिक रीति-रिवाजों और सामाजिक सहमति पर आधारित होती है। विवाह की शुरुआत लड़के के पिता द्वारा लड़की के घर जाने से होती है। वहाँ वह परिवार के **बड़े स्याने** (बुजुर्गों) के साथ आँगन में बैठकर "**प्रतीक**" के माध्यम से लड़की से उसकी **स्वीकृति** पूछता है। यदि लड़की अपनी सहमति देती है, तो लड़के का पिता घर आकर विवाह की तैयारियाँ प्रारंभ कर देता है।



- विवाह की कार्यवाही के **पंद्रहवें दिन**, लड़के का पिता कुछ **गणमान्य सदस्यों** के साथ लड़की के घर जाकर **सगाई** पक्की करता है। इस अवसर पर **मनमोहक "बिलमा गीत"** का गायन किया जाता है। विवाह की पूरी व्यवस्था का उत्तरदायित्व **मुकद्दम** (गाँव का प्रमुख व्यक्ति) पर होता है। इस दौरान गाँव के लोग पारंपरिक **करमा नृत्य** में भाग लेते हैं और माहौल को उल्लासपूर्ण बना देते हैं। **मंगलवार की सुबह** विवाह से जुड़ी एक महत्वपूर्ण परंपरा "**मांगर माटी**" (जिसे **माटी खनौनी** भी कहा जाता है) संपन्न की जाती है। जब बारात वधू पक्ष के गाँव पहुँचती है, तो दूल्हे पक्ष की ओर से वधू पक्ष के घर के सामने एक मैदान में **"परधौनी नृत्य"** प्रस्तुत किया जाता है। साथ ही, दूल्हे के साथ आए बाराती **"ददरिया गीत"** गाकर उत्सव का वातावरण और भी आनंदमय बना देते हैं।
- **लमसेना विवाह***** : जब लड़के का पिता विवाह कराने में असमर्थ होता है, तो उसकी अनुमति से लड़का लड़की के घर जाकर रहने लगता है। वह लड़की के माता-पिता के घर रहकर **सेवा करता है** और **घरेलू कार्यों में सहयोग** देता है। यदि लड़की के माता-पिता उस लड़के की **निष्ठा**, **समर्पण** और **मेहनत** से प्रसन्न हो जाते हैं, तो वे अपनी बेटी का विवाह उसी लड़के से कर देते हैं।ऐसे लड़के को "**लमसेना**" या "**घर-दामाद**" कहा जाता है। लमसेना के रूप में रहने की अवधि सामान्यतः **3 से 7 वर्ष** तक होती है। बैगाओं में बहुपत्नी रखने का रिवाज है। लड़की अपनी मर्जी से दूसरा विवाह कर सकती है। बैगाओ में कन्या हरण की प्रथा पाई जाती है। विधवा अपने देवर या किसी और के नाम की चूड़ियां पहन सकती है।

- **बैगाओं की धार्मिक मान्यताये** : बैगा जनजाति की धार्मिक आस्थाएँ प्रकृति और परंपराओं से जुड़ी होती हैं। वे **उड़द की दाल** और **साज वृक्ष** को **पूज्यनीय** मानते हैं। बैगाओं का विश्वास है कि साज वृक्ष में **बूढ़ादेव** का निवास होता है, जो उनके प्रमुख देवता हैं।
  - बैगा लोग मानते हैं कि **घर में नींबू और मिर्च लटकाने से बीमारी प्रवेश नहीं करती**। यह उनके पारंपरिक टोटकों का एक उदाहरण है।
  - उनके अनुसार, **बीमारियों का मुख्य कारण देवता का रुष्ट हो जाना** होता है। जब कोई व्यक्ति बीमार होता है, तो इसे ईश्वर की नाराज़गी समझा जाता है।
  - बीमारियों से बचाव और देवताओं को प्रसन्न करने के लिये बैगा समुदाय में **नियमित रूप से बलि का आयोजन** किया जाता है। उनका विश्वास है कि बलि देने से देवता प्रसन्न होते हैं और गाँववासियों को रोगों से मुक्ति मिलती है।
    - ◈ बूढ़ा देव – बकरे की बलि ◈ महारानी देवी – बकरी की बलि

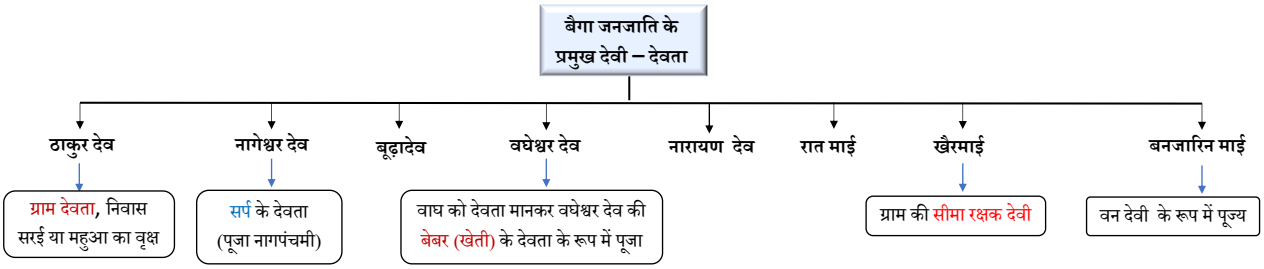
गुग्गू मंत्र

बैगा जनजती में गुग्गू एक विशेष मंत्र होता है। गुग्गू उल्लू का दूसरा नाम है। इस मंत्र में गुनिया उल्लू को मारकर अंगों से कार्य सिद्ध करता है।

- पशुओं को बीमारी में दागने की प्रथा है। इसके कारण बैगाओं के पशु कद में छोटे होते, दुर्बल और चमकहीन होते है।

▶ **बैगा जनजाति के प्रमुख देव/ देवी**

- **बूढ़ादेव***** : बैगा जनजाति का सर्वप्रमुख देव उनका **बूढ़ादेव** होता है। इसका निवास स्थान साज का पेड़ होता है।
- **नारायण देव** : **नारायण देव बैगाओं का कुल देवता** है। नारायण देव प्रत्येक घर में द्वार पर स्थापित होता है। नारायण देव की पूजा का बैगा समाज में अत्यधिक महत्व है। नारायण देव की पूजा तीन साल, सात साल व बारह वर्ष में होती है। तीन वर्ष पूर्व नर सुअर का बच्चा छोड़ा जाता है। तीन वर्ष बाद उस सुअर के बच्चे की बलि दी जाती है। इसे **सूअर बजि समारोह** भी कहा जाता है।



▶ **पर्व त्योहार** : बैगा जनजाति के लोग बिदरी, हरेली, नवा दशहरा, दिवाली, छेरता, फाग और जवारा त्यौहार मनाते है।



बिदरी : बैगा जनजाति का एक पारंपरिक त्योहार है, जिसे बीज बोने से पहले मनाया जाता है। इसे **बीजों की पूजा** के माध्यम से **अच्छी फसल की कामना** का पर्व भी कहा जा सकता है। यह त्योहार **जेठ** या **आषाढ़** महीने में मनाया जाता है, जब खेती का कार्य शुरू होने वाला होता है। इस दिन **घर का मालिक** (कृषक) एक टोकरी में अलग-अलग प्रकार के अनाज भरकर लाता है, जो आने वाले समय में बोए जाने हैं। गाँव के सभी किसानों द्वारा लाया गया अनाज **मुकद्दम** (गाँव का प्रधान) के आँगन में इकट्ठा किया जाता है।

मुकद्दम के घर पर **दवार**, **गुनिया**, **बरुआ** आदि लोग एकत्र होते हैं। सबसे पहले **दवार**, धरती माता की पूजा करता है। फिर सभी अनाजों को एक साथ मिलाकर आँगन में **रास बाँधा** जाता है (ढेर बनाया जाता है)। इस पूजा में **नारायण देव** को छोड़कर बाकी सभी देवी-देवताओं का आह्वान और पूजन किया जाता है। **अनाज के ढेर पर मुर्गियों का ताज़ा खून टपकाया जाता है**, ताकि बीजों को शक्ति और सुरक्षा प्राप्त हो। इसके बाद अनाज को अच्छी तरह मिलाया जाता है। इस ढेर में से थोड़ा-थोड़ा अनाज सभी कृषक बैगा अपने साथ ले जाते हैं और इस **अभिसिंचित अनाज** को अपने बीजों में मिलाकर खेतों में बोते हैं। ऐसा माना जाता है कि इस पूजा के प्रभाव से बीज अच्छी तरह पकते हैं और **जंगली पशु फसल को नुकसान नहीं पहुँचाते**।





छेरता : बैगा जनजाति के बच्चो का त्यौहार है। बच्चे प्रत्येक घर जा कर छेरता मांगते है।,तथा घर मालिक उन्हे अनाज देता है।

दशहरा : बैगा कुंवार दशमी को दशहरा त्यौहार मनाते है। दशहरे का स्वरूप थोड़ा भिन्न होता है। दशहरे के दिन बैगा युवक-युवती दशहरा नृत्य करते हैं। तथा युवक-युवतियां अपने जीवन साथी का चयन करते है। युवा नर्तक दल अपने गाँव से दूसरे गाँव में नाचने के लिये जाते हैं।

हरेली : हरेली त्यौहार सावन की मरती (अमावस्या) को मनाया जाता है। हरियाली अमावस्या के दिन घर का स्याना बैगा सुबह जल्दी उठकर जंगल जाता है। वहाँ से बाँस, भिलावा तथा भँवर माल की डालियाँ काटकर खेतों में ले जाता है। तथा धरती की पूजा कर उन डालियों की

गाड़ता है। यह एक तरह का टोटका है। इससे खेत में फसल अच्छी होती है। यहाँ भरती की पूजा कर डालियों की गाड़ता है। इससे खेत में फसल अच्छी होती है।





नवा फसल : बैगा जनजाति में **नवा खानी** एक महत्वपूर्ण त्यौहार है, जिसे **नई फसल की कटाई** के रूप में मनाया जाता है। इस पर्व का मूल उद्देश्य **पितरों को नई फसल अर्पित करना** होता है। बैगा जनजाति की मान्यता है कि **नई फसल का पहला अंश पहले पितरों को अर्पित किया जाना चाहिए**। यदि ऐसा नहीं किया गया और किसी ने सीधे फसल का उपयोग कर लिया, तो उसे **सर्पदंश** का खतरा होता है।

जवारा : जवारा देवी पर्व है। चैत्र से ज्येठ माह तक तथा कुंवार महीने में खैर माई की मढिया में जवारा बोये जाते है। नवे दिन जवारा उखाड़कर जुलूस के साथ नदी में विसर्जित किये जाते है।

दीपावली, होली

रतौन या रसनवा पर्व

मध्य प्रदेश के मंडला जिले की बैगा जनजाति के लोग 'रास-नवा' त्योहार मनाते हैं। रास-नवा' का त्योहार 9 साल के बाद मनाया जाता है। जो मोहटी नामक एक पौधे के फूलने के साथ प्रारंभ होता है 'रास-नवा' शब्द का अर्थ है शहद का सेवन करना। यह त्योहार जनजाति के पौराणिक पूर्वज नागा बैगा की स्मृति में मनाया जाता है। ऐसी मान्यता है कि इस त्योहार से पहले शहद का सेवन करने से लोगों की मृत्यु हो सकती है। मधुमखियों के लिये 'मोहटी' और 'अनहेरा' झाड़ियों से अस्थायी आश्रय बनाये जाते हैं, जिनके फूलों से शहद प्राप्त होता है। त्योहार के दिन, जनजाति के लोग जंगल से शहद इकट्ठा करते हैं। गुनिया जो जनजातीय ओझा होते हैं, कद्दू की खाल से बने बर्तनों में ताजा शहद डालकर इसका वितरण करता है।

- **नृत्यकला** : बैगाओ का अपना आदिम संगीत है। जंगल में रहने के कारण अदम्य साहस के साथ उनमें संगीत सरिता भी प्रस्फुटित हुई है। बैगाओं को संगीत प्रकृति की देन है। बैगा लोग वर्ष भर नाचते गाते है। बैगा नृत्य बिना श्रृंगार के नहीं होते है।

नृत्य	विशेष
दशहरा नृत्य	गांव में पुरूष व स्त्री के अलग दल बनाकर नृत्य करते है।
करमा नृत्य	बैगाओं का कर्मा नृत्य विजय-दशमी से प्रारम्भ होकर वर्षा के प्रारम्भ तक चलता है।
झरपट नृत्य	झरपट नृत्य में स्त्री और पुरूष अलग अलग पक्तियों में खड़े होकर गीतों में सवाल जवाब होते है।
सैला नृत्य	सैला चांदनी रात में किया जाने वाला नृत्य है।
बिलमा नृत्य	कुवारी लड़कियों को जीवन साथी चुनने का अवसर प्रदान करने वाला नृत्य है।
भड़ौनी नृत्य	विवाह नृत्य है।
परधौनी नृत्य***	बारात की अगवानी में पुरुष हाथ में फरसा लेकर नाचते है।
गेडी नृत्य	
रीना नृत्य	गोंड और बैगा जनजाति द्वारा दीपावली के अवसर पर किया जाता है।
विस्तृत व्याख्या Chapter 18 में की गयी है।	

- **गीत** : बैगा जनजाति मुख्य रूप से बिलमा, लाडू, बिरहा, करमा, दादरिया गीत का गायन करते है। (इस विषय की **विस्तृत व्याख्या अध्याय – 18** में की गयी है।)
- **मृत्यु संस्कार** : बैगा जनजाति में शव को दफनाने और जलाने की दोनो प्रथायें प्रचलित है। परन्तुं दफनाने की प्रथा प्रायः प्राचीन व सर्वव्याप्त है। अधिक दिन तक बीमार व्यक्ति को जलाया जाता है। बैगाओ के श्मसान नदी के दूसरी ओर (पार) इस आशय से बनाये जाते

है कि प्रेत आत्मा नदी को पार नहीं कर सकती है। दफनाते समय पुरूष के सिरहाने धनुष, बाण, कुल्हाडी, तम्बाकू, चिलम, चोंगी रखते है। तथा जलाते समय शव को उल्टा लिटाते है। शव का सम्पूर्ण श्रृंगार किया जाता है। तथा तीन दिन तक मृतक परिवार में **सूतक** रहता है।

- आत्मतृप्ति के लिये बैगा जनजाति मरने वाले व्यक्ति के मुंह में सोने या चांदी का रूपया दहीइस आशय से रखते है कि व्यक्ति अगले जन्म धनवान हो। इस प्रथा को **सामरा प्रथा** कहते है। सामरा का रूपया चिता में डाल देते है।
- मृतक के क्रिया कर्म में किसी प्रकार के गीत नहीं गाये जाते है। परन्तु नगाड़ा बजाना अनिवार्य है। जिसे **नहावन प्रथा** कहते है।

EXERCISE – 6

1. बैगा पुरुष कभी कभी अपने हाथ के पीछे कौन-सा टैटू गुदवाते थे ? [MPPSC Forest (Main) 2024]

(a) सूर्य
(b) तारा
(c) चन्द्रमा
(d) पेड़

2. बैगा जनजाति के प्रमुख देवता हैं? [MPPSC Forest (Main) 2023]

(a) मारी देव
(b) बूढ़ा देव
(c) बीजासन
(d) इन्द्र देव

3. निम्नलिखित में से किस जिले में बैगा विकास अभिकरण नहीं है। [MPPSC Civil/Forest (Prelim) 2021]

(a) मण्डला
(b) शहडोल
(c) रायसेन
(d) बालाघाट

4. बैगा परम्परा के अनुसार सृष्टि के निर्माता कौन है। [MPPSC State Engineering Service 2021]

(a) ठाकुरदेव
(b) इन्द्रदेव
(c) अग्निदेव
(d) सोमदेव

5. बैगाओ में कितने मुख्य गोत्र है? [MPPSC Forest (Main) 2021]

(a) पाँच
(b) छह
(c) दो
(d) तीन

6. बैगा चक का अधिकांश भाग मध्यप्रदेश के किस जिले में आता है? [MPPSC Taxation Assistant 2012]

(a) डिडोंरी
(b) भोटिया
(c) मंडला
(d) बालाघाट

7. बैगाओं में गाँव का पुरोहित कौन होता है? [MPPSC Forest (Main) 2021]

(a) समरथ
(b) दीवान
(c) देवार
(d) कोटवार

1.(c) 2. (b) 3. (c) 4. (a) 5. 6. (d) 7. (c)

Congratulations

To all our successful candidates in

MPPSC STATE FOREST SERVICE



Ankur Gupta

Comprehensive Forestry Course



Ubhay Singh Parihar

Comprehensive Forestry Course



Rajveer Shrivas

Comprehensive Forestry Course + CIGP



Sanjeet Yadav

Comprehensive Forestry Course + CIGP



Satyam Kumar Tripathi

Comprehensive Forestry Course + CIGP



Baljeet singh

Comprehensive Forestry Course + Test Series + CIGP



Prabhanshu Pawar

Test series



Vijay Singh Solanki

Comprehensive Forestry Course + CIGP



Pankaj chouhan

Comprehensive Forestry Course

11 Out Of 13 Total Selections in

वन परियोजना क्षेत्रपाल 2022



Sumit Gupta

Comprehensive Forestry Course + CIGP



Arun Sharma

Comprehensive Forestry Course



Chandramohan Dhakad

Comprehensive Forestry Course



Bhuvnesh Chouhan

Comprehensive Forestry Course



Naman Jain

Comprehensive Forestry Course



Devanshu Sharma

Comprehensive Forestry Course

08 Out of 13 Total Selections in

वन परियोजना क्षेत्रपाल 2021

Chapter 7

भारिया जनजाति

पातालकोट, मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा जिले से उत्तर दिशा में लगभग 45 किलोमीटर की दूरी पर स्थित एक प्राकृतिक घाटी है। यह घाटी ऊपर से देखने में **घोड़े की नाल***** जैसी आकृति की प्रतीत होती है, जो इसे विशेष बनाती है। यहाँ "**कोट**" शब्द का अर्थ है **प्राकृतिक दीवार**। स्थानीय निवासी इसे "**कनात**" कहते हैं। जब कोई इस घाटी को ऊपर से देखता है, तो लोग, जानवर, झोपड़ियाँ और पेड़—सब कुछ बहुत छोटे प्रतीत होते हैं, जैसे तिनके हों।

यहाँ **दूधी** और **गायनी** नदियों का उद्गम होता है। एवं पातालकोट में "**सात बहनों**" (***Seven sisters***) नामक एक सुंदर जलप्रपात है। यह घाटी समुद्र तल से लगभग **1200 से 1500 फीट** गहरी है। पातालकोट के प्रमुख दर्शनीय स्थल हैं—**रातोड़**, **कारेआम**, **चिमटीपुर** और **राजाखोह**। यहाँ कुल **12 गाँव बसे हुए** हैं, जबकि **8 गाँव अब वीरान** हो चुके हैं। पातालकोट में **आम के वृक्षों** की अधिकता पाई जाती है। **कारेआम** नामक स्थान एक सुंदर झरना है, जो आम के झुरमुटों पर गिरता है, जिससे यह और भी आकर्षक लगता है। **राजाखोह**, पातालकोट का सबसे सुंदर और ऐतिहासिक स्थान माना जाता है। यह स्थान बहुत दुर्गम है, इसलिये वहाँ पहुँचना थोड़ा कठिन होता है। ऐसा कहा जाता है कि इसी खोह में **राजा रघुजी भोसले** निवास करते थे।

पातालकोट की निवासी जनजाति को **भारिया जनजाति** कहा जाता है। यह जनजाति यहाँ की पारंपरिक संस्कृति, जीवनशैली और प्रकृति के साथ तालमेल की मिसाल है। इस क्षेत्र में जाने के लिये **कच्चे और उबड़-खाबड़ रास्ते** हैं। भारिया लोग इन रास्तों के बजाय **पगडंडियों** का उपयोग करना अधिक पसंद करते हैं।

▶ **उत्पत्ति** : भारिया जनजाति मध्य भारत की एक प्रमुख जनजाति है। जो **द्रविड़ वर्ग** से संबधित है। इस जनजाति की उत्पत्ति से जुड़ी कुछ मान्यताये निम्न अनुसार है –

- इनका जन्म **महाभारत युद्ध** के दौरान अर्जुन द्वारा छोड़े गये **बाण और भूरू घास के बाण** से हुआ था। इसलिये ये स्वयं को **पांडववंशी** या **भारवंशी** कहते हैं।
- भारिया शब्द की उत्पत्ति "**भार**" **(बोझ)** से मानी जाती है, क्योंकि यह समुदाय पारंपरिक रूप से मराठाओ **(रघुजी भोसले)** की सेना में **भार ढोने** का कार्य करते थे। इसी कारण से इन्हें "**भारिया**" कहा जाने लगा।
- भारिया जनजाति का सामाजिक संबंध **गोंड जनजाति** से भी जुड़ा हुआ है। गोंड लोग भारिया को **अपना छोटा भाई** मानते हैं। साथ ही, भारिया जनजाति को गोंडों की विधवाओं से **रीति अनुसार पुनर्विवाह करने का पहला अधिकार** प्राप्त होता है।
- भारिया जनजाति **महोबा** अथवा **बाघोगढ़** को अपना मूल स्थान मानती है। वे वहाँ के राजा **कर्णदेव** को अपना **पूर्वज** मानते हैं।

"**भारिया**" नाम की उत्पत्ति को समझने के लिये उनकी परंपरागत कथाओं और ऐतिहासिक तथ्यों का सहारा लेना आवश्यक है।

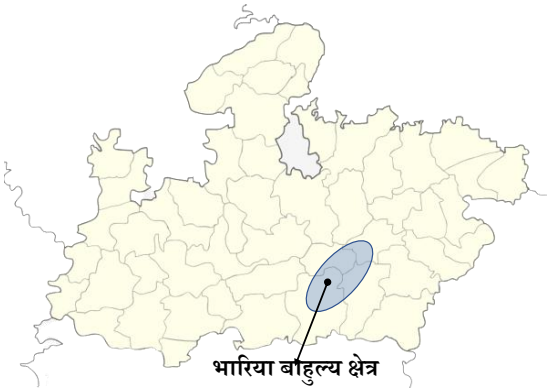
नाम की व्युत्पत्ति

- **मराठा युग के सैनिकों से संबंध** : भारिया जनजाति के अनुसार, उनका नाम "भारिया " इसलिये पड़ा क्योंकि वे मराठा सेना के साथ जुड़े हुए थे। वे सेना में बोझ उठाने और रसद पहुंचाने का कार्य करते थे। "भारिया " शब्द की उत्पत्ति "भार" (बोझ) से मानी जाती है, जो उनके काम को दर्शाता है।
- **राजा के साथ जुड़ाव**: यह भी कहा जाता है कि भारिया लोग मराठा साम्राज्य के राजा के प्रति वफादार थे। नागपुर के राजा अप्पा साहब भोंसले के क्षेत्र में आने और यहाँ छिपने की कथा भी इस दावे को प्रमाणित करती है। भारिया लोग अपने पूर्वजों को राजा के साथ इस क्षेत्र में बसने का श्रेय देते हैं।

ऐतिहासिक प्रमाण

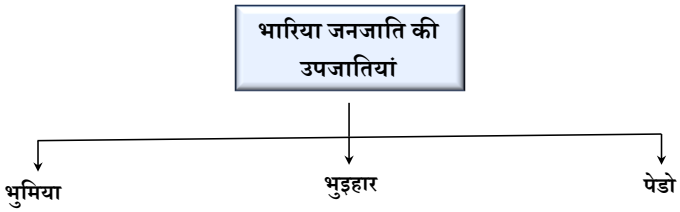
- नागपुर और उसके आसपास के इलाकों में मराठा साम्राज्य का प्रभाव था। राजा अप्पा साहब भोंसले के समय में मराठा सेना और उनके सहयोगियों को जंगल और पहाड़ी इलाकों में छुपकर रहने की आवश्यकता पड़ी।
- भारिया लोग खुद को उन्हीं मराठा सैनिकों के वंशज मानते हैं, जो स्थायी रूप से इन क्षेत्रों में बस गये थे।

- **भोगोलिक विवरण** : भारिया जनजाति मुख्य रूप से **जबलपुर** और **छिंदवाड़ा** जिलों में निवास करती है। छिंदवाड़ा जिले के **तामिया क्षेत्र** स्थित **पातालकोट** में भारिया जनजाति की आबादी विशेष रूप से **संकेंद्रित** है। इस क्षेत्र की भौगोलिक बनावट और वन संपदा भारिया जनजाति के पारंपरिक जीवन से गहरायी से जुड़ी हुयी है।



- **भारिया जनजाति के गोत्र व उपजातियाँ** : भारिया जनजाति में 51 गोत्र है, जनजाति में गोत्रों का वर्गीकरण देवताओं की संख्या के आधार पर किया जाता है। प्रत्येक गोत्र विशेष देवी-देवताओं की पूजा करता है।
  - **तीन देव** वाले भारिया गोत्र – गंगई
  - **पाँच देव** वाले भारिया गोत्र – घुगवाल
  - **छः देव** वाले भारिया गोत्र – भरदिया, खमेरिया, बिजलिया, बगोठिया, डांडोलिया
  - **सात देव** वाले भारिया गोत्र – ठकरिया, कासानहलिया, पचलिया, अंगारिया, दियासेलिया

उपजातियाँ : Flow Chart

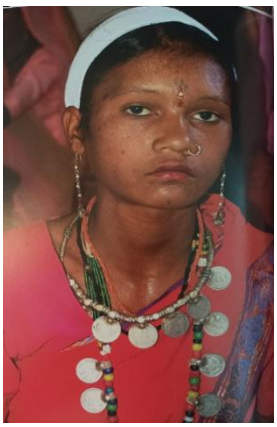


- **बोली** : **भरनौटी** या **भारियाटी** भारिया जनजाति की मूल बोली मानी जाती है। इसका स्वरूप **गोंडी भाषा** से मिलता-जुलता है। **भारियाटी** बोली वास्तव में **कोरकू, गोंडी, छत्तीसगढ़ी और बुंदेली** भाषाओं के मिश्रण से विकसित हुई है। इस कारण इसमें विभिन्न भाषाई तत्वों का समावेश देखने को मिलता है, जो इसे एक विशिष्ट पहचान प्रदान करता है।

- **जन्म संस्कार** : भारिया जनजाति की प्रसव से जुड़ी परंपराएँ अत्यंत प्राचीन और विशिष्ट हैं। इस जनजाति में प्रसवकाल के दौरान भी महिलायें सामान्य रूप से कार्य करने जाती हैं। बच्चे का जन्म गाँव की अनुभवी महिला, जिसे **सुनमाई** कहा जाता है, की सहायता से कराया जाता है। प्रसव के **तीन दिन बाद शुद्धिकरण** की प्रक्रिया होती है, जिसके बाद माँ और बच्चे को पवित्र माना जाता है।
  - **छठवें दिन छठी पूजन** किया जाता है, जिसमें माँ और शिशु की विशेष पूजा की जाती है। इस अवसर पर पारंपरिक **जच्चा गीतों का गायन** भी होता है। भारिया समुदाय की मान्यता है कि **छठी माता** इस दिन बच्चों का **भाग्य लिखती हैं**।
  - **बारसा (नामकरण) संस्कार** बच्चे के जन्म के लगभग **छह माह बाद** किया जाता है, जिसे बुआ (पिता की बहन) द्वारा सम्पन्न कराया जाता है।

- **शारीरिक विशेषताये :** भारिया जनजाति को **द्रविडियन प्रजाति के आदिम लोग** माना जाता है। यह जनजाति अपनी विशिष्ट शारीरिक बनावट और सांस्कृतिक पहचान के लिये जानी जाती है।भारिया समुदाय के लोग सामान्यतः **मध्यम कद**, **छरहरे शरीर**, और **श्याम वर्ण** के होते हैं। इनकी **आँखें छोटी व काली**, **नाक थोड़ी चौड़ी लेकिन सुडौल**, और **ओंठ पतले** होते हैं। इनके **दाँत बारीक और सुंदर** होते हैं। भारिया स्त्रियाँ अपेक्षाकृत **अधिक सुंदर** मानी जाती हैं।

- **वेशभूषा :** पूर्व में भारिया की **पोशाक की न्यूनता** बहुत प्रसिद्ध है, और कहावत प्रचलित है: "**भारिया भुवाखा, पावंदा लंगवाखा**" अर्थात् "भारिया तो सचमुच एक शैतान है, जो केवल अपनी कमर को कपड़े की पट्टी से ढँकता है।"

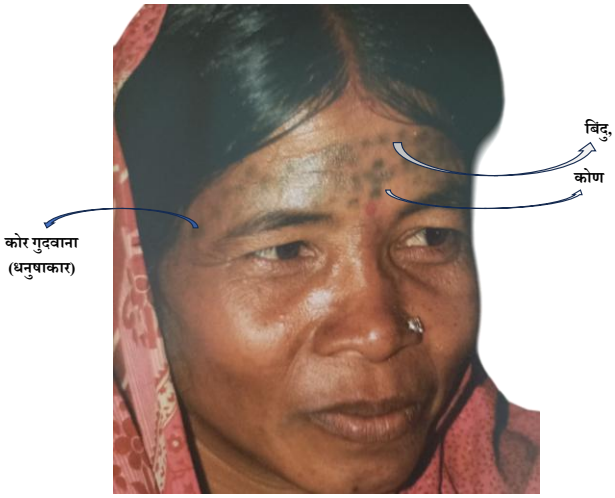


- समय के साथ परिवर्तन आया है पुरूष सिर पर पगिया (पगड़ी) धोती, कुर्ता बंडी पहनते है। अधिकांश युवा मस्तक पर रुमाल या एक डेढ़ इंच चोड़ी पट्टी या फैटा बांधकर रखते हैं। भारिया जनजाति के पुरुष हाथों में लोहे का छल्ला पहनती है, जिससे बुरी आत्माओं को भगाया जा सके - वही उसका एकमात्र आभूषण होता है।

  स्त्री लाल रंग की **सिंदूरी साड़ी** पहनती है। स्त्रियां कमर के ऊपरी हिस्से में अंगिया या पोलका पहनती है। तथा स्त्री पुरूष प्रायः नंगे पैर होते है। भारिया चॉदी तथा गिल्ट के गहने पहनती है। स्त्रियां करनफूल

बारी, गले में पोत, सरिया चंदन हार (सॉफल) हमेल, नाक में लोग, भुजा पर बाकड़ा, बहोटा कलाई में कंगना, करदौना, कमरपेट पयरी और तोडा अंगूठे में चुटका पहनती है।

- **गुदना** : भारिया जनजाति की महिलाओं में **गुदना (गोदना)** एक पारंपरिक सौंदर्य और सांस्कृतिक परंपरा का प्रतीक माना जाता है। यह परंपरा बहुत छोटी उम्र से आरंभ हो जाती है। लड़कियाँ लगभग **पाँच या सात वर्ष** की उम्र में गुदवाना शुरू कर देती हैं। भारिया महिलायें अपने **चेहरे, छाती, हाथ** और **पैरों** पर गुदना गुदवाती हैं



  - **मस्तक** पर महिलायें **बिंदु, कोण**, तथा **आड़ी-खड़ी और समानांतर रेखाएँ** गुदवाती हैं।
  - **दोनों भौंहों के ऊपर धनुषाकार रेखा** गुदवाने की परंपरा केवल **भारिया जनजाति** में ही पाई जाती है। इसे **"कोर गुदवाना"** कहा जाता है।
  - **बांह पर**, महिलायें बिंदुओं के सहारे विशेष आकृति गुदवाती हैं, जिसे वे **"धंधा"** कहती हैं।

  पातालकोट क्षेत्र में गुदने का कार्य प्रायः ओझा जाति महिलायें करती हैं, जो इसे पीढ़ियों से करती आ रही हैं।

- **खान-पान** : अन्य जनजातियों की तरह भारिया जनजाति का मुख्य भोजन भी सादा और पौष्टिक होता है। इनका प्रमुख आहार पेज होता है, जिसे मक्का, कुटकी, ज्वार और पिसी (कोदो) से बनाया जाता है। भारिया लोग इन अनाजों से बने पेज को सबसे अधिक पसंद करते हैं। **महुआ** और **आम की गुठलियों** से बनी रोटियाँ भारिया जनजाति का **बरसात के मौसम का पारंपरिक भोजन (अखाड़ी)** माना जाता हैं। वे **चावल** और **कुटकी** से **खीर** भी बनाते हैं, जो स्वादिष्ट और पौष्टिक होती है। हालाँकि, इनके भोजन में **आयोडीन युक्त नमक** की कमी होती है, जिसके कारण यह समुदाय **घेंघा रोग** से अधिक ग्रसित पाया गया है।
  - भारिया मांसहारी होते है। पक्षियों का शिकार करते है। मछली खाना और पकडना भारियाओ का प्रिय शौक है।
  - महुआ की मदिरा भारिया स्वयं बनाते है। और इनका प्रिय पेय भी है।

- **निवास स्थान** : भारिया जनजाति अपने **आवासी मकानों का निर्माण स्वयं** करती है। इनके निवास स्थान को स्थानीय भाषा में **"ढाना"** कहा जाता है। भारिया के ढानों की आकृति प्रायः **कोरकू जनजाति** के घरों के समान होती है। हालाँकि, **पातालकोट** क्षेत्र के भारिया लोगों की बस्ती का स्वरूप **बैगा जनजाति** के घरों जैसा होता है। वे अपने मकानों को एक-दूसरे से थोड़ी **दूरी पर** प्रायः **ऊँचाई वाले स्थानों** पर बनाते हैं।



  - भारिया अपने मकान **लकड़ी, घास-फूस और टट्टों** से बनाते हैं। मकान निर्माण के लिये आवश्यक सामग्री जैसे **लकड़ी, घास और पत्ते** वे जंगल से एकत्र करते हैं।
  - इनके घर हर घर के सामने एक **मढ़ा** होता है, जो चार मोटी लकड़ियों से बना होता है। यह मढ़ा **बनोपज (जैसे महुआ, गुली और आम की गुठली)** को **सुखाने** के काम आता है

- **हथियार और शिकार** : **कुल्हाड़ी** भारिया जनजाति का प्रमुख औजार है। जब भारिया पुरुष जंगल की ओर जाते हैं, तो वे प्रायः अपने कंधे पर कुल्हाड़ी रखकर चलते हैं। यह न केवल उनका कार्य उपकरण होता है, बल्कि उनकी पारंपरिक पहचान का भी हिस्सा है। **शिकार** भारिया समाज का एक प्रिय शौक है। विशेषकर **बाघ का शिकार** वे पारंपरिक तरीके से **हाँका लगाकर** करते हैं। शिकार के लिये वे **विभिन्न प्रकार के फंदों** का उपयग करते हैं, जिन्हें वे स्वयं बनाते और लगाते हैं।

▶ **पंचायत व सामाजिक संगठन** : भारिया जनजाति का **सामाजिक संगठन** सुदृढ़ और परंपराओं से बंधा होता है। समाज में सभी कार्य **नियमों और रीतियों** के अनुसार संचालित होते हैं। गाँव का **मुखिया** "**पटेल**" कहलाता है। जातीय पंचायत का नेतृत्व भी पटेल के हाथ में होता है। पंचायत में पाँच पंच होते हैं, जो समाज की व्यवस्था बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

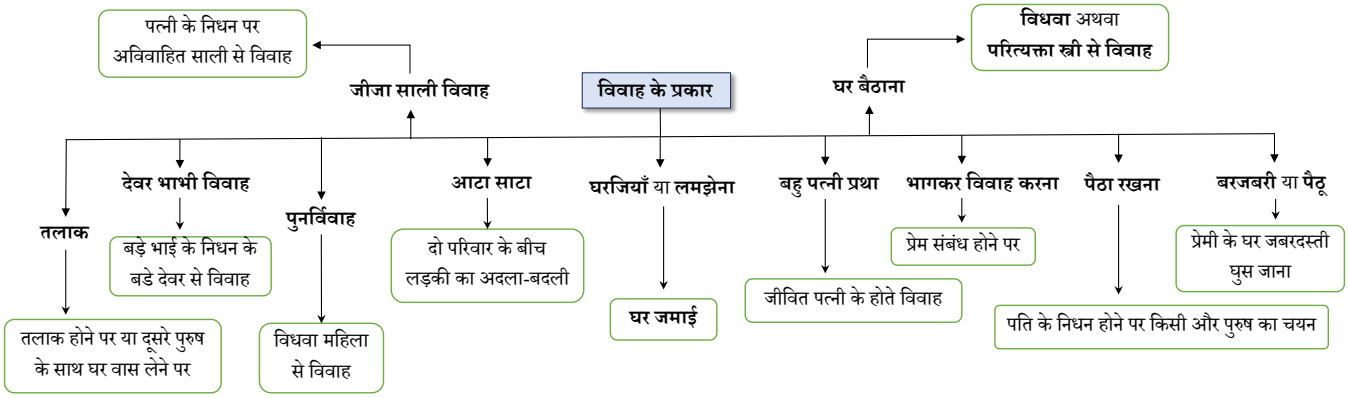
- **पटेल** : पटेल पंचायत का मुखिया होता है और उसका पद **परंपरागत** होता है। **तवसी** और **लेव्ही** वसूली के काम में शासन की मदद करते हैं।
- **भुमका** : भुमका **पूजा-पाठ** और **धार्मिक अनुष्ठान** करने वाला होता है। वह तंत्र-मंत्र का जानकार होता है और उसे नारी परीक्षण का भी ज्ञान होता है।
- **पड़ियार** : विवाह व अन्य सामाजिक कार्यों में सहयोग करने वाला।
- **कोटवार** : कोटवार गाँव की सूचना और सुरक्षा से जुड़ा व्यक्ति होता है। उसे शासन द्वारा नियुक्त किया जाता है। वह सरकार को गाँव की सारी जानकारी देता है और समाज में उसकी प्रतिष्ठा भी अधिक होती है।



- **स्यान (बुजुर्ग)** : गाँव का कोई बुजुर्ग, अनुभवी और समझदार सदस्य

▶ **विवाह** : भारिया जनजाति अपनी **प्रथाओं और रीति-रिवाजों** के प्रति अत्यंत सजग और परंपरागत होती है। समाज में विवाह एक महत्वपूर्ण सामाजिक अनुष्ठान माना जाता है, जिसे विशेष रीति से संपन्न किया जाता है। भारियों में समगोत्र विवाह नही होते मामा - फुआ के लड़के - लड़कियों में विवाह सर्वोत्तम माना जाता है।

भारियाओं मे मुख्य रूप से **मंगनी विवाह** प्रचलित है, इसके अतिरिक्त विवाह की 11 अन्य पद्धतियां भी है, जो प्रचलित है।



- **मंगनी विवाह** : विवाह का प्रस्ताव हमेशा **लड़के के पिता** की ओर से आता है। परंतु यह प्रस्ताव **कन्या के पिता** तक सीधे नहीं भेजा जाता, बल्कि **कुछ मित्रों** के माध्यम से पहुँचाया जाता है। तथा आंगन में जाकर बैठ जाते है। और एक लोटा पानी मांगते है। अगर लड़की वाले रिश्ते स्वीकार करते है। तो वह उन्हें पानी देते है। यदि शाम तक पानी नही मिले तो इसका मतलब उस घर वालो का सम्बन्ध करने का इरादा नहीं है। यदि **मंगनी पक्की** करनी होती है, तब वधू का पिता **वर के पिता और उनके मित्रों** को **भोजन** के लिये अपने घर आमंत्रित करता है। इसे एक सामाजिक स्वीकृति का संकेत माना जाता है। विवाह के



वर पक्ष के द्वारा बारात प्रस्थान के एक दिन पूर्व तीन व्यक्तियों को वधु पक्ष की सहायता के लिये भेजा जाता है। जो डिंगा बाराती या सरबतला कहलाते है।

अवसर पर "**मिदुआ**" नामक पारंपरिक नृत्य भी किया जाता है, जो इस अवसर को और भी आनंदमय बना देता है। । मंगनी विवाह में दहेज दिया जाता है। इस विवाह के दौरान दुल्हन - ढूँढाई प्रथा होती है। भारियाओ में बहु विवाह प्रथा प्रचलित है।

- **चिहारी** : चिहारी करने के लिये लड़के वाले पुनः लड़की वालों के यहाँ आते हैं। इस कच्चा बारात भी कहते हैं। चिचारी में दो स्याना, घर का मुखिया, एक बाई और लड़का साथ जाते हैं, लड़की के माता-पिता के द्वारा गंगा का भात होता है। गंगा भात के बाद लड़की पंचो की हो जाती है।

देज

देज का मतलब वधु मूल्य होता है, वधु मूल्य वर पक्ष के द्वारा दिया जाता है।

- **जोगन प्रथा** : जोगन प्रथा का निर्वहन दूल्हे के रिश्तेदारों का परिचय करने के लिये किया जाता है।

▶ **आर्थिक क्रियाकलाप** : भारिया जनजाति प्रारंभ से ही **ढहिया खेती** करती रही है। यह खेती पारंपरिक तरीके से की जाती थी, जिसमें बिना हल चलाये बीज बोये जाते थे। मूल रूप से भारिया जनजाति के लोग **खेत-खलिहानों में मजदूरी** करते हैं। वे अत्यंत **मेहनती** होते हैं, लेकिन अधिकतर समय **अपने मालिकों के ऋण** से बंधे रहते हैं। यही कारण है कि पीढ़ी दर पीढ़ी वे **बंधुआ मजदूर** बनते चले जाते हैं।

मध्य प्रदेश कि स्थानान्तरी कृषि करने वाली तीन जनजातियों के नाम लिखिए? [MPPSC (Civil Main) GS-I 2020 | 3 M]

- वर्तमान समय में भारिया समुदाय द्वारा की जाने वाली **ढहिया खेती लगभग समाप्त** हो चुकी है। उनके पास जो थोड़ी-सी **जमीन बची** है, वह भी अधिक **उपजाऊ नहीं** है। इस भूमि पर केवल **कोदो-कुटकी** और अन्य **मोटे अनाज** ही उगाये जा सकते हैं।
- भारिया जनजाति कृषि के अतिरिक्त लघु वनोपज एवं जड़ी बूटियों का संग्रहण का कार्य करती है।
- **बाँस से बनी टोकरियाँ, सूपड़े और डलिया** बनाकर भारिया लोग इन्हें बाजार में बेचते हैं। पातालकोट क्षेत्र की **देवबहारी घास से बनी झाड़ू** दूर-दूर तक प्रसिद्ध है।



▶ **देवी देवता** : भारिया जनजाति अपने **ग्राम देवताओं** और **कुल देवता** की श्रद्धा पूर्वक पूजा करती है। वे **बूढ़ादेव**, **दूल्हादेव**, **हरदुल लाला, भीमसेन देव, बाघेश्वर देव, मुठवा देव** और **मेघनाथ** जैसे देवताओं की भक्ति भाव से आराधना करते हैं।यह समुदाय **सत्यनारायण की कथा** का आयोजन भी करता है और देवी-देवताओं के आदेशों को मानता है। भारिया समाज में **भूत-प्रेतों** में विश्वास किया जाता है, और इन्हें शांत करने के लिये विशेष पूजा-पाठ किये जाते हैं। जहाँ **गोंड जनजाति** साज वृक्ष की **पत्तियों की पूजा** करती है, वहीं **भारिया जनजाति** उसी वृक्ष की **जड़ों की पूजा** करती है।

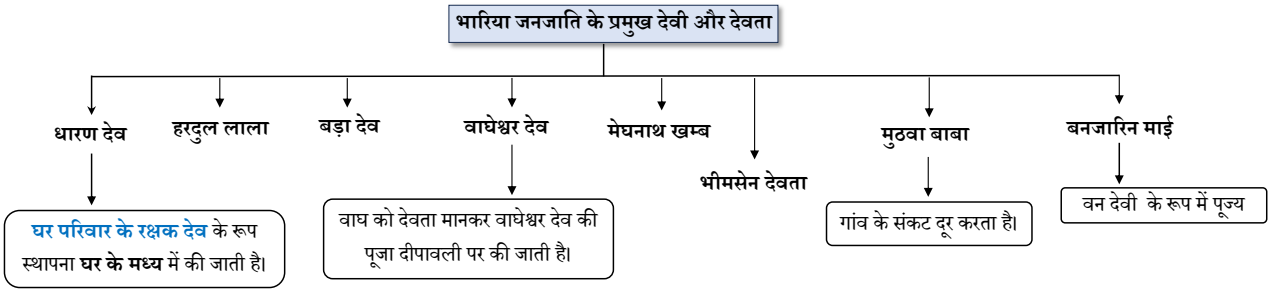
- **बड़ादेव** : **बड़ादेव** भारिया जनजाति के **ग्राम देवता** माने जाते हैं। ग्राम में उनके लिये एक **चबूतरा** या **मड़िया** (छोटा पूजास्थल) बनाया जाता है। जिस गाँव या ढाना (छोटे ग्राम समूह) में बड़ादेव का चबूतरा नहीं होता, वहाँ लोग **साज वृक्ष** (*Terminalia tomentosa*) की **जड़ों की पूजा** करते हैं। बड़ादेव को **ग्राम की रक्षा** करने वाला देवता माना जाता है। उनकी पूजा के समय **लाल मुर्गी** चढ़ाई जाती है, जिसे बलि के रूप में अर्पित किया जाता है। इस पूजा में केवल **पुरुष** भाग लेते हैं। **स्त्रियाँ** बड़ादेव की पूजा में शामिल नहीं होतीं है।



- **मेघनाथ खम्ब :** प्रत्येक गाँव में एक **मेघनाथ खंभ** अवश्य होता है। कुछ स्थानों पर **घूमने वाला मेघनाथ खंभ** भी पाया जाता है, जिसे विशेष अवसरों पर एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाया जाता है। मेघनाथ खंभ पर सफेद कपड़े की **फरिया (ध्वज)** लगाई जाती है, जो श्रद्धा और आस्था का प्रतीक मानी जाती है। जब किसी व्यक्ति की **मनौती पूरी हो जाती है**,

तो वह **गणबिरिया** के रूप में घूमने वाले मेघनाथ खंभ पर **लटक कर पूजा** करता है। यह पूजा उस व्यक्ति की कृतज्ञता और विश्वास को दर्शाती है।

- **हरदुल लाला पूजा** : भारिया जनजाति द्वारा **हर वर्ष हरदुल पूजा** का आयोजन किया जाता है। यह पूजा **हरदौला लाला** के नाम पर की जाती है। एक मान्यता के अनुसार, इस दिन भारिया समुदाय **पातालकोट से सिर उतारकर** हरदौल जू की सहायता के लिये **बुंदेलखंड** तक जाते हैं। यह कथा उनकी **आस्था और साहस** को दर्शाती है।
- **भीमसेन देव*****: भारिया जनजाति में भीमसेन देवता को विशेष महत्व दिया जाता है। इनकी स्थापना किसी पेड़ के नीचे चबूतरा बनाकर की जाती है।भीमसेन देवता को विवाह का वरदान देने वाला देवता माना जाता है। इसलिये, भारिया समाज में विवाह से पहले गाँव में भीमसेन देव के भांवरा (पूजन स्थल) बनाये जाते हैं। छिंदवाड़ा जिले के पातालकोट क्षेत्र में रहने वाली भारिया जनजाति के लिये भीमसेन देवता को कृषि और वर्षा के देवता के रूप में भी पूजा जाता है।



- स्थानीय देवियों पर भारिया जनजाति की अत्यधिक आस्था है। ऐसी देवियों में जगतार माई, भवानी माई, नगबेडनी माई, खेडापति माई, बनजारिन माई, रातमाई आदि है। खेर माई बाहरी बाधाओं को रोकती है। गुरूमाता देवी, काली दुर्गा, पनघट माई, मातादाई, झिरिया माई आदि की पूजा भारिया लोग करते है। इन माई का निवास स्थान **गुड़ी** होता है।
- भुमका और गुनिया पर भारिया सबसे अधिक विश्वास करते है। भुमका मारक - तारक तंत्र मंत्र जानता है। गुनिया जड़ी - बुटियों का अच्छा ज्ञान रखता है। भारिया उड़द के दाने मंत्रित करके मूठ मारते है। भारिया जो पातालकोट में रहते है। जड़ी बूटियों के बहुत बड़े जानकार होते है। तथा पातालकोट को जड़ी बूटियों का स्वर्ग कहते है। पातालकोट के भारिया भूत शैतानों को भगाने का मंत्र जानते है।

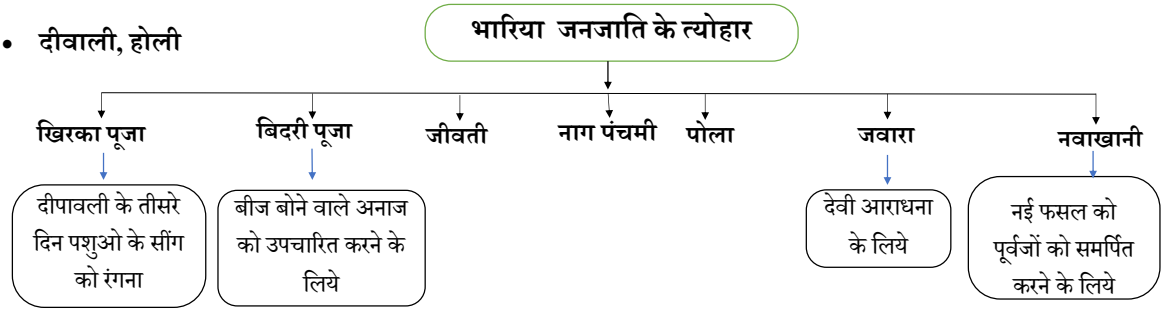
▶ **पर्व त्यौहार** : भारिया जनजाति भी अन्य जनजातियों की तरह **अनेक पर्व और त्यौहार** मनाती है। ये पर्व-त्यौहार **बड़े ही हर्ष और उल्लास** के साथ मनाए जाते हैं। इन पर्वों के माध्यम से भारिया जनजाति न केवल **धार्मिक आस्था** को प्रकट करती है, बल्कि अपने **सामूहिक जीवन**, **संस्कृति** और **परंपराओं** को भी सजीव रखती है।-



- **जीवती :** भारिया जनजाति श्रावण मास में एक विशेष त्योहार "जीवती" मनाती है। इस दिन भारिया समुदाय के लोग भैंसासुर और भीमसेन की पूजा करते हैं। वे नारियल चढ़ाकर प्रार्थना करते हैं और उपवास भी रखते हैं।देवताओं के सामने अन्न के ढेर पर सिंदूर लगाया जाता है, जो श्रद्धा और भक्ति का प्रतीक होता है।कुछ गाँवों में भारिया लोग मुर्गा या सूअर की बलि भी चढ़ाते हैं। बलि के बाद, उसका प्रसाद पातल-दोनों में परोसकर पूरे परिवार को भोजन के साथ दिया जाता है।
- **आखातीज :** भारिया लोग आखातीज का त्योहार वैशाख शुक्ल पक्ष तृतीया को मनाते हैं। इस दिन घर के देवी-देवताओं की विशेष पूजा करते हुए उनसे अच्छी वर्षा के लिये प्रार्थना करते हैं। तथा कोरे अर्थात् नये मटके में पानी भरना प्रारंभ करते हैं।
- **अखाड़ी :** अखाड़ी का त्योहार भारियाओं में आषाढ़ शुक्ल पक्ष में पूर्णिमा की तिथि को मनाया जाता है। इस दिन अपने ग्राम में स्थापित देवताओं मुठुआ, भैंसासुर, भीमसेन की पूजा कर उन्हें यथाशक्ति प्रसाद भोग लगाकर अपने पालतू पशुओं की सुरक्षा की कमाना करते है।
- **नाग पंचमी** : नाग पंचमी का त्योहर श्रावण की पंचमी तिथि को मनाया जाता है। इस दिन भारियाओं में हल आदि नहीं चलाते हैं।

खेती का कार्य नहीं करते तथा नाग के बिल के पास दूध, लाई आदि चढ़ाकर पूजा करते हैं।

- **पोला:** भादों माह की अमावस्या को भारिया लोग यह त्योहार मनाते हैं। इस दिन बैलों को सजाकर उनकी पूजा करते हैं। इसके बाद उन्हें अपने गाँव में दौड़ाते हैं। इस दिन घर और ग्राम के सभी देवी-देवताओं की भी पूजा करते हैं। पोला त्योहार में रात भर लड़के और लड़कियाँ दादरे गाते हैं।
- **दीवाली, होली**



▶ **नृत्य** : भारिया आदिवासी विभिन्न पर्व त्योहारों और खुशियों के अवसरों पर नाचते गाते है।



- **भडम नृत्य***** : **भड़म नृत्य** भारिया जनजाति का सबसे लोकप्रिय लोकनृत्य है। यह नृत्य मुख्यतः **विवाह के अवसर** पर किया जाता है। भड़म नृत्य के कई नाम प्रचलित हैं, जैसे – **गुन्नू साही भड़नी, भड़नई, भरनोटी** और **भंगम नृत्य**। यह एक **समूह नृत्य** होता है, जिसमें लगभग **20 से 60 पुरुष नर्तक और वादक** भाग लेते हैं। सभी लोग **एक वृत्त में खड़े होकर** नृत्य करते हैं। नृत्य के दौरान वृत्त के बीच में एक नर्तक **लकड़ी उठाकर दोहे (गाने)** गाता है, जिसे बाकी नर्तक ताल और संगीत के साथ दोहराते हैं।

भड़म क्या है? [MPPSC (Civil Main) GS-I 2023, | 3 M]

- **सैतम नृत्य : सैतम नृत्य**, जिसे **भिन्डा** भी कहा जाता है, **भारिया जनजाति की महिलाओं** द्वारा किया जाने वाला एक पारंपरिक नृत्य है। यह नृत्य मुख्यतः **किशोरियों** और **लड़कियों** द्वारा किया जाता है, इसलिये इसे **लड़कियों का नृत्य** भी कहा जाता है। इस नृत्य में एक **पुरुष ढोलक (बाजा)** बजाते हुए बीच में बैठता है, जबकि महिलायें उसके चारों ओर **घेरा बनाकर** नृत्य करती हैं। महिलायें दो दलों में आमने-सामने खड़ी होकर इस नृत्य में भाग लेती हैं।



- **करमा सैला नृत्य : गौंड** और **बैगा** जनजातियों की तरह **भारिया** जनजाति में भी **करमा, सैला** और **सुआ** नृत्य की प्रथा प्रचलित है।
- **अहिराई (विरहा) नृत्य:** अहिराई नृत्य दीपावली के अवसर पर किया जाता है। इस नृत्य में युवक **कौड़ियों की बनी झूल** पहनते हैं और **घर-घर जाकर छंवर लगाते हैं**, यानी आशीर्वाद और शुभकामनाएँ देते हैं। वे समूह में मिलकर **दोहरा गीत गाते हैं** और साथ ही **सैला नृत्य** करते हैं। यह नृत्य सामाजिक एकता, उत्सव और आनंद का प्रतीक होता है।

▶ **वाद्य यंत्र :** भारियों का **ढोल** झाबुआ के भील आदिवासियों के मॉदल की तरह गोल और बड़ा होता है। तसले के आकार की **टिमकी***** बनाई जाती है। जिस पर बकरे की खाल मढी जाती है। इसके अलावा झालर व छोटी थाली आदि वाद्य यंत्रों का भी प्रयोग करते है।



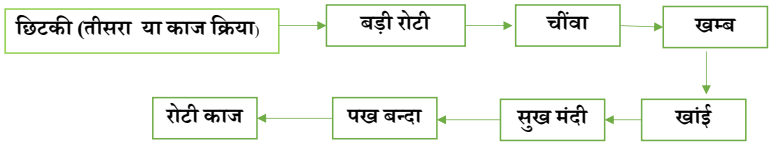
▶ **गायन** : भारिया जनजाति की सांस्कृतिक पहचान में लोकगीतों का विशेष स्थान है। ये गीत उनके जीवन, प्रकृति, ऋतु परिवर्तन, त्योहारों और पारिवारिक अवसरों से जुड़े होते हैं। मुख्य गायन उपजन, भॉवर, मंडवा, मटिया गीत, रमा, सुआ और सैतम है।

विस्तृत व्याख्या अध्याय–17 में की गई है।

▶ **मृतक संस्कार** : भारिया जनजाति में मृत्यु के पश्चात प्रायः **शव को दफनाया** जाता है, परंतु कुछ मामलों में **शव का दाह संस्कार** भी

किया जाता है। जब किसी व्यक्ति की मृत्यु होती है, तो घर में **रोना-धोना** प्रारंभ हो जाता है। घर के सभी स्त्री-पुरुष मृतक के मुंह में **पाँच से दस पैसे** रखते हैं, जिसे श्रद्धांजलि के रूप में माना जाता है। **श्मशान** (या दफन स्थान) पर पहुँचकर शव को लिटाने के लिये **कटरी** को ज़मीन पर रखा जाता है। यहाँ एक विशेष परंपरा निभाई जाती है, जिसे "**ज़मीन मोल लेना**" कहा जाता है। **बेर** (*Ziziphus mauritiana*) की काँटेदार डाली पर एक **पत्थर** रखा जाता है, और उस पर सभी लोग **पैर रखकर** गुजरते हैं। इस प्रक्रिया को "**काँटा लगना**" कहा जाता है। यह एक तरह की प्रतीकात्मक शुद्धि मानी जाती है, अंत में, **नदी** पर पहुँचकर सभी लोग **मुखारी (दातौन)** करते हैं, जिससे शुद्धता और अंतिम संस्कार की पूर्णता का प्रतीक माना जाता है।

- **तीजा/ छिटकी या तीसरा/ काज क्रिया** : तीसरे दिन मृतक का तीजा किया जाता है। तीजा के दिन मृतक परिवार के सभी लोग उपवास करते है।
- **बडी रोटी** : जिस व्यक्ति की मृत्यु हो गयी है उसे देव बनाने के लिये भारिया जाति में बड़ी रोटी नामक अनुष्ठान किया जाता है। यह कार्यक्रम अधिकतर माघ या पौष के शुक्ल पक्ष में अथवा बैशाख या चैत्र के शुक्ल पक्ष में किया जाता है।
- **चींवा** : गाँव के चार पंचो एवं कुटुंबियों के साथ रात्रि में राख के ऊपर टोकने को नारियल रख के ढक दिया जाता है। इसके अंदर के चींवा (मुर्गी का बच्चा) छोड़ दिया जाता है इससे चींवा के चलने से उसके पैर राख पर छप जाते है। इससे अनुमान लगाया जाता है मृतक ने किसका जन्म लिया है।
- **खम्ब** : सागौन की लकड़ी से एक छोटा सा खंभा बनाया जाता है, जिसे आँगन में उसारी (बरामदा) के नीचे गाड़ा जाता है। इसे चींवा की रात में स्थापित किया जाता है। यदि बान (पत्थर की प्रतिमा) बनवाया गया हो, तो उसे गाड़ा जाता है या फिर चौंतरा (चबूतरा) बनाया जाता है। शनिवार की सुबह **चौतरा** (अनगढ़ चौतरा) मृतक के स्मृति चिन्ह के रूप में दफनाये गये स्थान पर स्त्रियां द्वारा बनाये जाते है। इस दौरान स्त्रियाँ मृत्युगीत भी गाती है।



- **सुख मंदी** : सभी कुटुम्बी आँगन में बैठकर दूर दराज से आयो लोगों से जान-पहचान करते हैं। एक दूसरे से हाल-चाल पूछते हैं। यह सब सुख मांदी कहलाता है।
- **रोटी काज** : जिस तरह से गोडो मे **दसगात्र,** कोरकुओ मे **सिडोली प्रथा** होती है। उसी तरह भारियाओं मे **गमी रोटी / रोटी काज** का आयोजन होता है। गमी रोटी।/ रोटी काज सुविधानुसार एक, दो या दस साल में की जा सकती है।

EXERCISE – 7

1. भारिया जनजाति म.प्र. के कौन से जिले में निवास करती है। [MPPSC AM 2021]

(*a*) छिंदवाड़ा
(*b*) मंडला
(*c*) शहडोल
(*d*) उमरिया

2. छिंदवाड़ा जिले के पातालकोट क्षेत्र में कौन-सी जनजाति का बाहुल्य है? [MPPSC Civil/Forest (Prelim) 2025]

(*a*) भील
(*b*) भारिया
(*c*) खैरवार
(*d*) उरांव

3. छिन्दवाड़ा जिले के पातालकोट की भारिया जनजाति के कृषि देवता कौन है। [MPPSC Paper Computer Programmer 2021]

(*a*) डोंगरदेव
(*b*) भीमसेन
(*c*) भागदेव
(*d*) कुडोपन

4. निम्नलिखित में से कौन सी नृत्य भारिया जनजाति से संबंधित नही है? [MPPSC Forest Service (Main) 2021]

(*a*) भड़म,सैतम
(*b*) कर्मा,गेड़ी-डंडार
(*c*) सैला,अहिराई
(*d*) दहरा, ददरिया

1. (a), 2. (b), 3. (b) 4.(d)

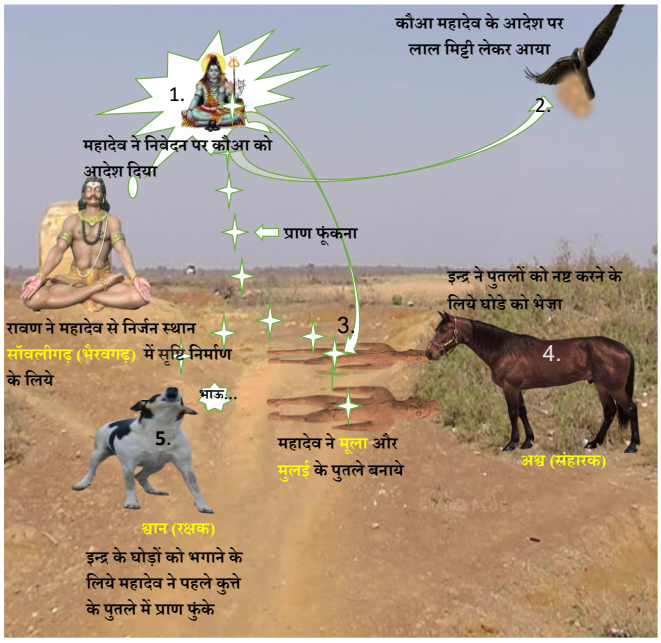
Chapter

8

कोरकू जनजाति

कोरकू जनजाति **आस्ट्रिक वंश** से संबंधित मानी जाती है। यह जनजाति स्वयं को रावण का वंशज मानती है और अपनी उत्पत्ति भगवान महादेव से जोड़ती है। कोरकू समुदाय की मान्यता के अनुसार, उनकी उत्पत्ति महादेव द्वारा उत्पन्न किये गए मूला और मुलई नामक पुरुष और स्त्री से हुई थी। यही कारण है कि वे महादेव को अपना आदि पुरुष मानते हैं।

- **उत्पति** : कोरकू जनजाति स्वयं को **रावण का वंशज** मानती है और **महादेव** को अपनी सृष्टि का रचयिता मानती है। इस विश्वास के पीछे एक **दैवीय और रोचक कथा** है, जो उनके प्राचीन इतिहास की झलक प्रदान करती है। कथा के अनुसार, एक समय **लंका का राजा रावण**, वन-विहार करते हुए **विंध्याचल और सतपुड़ा** के अंचल में पहुँचे। उसने देखा कि यह क्षेत्र अत्यंत सुंदर है और वन-सम्पदाओं से भरपूर है, परंतु यह स्थान निर्जन था। तब रावण ने अपने **इष्टदेव महादेव** से प्रार्थना की कि वे इस स्थान को आबाद करें और यहाँ सृष्टि की रचना करें।



महादेव रावण की प्रार्थना से प्रसन्न हुए। उन्होंने अपने **काग दूत कागेश्वर** को आदेश दिया कि वह **भँवरगढ़ और साँवलीगढ़** (जिला बैतूल) के बीच के पर्वतीय क्षेत्र से **लाल मिट्टी** लाए। महादेव ने उस मिट्टी से **एक पुरुष** और **एक स्त्री** की आकृति बनाई और उन्हें निर्जन स्थान पर स्थापित किया। जब भगवान महादेव उन आकृतियों में **प्राण फूँकने** ही वाले थे, तभी **इन्द्र** ने क्रोधित होकर तेज गति से दौड़ने वाले घोड़े वहाँ भेजे। उन घोड़ों ने दोनों मानव आकृतियों को नष्ट कर दिया। इससे क्रोधित होकर **महादेव** ने मिट्टी से **कुत्तों के पुतले** बनाये और तुरंत उनमें जान डाल दी। वे **भयानक और वीभत्स कुत्ते**, इन्द्र के घोड़ों को भगा ले गये। इसके बाद भगवान महादेव ने दोबारा एक **पुरुष** और एक **स्त्री** की आकृति बनाई और उनमें प्राण फूँक दिए। उन्होंने पुरुष का नाम **"मूला"** और स्त्री का नाम **"मुलई"** रखा। **इसी मान्यता अनुसार कौआ या कागदूत** महादेव के लिये मिट्टी **भँवरगढ़ या साँवलीगढ** लाया था, यानी, कोरकू उसी स्थान को **अपना मूल उत्पत्ति स्थल** मानते हैं। मिथक में अश्व संहारक (विनाशक) के रूप में और श्वान रक्षक के रूप में दर्शाये गये हैं।

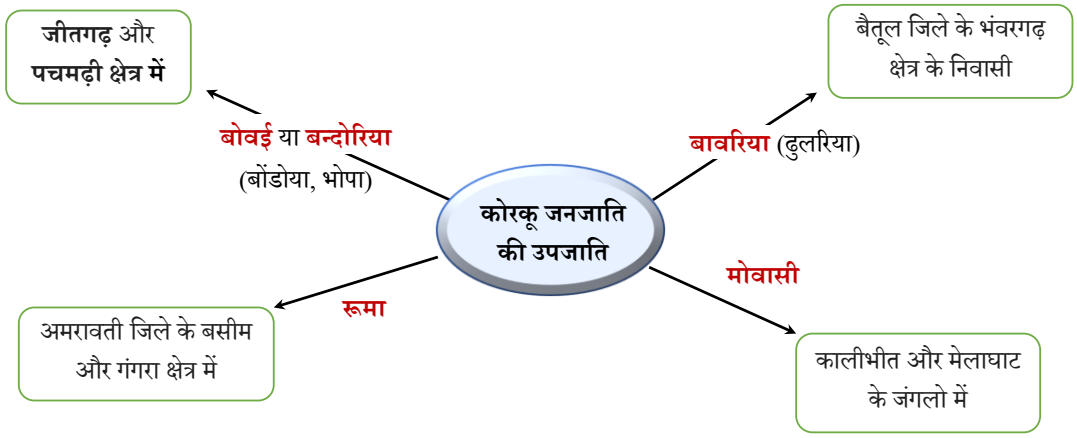
- **भौगोलिक वितरण** : कोरकू जनजाति मध्य प्रदेश की एक प्रमुख जनजाति है, जो मुख्य रूप से **सतपुड़ा के घने वन क्षेत्रों** में निवास करती है। इनका निवास स्थान **छिंदवाड़ा, बैतूल, नर्मदापुरम, खंडवा** और बुरहानपुर जिलों में पाया जाता है। यह जनजाति मध्य प्रदेश के **मध्य और दक्षिणी भागों** में फैली हुई है। कोरकू जनजाति का **वन संस्कृति से गहरा संबंध** है। यह समाज **वनदेवता** और **वनदेवी** का पूजक है। कोरकू समुदाय स्वभाव से **भोला-भाला**, **विवेकशील** और **प्रकृति-प्रिय** होता है। म.प्र. के अलावा कोरकू जनजाति महाराष्ट्र के अकोला, मेलघाट, मोर्शी में निवास करती है।

- **उपजाति** : कोरकू जनजाति को चार उपजातियों में बांटा गया है। (Check flow chart)

  आर्थिक स्थिति के आधार पर कोरकू जनजाति को दो वर्गों में विभाजित किया गया है – ① राज-कोरकू, ② पथरिया कोरकू

- **राज-कोरकू** : ये वर्ग भूस्वामी सदस्यों से मिलकर बना है, तथा इस वर्ग में सम्मिलित व्यक्ति के यहाँ ब्राह्मण वर्ग जलपान ग्रहण कर लेता है।
- **पथरिया कोरकू** : ये वर्ग निर्धन (गरीब) व्यक्तियों से मिलकर बना है, इस वर्ग के व्यक्ति दरिद्रता में जीवन व्यतीत करते है।

आदिवासी लोक कला अकादमी द्वारा कोरकू जनजाति की चार उपजातियां – **रूमा**, **पोतडया**, **ढुलरिया**, **बोवई** या **बन्दोरिया** या **बोन्डई** को बताया गया है। इनके कुल 36 गोत्र है। गोत्रो के नाम प्रायः वृक्ष, पशु - पक्षी, दिन -वार, घास - मिट्टी के नामों पर आधारित होते है।



▶ **गण** : जाति के आधार पर कोरकुओं के चार गण निर्धारित होते है।

गण	स्वभाव
कोरो (आदमी)	ताजा व शुद्ध मांस खाने वाला
राक्षस (शैतान)	सड़े गले पशु पक्षियों का मांस खाने वाला
सराकु (बंदर)	भाजी पाला खाने वाला
बाना (रीछ)	मधुमक्खी का छत्ता तोड़ने वाला

कोरकू शब्द का शाब्दिक अर्थ है, "आदमियों की जमात"

▶ **गोत्र चिन्ह एवं निषेध** : कोरकू जनजाति के **गोत्र चिन्हों का अध्ययन** अत्यंत रोचक और ज्ञानवर्धक है। कोरकू लोग **अपने गोत्र चिन्हों की पूरी श्रद्धा और सम्मान** से रक्षा करते हैं। हर जनसमूह का एक **विशिष्ट गोत्र चिन्ह** होता है, और उस चिन्ह का वे **कभी नाश नहीं करते**। जब कोई कोरकू व्यक्ति **जंगल में अपने गोत्र चिन्ह** को देखता है, तो वह उसे **नमन करता है**। यह परंपरा उनके **प्राकृतिक प्रेम**, **आस्था**, और **परिवारिक पहचान** को दर्शाती है।

- कोरकू जनजाति के लोग अपने **गोत्र चिन्हों** की पूजा करते हैं। वे इन चिन्हों को **टोटम** के माध्यम से प्रदर्शित करते हैं। इसका अर्थ यह है कि कोरकू जनजाति का सामाजिक जीवन **टोटम परंपरा से जुड़ा हुआ** होता है।
- कोरकू लोग अपने **जातीय टोटम चिन्हों** को शरीर पर **गुदवाते** हैं। इसके अलावा, वे इन्हीं चिन्हों को **सिडौली मण्डो** (पवित्र स्थान) में **उकेरते** भी हैं।
- वे इस पवित्र स्थान को **काली मिट्टी से नहीं लीपते**, क्योंकि यह स्थान उनके लिये धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत सम्माननीय होता है।

▶ **बोली** : **कोरकू बोली** भाषाई रूप से **हो, मुण्डारी** और **संथाली** जैसी बोलियों के अंतर्गत आती है। यह बोली **मुण्डा भाषा परिवार** से संबंधित मानी जाती है।

▶ **जन्म संस्कार** : कोरकू जनजाति की महिलायें **गर्भावस्था** के दौरान यथासंभव अंतिम समय तक अपने **दैनिक कार्यों में व्यस्त** रहती हैं। **प्रसूति** के बाद वे लगभग **एक सप्ताह तक विश्राम** करती हैं।

- शिशु के जन्म के बाद, **तीसरे या पाँचवें दिन** बच्चे की **नाल अलग** की जाती है।
- प्रसूता, गाँव की सभी महिलाओं के **पैर छूकर आशीर्वाद** लेती है। वहीं, स्थानीय महिलायें नवजात शिशु को देखकर यह **अनुमान लगाने का प्रयास** करती हैं कि यह शिशु **किस पूर्वज की आत्मा का पुनर्जन्म** है।

- **कोरकू समुदाय में नामकरण संस्कार** लड़का और लड़की के लिये भिन्न-भिन्न दिनों पर होता है—यदि **लड़की** हो, तो **तीसरे दिन** नामकरण होता है और यदि **लड़का** हो, तो **पाँचवें दिन** नामकरण किया जाता है।
- शिशु का नाम अक्सर **जन्म के दिन** के आधार पर रखा जाता है। जैसे, यदि शिशु का जन्म **बुधवार** को हुआ हो, तो उसका नाम **बुद्धा** रख दिया जाता है।

▶ **रूप-रंग और रहन-सहन** : कोरकू जनजाति के लोगों का शारीरिक स्वरूप उनकी पारंपरिक जीवनशैली को दर्शाता है। सामान्यतः इनका **रंग काला**, **आँखें काली**, **नाक थोड़ी चपटी**, **नथुने फूले हुए**, **होंठ मोटे** और **चेहरा गोल आकार का** होता है। इनका शरीर **हष्ट-पुष्ट** होता है और **गलों की हड्डियाँ उभरी हुई** दिखाई देती हैं। इनकी **औसत ऊँचाई गोंड जनजाति से अधिक** होती है और **बाल घुँघराले** होते हैं।



- कोरकू लोग अपने **बालों में तेल या साबुन** का उपयोग नहीं करते, बल्कि वे **काली मिट्टी से बाल धोते** हैं।
- कोरकू समुदाय के लोग **बरसात और सर्दी के मौसम** में ठंड से बचने के लिये **अलाव जलाते हैं** और आग के पास बैठकर गर्म रहते हैं। लगातार आग के पास रहने के कारण **पेट पर बड़े काले निशान** भी पड़ जाते हैं।

▶ **वेशभूषा** : कोरकू जनजाति का पहनावा बहुत ही साधारण और सादा होता है। पुरुष शरीर के ऊपरी भाग पर सूती बंडी या कुर्ता पहनते हैं तथा कमर से घुटनों तक सफेद धोती पहनते हैं। वे सिर पर लगभग चार-पाँच हाथ लंबा अंगोछा या पगड़ी बाँधते हैं और गले में चाँदी, काँसा या ताँबे का छोटा ताबीज पहनते हैं।



महिलायें रंग-बिरंगे नीले, हरे, लाल और गुलाबी रंग के लुगड़े पहनती हैं और बदन ढकने के लिये रंग-बिरंगी चोलियाँ पहनती हैं।युवतियाँ चाँदी, काँसे और पीतल से बने गहनों के साथ-साथ लाल, काले, पीले और नीले मोतियों की मूँगा मालाएँ भी पहनती हैं। वे पैरों में पायजेब (पैजन) पहनती हैं।

▶ **गुदना** : कोरकू जनजाति की **महिलायें गुदनाप्रिय** होती हैं। वे अपने शरीर पर पारंपरिक रूप से गुदना गुदवाना पसंद करती हैं। इस समुदाय में गुदना गुदवाने की प्रक्रिया **लगभग पाँच वर्ष की आयु** से ही शुरू हो जाती है। विवाह से पहले, स्त्रियों के शरीर का अधिकांश भाग गुदा जा चुका होता है। माथे पर विशेष रूप से **"कपार गोडई"** नामक गुदना बनाया जाता है। स्त्रियाँ अपनी **जंघाओं और पैरों** पर **साँकल, चौक, पुष्प, फूल-पत्तियाँ, लता-बेल और बिंदुओं से बनी आकृतियाँ** गुदवाती हैं।

- **पुरुष** भी अपने हाथों पर **अपना नाम** या **देवी-देवताओं की आकृतियाँ** गुदवाने के शौकीन होते हैं।
- गुदना गोदने का कार्य **गुदनारी** या **मुंदानी** नामक स्त्रियाँ करती हैं। ये वर्ष में दो से तीन बार गाँवों में आती हैं और **नीली-काली स्याही** से, **सुई** की सहायता से गुदना गोदती हैं। इसके बदले वे **एक पाव अनाज** या **रुपये-पैसे** लेती हैं।

▶ **खान – पान** : कोरकू जनजाति का मुख्य भोजन खेती से प्राप्त अनाज, जंगल में मिलने वाले फल–फूल और विभिन्न प्रकार का मांस होता है। कृषिकृत पदार्थों में वे विशेष रूप से **कोदो–कुटकी, सौवा, बाजरा और मक्की** का सेवन करते हैं। कोरकू समुदाय **मांसाहारी** होता है। शिकार के लिये ये लोग **भाला** और **बल्लम** जैसे हथियारों का प्रयोग करते हैं। **कुल्हाड़ी** इनके जीवन का एक अभिन्न अंग मानी जाती है। इनके भोजन में **महुये से बनी शराब**, जिसे स्थानीय भाषा में **सीडू** कहा जाता है, विशेष स्थान रखती है। स्त्रियाँ भी सीडू का सेवन करती हैं। जब अनाज की कमी होती है, तब ये **लचका** जैसे पतले खाद्य पदार्थ का उपयोग करते हैं, जिससे पेट भरा जा सके।

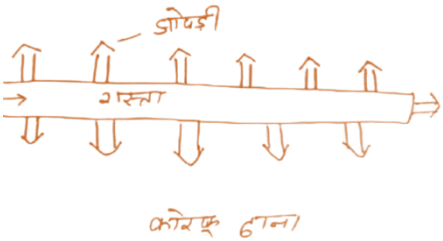
- कोरकू जनजाति के लोग प्रतिदिन उपयोग में आने वाले बर्तनों में **मिट्टी** और **एल्युमिनियम** के बर्तन अधिक प्रयोग करते हैं।
- हथियारों में उनके पास लोहे से बने **कुल्हाड़ी, बल्लम और हँसिया** प्रमुख होते हैं। आग जलाने के लिये वे **दियासलाई** के अलावा **चकमक** नामक पारंपरिक विधि का भी प्रयोग करते हैं।
- **चकमक** एक विशेष तरीका है जिसमें **गार पत्थर** पर **सेमल फल की रूई** रखी जाती है, और फिर उस पर **लोहे के छोटे टुकड़े से आघात** करके आग उत्पन्न की जाती है। इस विधि को ही **चकमक विधि** कहा जाता है।

▶ **आर्थिक व्यवस्था** : कोरकू जनजाति की आजीविका मुख्यतः **कृषि मजदूरी** पर आधारित होती है। अधिकांश कोरकू लोग खेतों में

मजदूरी करके अपने जीवन का निर्वाह करते हैं। **पर्वतीय क्षेत्रों** में रहने वाले कोरकू **वन विभाग** के लिये लकड़ियाँ ढोने का कार्य करते हैं तथा वन विभाग के जंगलों से लकड़ी काटने का काम भी करते हैं। कुछ कोरकू लोग जंगलों से **लकड़ी, गोंद, शहद, चिरौंजी और महुआ** जैसे **वनोपज** का संग्रहण करते हैं और उन्हें शहरों में बेचकर धन अर्जित करते हैं। वनोपज कोरकू जनजाति की **आर्थिक व्यवस्था** में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

- खेतों में काम करने वाले कोरकू को **भाग्या** कहा जाता है। वहीं जंगल काटकर खेती करने की पारंपरिक पद्धति को **"बदलवा प्रथा"** कहा जाता है।

▶ **मकान/आवास** : कोरकू जनजाति आज भी पारंपरिक तरीके से बने **कच्चे मकानों** में निवास करती है। ये मकान प्रायः **घास-फूस**, **लकड़ी**, **बांस** और **खपरैल** से बनाये जाते हैं। कोरकू लोग अपने मकान प्रायः **दो सीधी पंक्तियों** में बनाते हैं। जहाँ ये लोग रहते हैं, उस स्थान को वे **"कोरकू ढाना"** कहते हैं। ठंड से बचने के लिये वे अपने कमरों में **अंगीठी** रखते हैं, जिसे स्थानीय भाषा में **"गोरसी"** कहा जाता है।



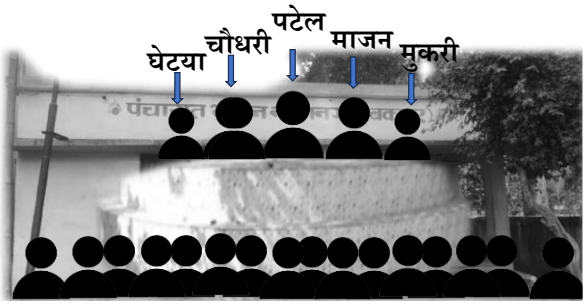
कोरकू जनजाति में **भित्ति चित्र** बनाने की प्राचीन परंपरा आज भी जीवित है। विशेष रूप से **दीपावली की रात**, कोरकू समुदाय की स्त्रियाँ घर की **दीवारों और प्रवेश द्वार** पर **'गुदनी'** नामक शुभ आकृतियाँ बनाती हैं। ये चित्र वे **सफेद खड़िया**, **मिट्टी** और **हिरमची** (प्राकृतिक रंग) की सहायता से तैयार करती हैं।



ठाठनियाँ (ठाट्या की पत्नी), जो इस कार्य में दक्ष होती हैं, हर घर में जाकर ये चित्र बनाती हैं। बदले में उन्हें **नेग (उपहार या दक्षिणा)** प्राप्त होता है। इसके साथ ही वे **गोबर से देवी-देवताओं की मूर्तियाँ** भी बनाती हैं। चित्र बनाते समय वे महिलायें पारंपरिक **गुदनी गीत** भी गाती हैं।

▶ **सामाजिक व्यवस्था** : कोरकू जनजाति का पारिवारिक ढाँचा बहुत ही **सुव्यवस्थित** होता है। परिवार में सामान्यतः **पति-पत्नी**, **विवाहित और अविवाहित लड़के-लड़कियाँ** साथ रहते हैं। कुछ परिवारों में सभी पुत्र, उनकी पत्नियाँ और बच्चे एक साथ रहते हैं, जिसे हम **संयुक्त परिवार** कह सकते हैं। हालाँकि कोरकू समाज में अधिकतर परिवार **एकल परिवार** होते हैं। कोरकू समाज में **महिलाओं का स्थान महत्त्वपूर्ण** माना जाता है। जहाँ एक ओर समाज में पुरुष को **सर्वेसर्वा** माना जाता है, वहीं दूसरी ओर **महिलाओं के अधिकार** भी सामाजिक और धार्मिक परंपराओं में **सुरक्षित** हैं। **आर्थिक सुदृढ़ता** लाने में पुरुषों के साथ-साथ **महिलाओं का भी विशेष योगदान** होता है। उन्हें **घर-गृहस्थी के कार्यों** के साथ-साथ **बच्चों की देखभाल** की ज़िम्मेदारी भी निभानी पड़ती है।

▶ **पंचायत** : कोरकू जनजाति की सामाजिक संरचना में पंचायत का विशेष स्थान होता है। यह पंचायत परंपरागत रूप से गाँव के सामाजिक जीवन को नियंत्रित और संचालित करती है। पंचायत का मुख्य उद्देश्य समाज में अनुशासन बनाये रखना, विवादों का निवारण करना तथा सामाजिक रीति-रिवाजों को पालन करवाना होता है। कोरकू की पंचायत में पांच प्रतिष्ठित व्यक्ति होते है।

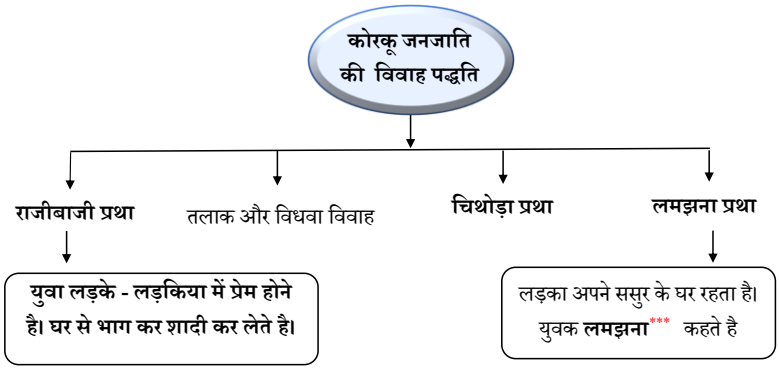


- **पटेल** : पटेल का पद परंपरागत होता है, लेकिन आवश्यक होने पर उसे हटाया भी जा सकता है। पंचायत में लिये गए निर्णय को **पटेल ही पंचों की सहमति से** समाज के सामने सुनाता है। पटेल पंचायत का प्रमुख होता है और न्यायिक कार्यों में उसकी भूमिका महत्त्वपूर्ण मानी जाती है।
- **माजन** : गाँव की सामाजिक व्यवस्था में **पटेल के बाद माजन का स्थान** आता है। माजन का कार्य **पटेल द्वारा लिये गए निर्णयों को सभी लोगों को स्पष्ट रूप से समझाना** होता है। वह पंचायत के आदेशों को आम जन तक पहुँचाने का माध्यम होता है।

- **चौधरी** : चौधरी का कार्य **पंचायत की बैठक की सूचना देना** होता है। जब गाँव में पंचायत भरनी होती है, तो चौधरी सभी संबंधित लोगों को इसकी जानकारी देता है, ताकि वे समय पर पंचायत में उपस्थित हो सकें।
- **घेटया** : घेटया वह व्यक्ति होता है जो **प्रसाद बांटने का कार्य** करता है। पूजा-पाठ या धार्मिक अनुष्ठान के पश्चात जो प्रसाद तैयार किया जाता है, उसे समाज के लोगों में **सुनियोजित ढंग से वितरित करने की जिम्मेदारी** घेटया की होती है।
- **मुकरी** : मुकरी का मुख्य कार्य त्यौहारों के समय **नाचने वालों को बुलाना** होता है। यह व्यक्ति समाज में सांस्कृतिक आयोजनों को सफल बनाने में सहयोग करता है।
- **अन्य व्यक्ति** : ◈ **पडियार** : कोरकू जनजाति में **पड़ियार** को एक **पूज्य और अत्यंत विशिष्ट व्यक्ति** माना जाता है। कोरकू समाज की मान्यता है कि पड़ियार के शरीर में **देवी-देवताओं का वास** या **उनका अंश** होता है। इसी कारण से **देव-दशहरा** जैसे पर्वों पर कोरकू समुदाय पड़ियार की पूजा करते हैं। पड़ियार का मुख्य कार्य कोरकू लोगों की **आंतरिक और बाहरी बीमारियों** तथा **बाधाओं** को दूर करना होता है। संकट की स्थिति में वह समाज की **रक्षा** करता है और विभिन्न उपायों से लोगों को राहत दिलाता है। ◈ **भोमका** जनजातीय समाज में **जाति पुरोहित** होता है। वह शादी-विवाह जैसे अवसरों पर किये जाने वाले सभी **मांगलिक कार्यों** का संचालन करता है। **देव-पूजन**, **मंडप-प्रतिष्ठा**, **लग्न निर्धारण** और **विवाह से संबंधित अनुष्ठानों** का कार्य भोमका के द्वारा ही किया जाता है।

▶ **विवाह** : कोरकू जनजाति में विवाह एक महत्वपूर्ण सामाजिक परंपरा होती है। यह केवल दो व्यक्तियों का मिलन नहीं, बल्कि दो परिवारों और कई बार दो गाँवों के बीच **सामाजिक बंधन** भी होता है। इस जनजाति में **सजातीय विवाह** को परंपरागत रूप से आदर्श माना जाता है। **समगोत्रीय विवाह** अर्थात् एक ही गोत्र में विवाह करना **निषिद्ध** होता है। कोरकू जनजाति में विवाह की चार प्रथाएं प्रचलित है। लमझना प्रथा या घर दामाद, चिथोड़ा प्रथा, राजी बाजी प्रथा और तलाक / विधवा विवाह ।

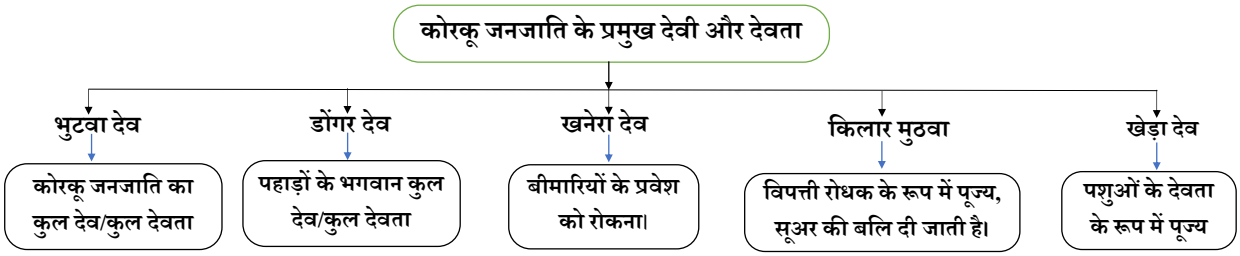
- **चिथोड़ा प्रथा** : इस प्रथा में गांव का कोरकू पटेल गांव से दो व्यक्तियों को विवाह की बातचीत के लिये लड़की के घर पर भेजता हैं जाने वाले ये व्यक्ति चिथोड़ा तथा प्रथा चिथोड़ा प्रथा **कहलाती है।** इसमें लड़के का पिता लड़की के पिता को दहेज देता है। वर पक्ष बारात लेकर कन्या पक्ष के यहां जाता है।
- **तलाक और विधवा विवाह** : कोरकूओं में तलाक और विधवा विवाह प्रचलित हैं कोरकू स्त्री पहले पति के पास नहीं रहना चाहती है। तो वह जाति पंचायत द्वारा तलाक ले लेती है। तथा राजी-बाजी विवाह कर सकती हैं विधवा होने पर अगर मृतक का भाई स्त्री को न रखना चाह रहा हो तो वह उसे उसके मायके छोड़ देता हैं और वह स्त्री अन्यत्र शादी कर लेती है।कोरकू एक से अधिक पत्नी रख सकते है।



▶ **धार्मिक जीवन** : कोरकू जनजाति का धार्मिक जीवन **प्रकृति** और **परंपराओं** से गहराई से जुड़ा होता है। अन्य जातियों की तरह कोरकू समुदाय भी **देवी-देवताओं** और **पितरों** की पूजा-अर्चना करता है। यह जनजाति मुख्य रूप से **महादेव, रावण, मेघनाथ, महावीर देव, किलार मुठवा, खेड़ादेव, सूर्य** और **चंद्रमा** आदि देवताओं की श्रद्धा से पूजा करती है।

- **महादेव** : कोरकू जनजाति **महादेव (शिव)** को अपना पितामह मानती है। इनकी धार्मिक आस्था शिव जी में गहराई से जुड़ी होती है। **शिवरात्रि** के दिन कोरकू लोग **शिव मंदिर** जाकर **पुष्प और प्रसाद अर्पित** करते हैं। वे महादेव की पूजा **"महावीर"** नाम से करते हैं।
- **रावण** : कोरकू जनजाति में **रावण** को एक विशेष स्थान प्राप्त है। मान्यता है कि रावण के **निवेदन पर ही भगवान शंकर** ने उसकी उत्पत्ति की थी। इसलिये कोरकू जनजाति **रावण को अपना** पितृपुरुष मानती है और स्वयं को **रावण का वंशज** कहती है। इस जनजाति समुदाय में **होली** के अवसर पर **रावण की पूजा** की जाती है, जो उनकी परंपरा और धार्मिक आस्था को दर्शाती है।

- **मेघनाथ** : मध्यप्रदेश की **कोरकू जनजाति** में **मेघनाथ** को *आराध्य देवता* के रूप में पूजा जाता है। जनश्रुति के अनुसार, **रावणपुत्र मेघनाथ** ने किसी समय कोरकू जनजाति की रक्षा की थी। तभी से उनकी **स्मृति में खम्भ स्थापना** और **आराधना** की परंपरा आरंभ हुई। कोरकू देव जगत में मेघनाथ को **रक्षा प्रदान करने वाले देवता** के रूप में माना जाता है। **होशंगाबाद** और **खण्डवा** क्षेत्र के कोरकू जनजातियों में **खम्भ स्वांग नाट्य** करने की परंपरा बहुत पुरानी है। इस परंपरा में, नाट्य रंगभूमि के बीचों-बीच एक अस्थायी **खम्भ (स्तंभ)** स्थापित किया जाता है।



▶ **जादू टोना** : कोरकू जनजाति के बीच **जादू-टोना** का प्रचलन सामान्य रूप से देखने को मिलता है। यह समुदाय **भूत-प्रेत** और **अलौकिक शक्तियों** में गहरा विश्वास रखता है। **अमावस्या** को कोरकू समाज में **पवित्र दिन** माना जाता है। इस दिन ये **कोई त्यौहार नहीं मनाते** और न ही **सीडू** (मदिरा) का सेवन करते हैं।



- **पडियार** कोरकू समाज में **तांत्रिक** के रूप में कार्य करता है। वह न केवल जादू-टोना करता है, बल्कि **औषधियों का संग्रहण** भी करता है।
- कोरकू जनजाति की मान्यता हैं कि बीमारियों या किसी अनचाही घटना का कारण **जादू-टोना** हो सकता है। इसलिये वे इसका इलाज **झाड़-फूँक** और तांत्रिक विधियों से करना उचित मानते हैं।
- जब किसी महिला द्वारा तांत्रिक कार्य किये जाते हैं, तो उसे "**भगटो डुकरी**" कहा जाता है।

▶ **त्यौहार** : जनजाति चाहे किसी भी समुदाय से संबंधित हों, सभी अपनी **संस्कृति** और **सभ्यता** के अनुसार **पर्व-त्योहार** और **सामाजिक-धार्मिक नियमों** को महत्व देते हैं। पर्व-त्योहारों के अवसर पर उनका उत्साह देखने लायक होता है। इन अवसरों पर उनकी **धार्मिक भावना** प्रकट होती है और वे अपने **देवी-देवताओं** के प्रति गहरी **आस्था** व्यक्त करते हैं।

- **गुड़ी-पड़वा** : कोरकू जनजाति चैत्र माह में गुड़ी-पड़वा का पर्व मनाती है। यह पर्व नववर्ष के स्वागत के रूप में मनाया जाता है। इस दिन वे कृषि से संबंधित कोई भी कार्य नहीं करते, क्योंकि यह दिन विश्राम और उत्सव का होता है। गुड़ी पड़वा के दिन **नीम की पत्तियों में गुड़ मिलाकर** खाया जाता है। कोरकू समुदाय की मान्यता है कि गुड़ और नीम की पत्तियाँ खाने से शरीर स्वस्थ रहता है, वर्ष भर **कोई रोग** नहीं होता, और **आयु में वृद्धि** होती है।
- **दशहरा** : देव-दशहरा कोरकू जनजाति का एक प्रमुख धार्मिक पर्व है, जिसे चैत्र महीने की पड़वा से लेकर दशहरा तक मनाया जाता है। यह पर्व विशेष रूप से देवी-देवताओं से संबंधित होता है। कोरकू लोग संकट के समय मन्नतें मानते हैं। जब कोई कार्य सफल हो जाता है, तो वे अपनी सामर्थ्यानुसार देव-दशहरा के दिन देवी-देवताओं की पूजा करते हैं और बलि अर्पित करते हैं। इस पर्व पर बच्चों की **बेलदशी**(एक विशेष प्रकार का रक्षा सूत्र) भी करायी जाती है। यह कार्य समाज का एक विशेष व्यक्ति 'पड़ियार' करता है।
- **डोडबली** : डोडबली एक पारंपरिक आदिवासी त्योहार है, जिसे **ज्येष्ठ महीने** में मनाया जाता है। यह विशेष रूप से **लड़के-लड़कियों का प्रमुख त्योहार** माना जाता है। इस त्योहार में समुदाय के लोग गीत, नृत्य और रंग-बिरंगे आयोजनों के माध्यम से उत्सव मनाते हैं। इस दिन **लड़के जामुन की पल्लवित शाखाएँ** तोड़कर लाते हैं और एक चुने हुए लड़के के शरीर पर रखकर उसका पूरा शरीर ढँक देते हैं। इस प्रक्रिया को "**गमनाय**" कहा जाता है। एक लड़की की कमर में **नारियल की रस्सी** बाँधी जाती है, जिसे पीछे से एक दूसरा लड़का खींचता है। ये दोनों आगे-पीछे होकर नृत्य करते हैं, और अन्य सभी साथी पारंपरिक गीत गाते हैं,

जिसे "**डोडबली सिरिंज**" कहा जाता है। नृत्य के दौरान, लड़के पर एक लोटा पानी डाला जाता है और लोग **अनाज व रुपये-पैसे** माँगते हैं। इस दौरान नृत्य के साथ डोडाबली गीत भी गाये जाते है।

- **जिरोती** : जिरोती **श्रावण मास की हरियाली अमावस्या** को बड़े हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जाता है। जिरोती के अगले दिन, यानी **पड़वा** की शाम को कोरकू समुदाय का प्रसिद्ध **डंडा नाच** आयोजित होता है। इस नृत्य में **नवयुवक से लेकर वृद्ध तक** सभी बड़े उत्साह के साथ भाग लेते हैं।
- **पोला** : पोला एक प्रमुख त्योहार है, जिसमें कोरकू जनजाति अपने बैलों की पूजा करती है। यह पर्व बैलों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने और उनके महत्त्व को सम्मान देने के उद्देश्य से मनाया जाता है।
- **देव दशहरा** : देव-दशहरा कोरकू जनजाति का एक प्रमुख **धार्मिक पर्व** है, जो **कुँआर माह** (अश्विन मास) में मनाया जाता है। यह त्योहार उनके **देवी-देवताओं** से संबंधित होता है और विशेष रूप से **नवरात्रि** के समय मनाया जाता है। कुँआर की **पड़वा** (प्रतिपदा) से लेकर **नवमी** तक, प्रतिदिन रात्रि में कोरकू लोग **देव के चबूतरे** पर एकत्र होते हैं। वहाँ वे **ढोलक**, **टिमकी**, **थाली और झाँझ** बजाते हुए **देवी गीत** गाते हैं। इस आयोजन में **पड़ियार** नृत्य करता है और उसकी **बैठक** होती है। पड़ियार के साथ उसका **सहायक** '**रजाल्या**' भी रहता है। नवरात्रि के दिनों में **पड़ियार और भोमका** की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण होती है।

ठाट्या जनजाति

खंडवा और बैतूल जिलों में **गोंड और कोरकू जनजाति** का बाहुल्य है इन जनजाति के पशुओ को चराने वाले व्यक्ति **ठाट्या** कहलाते है। इनकी आजीविका का मुख्य साधन पशुचारण है। भगवान श्री कृष्ण को अत्यधिक मानने के कारण इन्हे **ग्वाल वंशीय ठाट्या** भी कहा जाता है। इनकी सामाजिक संरचना गोण्ड जनजाति की तरह ही है,परंतु गोंड जनजाति में इनके शादी विवाह नही होते है। जंगल में हिंसक जानवरों से इनकी और इनके पशुओ को सुरक्षा टोपला देव करते है। पोला पर्व पोला अमावस्या को मनाया जाता है इस दिन बैलों की दौड़ की जाती है। यह जनजाति मुख्य रूप से जैरी, मेघनाद खम्ब,दीपावली जगोरा,गोंदनी और गोठान त्योहार मानती है। दीपावली का त्योहार इनका काफी दिनों तक चलता है। दीपावली की रात्रि को और दूसरे दिन पड़वा को **ठाट्या** जनजाति द्वारा अपने मालिक के घर **ठाट्या** नाच किया जाता है।

- **दीपावली** : कोरकू जनजाति **कार्तिक माह की अमावस्या**, जिसे 'पड़वा' कहा जाता है, को दीपावली का पर्व मनाती है। इस दिन कोरकू लोग **अपने बैलों को स्नान कराकर घर लाते हैं**। कोरकू समाज के **ग्वाल 'ठाठ्या' रात भर 'भूगड़'** (एक बाँसुरी जैसे वाद्य यंत्र जो लगभग 4 फीट लंबा होता है) पर **लोकधुनें बजाते हैं** और उनके साथ **नृत्य** करते हैं। कोरकू समाज की **स्त्रियाँ**, जिन्हें **'ठाठनियाँ'** कहा जाता है, इस उत्सव में भाग लेती हैंऔर रात में दीवालों पर गुदनी नामक भितिचित्र बनाती है।

▶ **नृत्य** : कोरकू जनजाति नृत्य प्रिय मानी जाती है। इनके नृत्य वर्षभर चलते रहते हैं, यानी **बारहों महीने** किसी न किसी अवसर पर नृत्य होता रहता है। कोरकू जनजाति के सभी नृत्य किसी **पर्व, त्योहार या मिथक** से जुड़े होते हैं। ये नृत्य न केवल मनोरंजन का माध्यम होते हैं, बल्कि सामाजिक और धार्मिक परंपराओं का भी प्रतीक होते हैं। कोरकू नृत्यों में **नर्तकों की विशेष साज-सज्जा नहीं होती**। पुरुष केवल **सिर पर पगड़ी** पहनते हैं, जबकि महिलायें **कानों में जामुन के पत्ते** सजाकर नृत्य में भाग लेती है।

नृत्य	अवसर
देव दशहरा नृत्य	चैत्र माह में पडियार द्वारा धाम गीत पर किये जाने वाला नृत्य है।
थापटी नृत्य	◈ स्त्री प्रधान समूह नृत्य ◈ चिटकोरा वाद्य के कारण इसे चिटकोरा नाच तथा गीतों को थापती सिरिंज कहते है।
चाचरी नृत्य	चैत्र मास में किये जाने वाला पुरुष प्रधान नृत्य है।
ढॉढला नाच	ढॉढला नृत्य फुरसत के समय चैत्र वैशाख की रातों में किया जाता है।
डंडा नाच	जिरोती त्योहार पर पुरूष प्रधान नृत्य है।
चिल्लुडी नाच	कुआर के महीने में कुवाँरी युवतियों द्वारा किया जाने वाल समूह नृत्य है।
ठाठया नाच	दीपावली की रात्रि को और दूसरे दिन पड़वा केा यह नाच किया जाता है।
गादली नृत्य	शादी विवाह के अवसर पर कोरकू स्त्रियों का प्रसिद्ध नाच है।
विस्तृत व्याख्या अध्याय- 18 में की गयी है।	

- **वाद्य यंत्र** : ◈ **चिटकोरा** : चिटकोरा एक छोटा **करताल जैसा वाद्य यंत्र** होता है, जिसे **सागौन** और **खाखरे की लकड़ी** से बनाया जाता है। यह सरल परंतु लयबद्ध ध्वनि उत्पन्न करता है और मुख्य रूप से लोकनृत्य या पारंपरिक गीतों की संगति में बजाया जाता है। ◈ **भगड़ू** : भगड़ू एक विशिष्ट और कठिन वाद्य यंत्र है, जो विशेष रूप से **कोरकू जनजाति** द्वारा प्रयोग किया जाता है। यह एक **बांसुरी के आकार** का वाद्य होता है, जिसे बांस में छेद कर बनाया जाता है। इसकी ध्वनि तीव्र और गूंजदार होती है, जो पारंपरिक गीतों और अनुष्ठानों में प्रयोग की जाती है।

- **मृत्यु संस्कार** : कोरकू समाज में मृत्यु से संबंधित परंपराएँ विशेष और विशिष्ट होती हैं। सामान्यतः **मृतक को दफनाने की प्रथा** पायी जाती है, हालांकि कुछ स्थानों पर **अग्नि संस्कार** भी किया जाता है। किसी के निधन होने पर गाँव के सभी लोग **मृतक का शव शमशान ले जाते है। श्मशान से लौटते समय**, लोग बेर (Ziziphus mauritiana) के पेड़ के चारों ओर **चक्कर लगाते हैं** और उसकी **पत्तियाँ खाते हैं**, जिससे अशुद्धि दूर मानी जाती है। मृतक की स्मृति में **मृत्युभोज** का आयोजन सुविधा अनुसार **किसी भी सोमवार** को किया जाता है, जिसे "**तीजा**" कहा जाता है। **नवजात शिशु वाली माताएँ** तथा **भोमका (पुरोहित)** तीजा की **पंगत में भाग नहीं लेते**। मृत्युभोज के **अगले दिन**, मृतक की **समाधि पर एक लकड़ी का स्तंभ** लगाया जाता है, जिसे **"मंडा"** या **"मंडो"** कहा जाता है। यह स्तंभ **सागौन की लकड़ी** से बनाया जाता है और इसे **बेलबूटों, पशु-पक्षियों की आकृतियों** से सजाया जाता है। **मंडो गाड़ने की प्रथा** विशेष रूप से **नर्मदापुरम जिले के पचमढ़ी क्षेत्र** के कोरकुओं में प्रचलित है।



कोरकू समाज में "**मृत्यु गीत**" गाने की एक विशेष परंपरा है, जिसे "**सिडोली गीत**" कहते हैं और इस प्रथा को "**सिडोली प्रथा**" कहा जाता है। **सिडोली** प्रथा का निर्वहन सामान्यतः **10–15 वर्षों में एक बार**, किसी **सम्पन्न और प्रसिद्ध कोरकू व्यक्ति** की स्मृति में आयोजित की जाती है। इस प्रथा में कोरकू लोग आपस में **गालियाँ देते हैं**, जो प्रतीकात्मक होती हैं। कभी-कभी विवाद इतना बढ़ जाता है कि **झगड़े की स्थिति** भी बन जाती है।

EXERCISE – 8

1. मध्य प्रदेश की किस जनजाति द्वारा 'मेघनाथ खम्भ' स्थापित किया जाता है ? [MPPSC Forest Service (Main) 2024]
(a) अगरिया
(b) कोरकू
(c) भील
(d) कंवर

2. मध्य प्रदेश के किस जनजाति में मेघनाथ को आराध्य के रूप में पूजा जाता है? [MPPSC Assistant Geology 2023]
(a) भील
(b) मुंडा
(c) अगरिया
(d) कोरकू

3. कोरकू जनजाति वर्ष में कितनी बार जादुई शक्तियों एवं आत्माओ को बलि देकर प्रसन्न करते है? [MPPSC Assistant Registrar Examination 2022]
(a) चार
(b) दो
(c) एक
(d) तीन

4. निम्न में से कौन सी कोरकू की उप जनजाति नही है? [MPPSC Forest Service (Main) 2021]
(a) नहाल
(b) बोडोय
(c) पटेलिया
(d) बावरिया

5. पंचमढ़ी क्षेत्र में रहने वाले कोरकू जनजाति के लोग कहलाते है [MPPSC State Engineering service (Pre) 2016]
(a) मोवासी
(b) रुमा
(c) बावरिया
(d) बंदोरिया

6. कौन सी जनजाति स्वयं को रावण का वंशज मानती है? [MPPSC Forest Service (Main) 2021]
(a) भील
(b) गोंड
(c) कोरकू
(d) सहरिया

Chapter

9

भील जनजाति

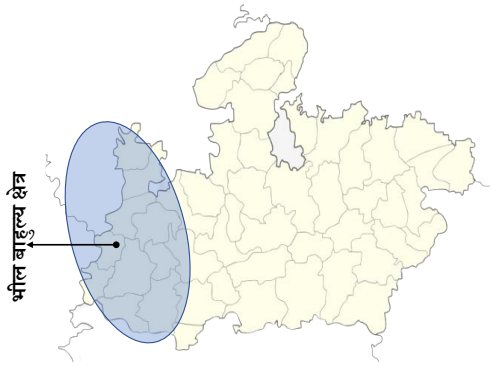
'**भील**' शब्द की उत्पत्ति **द्रविड़ भाषा** के अंतर्गत **तमिल के** '**बील**' शब्द से मानी जाती है, जिसका अर्थ होता है — '**धनुष**'

यह जनजाति आदिम मान्यताओ पर विश्वास करने वाली सरल स्वभाव की होती है, **जो धनुष-कौशल** में निपुण के लिये जानी जाती है। इसी कारण, इनका नामकरण **धनुष (बील)** के आधार पर '**भील**' पड़ गया।



भील जनजाति का संबंध **प्रोटो-ऑस्ट्रलॉयड समूह** से माना जाता है। प्रसिद्ध इतिहासकार **कर्नल टॉड** ने इन्हें "**वन-पुत्र**" तथा सम्राट अशोक के शिलालेखों में **भील जाति को पुलिंद** कहा गया है भील जनजाति एक **पंचमेल समूह** है, जो मुख्यतः **शिकारी** और **योद्धा** होते हैं। **सोमदेव** द्वारा लिखित '**कथासरित्सागर**' नामक ग्रंथ में भी भीलों को **विंध्य क्षेत्र** में निवास करने वाला समुदाय बताया गया है।

- **उत्पति** : भील जनजाति की उत्पत्ति से संबंधित **दंतकथा** के अनुसार भील स्वयं को **भगवान महादेव का वंशज** मानते हैं। कथा के अनुसार, एक बार भगवान शंकर शरीरिक व्याधि से पीड़ित होकर **घने पहाड़ी क्षेत्रों** में भ्रमण कर रहे थे। उसी दौरान उनकी भेंट एक **जंगली जाति की नवयुवती** से हुई। जैसे ही भगवान ने उस युवती को देखा, उनकी व्याधि दूर हो गई। फिर भगवान शंकर ने उस युवती से विवाह कर लिया। उनके संयोग से **कई संतानों** का जन्म हुआ। उन्हीं संतानों में से एक बालक अत्यंत **कुरूप** था। एक दिन उस बालक ने अवसर पाकर भगवान शंकर के **नंदी बैल** का वध कर दिया। भगवान शंकर ने क्रोध में आकर उसे **घने जंगलों में छोड़ दिया**, जहाँ वह रहने लगा। माना जाता है कि उसी बालक के वंशज आगे चलकर **भील** कहलाये।



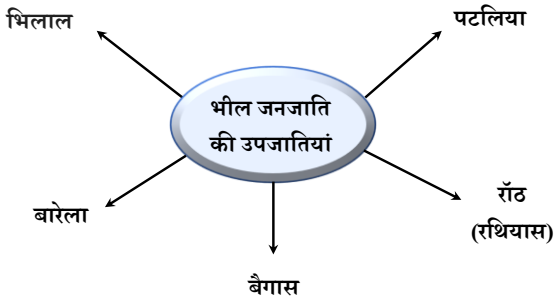
  - कुछ **पुराणों** में भी भीलों को **राजा वेन की संतान** भी माना गया है।
  - रामायण काल की शबरी माता का संबंध भील जनजती से है।
  - भील जनजाति **राजस्थान के कुशलगढ़ (या कुंभलगढ़) क्षेत्र के ढोल नामक स्थान** को अपना मूल स्थान मानती है।
- **ऐतिहासिक भूमिका** : भीलों ने **महाराणा प्रताप** के साथ मिलकर **हल्दीघाटी के युद्ध** में **अकबर की शाही सेना** को कड़ा प्रतिरोध दिया था। भील जनजाति **गोरिल्ला युद्ध** (छापामार युद्ध) में माहिर मानी जाती है। परंतु **औरंगज़ेब के शासन काल** में कुछ भील ने **इस्लाम धर्म** अपना लिया, जिन्हें **तड़वी भील** कहा जाता है।
  - '**निमाड़-निशाकर**' नामक गजेटियर में भी **भील जनजाति** और विशेष रूप से **टंट्या भील** के ऊपर लेख प्रकाशित हुए हैं।

> झाबुआ क्षेत्र के भीलों के अनुसार, प्रारंभ में **भील समुदाय दामोर** था। इनके साथ **बरकारिया समुदाय** के लोग निवास करते थे। किंचित कारणों से एक बार **दामोर और बरकारिया समुदायों** के बीच युद्ध हुआ, जिसमें **दामोर की हार** हो गई। इसके बाद दामोर लोग **राजस्थान के कुशलगढ़ क्षेत्र** के **ढोल नामक स्थान** में जाकर बस गये। इसी स्थान से **भील जनजाति की उत्पत्ति** मानी जाती है। माना जाता है कि **भीलों की अन्य शाखाएँ भी दामोर समुदाय** से ही निकली हैं। **पायक जनजाति** स्वयं को **भीलों की संतान** मानती है और यह **शल्यकर्म (चिकित्सा या घाव की देखभाल)** में विशेष रूप से दक्ष होती है।

- **भौगोलिक वितरण** : भारत में भील जनजाति मुख्य रूप से **मध्यप्रदेश**, **राजस्थान**, **गुजरात** और **महाराष्ट्र** राज्यों में निवास करती है। मध्यप्रदेश में भील जनजाति का अधिकतर संकेन्द्रण **पश्चिमी पर्वतीय वन क्षेत्रों** में पाया जाता है। विशेष रूप से **झाबुआ**, **पश्चिमी**

निमाड़, बड़वानी, धार और **रतलाम** जिले इस जनजाति की प्रमुख आबादी वाले क्षेत्र हैं।

- **भीलो जनजाति की उपजाति, कुल तथा गोत्र** : भील जनजाती को **5 उप- जातियों** में वर्गीकरत किया गया है।



कुल तथा **गोत्र** : सर्वेक्षण के आधार पर **भील जनजाति** के **24 कुल** तथा **71 गोत्र** बताये गये हैं। गोत्रों की उत्पत्ति को लेकर कई **किंवदंतियाँ** प्रचलित हैं। आमतौर पर, भील लोग अपना गोत्र उस **जानवर, पक्षी, नदी या वृक्ष** के नाम पर रखते हैं, जो उनकी **रक्षा करता है** या जिन्हें वे पूजनीय मानते हैं।

कुछ प्रमुख गोत्रों के उदाहरण इस प्रकार हैं:

- **सन्यान गोत्र** – ये लोग **बिल्ली के पूजक** होते हैं।
- **निंगवाल्या गोत्र** – इस गोत्र के लोग **निंगवाल्या मछली नहीं खाते**।
- **सिंगाड़या गोत्र** – ये लोग **बैलों की पूजा** करते हैं।

> मध्य प्रदेश के पश्चिमी क्षेत्र कि प्रमुख जनजाती तथा उसकी उप जनजातियों के नाम लिखिए [MPPSC (Civil Main) GS II 2021 | 3 M]
>
> पटेलिया समुदाय क्या है? उनका निवास क्षेत्र मध्य प्रदेश में कहाँ है? [MPPSC (Civil Main) GS-II 2022 | 3 M].

कुछ प्राचीन मान्यताओं के अनुसार **भीलों को उनकी उपजाऊ ज़मीनों से वंचित कर जंगलों की ओर खदेड़ दिया गया था**। परंतु यह धारणा पूरी तरह से सत्य नहीं मानी जाती, क्योंकि **प्राचीन क्षत्रिय समाज स्वयं भी लंबे समय तक वनों में वनवासी जीवन** जीता रहा था। **मुगल आक्रमण** के समय अनेक राजाओं को भी जंगलों में **शरण लेनी पड़ी**। इसी दौरान जब उनका संपर्क **भील जनजाति** से हुआ, तो भीलों को **शस्त्र विद्या** की जानकारी प्राप्त हुई और वे **शस्त्रधारी योद्धा** बन गये। और एक किवदंती प्रचलित हुयी-**राणी जाया भीली जाया भाई भाई**

भील जनजाति का कई **राजपूत वंशों** से रक्त संबंध भी स्थापित हुआ है। उदाहरण के लिये, **भिलाला उपजाति** का जन्म **राजपूत पिता** और **भील माता** के संयोग से हुआ माना जाता है। इसी कारण इस उपजाति ने अनेक **राजपूत गोत्रों** को अपना लिया, जैसे – **चौहान, सिसोदिया, सोलंकी** और **परमार**।

- **बोली** : भील जनजाति की प्रमुख बोली **भीली** है। यह बोली **आस्ट्रिक भाषा परिवार** की प्रधान भाषा **मुण्डारी** से संबंधित मानी जाती है। हालाँकि, समय के साथ-साथ अन्य भाषाओं के प्रभाव से भीली बोली का **मूल स्वरूप परिवर्तित** हो गया है। **मध्य प्रदेश** के धार, रतलाम और झाबुआ क्षेत्रों की भीली बोली पर **मालवी बोली** का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है।

- **जन्म संस्कार** : भील जनजाति में नवजात शिशु को शुभ माना जाता है। इनकी परंपरा के अनुसार, प्रसव का कार्य आमतौर पर परिवार की **स्यानी (अनुभवी)** महिलाएं करती हैं। कुछ क्षेत्रों में यह कार्य **सोयेन या सुवारनी (दाई)** द्वारा किया जाता है। भील समुदाय में यह विश्वास किया जाता है कि भूत-प्रेत की बाधाओं से बचाव के लिये शिशु के सिरहाने तीर रखना शुभ होता है। नवजात शिशु की नाल को **"बिलखी"** नामक औज़ार से काटना भी शुभ माना जाता है।

  - **सांता प्रथा**: शिशु जन्म के **सातवें दिन**, प्रसूता को **हल्दी लगाकर स्नान** कराया जाता है। इस परंपरा को **सांता** कहा जाता है।..
  - **सूर्य पूजा और नामकरण**: शिशु जन्म के समय भील समाज में **सूर्य पूजा का विशेष महत्व** होता है। इस दिन परिवार के सभी सदस्य पूजा में भाग लेते हैं। उसी दिन शिशु का **नामकरण संस्कार** किया जाता है।
  - **डाम प्रथा**: जब बालक **बारह वर्ष** का हो जाता है, तब उसकी दाहिनी भुजा की कलाई पर **गर्म तीर से दाग** दिया जाता है। यह परंपरा बालक की शक्ति, साहस और सामाजिक जिम्मेदारी का प्रतीक मानी जाती है।



- **रूपरंग** : भील जनजाति के लोगों का **शरीर सुगठित** होता है। वे देखने में **सुंदर** तथा **ताम्रवर्णी** होते हैं। परंतु जंगलों में रहने और कठिन जीवनशैली के कारण इनका **रंग थोड़ा काला** हो जाता है। इनकी **आँखें भूरी या काली** होती हैं। **चेहरा गोल** और **नाक का आकार सुडौल** होता है।

- **वस्त्राभूषण** : भील जनजाति के लोगों की वेशभूषा उनके आर्थिक स्थिति, सांस्कृतिक परंपरा और स्थानीय परिवेश को दर्शाती है। निर्धनता के कारण **भील बहुत ही कम वस्त्र धारण करते हैं**। एक निर्धन भील पुरुष केवल **एक लंगोटी** पहनकर ही अपने वस्त्रों की पूर्ति कर लेता है। ◈ **पुरुष** प्रायः सिर पर **लाल, हरे या नीले रंग के साफे** बाँधते हैं और **रंग-बिरंगी कमीज तथा धोती** पहनते हैं। **स्त्रियाँ** सामान्यतः **चोली, काँचली, घाघरा** और **लुगड़ा (ओढ़नी)** पहनती हैं। भीली स्त्री-पुरुष दोनों ही विभिन्न प्रकार के **गहने** पहनते हैं। ये गहने अधिकतर **कथीर (गिल्ट), चाँदी और काँसे** के बने होते हैं। इनमें **कथीर के गहनों** का प्रचलन सबसे अधिक है। ◈ **भीली स्त्रियाँ संसार की सबसे गहना-प्रिय स्त्रियों में मानी जाती हैं।** उनकी संस्कृति और लोकगीतों में भी **आभूषणों का सुंदर वर्णन** देखने को मिलता है। **सुंदरी साड़ी पहनना** भीली स्त्रियों को अत्यंत प्रिय होता है। उनकी वेशभूषा न केवल सौंदर्य का प्रतीक है, बल्कि उनके सांस्कृतिक गौरव और परंपरा की भी पहचान है।



  - **भील जनजाति की वेशभूषा**
    - **पुरुष वर्ग** : साफा रंगीन, कमीज, अँगरखा, काली जाकिट, साल्ली, धोती (घुटनों तक), रूमाल तार लड़ी वाला, रूमाल
    - **स्त्री वर्ग** : काँचली, घाघरा, लुगड़ा
  - **भील जनजाति के आभूषण**
    - **पुरुष वर्ग** : मूंदड़े (कानों के उतरने), टोटवा (बाली), गले में बनजारी (साँकल), हाथ में नाहरमुखी हटके (कड़े), भुजा – हटके।
    - **स्त्री वर्ग** : सिर का जेवर, राखड़ी, बोर, छिवरा, बस्का (चिमटे), टोकड़ी, मोरझिली, झांझरिया (छल्ले), नाक - कांटा, नथ, तागल (हंसली) हार, जबरबन्द (हमेल) गलसम (माला)।

- **गुदना** : भील जनजाति में **गुदना** एक प्रमुख सांस्कृतिक परंपरा है। **स्त्री और पुरुष दोनों** ही **कपड़ों, गहनों और गुदनों** के प्रति समान रूप से सजग रहते हैं। **भीली बोली** में गुदना को "**गुदावणो**" कहा जाता है। गुदावण का कार्य प्रायः **स्त्रियाँ** करती हैं, **भीली अंचल**, में किसी विशेष जाति की स्त्रियाँ ओझा या बादी की तरह गुदना नहीं करतीं, बल्कि **पुरुष** भी यह कार्य करते हैं।



महिलाये प्रायः **आँख की कोर के पास, ठुड्डी और हाथों पर** गुदने बनवाती हैं। **भीली महिलाओं के गुदने** अन्य वन्य जातियों की तुलना में **पूर्णतः भिन्न आकृतियों** (Motifs) में प्रचलित हैं।

- **सामाजिक संगठन** : गाँव की **सामाजिक और धार्मिक व्यवस्था** को संचालित करने के लिये कुछ विशेष व्यक्ति उत्तरदायी होते हैं। इनमें **पटेल, तड़वी, डाहला, पुजारा** और **बड़वा** को प्रमुख माना जाता है। ये सभी व्यक्ति गाँव के **मुख्य एवं सामाजिक रूप से प्रतिष्ठित** लोग होते हैं। गाँव के लोग इन्हें **परमेश्वर स्वरूप** मानते हैं और आवश्यक होने पर इनसे **मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं**।



  - **पटेल** : पटेल गांव का एक **अतिविशिष्ट और सम्माननीय** व्यक्ति होता है। कुछ स्थानों पर उसे **गमेटी** या **वसाओ** के नाम से भी जाना जाता है। ग्रामवासियों में उसका इतना सम्मान होता है कि उसके आने पर लोग **खड़े हो जाते हैं**। पटेल गांव का **सर्वोच्च प्रशासनिक अधिकारी** होता है। वह न केवल प्रशासकीय कार्यों में, बल्कि सामाजिक कार्यों में भी **मुख्य भूमिका** निभाता है। गांव के लोग पटेल द्वारा लिये गये **निर्णयों को स्वीकार करते हैं** और उसका आदरपूर्वक पालन करते हैं। उसकी **आज्ञा के बिना** गांव में **शादी-विवाह, पूजनोत्सव** अथवा कोई **त्यौहार** नहीं मनाया जाता। पटेल गांव की सामाजिक और प्रशासनिक व्यवस्था का केंद्र होता है, जो पूरे समुदाय को एक सूत्र में बाँधने का कार्य करता है।

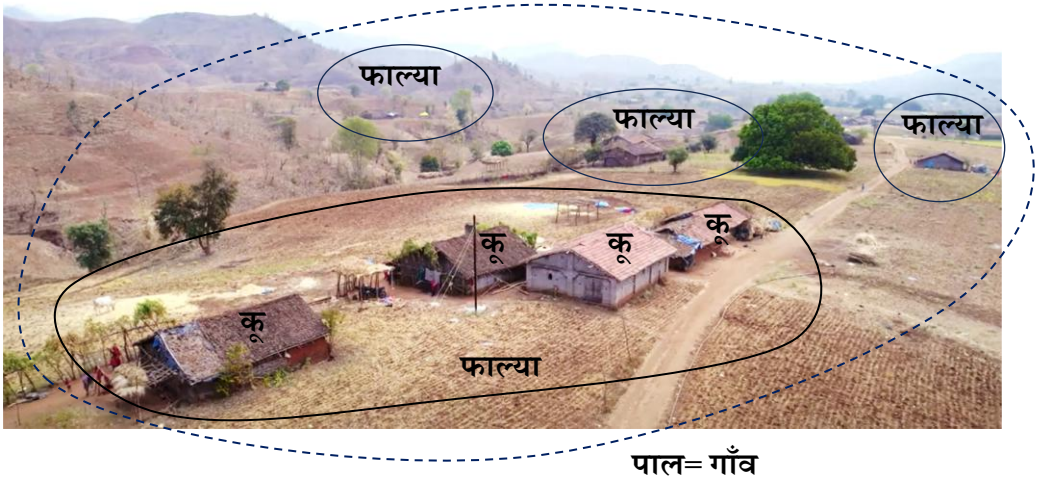
- **तड़वी** : तड़वी, पटेल का सहायक होता है। और उसके कार्यों में सहयोग करता है। जब **पटेल अनुपस्थित** होता है, तब पंचायत या गाँव के सभी कार्य **तड़वी** द्वारा ही संपन्न किये जाते हैं। तड़वी को समाज में **पटेल के समान सम्मान** प्राप्त होता है। गाँव में **लगान वसूली** जैसे महत्वपूर्ण कार्य भी तड़वी के द्वारा ही किये जाते हैं।
- **डाहला** : गाँव के **वयोवृद्ध और अनुभवी व्यक्ति** को **डाहला** कहा जाता है। समाज में डाहला को विशेष **प्रतिष्ठा** प्राप्त होती है। पर्व-त्योहार, विवाह या अन्य सामाजिक अवसरों पर जब **जाति भोज** का आयोजन होता है, तब **भंडार गृह** से संबंधित सभी कार्य डाहला के **निर्देशन** में संपन्न होते हैं। भोजन में उपयोग की जाने वाली **खाद्य सामग्री** का अनुमान और उसका खर्च भी **डाहला के अनुभव** और गणना पर आधारित होता है। इस प्रकार, डाहला समाज में **सम्मानित मार्गदर्शक** के रूप में कार्य करता है।
- **पुजारा** : पुजारा गाँव का धार्मिक व्यक्ति होता है, जिसका कार्य **पर्व-त्यौहार, शादी-ब्याह** तथा अन्य धार्मिक अवसरों पर **पूजा-पाठ सम्पन्न कराना** होता है। यह पद **वंश परंपरा** के अनुसार निर्धारित होता है, यानी यह कार्य पीढ़ी दर पीढ़ी एक ही परिवार में चलता है। पुजारा गाँव के **धार्मिक स्थलों की देखरेख** करता है और उन्हें **व्यवस्थित** बनाये रखता है। उसकी **पत्नी**, जिसे **पुजारिन** कहा जाता है, इन धार्मिक कार्यों में उसकी सहायता करती है।
- **बड़वा** : भील आदिवासियों की सामाजिक व्यवस्था में **बड़वा** का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। समाज में उसे विशेष **प्रतिष्ठा** प्राप्त होती है। यह मान्यता है कि **बड़वा पर देवी-देवताओं का भार** आता है, अर्थात वह उनके संदेशवाहक या माध्यम के रूप में कार्य करता है। बड़वा **जड़ी-बूटियों का उपयोग** कर उपचार करता है और **भूत-प्रेत भगाने** जैसे कार्यों में निपुण होता है। गाँव में बड़वा को **स्थानीय डॉक्टर** के रूप में माना जाता है। वह न केवल बीमारी का इलाज करता है, बल्कि धार्मिक और आध्यात्मिक समस्याओं का समाधान भी करता है। बड़वा भील समाज की **धार्मिक, चिकित्सा और आध्यात्मिक व्यवस्था** का एक महत्त्वपूर्ण अंग होता है।

अन्य व्यक्ति

- **कोटवार** : कोटवार गाँव का **चौकीदार** या **हरकारा** होता है। इसकी नियुक्ति गाँव का **पटेल** या **तड़वी** करता है। जब कोई **शासकीय कर्मचारी** या **बाहरी व्यक्ति** गाँव में आता है, तो उनके **भोजन** और **ठहरने की व्यवस्था** कोटवार ही करता है।कोटवार गाँव का **संदेशवाहक** भी होता है, जो शासन और गाँव के बीच सूचना पहुँचाने का कार्य करता है। **जोबट** क्षेत्र में यह पद **हरिजन** समुदाय के पास होता है, जबकि **झाबुआ** क्षेत्र में यह जिम्मेदारी **भील** समुदाय को दी जाती है।
- **गायक** : गायक, बड़वे का सहायक होता है। यह **कामड़ी** (बाँस की चिपियों से बना वाद्य यंत्र) के स्वर पर **देवी-देवताओं की गाथाएँ** गाता है। गाथाएँ प्रायः **रात भर चलती हैं**, जिनमें लोककथाएँ, देवी-देवताओं के चमत्कार और सामाजिक संदेश होते हैं। जब गाथा गायी जाती है, तो **बड़वे पर देवी-देवता का भार (आवेश)** आता है।
- **वारती** : सामूहिक जाति भोज के अवसर पर **वितरण की पूरी व्यवस्था वारती** द्वारा की जाती है। वह यह सुनिश्चित करता है कि सभी को भोजन समान रूप से प्राप्त हो।

▶ **आवास** : भील पहाड़ियों की चोटियों पर अपनी झोपडियां बनाना पसन्द करते है। भीली लोग अपने खेतो की सुरक्षा के लिये अपना निवास स्थान खेतों पर ही बना लेते है। जहां पर चार पांच झोपड़ियों नजदीक ही बनी हो उसे **फाल्या***** कहते है। तथा इनके निवास स्थान (झोपड़ि) को "**कू**"** कहते है। भील जनजाति के लोग प्रायः **पहाड़ियों की चोटियों पर झोपड़ियाँ बनाकर** रहना पसंद करते हैं। तथा अपने **खेतों की सुरक्षा** के लिये अक्सर **खेतों के पास भी निवास स्थान** बना लेते हैं। जहाँ पर चार-पाँच झोपड़ियाँ पास-पास बनी होती हैं, उसे "**फाल्या**" कहा जाता है। भीलों की प्रत्येक झोपड़ी या निवास स्थान को "**कू**" कहते हैं।

फाल्या का नाम वहाँ रहने वाले विशिष्ट व्यक्ति के नाम पर होता है, जैसे **पटेल फाल्या**, **बड़वा फाल्या**, **तड़वी फाल्य**, जब कई फाल्या मिलकर एक बड़े क्षेत्र में बसते हैं, तो वह क्षेत्र **गाँव** कहलाता है, जिसे भील समाज में "**पाल**" कहते हैं। भीलों का **गृह निर्माण** और **वास्तु शिल्प** अत्यंत साधारण होता है। वे अपने घरों के निर्माण में आमतौर पर **लकड़ी**, **मिट्टी** और छत के लिये **खपरैल** का उपयोग करते हैं। घर के **बीच का हिस्सा लगभग दस फीट ऊँचा** होता है, जबकि **दीवारों की ऊँचाई पाँच से छह फीट** तक होती है। **चोरी के भय** के कारण ये लोग अपने घरों में **खिड़कियाँ नहीं बनाते**। मकान के चारों ओर ये **बाड़ (बांगड़)** लगाते हैं, जो सुरक्षा का कार्य करती है। भीलों के मकानों का **मुख्य द्वार आमतौर पर पीछे की ओर** होता है, जो उनकी पारंपरिक सुरक्षा व्यवस्था को दर्शाता है।



पाल= गाँव

▶ **आर्थिक जीवन** : भील जनजाति का **आर्थिक जीवन मुख्यतः कृषि***** पर आधारित होता है। इसके अलावा **मजदूरी, छोटा-मोटा व्यवसाय** और **शिकार** भी उनकी आय के प्रमुख स्रोत हैं। मालवा क्षेत्र में प्रचलित एक कहावत भीलों की संतोषी प्रवृत्ति को दर्शाती है— "**कुलरी भर दाना, भील भाई राणा**" इसका अर्थ है कि **एक मुट्ठी अनाज भील को राजा के समान संतुष्ट कर देता है**।

हलमा प्रथा क्या है?

हलमा आदिवासी समाज की एक **सामूहिक श्रमदान की प्राचीन परंपरा** है, जिसमें सामूहिक श्रमदान करते हुए समाज के लोग **प्रकृति और पर्यावरण** के संरक्षण के लिये **निःशुल्क** कार्य करते हैं। यह परंपरा आज भी आदिवासी समाज में पर्यावरण संरक्षण और सामूहिक सहयोग का प्रतीक बनी हुई है।

- **कृषि** : यह इनकी **आर्थिक जीवन का प्रमुख आधार** है। यह उनकी **आय का मुख्य स्रोत** मानी जाती है। भीली क्षेत्रों में मुख्यतः **मक्का**, **ज्वार**, **बाजरा**, **कोदो**, **रागी**, **चना**, **उड़द** और **मूँग** जैसी फसलें उगायी जाती हैं। इनमें से **मक्का** और **ज्वार** की खेती विशेष रूप से अधिक की जाती है।

  फसल की **बुवाई**, **निराई** और **कटाई** जैसे कार्यों के समय भील परिवार एक-दूसरे की मदद करते हैं। इस आपसी सहयोग की परंपरा को "**हलमा प्रथा**" कहा जाता है। भील जनजाति द्वारा की जाने वाली पारंपरिक खेती को "**चिमाता**" कहा जाता है। यह खेती प्रकृति पर आधारित होती है और इसमें परंपरागत विधियों का प्रयोग किया जाता है।

▶ **खान पान** : भील जनजाति का भोजन उनके पारंपरिक रहन-सहन, पर्यावरण और उपलब्ध संसाधनों पर आधारित होता है। वे मुख्य रूप से **मकई**, **ज्वार**, **बाजरा**, **गेहूं**, **चना** और **कोदरया** जैसे अनाजों का उपयोग अपने भोजन में करते हैं। **राबड़ी** भीलों का मुख्य भोजन माना जाता है। यह **मकई की थूली** से बनायी जाती है, जिसमें **छाछ मिलाकर** इसे बड़े स्वाद से खाया जाता है। **मक्का की रोटी** भी भील जनजाति द्वारा अत्यधिक पसंद की जाती है। भील जंगल से प्राप्त **कंदमूल**, **नदी-तालाबों से पकड़ी गई मछलियाँ**, **मुर्गा (कड़कनाथ)**, **केकड़ा**, **तीतर** और **हिरण** आदि का सेवन भी बड़े चाव से करते हैं।



मद्यपान भील जनजाति में **सामाजिक और धार्मिक आवश्यकता** है। वे विशेष रूप से **महुआ से बनी शराब** और **ताड़ी** का सेवन करते हैं। ताड़ी का सेवन भील जनजाति के व्यक्ति **दिनभर** करते हैं। अलीराजपुर क्षेत्र में **ताड़ के वृक्ष** बड़ी संख्या में पाए जाते हैं, जिससे ताड़ी तैयार की जाती है।

▶ **हथियार व अस्त्र – शस्त्र** : **भील जनजाति** अपने परंपरागत शस्त्रों के लिये प्रसिद्ध है। भील सदैव अपने साथ **धनुष-बाण** रखते हैं। यही धनुष-बाण उनकी **मुख्य पहचान** माने जाते हैं। भील इतने कुशल होते हैं कि वे **अंधेरे में भी तीर चला सकते हैं**। वे **हिंसक पशुओं से बचाव** और **आत्मरक्षा** के लिये धनुष-बाण का उपयोग करते हैं। भील अपने धनुष को "**धनली**" या "**कामठी**" कहते हैं। यह धनुष **मजबूत और लचीली बांस की चीप** से बनाया जाता है। धनुष की डोरी को "**पिन्छा**" और तीर



को "**बिल्खी**" कहा जाता है। बिल्खी का अगला सिरा **नुकीला और धातु का** बना होता है। भील जनजाति **एकलव्य** को अपना **आदर्श** मानती है। एकलव्य, भील जाति का एक महान और कुशल धनुर्धर था। इस कारण, **भील बाण चलाते समय अंगूठे का प्रयोग नहीं करते**।

- बाण का एक प्रकार "**बिटलो**" होता है, जिसका उपयोग **पक्षियों के शिकार** में किया जाता है।
- **फालिया** या **धारिया** लोहे का एक बड़ा और धारदार हथियार होता है।
- **गोफन** भील जनजाति द्वारा उपयोग में लाया जाने वाला एक महत्वपूर्ण शस्त्र है, जिसे वे **शिकार में अचूक निशाना लगाने** के लिये प्रयोग करते हैं। भील इसे सदैव **अपनी पगड़ी में बाँधकर** रखते हैं।

▶ **विवाह** : भील जनजाति में शादी की अपनी विशिष्ट प्रथायें है। शादी तय करने के लिये पहले लड़के वालो को ही करनी पड़ती है।

- **मंगनी विवाह** : भील जनजाति में विवाह तय करने की पहल लड़के वालों को करनी पड़ती है। विवाह का प्रस्ताव लड़के वालों की ओर से लड़की के घर भेजा जाता है। यह कार्य वह व्यक्ति करता है जो दोनों परिवारों का परिचित होता है। इस व्यक्ति को **भांजगड़िया** कहा जाता है। यदि लड़की पक्ष विवाह प्रस्ताव को स्वीकार कर लेता है, तो मदिरा की दावत रखी जाती है। इसके बाद **दापा (वधू मूल्य)** को तय करने के लिये संदेश भेजा जाता है। विवाह तिथि और दापा की राशि तय करने की जिम्मेदारी भी भांजगड़िया की होती है।
  भील समाज में मामा का स्थान बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। विवाह के समय यदि किसी लड़के का मामा न हो, तो इसे अपमानजनक माना जाता है।आठ से पंद्रह दिन बाद लड़के वाले **दापा (सावा)** का अनाज लेकर लड़की वालों के घर जाते हैं। इस अनाज को ले जाना **"सांवग भरना"** कहलाता है, और जो व्यक्ति यह अनाज लेकर जाता है उसे **"सांवग्या"** कहा जाता है।

  मंगनी विवाह के दौरान होने वाली प्रथायें

  - **हल्दी पीठी** : इस परंपरा में दोनों पक्षों के **ग्राम पुजारी** विवाह का निमंत्रण देने के लिये **रानी काजल माता के देवरे** पर जाते हैं। इस अवसर पर **लड़की को चूड़ियाँ पहनाई जाती हैं**, जो शुभता और सौभाग्य का प्रतीक मानी जाती हैं।
  - **बाना बिठाना** : इस रस्म के अंतर्गत **वर और वधू को नए वस्त्र पहनाए जाते हैं**। इस दौरान महिलायें पारंपरिक "**बाऽना गीत**" गाती हैं।
  - **मंडप** : विवाह स्थल पर **कांकड़ वृक्ष** का एक खंभा स्थापित किया जाता है। उसके चारों ओर अन्य खंभे गाड़कर मंडप तैयार किया जाता है।
  - **पहरावणी** : इस परंपरा में **मामा अपने भांजे या भांजी के पूरे परिवार के लिये वस्त्र** लेकर आता है। इन वस्त्रों को देना और पहनाना ही "**पहरावणी**" कहलाता है।
  - **बारात** : भील समाज की बारात में **स्त्री और पुरुष दोनों सम्मिलित होते हैं**। बारात के दौरान रास्ते में **मांदल, फेफरया और पावली** की धुन पर मधुर गीत गाए जाते हैं।

दापा प्रथा क्या है?

दापा प्रथा के अंतर्गत, **वर पक्ष द्वारा वधू पक्ष को वधू मूल्य** चुकाया जाता है। यह राशि **नकद**, **अनाज**, **पशु** आदि किसी भी रूप में हो सकती है। यह परंपरा विवाह में **सामाजिक स्वीकृति** और **आर्थिक सहभागिता** को दर्शाती है। इसमें **मक्का के दानों** का प्रयोग **सांकेतिक मुद्रा** के रूप में किया जाता है।
परंतु वर्ष **2016** से इस परंपरा को समाप्त करने की दिशा में प्रयास किये गये हैं, और इसके स्थान पर "**साथीदार अभियान**" की शुरुआत की गई है, जिसका उद्देश्य विवाह को सरल, समान और परंपरा से बोझमुक्त बनाना है।



चोखा प्रथा

जब कोई भील युवक अन्य जाति में विवाह करता है, या उससे कोई अनिष्ट (पाप) कार्य हो जाता है, तब प्रायश्चित करने के लिये भीली युवक चोखा आयोजित कराते है।

- **भगोरिया विवाह** : होली से पूर्व **भीलांचल** में एक विशेष मेले का आयोजन होता है, जिसे **भगोरिया हाट** कहा जाता है। यह मेला केवल व्यापार या उत्सव का आयोजन नहीं होता, बल्कि युवाओं के बीच **जीवनसाथी चुनने की परंपरा** से भी जुड़ा होता है। इस मेले में जब कोई **युवक किसी युवती को पसंद करता है**, तो वह उसके **गाल पर गुलाल लगा देता है**। यदि युवती भी **उत्तर में युवक के गाल पर गुलाल लगा देती है**, तो इसे **आपसी सहमति** माना जाता है। इसके बाद दोनों युवक-युवती **अपने किसी**

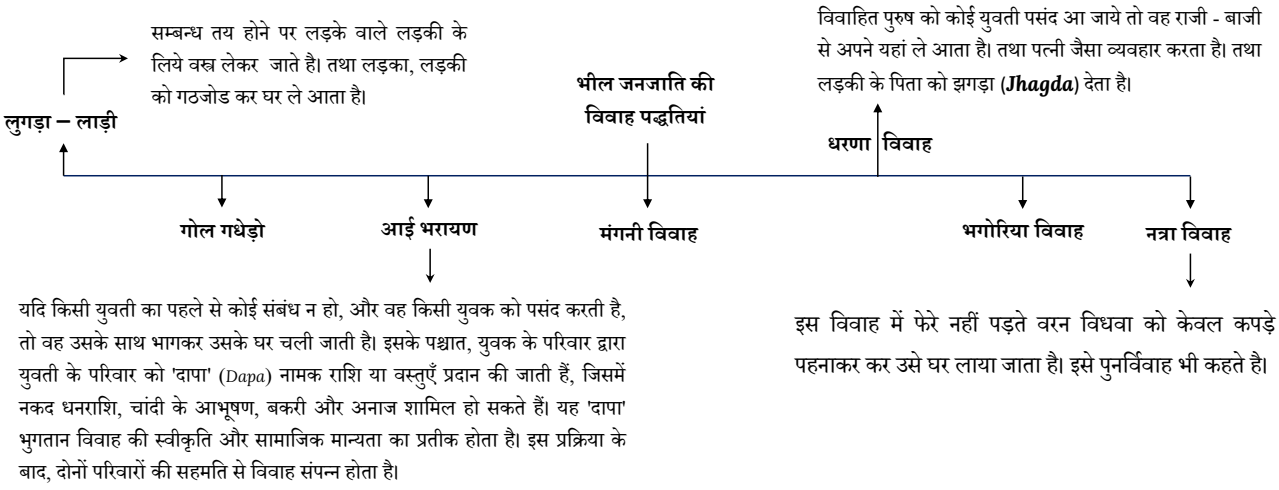
रिश्तेदार के घर चले जाते हैं। बाद में, गाँव की **पंचायत द्वारा "दापा" (वधु मूल्य)** लगाकर उनका विवाह संपन्न करा दिया जाता है।



- **गोल गधेड़ो** : गुजरात के **भील समुदाय** में **होली** के पावन अवसर पर विवाह की एक अनोखी परंपरा निभाई जाती है, जिसे "**गोल गधेड़ो**" कहा जाता है। यह परंपरा एक **लोक नृत्य** के रूप में आयोजित की जाती है। इस आयोजन के दौरान, एक **खंभे या पेड़** की चोटी पर **गुड़ और नारियल** रखा जाता है। लड़के और लड़कियाँ मिलकर उस खंभे या पेड़ के चारों ओर **घेरा बनाकर नृत्य** करते हैं। इस घेरे में लड़कियाँ **भीतरी घेरे** में होती हैं और लड़के **बाहरी घेरे** में।

  नृत्य के बीच में, कोई भी लड़का **लड़कियों को धक्का देकर** और घेरा तोड़कर **खंभे या पेड़ पर चढ़ने की कोशिश** करता है ताकि वह गुड़ और नारियल प्राप्त कर सके। लड़कियाँ उसे रोकने का पूरा प्रयास करती हैं। यदि कोई लड़का सफल हो जाता है और **गुड़ व नारियल** तक पहुँच जाता है, तो उसे **भीतरी घेरे की किसी भी लड़की को चुनने की स्वतंत्रता** होती है। यह चयन प्रतीकात्मक रूप से **विवाह के प्रस्ताव** को दर्शाता है।

> भील जनजाती में गोल गधेड़ो विवाह कि प्रथा को समझाइए [MPPSC (Civil Main) GS-I 2022 | 5 M]



सम्बन्ध विच्छेद (तलाक) : भीलों में सम्बन्ध विच्छेद अत्यन्त सरल है। परन्तु ठोस कारण होना जरूरी है। विवाह विच्छेद की प्रथा निम्न है – ◈ तिनका तोड़ना, ◈ पत्तो को चीरना, ◈ पति द्वारा पगड़ी फाड़ना

▶ **धार्मिक विश्वास और मान्यतायें**

- बच्चे के जन्म पर, **नवजात शिशु और माँ के नीचे एक तीर** रखा जाता है, जिससे बुरी आत्माओं से रक्षा हो सके।
- यदि समय पर वर्षा न हो, तो वर्षा के देवता **बाबादेव** को **गोबर पर छाप** कर पूजते हैं।
- जब कोई परिवार का सदस्य या पशु बीमार हो जाता है, या कोई **जहरीला जानवर परेशान करता है**, तो इसे **देवी-देवता का प्रकोप** समझा जाता है। ऐसे में वे **बड़वा** के पास जाते हैं।

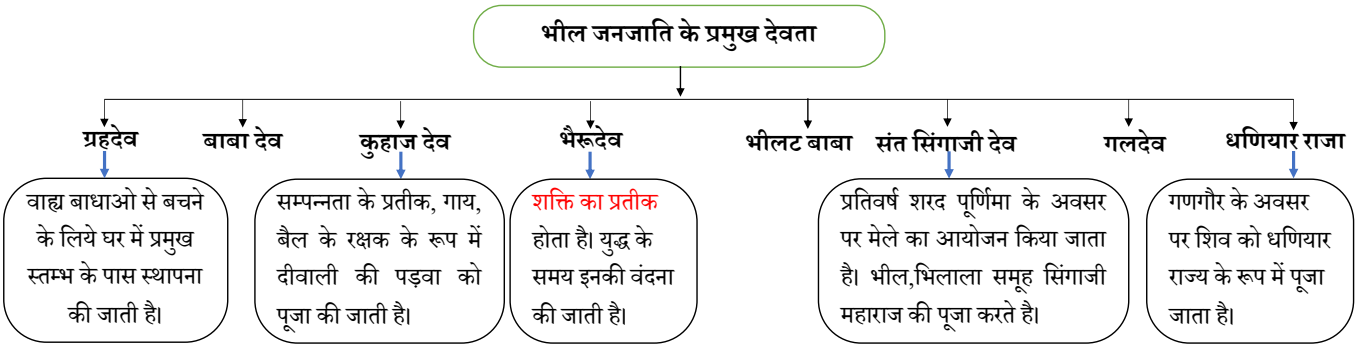
▶ **देवी – देवता** : भील जनजाति अपने पारंपरिक विश्वासों और जातीय मान्यताओं के अनुसार प्रत्येक गाँव में अलग-अलग **ग्राम्य देवता**, **जाति देवता** और **कुल देवी-देवता** की स्थापना करती है।भील भगवान शंकर को अपना संरक्षक व पिता मानते है। रणघोष में "**हर - हर महादेव**" का नारा देते है। प्रायः हर भील गाँव में **बाबादेव,भीलट देव, भेरामदेव, कुहाजा कुंवर, बाभेस्का देव और खेड़ादेव** देवताओं की पूजा की जाती है। भील जनजाति **महादेव (शिव)** की पूजा उनके दो रूपों—**शम्भू** और **शम्भू माता** (शिव का नारी रूप)—में करती है। भीलों की धार्मिक भूमिका इतनी महत्वपूर्ण है कि **बारह ज्योतिर्लिंगों** में से **ओंकारेश्वर** और **ममलेश्वर** के **प्रबंधन का कार्य** भील जनजाति के लोगों को सौंपा गया है।

- **बाबा देव** भील जनजाति के प्रमुख देवता माने जाते हैं। उन्हें **इन्द्रदेव** के नाम से भी जाना जाता है। भील समुदाय में **बाबा देव** की आराधना के लिये विशेष रूप से **"दिवासा"** पर्व मनाया जाता है। भील मान्यता के अनुसार, यदि बाबा देव की श्रद्धा से पूजा की जाए तो वर्षा अच्छी होती है और खेती सफल होती है। **बाबा देव का पूजन** प्रतिवर्ष **आषाढ़ मास की अमावस्या** को किया जाता है। इस अवसर पर गाँव के लोग एकत्र होकर सामूहिक पूजा करते हैं।


गलदेव या हल्दिया देव

- **गलदेव** : **गलदेव**, जिन्हें **हल्दिया देव** भी कहा जाता है, भील समुदाय में पूजनीय देवता माने जाते हैं। भील जनजाति गलदेव को **नरसिंह भगवान** के रूप में पूजती है। जब कोई व्यक्ति अपनी किसी **मनोवांछित इच्छा** की पूर्ति चाहता है, तो वह गलदेव से **मनौती** माँगता है।
- **गल बाबा का मान उतारने का दिन** होलिका दहन के **दूसरे दिन** मनाया जाता है। जब गलदेव से माँगी गई मनोकामना पूरी हो जाती है, तो भक्त **गल के चारों ओर पाँच या सात फेरे** लगाते हैं। इसके बाद **बकरे या मुर्गे की बलि** देकर वे अपनी मनौती पूरी करते हैं।
- भीलट बाबा ***: **भीलट बाबा** भील जनजाति के प्रमुख और पूज्य देवता माने जाते हैं। इन्हें **भीलट देव** के नाम से भी जाना जाता है। भील समाज की मान्यता है कि भीलट देव **मनुष्यों और पशुओं की सर्प से रक्षा** करते हैं। **बड़वानी** में **भीलट देवलोक** का निर्माण किया गया है, जो इस देवता की महत्ता और श्रद्धा का प्रतीक है।
- **संत सिंगाजी देव** : संत सिंगाजी देव के स्थान पर प्रतिवर्ष **शरद पूर्णिमा** के अवसर पर **मेले का आयोजन** किया जाता है।

भील और भिलाला समुदाय इस दिन को **"कवली पुनव"** के नाम से जानते हैं। संध्या के समय, रात्रि **आठ बजे तक**, सभी लोग अपने-अपने घरों में **संत सिंगाजी महाराज की पूजा** करते हैं।



भीली ढाबा

पश्चिमी मध्यप्रदेश की प्रमुख जनजाति में **ढाबा बनाने** और उसे देवताओं को चढ़ाने की प्रथा है। ढाबा **छोटे मंदिर या बौद्ध स्तूप** की आकृति जैसे होते है। ढाबा का निर्माण कुम्हार करते है। इसे किसी मन्नत पूरी करने के लिये **कोकदेवता** को अर्पित किया जाता है। ढाबे के भीतर नर्मदा से लाया गया एक पत्थर रखा जाता है। कुछ और वस्तुओं के साथ बकरे इत्यादि की बलि भी ढाबे अर्पण के साथ की जाती है।

काष्ठ स्तंभ

जनजातियाँ काष्ठ स्तंभों के रूप में मृतकों के स्मृति चिन्ह, देवी-देवता तथा **अनुष्ठानिक खूँट** गाड़ते हैं। भील आनुष्ठानिक खूँट को खूँटदेव या खूँटड़ा देव कहते हैं। भीलों में अब इस देवता को पशु की बलि के रूप में मिट्टी के पशु अर्पित किये जाते हैं।

❖ **पर्व/त्यौहार**

भगोरिया** : **भगोरिया उत्सव** को एक **प्रणय पर्व** और **सरस लोक पर्व** के रूप में जाना जाता है। यह पर्व **फाल्गुन मास के अंतिम सप्ताह** में, **होली से एक सप्ताह पूर्व** मनाया जाता है। यह पर्व विशेष रूप से **भील युवाओं** और **युवतियों** के लिये **चयन और चुनौती** का अवसर होता है। साथ ही, यह **नई फसल** के स्वागत और **उल्लास व उमंग** का प्रतीक भी माना जाता है। भगोरिया मेला **बालपुरा** को सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

भगोरिया नाम की उत्पत्ति : इस शब्द की उत्पत्ति से संबंधित कई मान्यतायें है, ◈ एक मान्यता के अनुसार यह शब्द दो भागों से मिलकर बना है — "**भग**" = **शंकर** और "**गौर**"= **माता पार्वती** इस प्रकार, यह पर्व **भगवान शिव** और **माता पार्वती** के मिलन का प्रतीक माना जाता है। यह पर्व वसंत ऋतु में मनाया जाता है, इसलिये इसमें प्रेम, उल्लास और रंगों की भरमार होती है। ◈ कुछ विद्वानों का मानना है कि "भगोरिया" शब्द "**भगोर**" **नामक नगर** से उत्पन्न हुआ है, जो मध्य प्रदेश के झाबुआ क्षेत्र में स्थित था। ऐसा कहा जाता है कि इस नगर में आयोजित मेलों के कारण इस पर्व को "भगोरिया" कहा जाने लगा। ◈ "भगोरिया" शब्द "**भोंगरिया**" से विकृत होकर बना है, जो होली पूजा में प्रयुक्त एक विशेष सामग्री को दर्शाता है। ◈ एक मान्यता के अनुशार, यह त्योहार मूल रूप से **भंगोर गोत्र के भील समुदाय द्वारा प्रारंभ** किया गया था। इस गोत्र का नाम ही इस पर्व को "भगोरिया" नाम देने का कारण बना। ◈ भगोरिया शब्द का संबंध "**भंगोर देव**" से माना जाता है। भंगोर देव स्थानीय आदिवासी समुदायों के पूज्य देवता हैं।

वर्तमान में म.प्र. के पांच जिलो (झाबुआ, अलीराजपुर, खरगौन, धार, बड़वानी) के **176 स्थान***** पर भगोरिया पर्व का आयोजन किया जाता है।

भगोरिया पर्व तीन भागों में मनाया जाता है = **तिहरवा → भगोरिया → उजाडिया**

- **तिहवारया हाट** : तिहवारया हाट एक विशेष प्रकार का बाजार होता है, जो **भगोरिया पर्व** के सात दिन पहले से विभिन्न स्थानों पर **अलग-अलग दिनों में** आयोजित किया जाता है। इस हाट में **भीली समुदाय** के लोग भगोरिया पर्व के लिये आवश्यक सामग्री जैसे वस्त्र, गहने, साज-सज्जा के सामान आदि का **संग्रहण** करते हैं।
- **भगोरिया** : **होली** से लगभग एक सप्ताह पहले से **भगोरिया हाट** की शुरुआत होती है। यह हाट विशेष रूप से **भील जनजाति** के युवाओं के लिये एक महत्वपूर्ण उत्सव होता है। इस दौरान **भील युवक और युवतियाँ** रंग-बिरंगे परिधानों में सजे-धजे होते हैं। वे सामूहिक रूप से नाचते हुए **'गेहर'** नामक नृत्य दल के साथ हाट में शामिल होते हैं। इस आयोजन के समय जो नृत्य किया जाता है, उसे **"भगोरिया"** कहा जाता है। जब दो गेहरें (नृत्य दल) आमने-सामने आती हैं, तो नर्तकों का **उत्साह और अधिक बढ़ जाता है**। वे स्वयं को **सर्वश्रेष्ठ दिखाने के लिये प्रतिस्पर्धा** करने लगते हैं। हाट में यदि किसी **युवक को कोई युवती पसंद आ जाती है**, तो वह उसके **गाल पर गुलाल मल देता है**। यदि **युवती भी उत्तर में उसके गाल पर गुलाल मल दे**, तो यह माना जाता है कि **दोनों जीवनसाथी बनने के लिये तैयार है।**



- **उजाड़िया** : **भगोरिया पर्व** के समापन के साथ ही **उजाड़िया हाटों** की शुरुआत हो जाती है। ये हाट लगभग **एक सप्ताह** तक चलते हैं। इस अवधि में गाँवों के **हाट-बाजार सूने** हो जाते हैं, क्योंकि लोग त्योहार की उमंग में व्यस्त रहते हैं। होली के अवसर पर **भील समुदाय** अपने-अपने ग्राम क्षेत्रों से गुजरने वाले रास्तों पर **अवरोध** खड़ा कर देते हैं। ये लोग **वाहनों को रोककर** उनसे **रुपये-पैसे वसूलते** हैं और उसी से **होली का उत्सव मनाते** हैं।

- **होली** : **होली** रंग-राग, उत्साह, उल्लास और मेल-मिलाप का पर्व है। यह पर्व विशेष रूप से **भील जनजाति** का **महापर्व** माना जाता है। गाँव में होली मनाने की तिथि तय करने के लिये **पटेल, तड़वी** और अन्य वरिष्ठ लोग मिलकर बैठक करते हैं और निर्णय लेते हैं कि होली का त्योहार **कब और कैसे** मनाया जाएगा। होली के अवसर पर **सेमल या बाँस का डंडा** गाड़ा जाता है, जिसे प्रतीकात्मक रूप से पूजा जाता है। यह डंडा होली का एक महत्वपूर्ण अंग माना जाता है।



वर्ष में जिस **भील परिवार** में किसी की **मृत्यु** हुई होती है, वहाँ गाँव के सभी लोग बैठने जाते हैं। इस परंपरा को **"रखड़ा उड़ाड़ना"** कहा जाता है। यह सामाजिक सहभागिता और सहानुभूति की भावना को दर्शाती है।

- **गल** : झाबुआ के आसपास के कुछ भील ग्रामों में **गल भरने** की प्रथा प्रचलित है। यह भील जनजाति का सबसे बड़ा पर्व होता है, जिसे **मनौती पर्व** कहा जाता है। यह पर्व **होली के दूसरे दिन** बड़े उल्लास से मनाया जाता है।

- **गोल - गधेड़ो (गढ़) :** भील जनजाति **होली के बारहवें या तेरहवें दिन** एक विशेष पर्व का आयोजन करती है, जिसे "**गढ़**" कहा जाता है। यह पर्व **विजय का प्रतीक** माना जाता है और इसका आयोजन **राजाओं के समय से** होता आ रहा है।

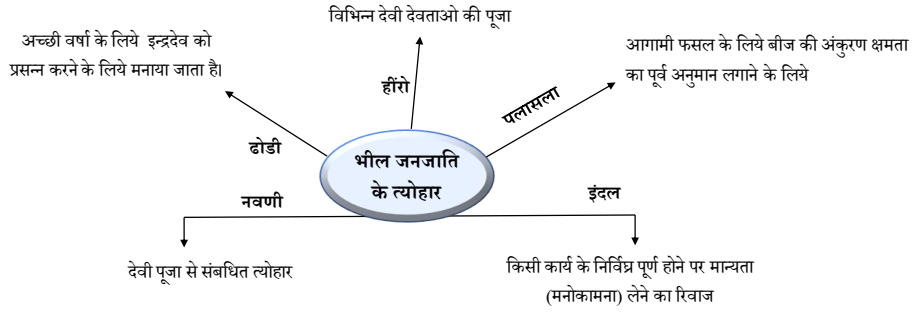


गढ़ पर्व में एक **ऊँचा खंभा** स्थापित किया जाता है, जिसे विशेष रूप से **तेल से बहुत चिकना** किया जाता है। इस खंभे पर **भील युवक** चढ़ने का प्रयास करते हैं, जबकि **भील युवतियाँ** उन्हें ऊपर चढ़ने से रोकती हैं और **बैंतों से प्रहार** करती हैं।

- **जातर :** भील जनजाति के प्रत्येक गाँव में **नवाई (फसल कटाई)** से पहले **जातर उत्सव** मनाया जाता है। यह उत्सव वर्ष में **दो बार** मनाया जाता है। पहली जातर उस समय मनायी जाती है जब **मक्का के पौधे कुछ बड़े हो जाते हैं**, जिसे **"नादर जातर"** कहा जाता है। दूसरी जातर तब मनायी जाती है जब **मक्का में दाने आ जाते हैं**, और इसे **"नंवई जातर"** कहा जाता है। इस आयोजन की तैयारी में **तड़वी** या **पटेल** गाँव के लोगों से **चंदा** इकट्ठा करते हैं और फिर **सामूहिक रूप से अपने घर पर** यह आयोजन करते हैं। इस अवसर पर **बड़वा** (पुजारी) को **भार (आवेश)** आता है और वह पूजा-पाठ तथा धार्मिक अनुष्ठानों का संचालन करता है।



- **दिवासा** : पावस ऋतु के प्रारंभ होते ही भील जनजाति **श्रावण मास की अमावस्या** को एक विशेष पर्व मनाती है, जिसे **दिवासा** कहा जाता है। इस दिन भील समुदाय **इन्द्रदेव को प्रसन्न करने** के लिये पूजा-अर्चना करता है। इन्द्रदेव को भील समाज में **बाबा देव** के नाम से भी जाना जाता है।
- **इंदल** : भील समाज में किसी कार्य के सफलतापूर्वक और बिना बाधा के पूर्ण होने पर **मान्यता लेने** की परंपरा होती है। यह मान्यता एक प्रकार की **धार्मिक और सामाजिक श्रद्धा** को दर्शाती है। भीलों की सबसे बड़ी और प्रमुख मान्यता **"इंदल"** कहलाती है। इंदल का आयोजन करने वाला व्यक्ति अपने **सगे-संबंधियों** के लिये **भोज** का आयोजन भी करता है।



▶ **नृत्य** : भीली जीवन को नृत्य, संगीत ने सर्वाधिक प्रभावित किया है। जब कोमल लय के साथ, वाघो के ताल पर गीतों का गायन किया जाता है। तो नृत्य का अंकुर अपने आप फूटने लगता है।

नृत्य	विशेष
भगोरिया ***	फागुन माह में होली से पूर्व भीलांचल में भगोरिया हाट भरते है।
डोहिया	डोहिया नृत्य भी भगोरिया हाटों में किया जाता है।
नेजा	होली के तीसरे दिन नारियल बंधे खम्भे के चारो तरफ घूमकर किया जाने वाला नृत्य
गहर	नृत्य में स्त्री - पुरूष और एक जोगी बनता है।
डोहो	भील युवक - युवतियां रात्रि में 'डोहो' लेकर घर - घर जाकर नृत्य करते है।
गरबी	दीपावली पर गरबी नृत्य करते है।
पुरूष डांग साला नृत्य	घर से बारात रवाना होने के बाद रास्ते में विश्राम स्थल पर स्त्री-पुरुष अलग - अलग समूहों में नृत्य करते है
फरकणी साला नृत्य	वर - वधू पक्ष के स्त्री - पुरुष एक दूसरे से मिलन के अवसर पर किया जाता है।

घोर नाच	चिटकोरा हाथ में लेकर स्त्रियां द्वारा किया जाने वाला नृत्य
लोहरी नृत्य	लोहरी नृत्य अर्द्धवृत में किया जाता है।
अंटिया नाच	शादी में पुरुषों द्वारा हाथ में छोटे - छोटे डंडे लेकर गोलघेरो में किया जाता है।
छायाकिंत भाग में शादी के दौरान किये जाने नृत्य है। विस्तृत व्याख्या Chapter – 18 में की गयी है।	

▶ **बाद्य यंत्र** : भीली जनजाति के **नृत्य और संगीत** में अनेक पारंपरिक वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया जाता है। इनके संगीत में लोक भावनाओं की गूंज सुनाई देती है। भील समुदाय मुख्य रूप से **ढोल, मांदल, कुंडी, ढॉक, फेफर्या, बाँसुरी, अलगोझा, केदंरिया, कामड़ी** और **थाली**। वाद्य यंत्रों का उपयोग करता है

- **मांदल (ढोल):** मांदल एक प्रकार का पारंपरिक वाद्य यंत्र है, जो बड़े आकार का ढोल होता है। मांदल विशेष रूप से **भील जनजाति की सामाजिक पहचान** का प्रतीक माना जाता है।
- **कुण्डी** : यह वाद्य यंत्र मिट्टी से बनाया जाता है। इसके ऊपर **बकरे** या **घोरपड़** की खाल चढ़ाई जाती है। फिर इस खाल को **चमड़े की रस्सी** से कसकर मजबूती प्रदान की जाती है।
- **कामड़ी** : **कामड़ी**, बाँस की चिपियों से निर्मित एक पारंपरिक वाद्य यंत्र है, जो ढाँक की सहयोगी वाद्य मानी जाती है। इसका निर्माण **बाँस के टुकड़ों को खड़ा काटकर** किया जाता है।
- **फेफरया** : भीली भाषा में **शहनाई** को **"फेफरया"** कहा जाता है। यह वाद्य यंत्र विशेष रूप से **शादी-विवाह के अवसरों** पर बजाया जाता है।



- **बॉसुरी** : भीली जनजाति में बाँसुरी को विभिन्न नामों से जाना जाता है। इसे कुछ स्थानों पर **पाँवली** और **रोहली** कहा जाता है, जबकि **झाबुआ अंचल** में इसे **बाहली** के नाम से जाना जाता है।
- **अलगोझा** : अलगोझा एक पारंपरिक वाद्ययंत्र है, जिसका आकार **वाहली** (बाँसुरी) जैसा होता है। अंतर केवल इतना होता है कि इसमें एक **जीभ (रीड)** होती है। इसे **होठों पर खड़ा रखकर बजाया** जाता है।
- **केन्दारिया** : यह एक **फूंक वाद्य यंत्र** है, जिसे **बाँस की चीप** (पतली पट्टी) से बनाया जाता है।

❖ **चित्रकला**

- **गोतरेज** : भीली जनजाति में **भित्तिचित्र** (दीवार चित्र) की परंपरा बहुत पुरानी और समृद्ध है। यह जनजाति अपने **मांगलिक अवसरों** को अधिक **सुमधुर** और **आनंदमय** बनाने के लिये घर की दीवारों **गाय, बैल, सर्प, आम्रवृक्ष, शेर** तथा **शिकार करने के हथियारों** के चित्र अंकित करते हैं। इन चित्रों को **"गोतरेज"** कहा जाता है।



- **पिथौरा** : पिथौरा एक पारंपरिक चित्रकला है, जो विशेष रूप से जोबट और अलीराजपुर के भीली क्षेत्रों में बनाई जाती है। यह चित्रांकन नंवई पर्व के एक दिन पूर्व किया जाता है। इस अवसर पर घर के भीतर की दीवार (भीत) पर पिथौरा चित्र उकेरे जाते हैं। इन चित्रों को रंग-बिरंगे और धार्मिक प्रतीकों से सजाया जाता है। पिथौरा चित्र बनाने वाले कलाकार को लिखिन्दरा कहा जाता है।
- **आम्बा** : आम्बा को **अम्बाड़ा** भी कहा जाता है। यह एक पारंपरिक कला रूप है, जिसमें **आकृति को उकेरने के लिये रेखाओं का प्रयोग** किया जाता है। आम्बा में रेखाएँ विशेष रूप से सजावटी और प्रतीकात्मक होती हैं, जो जनजातीय जीवन, संस्कृति और विश्वासों को दर्शाती हैं।
- **आम्बा चोर** : भील जनजाति की स्त्रियाँ अपने शरीर के किसी भी इच्छित अंग पर **चतुर्भुज आकार का एक विशेष चिन्ह** गुदवाती हैं, जिसे **"आम्बा चोर"** कहा जाता है। यह गुदना उनकी पारंपरिक सुंदरता, पहचान और सांस्कृतिक आस्था का प्रतीक होता है।
- **कहावरी** : कहावरी चित्रकला में दो प्रकार के चित्र बनाये जाते हैं। पहला चित्र **कोणाकार** होता है, जबकि दूसरा चित्र **दो उल्टे चतुर्थांश वृत्तों** के माध्यम से बनाया जाता है।

- **छितारा** : छितारा एक पारंपरिक आकृति है, जिसे प्रायः **हाथों पर गोदा जाता है**। यह आकृति **दोहरी रेखाओं वाले दो मुखापेक्षी कोणों** से मिलकर बनी होती है।

❖ **मृत्यु संस्कार** : भील जनजाति में मृत्यु के बाद **दाह-संस्कार**, **शव को दफनाने** या **जलदाग** की प्रथा प्रचलित है। यदि मृत व्यक्ति के कोई **सगे-संबंधी नहीं होते** या मृत्यु किसी **गंभीर बीमारी** से हुई होती है, तो ऐसे मामलों में **शव को दफनाने** की परंपरा अपनायी जाती है। अन्य सामान्य मामलों में **दाह-संस्कार** किया जाता है। मृतक के शरीर को पहले **स्नान** कराकर उसे **नवीन वस्त्र** पहनाए जाते हैं।**डाम प्रथा** के अंतर्गत शव को **दागने** की परंपरा होती है। मृत्यु के **तीसरे दिन** भील समुदाय में **टिंया** किया जाता है, जिसमें मृतक की आत्मा की शांति के लिये आयोजन होता है। जो परिवार **सम्पन्न** होते हैं, वे **बारहवाँ** (बारहवें दिन का कर्मकांड) करने की परंपरा निभाते हैं।

मानगढ़ धाम

बांसवाड़ा जिले में मध्यप्रदेश और गुजरात सीमा से सटा मानगढ़ धाम अमर बलिदान का साक्षी बना, जब जहां 17 नवंबर 1913 को वार्षिक मेले का आयोजन होने जा रहा था। वनवासियों के नेता गोविन्द गुरु के आह्वान पर उस कालखंड में पड़े अकाल से प्रभावित हजारों वनवासी खेती पर लिये जा रहे कर को घटाने, धार्मिक परम्पराओं का पालना की छूट के साथ बेगार के नाम पर परेशान किये जाने के खिलाफ एकजुट हुए थे। तत्कालीन अंग्रेजी शासन ने उनकी सुनवाई करने के बजाय मानगढ़ धाम को चारों ओर से घेर लिया और मशीनगन और तोपें तैनात कर दी। अंग्रेजी सरकार ने गोविन्द गुरु तथा वनवासियों को पहाड़ी छोड़ने के आदेश दिए लेकिन वे अपनी मांग पर अड़े रहे। जिस पर अंग्रेजी शासन की ओर से कर्नल शटन ने वनवासियों पर गोलीबारी के आदेश दिए और एकाएक हुई फायरिंग में हजारों वनवासी मारे गये। इसे भील जनजाति का जलिया वाला बाग हत्याकांड कहा जाता है।

रामा भील

रामा भील एक महान राजा था जिसकी राजधानी **रामपुरा (नीमच)** थी। इसका राज्य कनेरा से गागरोन तक था, इसे **छप्पन भील** भी कहते है। रामा भील का वाहन नीला घोडा था। रगत्या और कटारया रामा के परम मित्र थे, तथा जेता कीर सेनापति के पद पर आसीन था। जलेरिया देव जिन्हे भैरव के रूप में पूजा जाता है तथा जालकी देवी रामा भील की संतान थी। चंद्रावत ने 1407 सेवा चंद्रावत के नेत्रत्व में आंतरी (मोरी शासक) तथा 1409 में रामपुरा पर आक्रमण किया। भैंसासुरी देवी/ नारसी माता भील जनजाति की कुल देवी है।

भील राज्य और उनके संस्थापक

कोट्या भील – कोटा , माधौ भील – गागरोन, कटारा भील – हिंगलाजगढ़ (वन दुर्ग), माल्या भील – मालेसरी , भाणा भील – भानपुर

गाथा/गातला



भील-भिलाला लोग विशेषकर जिनकी **अकाल मृत्यु** हो जाती है, **उनकी स्मृति** के लिये उनके नाम से गाते बनवाते हैं। कहीं-कहीं जिनकी अकाल मृत्यु नहीं होती है, उनके भी गाते मृत्युपरान्त बनवाये जाते हैं। कुछ जगहो पर ऐसे भी गातले देखे गये हैं, जिन्होंने अपने जीवित रहते ही अपनी स्मृति के लिये गातले बनवाये हैं।

गाथा के प्रकार

1. अगर किसी व्यक्ति की मृत्यु तीर या बन्दूक की गोली लगने से हुई और उसकी स्मृति में गाता डाले जाते है, तो उस गाते को 'गवली' गाता कहते हैं।
2. अगर किसी की मृत्यु फाँसी लगाकर मरने या वाहन दुर्घटना में हुई है और उसकी स्मृति में गाता बना है, उसे 'सूडा' गाता कहते हैं।
3. अगर किसी महिला की मृत्यु सर्पदंश से या जल में डूबने से या बन्दूक की गोली आदि से हुई है और उसकी स्मृति में गाता बनाया हो, उसे 'सती' गाता कहते हैं।

पिठौरा चित्रण

पिठौरा चित्रण भील और भिलाला जनजातियों की एक विशिष्ट **धार्मिक परंपरा** है। यह चित्रण केवल कला नहीं, बल्कि आस्था और धार्मिक विश्वास का प्रतीक माना जाता है। सामान्यतः भील और भिलाला समुदाय **अपने देवी-देवताओं की मूर्तियाँ नहीं बनाते**, न ही उन्हें मानव रूप में चित्रित करते हैं। वे मानते हैं कि देवी-देवता किसी **पत्थर, वृक्ष या खूंटे** में निवास करते हैं। इसलिये पूजा के लिये वे केवल खूंटे गाड़ते हैं या विशेष पत्थर और वृक्षों को पवित्र मानते हैं।

पिठौरा चित्रण में देवी-देवताओं के **प्रतिनिधि रूप में घोड़े** बनाये जाते हैं। यह चित्रण एक **धार्मिक कृत्य** होता है, जिसे विशेष अवसरों पर किया जाता है।



इस चित्रण की विशेषतायें : ◈ पिठौरा चित्रण का कार्य विशिष्ट व्यक्ति करते हैं जिन्हें लखिन्दरा कहा जाता है। ◈ पिठौरा चित्रण मान्यता पूर्ति का अनुष्ठानि कार्य है।, पिठौरा चित्रण से पूर्व कर्मकांड का निर्वहन किया जाता है। ◈ पिठौरा चित्रण विशिष्ट मुहर्त में ही बनाये जाते हैं इन्हें शनिवार एवं रविवार को नहीं बनाया जाता। ◈ पिठौरा चित्रण में गृहपति और उसके परिवार के कुछ सदस्यों को उपवास रखना पड़ता है। ◈ पिठौरा चित्रण उन गृहपतियों द्वारा कराया जाता है जो किसी मनोकामना पूर्ति के लिये या पूर्ण होने पर देवताओं को प्रसन्न करना चाहते हैं।

पिठौरा बनाने का क्रम : ◎ पिठौरा बनाने का कार्य प्रातःकाल से ही प्रारंभ होता है। इस कार्य के प्रारंभ में लखिन्दरा एक बोतल दारू जमीन में गिराकर पिठौरा देव को अर्पित करता है। ◎ चित्रण में सबसे पहले पिठौरा देव का घर या उसके निवास की सीमा का अंकन किया जाता है। इसके बाद सबसे पहले पिठौरा देव के घोड़े बनाये जाते हैं। ◎ पिठौरा में चित्र होते हैं – **घोड़े** (सभी ग्राम्यदेवता एवं पिझौरा-पिठौरी देवता जिनका प्रतिनिधित्व घोड़ों के द्वारा किया जाता है।), **शेर**, **हाथी**, **ऊँट**, **मोर**, **बिल्ली**, **नाग**, **बंदर**, **मछली**, खरगोश, मुर्गी, आदि।

पिठौरा चित्रण में घेरे के भीतर बनाई जाने वाली आकृतियों में सर्वप्रथम आकृति बाबा गणेश की होती है। भीलों के ये गणेश गजमुख एवं मोदक प्रिय न होकर एक हुक्का पीते हुए में काले रंग से चित्रित पुरुष हैं। भीली भाषा में गणेश बापू की माता राणी गौरा और पिता भोले ईश्वर हैं। पिठौरा चित्रण में रावण को 10 मुख के बजाए 12 मुख का बनाया जाता है, रामलक्ष्मण ये साधारण तौर पर शिकार के रूप में चित्रित किये जाते हैं।

EXERCISE – 9

1. भगौरिया पर्व किस त्योहार से संबंधित है। [MPPSC DSP Radio 2020]
(a) नव वर्ष
(b) होली
(c) दीपावली
(d) दशहरा

2. भील जनजाति का प्रमुख पर्व है। [MPPSC Section Officer 2021]
(a) भगोरिया
(b) करमा
(c) बिदरी
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

3. भीलट बाबा कौन है। [MPPSC State Eng. Service 2021]
(a) भारिया के प्रमुख देवता
(b) भीलों के प्रमुख देवता
(c) बैगा के प्रमुख देवता
(d) सहरिया के प्रमुख देवता

4. भील जनजाति का मुख्य व्यवसाय क्या है? [MPPSC Assistant Registrar 2022]
(a) पशुपालन
(b) चित्रकारी
(c) कृषि
(d) तंत्र विध्या

5. पिथौरा चित्रकला किस जनजाति से संबंधित है? [MPPSC Forest (Main) 2021]
(a) कोल
(b) सहरिया
(c) गोंड
(d) भील

6. भगोरिया पर्व मध्य प्रदेश के किस जिले में मनाया जाता है? [MP State Engineering Service 2022]
(a) झाबुआ
(b) भोपाल
(c) देवास
(d) उज्चैन

7. मध्य प्रदेश में कौन-सी जनजाति, भगोरिया उत्सव मनाने के लिये जानी जाती है? [MP Assistant Geologist 2023]
(a) भील
(b) गोंड
(c) बैगा
(d) कोरकू

1. (b), 2. (a), 3. (b), 4. (c), 5. (d), 6. (a), 7. (a)

Chapter 10

सहरिया जनजाति

सवर, जिन्हें सहरिया भी कहा जाता है, प्राचीन काल में कोलरियन कुल की एक शाखा मानी जाती थी। जिनकी सत्ता विभिन्न क्षेत्रों में लंबे समय तक कायम रही। लेकिन समय के साथ, उत्तर और पूर्व दिशा से अन्य कोलरियन जनजातियों तथा दक्षिण दिशा से गोंड जनजाति के प्रभाव में वृद्धि होने लगी। इन प्रभावों के कारण सहरिया समुदाय को अपने पारंपरिक क्षेत्रों से धीरे-धीरे पीछे हटना पड़ा।

- इतिहास में इस समुदाय का उल्लेख कई नामों से मिलता है, जैसे – सावर, सावरा, सवारा, सौनर और साहरा।
- सहरिया जनजाति में "रावत" शब्द सम्मानसूचक होता है।

▶ **उत्पति** : मान्यता के अनुसार, जब **ब्रह्मा जी** ने सम्पूर्ण संसार का निर्माण कर लिया, तब उन्होंने **मनुष्य के निर्माण** का विचार किया। लेकिन उस समय निर्माण की सारी सामग्री समाप्त हो चुकी थी। इसलिये ब्रह्मा जी ने **अपने शरीर के मैल से एक मनुष्य का निर्माण किया**, जिसे आगे चलकर **"सहरिया"** कहा गया।

अन्य किवदंती के अनुसार, ब्रह्मा जी ने सबसे पहले **गंगू खूंटिया** नामक मनुष्य को बनाया और उसे एक **नियत स्थान पर बैठा दिया**। परंतु बाद में बनाये गये अन्य प्राणी उसे धीरे-धीरे **पीछे हटाते चले गये**। जब ब्रह्मा जी ने यह देखा, तो उन्होंने गंगू खूंटिया को **श्राप** दिया— "**अब तुम अकेले जंगल में निवास करोगे**"

- अन्य मान्यता के अनुसार, **सहरिया जनजाति** महर्षि **वाल्मीकि** को अपना **पितृपुरुष** मानती है। **महर्षि वाल्मीकि** का संबंध भील जनजाति है, इसलिये **सहरिया जनजाति** भीलों को अपना **सहोदर (भाई के समान)** मानती है।
- **ऐतरेय ब्राह्मण** में इन्हें **विश्वामित्र के वंशज** बताया गया है। जबकि **महाभारत** में इनकी उत्पति कामधेनु से हुई मानी जाती है।
- सवर जनजाति की उत्पति इन्हें **पुरी के जगन्नाथ मंदिर** के निर्माण कार्य में **पत्थर ढोने** और **भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा** के दौरान **रथ खींचने** के लिये नियुक्त किया गया था। यह कार्य सवर जनजाति **आज भी परंपरागत रूप से निभा रही है**।

बुंदेलखंड क्षेत्र में सावर जनजाति के बीच एक **लोकप्रिय परंपरा** प्रचलित है, जो सृष्टि की शुरुआत से जुड़ी हुई मानी जाती है। कहानी के अनुसार, जब सृष्टि की रचना हो रही थी, तब **भगवान महादेव** ने मनुष्यों को खेती करना सिखाने की इच्छा प्रकट की। उन्होंने स्वयं एक हल बनाया और उसे जोतने के लिये अपने **बैल नंदी** को साथ लाए। लेकिन पृथ्वी पर उस समय **घना जंगल** था। इसलिये महादेव ने पहले जंगल को साफ कराने के लिये एक **विशेष जीव की रचना की**, जिसे उन्होंने "**सावर**" नाम दिया। उन्होंने सावर को एक **कुल्हाड़ी** दी और जंगल साफ करने का काम सौंपा। फिर वे **दूसरा बैल** लाने चले गये। इस बीच, सावर ने जंगल को साफ करना शुरू किया, परंतु वह **बहुत भूखा** था। खाने के लिये कुछ न मिलने पर, उसने **नंदी बैल को मार दिया** और उसके मांस को **सागौन के पत्ते** पर रखकर खा लिया।

यह भी कहा जाता है कि इसी कारण, आज भी जब **सागौन के कोमल पत्तों** को रगड़ा जाता है, तो उनमें से **खून के रंग जैसा लाल रस** निकलता है। कुछ समय बाद महादेव लौटे। उन्होंने देखा कि जंगल पूरी तरह साफ हो चुका है। इस कार्य से प्रसन्न होकर उन्होंने सावर को इनाम दिया। इनाम के रूप में महादेव ने उसे जंगल में पाई जाने वाली **खाद्य और औषधीय जड़ों तथा फलों का ज्ञान** प्रदान किया।

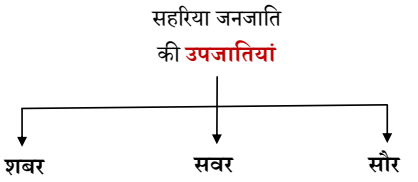
▶ **भौगोलिक विवरण** : **सहरिया जनजाति** का निवास स्थान केवल **मध्य प्रदेश** तक सीमित नहीं है, बल्कि यह **उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र**, **पूर्वी राजस्थान**, **छत्तीसगढ़** और **ओडिशा** राज्यों में भी निवास करती है।



- मध्य प्रदेश में सहरिया जनजाति का **सर्वाधिक संकेद्रण शिवपुरी जिले** में पाया जाता है। इसके अतिरिक्त यह जनजाति **गुना**, **राजगढ़**, **विदिशा**, **अशोकनगर**, **टीकमगढ़**, **निवाड़ी**, **सागर**, **श्योपुर**, **भिंड**, **मुरैना** और **ग्वालियर** जिलों में भी निवास करती है

- **सहरिया की उपजातियां** : सहरिया जनजाति अपनी उत्पत्ति **शबरी** से मानती है। शबरी से उत्पन्न होने के कारण ही इनका नाम **शबर**, **सवर**, **सौर** और अंततः **सहरिया** पड़ा। इन सभी नामों को सहरिया जनजाति की **उपजातियाँ** माना जाता है। वास्तव में ये सभी नाम **सहरिया समुदाय** के ही विभिन्न रूप हैं, जो उनके ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विकास को दर्शाते हैं।

> मध्य प्रदेश में सहरिया जनजाति मुख्यतः किन जिलों में केन्द्रित है? [MPPSC (Civil Main) GS-I 2023 | 5 M]



गौत्र : सहरिया जनजाति में गोत्रों की संख्या को लेकर कोई स्पष्ट या प्रामाणिक प्रमाण उपलब्ध नहीं है, लेकिन अब तक जो जानकारी प्राप्त हुई है, उसके अनुसार **इनके गोत्रों की संख्या लगभग 51** मानी जाती है।

सहरिया जनजाति के गोत्रों को लेकर एक **लोककथा** प्रचलित है। जिसके अनुसार, **सहरिया** और **गोंड जनजाति** के बीच कभी बहुत गहरी शत्रुता थी। एक बार जब दोनों जनजातियों के बीच लड़ाई हुई, तो **सहरिया जनजाति** के लोगों ने **गोंडों के हमले से बचने के लिये जिन वस्तुओं के पीछे छिपकर अपनी रक्षा की**, उन्हीं वस्तुओं के नाम पर उन्होंने अपने **गोत्रों के नाम रख लिये**। जैसे,

- उमरिया - ऊमर के पेड़ के नीचे छिप गये
- भिलोडिया - भिलोडी घास में छिप गये
- सोलकिया - सलाई के पेड पर छिप गये
- सेलिया - सिल या पत्थर के पीछे छिप गये

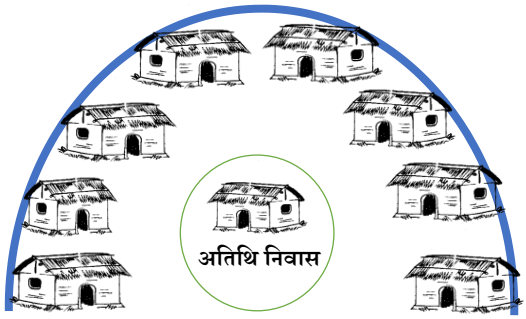
- **बोली/ भाषा** : सहरिया जनजाति को **कोलारियन भाषा परिवार** से संबंधित माना जाता है। इसलिये माना जाता है कि प्रारंभ में इनकी भाषा **मुण्डारी** या **कोलारियन परिवार** की कोई बोली रही होगी। परंतु मध्य भारत (मध्य प्रांत) में निवास करने के कारण समय के साथ सहरिया लोग **हिंदी भाषा** बोलने लगे हैं, जो आर्य भाषा परिवार की प्रमुख भाषा है।
  सहरिया समाज में **बात-बात पर कहावतों** का प्रयोग सहज रूप से देखा जा सकता है। इन कहावतों को सहरिया समुदाय में "केवत" या "केनात" कहा जाता है।
- **जन्म संस्कार** : सहरिया जनजाति में शिशु का जन्म **आनंद और उत्सव** का अवसर माना जाता है। विवाह के बाद जब बहू गर्भवती होती है, तो इसे घर में **खुशियों के आगमन** के रूप में देखा जाता है। गर्भधारण के **सातवें महीने** में बहू की **गोद भराई** की रस्म निभाई जाती है। प्रसव का कार्य प्रायः **मायके** में ही कराया जाता है। सहरिया जनजाति में **जादू-टोने** की मान्यता गहरी होती है, इसी कारण वे **गर्भवती महिला को अकेले कहीं जाने नहीं देते**। ऐसा माना जाता है कि इससे बुरी शक्तियों का असर नहीं होता। शिशु के जन्म के **दसवें दिन** अथवा सुविधा अनुसार गृहस्वामी अपने **परिजनों और रिश्तेदारों को तिल-चावल भेजकर** मुंडन और नामकरण संस्कार के लिये **न्योता** देता है। इस दिन गाँव का **पटेल** शिशु का **नामकरण** करता है और **मुंडन संस्कार** भी संपन्न किया जाता है। अगले दिन **घाट पूजन** की रस्म की जाती है, जिससे जन्म के बाद की शुद्धता और धार्मिक परंपरा को पूरा किया जाता है।
- **खान – पान** : सहरिया जनजाति के खान-पान में **पौष्टिक तत्वों की मात्रा बहुत कम** होती है। उनका मुख्य भोजन **मोटे अनाज** होते हैं, जिनमें पौष्टिकता अपेक्षाकृत कम होती है। इन अनाजों में **जुवार, बाजरा, मक्का, चना और चावल** प्रमुख हैं। **सब्जियों** का उपयोग मौसम के अनुसार किया जाता है। इसके अलावा, सहरिया समुदाय को **प्राकृतिक रूप से उगने वाले कंद, मूल, फल और हरी पत्तियाँ** खाना बहुत पसंद है। इन्हें **वनस्पतियों का ज्ञान अपने पूर्वजों से प्राप्त** हुआ है, जिससे वे जंगल से भोजन जुटाने में सक्षम होते हैं। **दारू (मदिरा)** सहरिया समाज का एक **अनिवार्य अंग** है, जैसे कि अन्य आदिम जातियों में होता है। गर्मी के मौसम में सहरिया लोग **महुआ के फूल एकत्र करते हैं**, फिर उन्हें सड़ाकर **मटकी यंत्र** के माध्यम से **मदिरा बनाते हैं**। **धार्मिक, सामाजिक और अनुष्ठानिक कार्यों** में दारू को **प्रथम स्थान** दिया जाता है। यह न केवल एक पेय है, बल्कि उनकी परंपराओं और रीति-रिवाजों का भी महत्वपूर्ण हिस्सा है।
- **वेशभूषा** : प्राचीन समय में **सहरिया जनजाति** के लोग बहुत कम वस्त्र पहनते थे। पहले पुरुषों और स्त्रियों के वस्त्रों में सादगी देखने को मिलती थी। **पुरुष** प्रायः **धोती**, **रंगीन कमीज** और **साफा** (सिर पर बाँधी जाने वाली कपड़े की पट्टी) पहनते हैं। **स्त्रियाँ** प्रायः **लहंगा**, **घाघरा**, लुगड़ा, पेट्या और सलूका पहनती हैं। इनकी वेशभूषा पर **राजस्थानी परंपरा** का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है। इनके कपड़ों के रंग अधिकतर **गहरे और चटकदार** होते हैं, जैसे—**हरा, पीला, नीला और लाल**।



- **आभूषण** : **सहरिया पुरुष और स्त्रियाँ दोनों** आभूषण पहनते हैं। विशेषकर **विवाहित सहरिया स्त्रियों** में गहनों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। यहाँ तक कि यदि आर्थिक स्थिति अच्छी न भी हो, तो भी वे **कान, गले, कमर और पैरों के लिये** आभूषण अवश्य खरीदती हैं। चाहे वे आभूषण **पीतल** या **एल्युमिनियम** के ही क्यों न हों, उनका महत्व बना रहता है। सहरिया समुदाय का रहन-सहन अत्यंत **सादा और आडंबरहीन** होता है। वे सरलता से जीवन जीते हैं और दिखावे से दूर रहते हैं।

- **निवास स्थान** : सहरिया जनजाति जिस स्थान पर निवास करती है, उसे "**सहराना**" कहा जाता है। यह जनजाति आमतौर पर किसी गाँव, कस्बे या शहर के समीप अपना **अलग मोहल्ला** बसाती है, जो **कोरकू जनजाति के** "**ढाने**" जैसा होता है।

  सहरिया जनजाति अपना सहराना प्रायः **समतल मैदानों** में बसाना पसंद करती है। ये लोग **जंगलों में ऊँची पहाड़ियों** की अपेक्षा समतल और खुले स्थानों को प्राथमिकता देते हैं। इनके मकानों की बसावट **अंग्रेजी अक्षर 'U' के उल्टे आकार में** होती है। पूरे सहराना का **एक ही प्रवेश द्वार** होता है, जिससे सुरक्षा और एकता बनी रहती है। सहराने के **बीच में चौक** होता है, जहाँ एक विशेष "**बंगला**" **(अतिथि गृह)** बनाया जाता है। सहरिया जनजाति के मकान **आमने-सामने पंक्तिबद्ध चौकोर शैली** में बनायेजाते हैं। ये मकान मुख्य रूप से **घास, फूस, बाँस, लकड़ी और मिट्टी के गारे** से तैयार किये जाते हैं। छत बनाने के लिये मिट्टी की दीवारों पर **पत्थर की पट्टियाँ (पाट)** रखी जाती हैं।



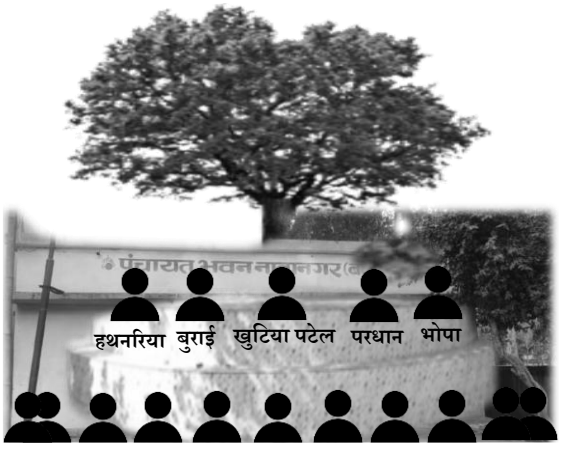
सहराना

  हर घर में सामान्यतः एक **बड़ा कमरा** और **रसोईघर** होता है। अनाज संग्रह करने के लिये प्रत्येक घर में **मिट्टी की बनी बड़ी-बड़ी कोठियाँ**, जिन्हें "**पेई**" कहा जाता है, रखी जाती हैं। घर के **आँगन में "ओटला"** (बैठने की जगह) बनाने की परंपरा भी पाई जाती है। दरवाज़ों के आसपास **लकड़ी से बने घोड़े के सिर (घोड़िले)** लगाए जाते हैं, जो **घर की सुंदरता** को बढ़ाते हैं और सांस्कृतिक पहचान को दर्शाते हैं। सहरिया जनजाति का **सहराना** न केवल उनके **रहन-सहन** और **सामाजिक जीवन** का प्रतीक है, बल्कि यह उनकी **परंपरा, कला और संस्कृति** का जीवंत उदाहरण भी है।

- **सामाजिक व्यवस्था** : प्रत्येक परिवार का एक **मुखिया** होता है, जो परिवार से जुड़े निर्णयों में मुख्य भूमिका निभाता है। सहरिया जनजाति अपनी **समस्याओं का समाधान पंचायत** के माध्यम से करने का प्रयास करती है। पंचायत को समुदाय में एक **सामूहिक निर्णय लेने वाली संस्था** के रूप में स्वीकार किया गया है। पंचायत में **स्त्रियों की कोई सीधी भागीदारी नहीं होती**, लेकिन पंचायत द्वारा लिये गये **निर्णयों का पालन सभी स्त्रियों को भी करना अनिवार्य होता है।**

  - यदि कोई लड़की **परित्यक्ता** हो या **बेसहारा** हो, तो उस स्थिति में उसके **माता-पिता की भूमिका पंच निभाते हैं** और उसके हित में निर्णय लेते हैं।

पंचायत : "**सहराना**" का मुखिया **पटेल** होता है, जिसे "**खुटिया पटेल**" भी कहा जाता है। सहरिया पंचायत में मुख्य रूप से **कोटवार**, **बुराई**, **भोपा/हथनरिया**, **पटेल** और **परधान** शामिल होते हैं। ये सभी पंचायत के संचालन और समाज की समस्याओं के समाधान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। **पटेल की नियुक्ति जातिगत परंपरा के अनुसार होती है**, और यह पद **पीढ़ी दर पीढ़ी** एक ही परिवार में चला आता है।



- **पटेल** : पटेल पंचायत का प्रमुख होता है। उसका पद परंपरागत होता है और समाज में उसे विशेष सम्मान प्राप्त होता है। पटेल का मुख्य

कार्य समाज के **धार्मिक** और **सामाजिक** कार्यों में भाग लेना होता है। साथ ही वह पंचायत में होने वाले विवादों का निपटारा करने के लिये पंचों के साथ निर्णय भी करता है।

- **परधान** : परधान वह व्यक्ति होता है जो समाज और पटेल के कार्यों को पूरी निष्ठा और ईमानदारी से निभाता है। उसका कार्य केवल सहायता करना नहीं, बल्कि पंचायत के संचालन में सक्रिय भागीदारी निभाना होता है। परधान पंचायत को **जोड़ने**, **निर्णय सुनाने**, **दंड वसूली**, **सगाई-ब्याह** के आयोजन तथा **अतिथियों की व्यवस्था** में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। परधान का चयन भी **परंपरागत ढंग** से किया जाता है।
- **बुराई** : सहरिया जनजाति में **बराई** एक महत्वपूर्ण व्यक्ति होता है। उसे समाज का **संदेश वाहक** माना जाता है। जब भी गाँव में कोई सूचना सबको पहुँचानी होती है, तो बराई **डोंडी (नगाड़ा)** पीटकर लोगों को एकत्र करता है और आवश्यक सूचना देता है।
- **भोपा** : वह **तंत्र-मंत्र**, **झाड़-फूँक** और अन्य पारंपरिक उपायों द्वारा बीमारियों का उपचार करता है।
- **हथनरिया** : **हथनरिया** या **गुनिया** सहरिया जनजाति का पारंपरिक **वैद्य** होता है। गुनिया को **जड़ी-बूटियों** की पहचान होती है और वह **तारक-मारक मंत्रों** का भी जानकार होता है।

▶ **आर्थिक आधार** : सहरिया जनजाति का जीवन मुख्य रूप से परंपरागत कार्यों पर आधारित है। इनका **मुख्य व्यवसाय** कृषि, मजदूरी और वनों से उत्पाद एकत्र करना है। इसके अतिरिक्त, **परंपरागत शिल्प** और **शिकार** भी इनकी आजीविका के छोटे-छोटे स्रोत हैं। परंतु इन कार्यों से जीवन यापन करना कठिन है, इसलिये आजकल सहरिया लोग शहरों की ओर जाकर **मजदूरी**, **कारखानों में काम**, **हम्माली** और **रिक्शा चलाने** जैसे कार्यों में लगे हुए हैं।



सहरिया जनजाति **कृषि आधारित मजदूरी** करती है, **सवर उपजाति** वनों से उत्पाद इकट्ठा करने और खेती करने का कार्य करती है। ये लोग **मधुमक्खियों के छत्तों से शहद निकालने** में बहुत निपुण होते हैं। **साओंर उपजाति** आज भी पारंपरिक तरीकों से खेती करते हैं। वे एक **नोकदार छड़ी** से ज्वार बोते हैं। उनका विश्वास है कि यह औजार उन्हें **महादेव** द्वारा भेंट में प्राप्त हुआ है। सहरिया समुदाय **जड़ी-बूटियों का अच्छा ज्ञान** रखता है, इसलिये वे **जड़ी-बूटियों के संग्रहण** का कार्य भी करते हैं।

▶ **विवाह** : **सहरिया जनजाति** में विवाह प्रायः **वयः संधि (यौवनावस्था)** के बाद ही किया जाता है। यह परंपरा संभवतः विश्व के लगभग सभी आदिम समुदायों में पाई जाती है।

मध्य प्रदेश और राजस्थान की सीमा पर स्थित **कोटा जिले के सीताबाड़ी** नामक स्थल पर हर वर्ष **जेठ माह** में **वट सावित्री अमावस्या** से प्रारंभ होकर **दस दिनों** तक चलने वाला एक **वार्षिक मेला** लगता है। इस मेले में मध्य प्रदेश और राजस्थान से हजारों सहरिया – बच्चे, युवा और बुजुर्ग – एकत्र होते हैं। इस मेले में लोग अपने **पूर्वज बाल्मीकि** के दर्शन करते हैं और **युवक-युवतियाँ अपने जीवनसाथी का चुनाव** भी करते हैं। यदि किसी युवक की इच्छा पूर्ण होती है, तो वह मनौती चढ़ाता है।



इस मेले में यदि कोई युवक किसी युवती के सामने **पान या बीड़ी का बंडल** फेंक देता है, तो इसका अर्थ होता है कि वह युवती उसे पसंद है। यदि युवती वह बंडल उठा लेती है, तो यह संकेत होता है कि वह युवक उसे भी पसंद है।

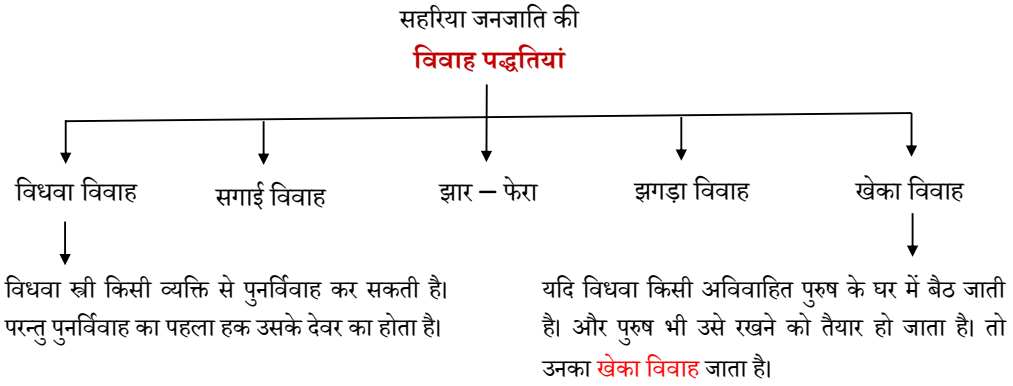
सीताबाड़ी का मेला सहरियों के बीच अत्यंत प्रसिद्ध है और इसे **"सहरियों का मेला"** भी कहा जाता है।

विवाह प्रथायें

- **सगाई विवाह** : सहरिया जनजाति में **सगाई विवाह** एक परंपरागत और महत्वपूर्ण प्रक्रिया मानी जाती है। इस विवाह में **लड़के और लड़की की सहमति** के साथ-साथ **माता-पिता की स्वीकृति** भी आवश्यक होती है। इसलिये इसे **राजी-खुशी से किया**

गया विवाह माना जाता है, जो अधिक **स्थायी और सफल** माना जाता है। विवाह से पहले दोनों पक्षों की सहमति से **सगाई की रस्म** की जाती है। यह प्रक्रिया सामाजिक संबंधों को मजबूत करने का माध्यम भी होती है। विवाह की तिथि **पंच** (समाज के ज्ञानी और वरिष्ठ लोग) मिलकर तय करते हैं। सहरिया समाज में विवाह का शुभारंभ प्रायः **देवउठनी ग्यारस** से माना जाता है।

- **झगड़ा विवाह** : झगड़ा विवाह उस स्थिति में होता है जब कोई पुरुष किसी **विवाहित स्त्री को भगाकर** ले जाता है या स्त्री स्वयं **अपने प्रेमी के साथ भाग जाती है**। ऐसी स्थिति में दोनों परिवारों के लोग उन्हें खोजते हैं। जब दोनों मिल जाते हैं, तब समाज में उनका **पुनर्विवाह** करवा दिया जाता है। इस विवाह की प्रक्रिया में, स्त्री के **पूर्व पति को नए पति द्वारा "झगड़ा" (मुआवज़ा)** देना होता है। झगड़े की राशि कितनी होगी, इसका निर्णय **पंचायत** करती है।
- **झार – फेरा** : जब किसी लड़की का रिश्ता एक परिवार में तय हो जाता है, और बाद में उसका पिता किसी **प्रलोभन** में आकर वह रिश्ता तोड़ देता है और लड़की का विवाह **किसी अन्य स्थान पर** कर देता है, तो ऐसी स्थिति में पूर्व में तय रिश्ता करने वाला परिवार इसे **अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न** मानता है।इस कारण, विवाह के पूर्व ही वे लोग उस युवती का **जबरदस्ती अपहरण** कर लेते हैं और अपने लड़के के साथ उसकी **भांवर या फेरे** करवा देते हैं। इस प्रकार जबरन किये गये इस विवाह को **"झार-फेरा विवाह"** कहा जाता है।



▶ सहरिया जनजाति के देवी देवता

सहरिया जनजाति के लोग **देवी-देवताओं**, **भूत-प्रेतों** और **प्रकृति पूजा** में गहरी आस्था रखते हैं। वे मानते हैं कि देवी-देवता उनके जीवन की रक्षा करते हैं और संकट के समय उन्हें मार्ग दिखाते हैं। इनके साथ ही वे भूत-प्रेतों के अस्तित्व में भी विश्वास करते हैं और उनसे बचाव के लिये विभिन्न टोने-टोटकों और अनुष्ठानों का सहारा लेते हैं।

- **ठाकुर देव** : ठाकुर देव को **बच्चों और बुजुर्गों की रक्षा करने वाला ग्राम देवता** माना जाता है। गाँव के किसी छोर पर स्थित किसी बड़े **वृक्ष के नीचे** ठाकुर देव की स्थापना की जाती है। जब **बच्चों को निमोनिया** जैसी बीमारी हो जाती है या **बुजुर्गों की पसलियाँ गलने** लगती हैं, तब ठाकुर देव से **मनौती** मांगी जाती है। ठाकुर देव की पूजा विशेष रूप से **भोपा** (देव पूजक) द्वारा की जाती है। पूजा में **दारू** चढ़ाई जाती है और **बकरे की बलि** दी जाती है।

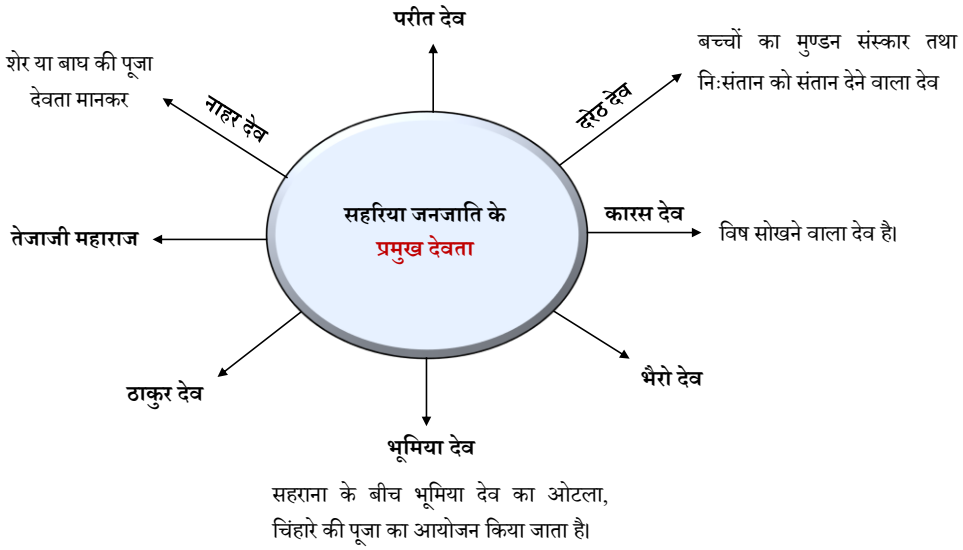


- **भैरो देव** : **भैरो देव से बाँझ स्त्रियाँ पुत्र प्राप्ति की कामना करती हैं।** इनकी पूजा के समय **बकरे या मुर्गे की बलि** दी जाती है। भैरो देव की स्थापना किसी **पेड़ के नीचे** या **खुले चबूतरे** पर की जाती है। उन्हें एक **सिंदूर लगे लम्बे गोल पत्थर** के रूप में प्रतिष्ठित किया जाता है। भैरो देव की उपस्थिति **प्रत्येक गाँव** में देखने को मिलती है।
- **परीत देव** : सहरिया जनजाति में **परीत देव** की मान्यता विशेष रूप से प्रतिष्ठित व्यक्तियों से जुड़ी होती है। जब किसी प्रतिष्ठित सहरिया व्यक्ति की मृत्यु होती है, तो उसका **दाह-संस्कार उसके ही खेत में** किया जाता है। यदि मृत व्यक्ति की आत्मा परिवार

को किसी प्रकार का कष्ट देने लगे, तो **भोपा** (जनजातीय पुजारी) के निर्देश अनुसार उस स्थान पर **एक चबूतरा** बना दिया जाता है। परिवार के लोग प्रत्येक **अमावस्या** और **पूर्णिमा** को उस चबूतरे पर जाकर **दूध, नारियल और बताशे** अर्पित करते हैं तथा पूजा करते हैं।

- **हीरामन देव** : मनुष्य व पशु को सर्प के काटने पर हीरामन देव के नाम से बन्ध बांधे जाते है।
- **करीला धाम** : मध्य प्रदेश के गुना जिले से लगभग 75 किलोमीटर दूर स्थित **करीला धाम**, माँ जानकी के प्रसिद्ध मंदिर के रूप में जाना जाता है। यह स्थान न केवल धार्मिक आस्था का केंद्र है, बल्कि **सहरिया जनजाति** के लिये भी विशेष महत्त्व रखता है।

  यह पावन धाम जिले **अशोकनगर** तहसील के **जसैया गाँव** में स्थित है। मान्यता है कि **त्रेता युग** में यहीं पर माँ जानकी ने **लव-कुश** को जन्म दिया था। कहा जाता है कि लव-कुश के जन्म के समय की खुशी में **स्वर्ग से अप्सराएँ** इस दरबार में नृत्य करने आई थीं। उन्होंने यहाँ प्रसिद्ध **राई नृत्य** की प्रस्तुति दी थी। आज भी यह स्थल लाखों श्रद्धालुओं की आस्था का केंद्र बना हुआ है और विशेष रूप से **सहरिया समुदाय** के लोग इसे अत्यंत श्रद्धा से पूजते हैं।



▶ **त्यौहार / पर्व** : सहरिया जनजाति दीपावली, होली, दशहरा, आदि सभी त्यौहार मनाती है।

- **हरियाली अमावस्या** : हरियाली अमावस्या एक प्रमुख पर्व है, जो **खेती शुरू करने से पहले** मनाया जाता है। यह त्योहार विशेष रूप से **अच्छी फसल की कामना** के साथ मनाया जाता है। इस दिन किसान खेत जोतने से पहले **धरती माता और प्रकृति की पूजा** करते हैं, ताकि आने वाली फसल **समृद्ध और सफल** हो। यह पर्व कृषि संस्कृति से जुड़ी **आस्था और परंपरा** का प्रतीक माना जाता है।
- **तेजा नवमी** : **तेजा नवमी** सहरिया जनजाति का एक **विशेष और श्रद्धा से भरा पर्व** है। इस दिन सहरिया समाज के लोग **तेजाजी** की पूजा बड़े उत्साह और विश्वास के साथ करते हैं। सहरिया समुदाय का **तेजाजी में अटूट विश्वास** होता है। यही कारण है कि कई गाँवों में **तेजाजी के ओटले** (पूजन स्थल) बनाये गये हैं। मान्यता है कि तेजाजी **सर्पदंश से रक्षा** करते हैं। इसी विश्वास के कारण लोग **तेजाजी के नाम से लाल रेशमी धागों से बंधन** बाँधते हैं और उनकी कृपा प्राप्त करते हैं।
- **चिंहारे की पूजा** : चिंहारे की पूजा पूजा में सूअर की बलि दी जाती है। सबसे पहले सूअर को भुमिया देव की मढ़ी (देवस्थल) में लाया जाता है। फिर देवता के सामने उसकी बलि दी जाती है और उसका रक्त सहराना (गाँव) की सीमा पर छिड़का जाता है। यह प्रक्रिया गाँव की सुरक्षा और दुर्भाग्य से रक्षा के उद्देश्य से की जाती है। पूजा के बाद, उसका माँस सभी लोग मिलकर प्रसाद के रूप में ग्रहण करते हैं। इस पूजा में समुदाय की एकता, आस्था और परंपरा का भाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

▶ **लोग गीत/ नृत्य** : हल्दी गीत, भतैया गीत, जेवनार, बन्ना गीत , गारी गीत , रसियां गीत, बंधाई गीत, लंगोरिया गीत, गोंठ लीला , भेंट, भजन और लहंगी नृत्य। [विस्तृत व्याख्या के लिये *Chapter-18* देखें]

▶ **मृत्यु संस्कार** : सहरिया समाज में **मृत्यु का भय** अत्यंत गहरा और डरावना माना जाता है। यदि किसी सहराना (परिवार या बस्ती) में बार-बार या अस्वाभाविक रूप से मृत्यु होती है, तो वहाँ के लोग **अपना निवास स्थान छोड़कर** किसी अन्य जगह **नया सहराना** बसा लेते है।

- सहरिया समाज में मृतकों के लिये **दोनों प्रकार की अंतिम संस्कार पद्धतियाँ**—जलाना और गाड़ना—प्रचलित हैं।
- जब किसी की मृत्यु होती है, तो सबसे पहले **परिवार के सदस्य गाँव में और फिर अपने रिश्तेदारों को** सूचना देते हैं। इसके बाद, मृतक के **कपड़े उतारकर उसके शरीर पर हल्दी** लगायी जाती है। **बाँस की लकड़ियों** से **ठठरी (अर्थी)** बनाई जाती है। मृतक के **मुंह में हल्दी और पैसे**, तथा **सिरहाने जुवार के दाने** और उसकी प्रिय वस्तुएँ जैसे **तम्बाकू, बीड़ी** आदि रखी जाती हैं। मृत्यु के **तीसरे दिन**, सुबह गाँव के सभी लोग **रोटी लेकर श्मशान भूमि** जाते हैं। वहाँ वे **शव यात्रा के दौरान बनाये गये पत्थर के ढेरों** पर रोटियाँ चढ़ाते हैं और फिर **श्मशान में जाकर अस्थियाँ (जिसे 'छास' या 'माटी' कहा जाता है)** एकत्र करते हैं। शाम को, **मृत्यु-स्थान पर तीन गड्ढे** खोदे जाते हैं, जिनमें **मृतक की आत्मा का आव्हान** किया जाता है। इन गड्ढों में **भेंट, पूजा और दारू** अर्पित कर उन्हें बंद कर दिया जाता है। यह **तीन गड्ढे**—**बचपन, जवानी और बुढ़ापे** की तीन अवस्थाओं को दर्शाते हैं। इनके पास लगाया गया **खूंटा**, **अमर आत्मा का प्रतीक** माना जाता है।

EXERCISE – 10

1. सहारिया जनजाति किस क्षेत्र में अधिक संख्या में निवास करती है [MPPSC Tax Assistant 2012]

(a) मण्डला शहडोल
(b) बुंदेलखण्ड
(c) मुरैना-श्योपुर शिवपुरी
(d) रीवा-सीधी

2. इनमें से मध्यप्रदेश की कौन-सी विशेष जनजाति है [MP Vyapam Block Development Officer 2016]

(a) सहरिया
(b) अगरिया
(c) धनवार
(d) कोल

3. सहारिया जनजाति किसे अपना पितृ पुरुष मानते हैं? [MP Forest Service (Main) 2023]

(a) परशुराम जी
(b) नाहरजा बाबा
(c) वाल्मीकि जी
(d) भदोई बाबा

4. निम्नलिखित में से किस जनजाति को आदर के साथ खुटिया पटेल के रूप में संबोधित किया जाता है। [MPPSC Civil/Forest (Prelim) 2023, 2025]

(a) सहरिया
(b) बैगा
(c) भूमिया
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

5. चम्बल क्षेत्र में रहने वाली विशेष पिछड़ी जनजाति कौन-सी है? [MPPSC Forest Service (Main) 2021]

(a) सहरिया
(b) मुरिया
(c) कोरकू
(d) भारिया

1. (c), 2. (a), 3. (c), 4. (a), 5. (a)

Chapter

11

कोल जनजाति

कोल-मुंडा समूह की अत्यंत प्राचीन **आदिम जनजाति** है। कोल जनजाति की संस्कृति और इतिहास बहुत **पुरातन** है। इस जनजाति का उल्लेख **ऋग्वेद**, **मत्स्यपुराण**, **रामायण** और **महाभारत** जैसे प्राचीन ग्रंथों में भी मिलता है। "**कोल**" शब्द का अर्थ **मानव** होता है। **कोल** और **कोरकू**, दोनों ही जनजातियाँ **मुंदारी भाषा परिवार** से संबंधित मानी जाती हैं।

- **उत्पति** : कोल जनजाति अपनी उत्पत्ति सिंह-बोंगा (सूर्य देवता) से मानती है। एक प्राचीन मान्यता के अनुसार, सिंह-बोंगा ने सबसे पहले एक लड़के और एक लड़की की रचना की और उन्हें एक गुफा में रख दिया, ताकि वे संसार की जनसंख्या बढ़ा सकें। परंतु जब उन्होंने देखा कि वे दोनों इतने भोले हैं कि उनसे संतानों की आशा नहीं की जा सकती, तब सिंह-बोंगा ने उन्हें चावल से शराब बनाने की कला सिखाई। यह शराब पीने के बाद उनमें कामुक इच्छाओं की जागृति हुई। समय के साथ, उनके बारह बेटे और बारह बेटियाँ उत्पन्न हुई।
  - प्राचीन धार्मिक ग्रंथों में **कोल जाति** का उल्लेख एक **राज्य वंश** के रूप में मिलता है। इतिहास में कोल जाति केवल श्रमिक या वनवासी समुदाय के रूप में नहीं, बल्कि **शासक वर्ग** के रूप में भी वर्णित की गयी है। 15वीं सदी में, **अकबर और महाराणा प्रताप** के बीच हुए युद्ध में **माड़ा** के कोल राजा **मड़निहा** ने अपनी **सैन्य शक्ति** के साथ महाराणा प्रताप की महत्वपूर्ण सहायता की थी। उनका राज्य **विंध्याचल क्षेत्र** के **बैढन - सीधी** क्षेत्र में स्थित था, जिसकी राजधानी **माड़ा** थी।
  - मध्य प्रदेश की **कोल जनजाति** अपने उत्पत्ति स्थान के रूप में **रीवा जिले** के **फरेन्दा** और **कुराली गाँव** को मानती है।

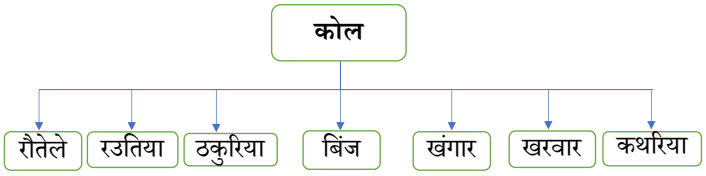
कोलगढ़ी मध्य प्रदेश के रीवा जिले के त्योंथर कस्बे में स्थित है। यह स्थान टमस नदी के किनारे, एक ऊँचे टीले पर बसा हुआ है। यहाँ का प्राचीन किला आज जर्जर अवस्था में है, परंतु इसका ऐतिहासिक महत्व अब भी बना हुआ है।



- **भौगोलिक विवरण** : मध्य प्रदेश का उत्तर-पूर्वी भाग **बघेलखंड** के नाम से जाना जाता है। इस क्षेत्र में **कोल जनजाति** का विशेष प्रभाव देखा जाता है। कोल जनजाति मुख्य रूप से **रीवा, सीधी, सतना, शहडोल, जबलपुर** और **मंडला** जिलों में निवास करती है। मध्य प्रदेश के अलावा, कोल जनजाति के लोग **उत्तर प्रदेश, बिहार, ओडिशा** और **त्रिपुरा** राज्यों में भी पाए जाते हैं।



- **कोल जनजाति की उपजातियां** : कोल जनजाति में उपजाति की संख्या **7** है।



- **जन्म संस्कार** : आदिम जनजातीय समाज में **जन्म, विवाह और अंत्येष्टि** को मुख्य संस्कार माना जाता है। इन संस्कारों का संचालन घर की **महिलाओं और पुरुषों** द्वारा पारंपरिक **गीतों और रीति-रिवाजों** के माध्यम से किया जाता है। **कोल जनजाति** में संतान प्राप्ति को अत्यंत **हर्ष का विषय** माना जाता है, क्योंकि अधिक संतान को परिवार की **समृद्धि और शक्ति का प्रतीक** समझा जाता है। विशेष रूप से **लड़के के जन्म** को शुभ और सौभाग्यदायक माना जाता है।

शिशु जन्म के लिये घर में एक विशेष कक्ष होता है, जिसे "**सोबरिया**" कहा जाता है। शिशु का जन्म **दाई** द्वारा कराया जाता है, जो इस कार्य में अनुभव रखती है। जन्म के **बारहवें दिन** शिशु का **नामकरण** किया जाता है। इस अवसर पर महिलायें **सोहर गीत** गाती हैं। रात्रि में पुरुष और युवा मिलकर **कोल दहका नृत्य** करते हैं, जो कि कोल समाज की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का एक सुंदर उदाहरण है।

- **खान-पान** : कोल जनजाति के लोग **शाकाहारी और मांसाहारी**, दोनों प्रकार के भोजन करते हैं। उनके खान-पान में विविधता पायी जाती है, जो उनके रहन-सहन और पर्यावरण पर आधारित होती है।
  - इनकी प्रमुख खाद्यान्न फसलें **ज्वार, गेहूँ, कोदो, मिंझरी, सांवा, काकुन, धान, अरहर और मूँग** हैं ये फसलें उनके भोजन का मुख्य आधार होती हैं और अधिकतर ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानीय तरीके से उगायी जाती हैं।
  - कोल जनजाति के **दैनिक जीवन** में **मदाइन (मदिरा)** का विशेष महत्व होता है। यह न केवल उनके **त्योहारों** और **धार्मिक अनुष्ठानों** का हिस्सा होती है, बल्कि सामाजिक अवसरों पर भी इसका उपयोग किया जाता है।
- **रहन सहन /वेशभूषा** : **कोल पुरुष** प्रायः **धोती**, **कुर्ता** पहनते हैं और सिर पर **साफा** बाँधते हैं। वर्तमान समय में, शहरी क्षेत्रों के निकट रहने वाले कोल पुरुष **पेंट-शर्ट** भी पहनने लगे हैं। **कोल महिलायें** जिस साड़ी को पहनती हैं, उसे "**बंडी**" कहा जाता है। वे गहनों की बहुत शौकीन होती हैं और प्रायः **चाँदी और गिल्ट (नकली सोने की परत)** से बने आभूषण पहनती हैं।

  प्रमुख आभूषण?

  - **गले में** – सूता, गुरिया माला, कंठी
  - **भुजा में** – बहूँटा
  - **कलाई में** – चुरवा, नऔगिरीही
  - **कमर में** – करधन

  इसके अलावा कुछ विशेष आभूषण इस प्रकार हैं:

  - **ढाती खोसब** – यह सिर से कान तक पहना जाने वाला आभूषण है।
  - **ढार** – यह कान में पहना जाता है।
  - **पुलिया** – यह नाक में पहनने वाला आभूषण होता है।
- **आर्थिक जीवन** : कोल जनजाति मुख्य रूप से **खेती** पर निर्भर करती है। अधिकतर कोल लोग बड़े किसानों के खेतों में **सालाना अनुबंध** के आधार पर खेती करते हैं, जिसे स्थानीय भाषा में "**बनी मजदूरी करना**" कहा जाता है। जो कोल समुदाय **पहाड़ी क्षेत्रों** में निवास करता है, वे आमतौर पर **वन विभाग** के लिये **वन उपज का संग्रहण** करते हैं, जिससे उन्हें आजीविका प्राप्त होती है। **कोल महिलायें** घरेलू कार्यों के साथ-साथ **खेती और बनी मजदूरी** में भी पुरुषों की सहायता करती हैं।

  
- **आवास / निवास स्थान** : कोल जनजाति जहाँ भी गाँव में निवास करती है, वहाँ के भाग को **कोलिन टोला** कहा जाता है। यदि किसी क्षेत्र में कोल जनजाति की आबादी अधिक हो, तो उस स्थान को **कोल्हना** कहा जाता है। कोल जनजाति **समूह में रहना पसंद करती है**। इनके घर मुख्य रूप से **मिट्टी, घास और फूस** से बनाये जाते हैं, जिन्हें **मड़िया** या **झोपड़ी** कहा जाता है। कोल समुदाय अपने मकानों का **मुख्य द्वार दक्षिण दिशा में नहीं बनाते**, क्योंकि वे इसे अशुभ मानते हैं।
- **विवाह संस्कार** : समाज में विवाह को पारिवारिक और सामाजिक जीवन के लिये अनिवार्य संस्कार माना जाता है। इस समाज की विशेषता यह है कि यहाँ स्त्री को पुरुष की तुलना में अधिक महत्व दिया जाता है। इसी कारण यहाँ वधू मूल्य (दहेज के विपरीत) की परंपरा प्रचलित है, जिसमें वर पक्ष को वधू पक्ष को मूल्य अर्पित करना होता है। विवाह प्रस्ताव प्रायः लड़के के मामा या फूफा के माध्यम से लड़की के घर भेजा जाता है। जब लग्न (लगुन) लिखा जाता है, उस समय वधू मूल्य का भुगतान किया जाता है।
- **पर्व -त्योहार** : कोल जनजाति अपने पर्व-त्योहारों को **उल्लास और श्रद्धा** के साथ मनाती है। इन त्योहारों में उनकी सांस्कृतिक परंपराएँ और प्रकृति से जुड़ाव झलकता है। कोलों के प्रमुख त्योहार हैं — **हरियाली अमावस्या, नागपंचमी, जन्माष्टमी, तीजा, नवदुर्गा,**

दीपावली, खिचरहाई, शिवरात्रि और **होली**। यह जनजाति **सावन के महीने** में **हरियाली अमावस्या** का पर्व विशेष रूप से मनाती है। **नागपंचमी** के दिन कोल जनजाति के लोग खेतों में **हल नहीं चलाते**, क्योंकि यह दिन नागों के पूजन का होता है और वे इसे शुभ मानते हैं। **होली** का त्योहार उनके जीवन में **नई उमंग और खुशियाँ** लेकर आता है। **नवाखानी** त्योहार **नई फसल आने पर** मनाया जाता है। इस अवसर पर वे **पहली उपज** को अपने **देवी-देवताओं** को अर्पित करते हैं और उनका आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।

▶ **सामाजिक संगठन/पंचायत**

कोल जनजाति का सामाजिक संगठन परंपरागत रूप से सुव्यवस्थित होता है। इसमें **मुखिया या चौधरी**, **बरुआ**, **भुईहार**, **ओझा**, **पण्डा**, **देवार** और **निउतिहा** की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।



इस समाज में **जातीय नियमों का पालन करना** और **सामूहिक हित में कार्य करना** सभी लोगों का परम कर्तव्य माना जाता है। कोल जनजाति की पंचायत को **गोहिया** कहा जाता है। इस पंचायत में **मुखिया**, **बरुआ**, **भुईहार** और **निउतिहा** जैसे सदस्य मुख्य माने जाते हैं।

- **मुखिया** : कोल जनजाति में गाँव और टोले का **मुखिया** सर्वोच्च प्रशासनिक अधिकारी माना जाता है। मुखिया को स्थानीय रूप से **चौधरी**, **महतो** या **गौटिया** के नाम से भी जाना जाता है। मुखिया की भूमिका केवल प्रशासनिक ही नहीं होती, बल्कि वह **सामाजिक कार्यों** में भी सक्रिय भागीदारी निभाता है।

  मुखिया के मुख्य कार्यों में शामिल हैं— ◈ **गाँव के विवादों का निपटारा करना** ◈ **शासकीय करों की वसूली करना**

- **बरुआ** : यह कोल जनजाति का **धार्मिक नेता** होता है। ऐसा माना जाता है कि उसे **देवी-देवताओं के भाव आते है।** जब कोल परिवार में किसी प्रकार की **आपदा** आती है, तो वे बरुआ से **परामर्श** लेते हैं। कोल जनजाति का विश्वास है कि यदि कोई व्यक्ति, मवेशी या पूरा गाँव किसी **दैवीय आपदा** से पीड़ित होता है, तो बरुआ **तंत्र-मंत्र** और **बलि-पूजा** के माध्यम से उपचार करता है और **दैवीय शक्तियों को प्रसन्न** करता है।
- **भुईहार** : भुईहार, कोल समाज में **बरुआ** के बाद **दूसरा प्रमुख धार्मिक पद** माना जाता है। यह पद धार्मिक और पारंपरिक कार्यों में अत्यंत महत्त्वपूर्ण होता है। क्षेत्रीय प्रभाव के कारण भुईहार को कुछ स्थानों पर **ओझा**, **पंडा** या **देवर** के नाम से भी जाना जाता है। भुईहार **जड़ी-बूटी**, **तंत्र-मंत्र**, **झाड़-फूंक**, **पूजा-पाठ** तथा **धार्मिक अनुष्ठानों की विधियों** में निपुण होता है। वह न केवल रोग निवारण में विश्वास रखता है, बल्कि समाज में एक **धार्मिक मार्गदर्शक** की भूमिका भी निभाता है।
- **निउतिहा** : कोल समाज में **निउतिहा** एक विशेष व्यक्ति होता है, जिसकी जिम्मेदारी **सामूहिक आयोजनों में लोगों को निमंत्रण देने की** होती है। जब भी समाज में **जन्म**, **छठी**, **बरहुँव**, **शादी** या अन्य कोई उत्सव होता है, तो निउतिहा ही सभी को **निमंत्रण देने का कार्य** करता है।

▶ **संगीत / नृत्य**

कोल जनजाति मध्य भारत की एक प्रमुख जनजाति है, जिसे **संगीत और नृत्य प्रिय** माना जाता है। यह जनजाति अपने पारंपरिक गीतों और नृत्यों के माध्यम से अपनी भावनाओं, परंपराओं और सामाजिक जीवन को अभिव्यक्त करती है। कोल जनजाति का सबसे प्रिय और प्रमुख नृत्य **कोलदहका** या **कोलदहकी** कहलाता है। इसके अलावा वे **केहरा**, **दोतलिया** और **नारदी** जैसे नृत्यों का भी प्रदर्शन करते हैं। ये नृत्य अवसर विशेष पर सामूहिक रूप से किये जाते हैं, जिनमें पुरुषों और महिलाओं की समान भागीदारी होती है।

गीतों की परंपरा

- **सोहर गीत** – ये गीत **बच्चे के जन्म** के समय गाए जाते हैं।

- **विवाह गीत** – **विवाह समारोह** के दौरान गाए जाने वाले गीत हैं, जिनमें **गारी, सोहाग, सजनई, लावा-परछन** आदि प्रमुख हैं।
- **दादर गीत** – जब बारात **वधू के दरवाजे** पर पहुँचती है, उस समय **पुरुष ये गीत गाते हैं** और स्त्रियाँ नृत्य करती हैं।
- **केहरा गीत** – यह गीत **स्त्री और पुरुष दोनों** द्वारा गाया जाता है।
- **भगत गीत** – ये गीत विशेष रूप से **नवरात्रि** के अवसर पर गाए जाते हैं।

नृत्य की परंपरा

- **कोलदहका नृत्य** – यह **कोल जनजाति** द्वारा **खुशी के अवसरों** पर किया जाने वाला एक महत्वपूर्ण नृत्य है।
- **केहरा नृत्य** – यह नृत्य **संपूर्ण बघेलखंड** क्षेत्र में प्रचलित है। इसमें **स्त्री और पुरुष अलग-अलग शैली** में नाचते हैं। इसका मुख्य **ताल "कहरवा"** होता है।
- **दोतलिया नारदी नृत्य** – यह नृत्य **कोल जनजाति की स्त्रियों** द्वारा किया जाता है और यह उनकी सांस्कृतिक पहचान को दर्शाता है।

▶ **कोल जनजाति के देवी देवता** : कोल जनजाति जनजाति की धार्मिक आस्था अनेक देवी-देवताओं में होती है। इन देवी-देवताओं का स्थान विशेष होता है और इनसे जुड़ी परंपराएँ गाँव की सुख-शांति और सुरक्षा से जुड़ी होती हैं।

- **ठाकुर देव** : ठाकुर देव गाँव के **ग्राम देवता** होते हैं और इन्हें **ग्राम रक्षक** भी माना जाता है। इनके साथ **बरुआ** होते हैं, जिन पर पूजा के समय **भाव (आवेग)** आते हैं। ऐसा विश्वास किया जाता है कि ठाकुर देव गाँव में आने वाली विपत्तियों को दूर करते हैं। जब गाँव में कोई महामारी फैलती है, तब ठाकुर देव की विशेष रूप से **आराधना** की जाती है। इनका स्थान गाँव के बाहर किसी **पेड़ के नीचे** होता है।
- **बड़का देव** : बड़का देव को ऐसा देवता माना जाता है जो **सभी वस्तुओं में व्याप्त** रहते हैं। इन्हें **महादेव** का ही रूप माना जाता है और गाँव की **पूर्व दिशा** में इनका स्थान होता है। बड़का देव की पूजा विशेष मान्यता के साथ की जाती है।
- **अहीरबाबा** : अहीर बाबा को घर का **सबसे बड़ा देवता** माना जाता है। घर के **उत्तर-पश्चिम दिशा** में कोने में एक **चौतरा** बनाकर या ज़मीन में **मिट्टी के दो शिवलिंग जैसे आकार** बनाकर इनकी पूजा की जाती है।
- **घासी-घमसान** : इन्हें **कोलों के पूर्वज** माना जाता है। इनका **चौरा बनाकर** पूजा की जाती है। विशेष रूप से **पुत्र की कामना** के लिये इनकी उपासना की जाती है।
- **सन्यासी देव** : सन्यासी देव को गाँव के **रक्षक देवता** माना जाता है। यह विश्वास किया जाता है कि ये **बाहरी बाधाओं** को गाँव में प्रवेश करने से रोकते हैं और गाँव की रक्षा करते हैं।
- **वनसती देवी** : कोल जनजाति के लोग वनों में निवास करते हैं और **वनस्पतियों के उपयोग** से निरंतर लाभ प्राप्त करते हैं। इस उपकार के प्रति **आभार व्यक्त** करने के लिये वे **वनसती देवी** को पूजते हैं। वे मानते हैं कि वनसती देवी ही वन की रक्षा करती हैं और उन्हें जीवन जीने के लिये आवश्यक संसाधन प्रदान करती हैं। इस प्रकार, वनसती देवी के प्रति उनकी **गहरी आस्था** होती है
- **शारदा माई** : **बघेलखंड** क्षेत्र के कोल जनजाति के लोग **मैहर वाली शारदा माई** को देवी स्वरूप में मानते हैं। वे शारदा माई को **ज्ञान और शक्ति की देवी** मानकर उनकी पूजा करते हैं।

रामायण में निम्नलिखित जनजातियों में से कौन-सी जनजाति का उल्लेख है [MP Vyapam Jail Prahari Exam 2017]
(a) कोल (c) गोण्ड
(b) भील (d) उपरोक्त सभी

मध्यप्रदेश की विशेष पिछड़ी जनजाति कौन-सी नहीं [MP Dairy Federation Exam 2016]
(a) कोल (c) बैगा
(b) सहरिया (d) भारिया

▶ **मृत्यु संस्कार** : कोल जनजाति में मृत्यु के पश्चात **शव को जलाने, दफनाने** और **अग्नि दाह** देने की प्रथाएँ प्रचलित हैं। यदि **मृत व्यक्ति बच्चा हो** या **कम उम्र का अविवाहित युवक या युवती** हो, तो उसका शव **दफनाया** जाता है। वहीं यदि मृतक **विवाहित पुरुष या महिला** हों, तो उनका **अग्नि दाह** किया जाता है। कोल जनजाति में यदि किसी **स्त्री की मृत्यु** होती है, तो उसकी **शव यात्रा में पुरुषों के साथ महिलायें भी शामिल होती हैं**। शव को जलाने से पूर्व **उसे स्नान कराया जाता है**, ताकि उसे शुद्ध किया जा सके।

Chapter

12

विमुक्त, घुमक्कड़ एवं अर्द्ध घुमक्कड़ जनजाति

विमुक्त जनजातियों के अंतर्गत उन समुदायों को सम्मिलित किया जाता है जिन्हें **ब्रिटिश शासन के दौरान**, वर्ष **1871** में लागू "**आपराधिक जनजाति अधिनियम**" के अंतर्गत '**जन्मजात अपराधी**' घोषित किया गया था। बाद में, स्वतंत्र भारत में **वर्ष 1952** में भारत सरकार द्वारा इस अधिनियम को **निरस्त** कर दिया गया और इन समुदायों को "**विमुक्त जनजातियाँ**" घोषित किया गया।

मध्य प्रदेश में विमुक्त जनजातियाँ

मध्य प्रदेश की कुल **51 जातियाँ** विमुक्त, घुमक्कड़ एवं अर्द्धघुमक्कड़ जनजातियों में शामिल की गई हैं। इनमें –

घुमक्कघड़ एवं अर्द्धघुमक्कवड़ जनजातियां = 30 जातियाँ

◎ बलदिया, ◎ बाछोवालिया, ◎ भाट, ◎ भन्तु, ◎ देसर, ◎ दुर्गी मुरागी, ◎ घिसाड़ी, ◎ गोन्धली, ◎ इरानी, ◎ जोगी, जोगी कनफटा, ◎ जोशी बालसंतोषी, जोषी बहुलीकर, जोशी बजारिया, जोषी बुदुबुदुकी, जोषी चित्राबठी, जोशी हरदा, जोशी नादिया, जोशी हरबोला, जोशी नामदीवाला, जोशी पिंगला, ◎ काशीकापड़ी (काषीकापड़ी हरदा, काषीकापड़ी हरबोला), ◎ कलन्दर नागफड़ा, ◎ कामद, ◎ करोला, ◎ कसाई (गडरिये), ◎ लोहार पिट्टा (गाड़िया लोहार), ◎ नायकढ़ा (नायकढ़ा भील), ◎ शिकलिगर, बरघिया, सैगुलगोर, सरानिया, शिकलिगर, ◎ सिरंगी वाला, कुचबंद (कुचबंद), ◎ सुदुगुदु, सिद्धन (बहरूपिया), ◎ बनीयन्थर, राजगोंड, ◎ गद्दीज़, ◎ रेभारी (पशुपालक), ◎ गोलर (गोलम, गोला, बालाघाट, गोलकर), ◎ गोसाँई, ◎ भराडी हरदास, ◎ भराडी हरबोला, ◎ हेजरा, ◎ धनगर

विमुक्त जातियां = 21 जातियाँ

◎ कंजर, ◎ सांसी, ◎ बंजारा, ◎ बनछड़ा, ◎ मोघिया, ◎ कालबेलिया, ◎ भानमत, ◎ बगरी, ◎ नट, ◎ पारधी, ◎ बेदिया, ◎ हाबुड़ा, ◎ भाटू, ◎ कुचबंदिया, ◎ बिजोरिया, ◎ कबूतरी, ◎ सन्धिया, ◎ पासी, ◎ चन्द्रवेदिया, ◎ बैरागी, ◎ सनोरिया

▶ **विमुक्त, घुमक्कड़ एवं अर्द्धघुमक्कड़ जनजाति कल्याण विभाग**

मध्य प्रदेश राज्य में **विमुक्त**, **घुमक्कड़** तथा **अर्द्धघुमक्कड़ जनजातियों** के विकास और कल्याण के लिये एक विशेष विभाग की स्थापना की गई है। भारत के संविधान के **अनुच्छेद 166** के खंड (2) और खंड (3) में प्राप्त **शक्तियों** का प्रयोग करते हुए, दिनांक **22 जून 2011** को मध्यप्रदेश शासन द्वारा "**विमुक्त, घुमक्कड़ एवं अर्द्धघुमक्कड़ जनजाति कल्याण विभाग**" का गठन किया गया। बाद में, दिनांक **12 सितम्बर 2011** को इस विभाग के लिये **संचालक, विमुक्त, घुमक्कड़ एवं अर्द्धघुमक्कड़ जनजाति विकास विभाग** को **विभागाध्यक्ष** के रूप में नियुक्त किया गया।



- **विभाग के दायित्व** : मध्य प्रदेश शासन द्वारा **विमुक्त, घुमक्कड़ एवं अर्द्धघुमक्कड़ जनजाति कल्याण विभाग (62)** को कार्य आवंटन नियमों के अंतर्गत निम्नलिखित दायित्व सौंपे गये हैं—
  - विमुक्त, घुमक्कड़ एवं अर्द्धघुमक्कड़ जनजातियों के **कल्याण कार्यक्रमों** का निर्माण एवं **क्रियान्वयन**।
  - इन जनजातियों के लिये **शैक्षणिक** एवं **आर्थिक विकास** से संबंधित योजनाओं का संचालन।
  - विमुक्त, घुमक्कड़ एवं अर्द्धघुमक्कड़ जनजातियों से संबंधित विभिन्न विभागों द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का **पर्यवेक्षण** एवं **सलाह देना**।
  - इन जनजातियों से जुड़े **नियमों और विनियमों** को बनाना तथा उनका **क्रियान्वयन** सुनिश्चित करना।

- विभाग से संबंधित अन्य सभी प्रशासनिक विषयों को देखना (**वित्त विभाग** तथा **सामान्य प्रशासन विभाग** को आवंटित विषयों को छोड़कर), जैसे— **नियुक्तियाँ**, **पदस्थापनाएँ**,**स्थानांतरण**, **वेतन**,**छुट्टियाँ**, **निवृत्ति वेतन**, **पदोन्नति**, **भविष्य निधियाँ**, **प्रतिनियुक्तियाँ**, **दण्ड** तथा **अभ्यावेदन**।

❖ **मध्यप्रदेश राज्य विमुक्त, घुमक्कड़ एवं अर्द्धघुमक्कड़ जाति अभिकरण** : **गठन वर्ष 1996** में, और इसे विनियम वर्ष 1995 के तहत पंजीबद्ध कराया गया था। इस अभिकरण में 01 अध्यक्ष, 06 शासकीय सदस्य और 05 अशासकीय सदस्य होते हैं। अभिकरण का पदेन सदस्य सचिव, विमुक्त, घुमक्कड़ एवं अर्द्धघुमक्कड़ जनजाति विकास के संचालक होते हैं।

अभिकरण के उद्देश्य

- विमुक्त, घुमक्कड़ एवं अर्द्धघुमक्कड़ जनजातियों के विकास एवं उनकी समस्याओं का पता लगाना।
- विकास के विभिन्न क्षेत्रों में विनियोजन तथा उत्पादन के लिये जातियों के परामर्श से आयोजनाएं तैयार करना, ताकि उनकी आर्थिक तथा सामाजिक उन्नति हो सके।
- इन आयोजनाओं को या तो प्रत्यक्ष रूप से या समुचित अभिकरण के माध्यम से निष्पादित करना।

31 अगस्त* जनजातियों के विमुक्ति दिवस के रूप में मनाया जाएगा**

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि प्रदेश में प्रति वर्ष 31 अगस्त का दिन जनजातियों के विमुक्ति दिवस के रूप में मनाया जाएगा। प्रदेश में विमुक्त, घुमक्कड़ एवं अर्द्धघुमक्कड़ वर्ग के कल्याण के लिये 2011 में पृथक विभाग का गठन किया गया था। सालों तक विकास की मुख्य-धारा से कटी रही इन जनजातियों की पीड़ा को समझकर की गई इस पहल को विस्तार देते हुए अब जनजातियों के सम्पूर्ण कल्याण के लिये घुमंतु तथा अर्द्धघुमंतु मंत्रालय बनाया जाएगा।

❖ **विमुक्त, घुमक्कड़ एवं अर्द्धघुमक्कड़ के आर्थिक विकास के लिये योजनायें**

- **मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना** : यह योजना 1 अगस्त 2014 से विमुक्त, घुमक्कड़ एवं अर्धघुमक्कड़ जनजाति वर्ग के व्यक्तियों के आर्थिक विकास को ध्यान में रखते हुए बनायी गयी है। इसका उद्देश्य है— उन्हें स्वयं का रोजगार स्थापित करने के लिये सहायता प्रदान करना। इस योजना के अंतर्गत लाभार्थी को दो प्रकार की सहायता दी जाती है:
  - मार्जिन मनी सहायता – परियोजना लागत का 30% (अधिकतम ₹3.00 लाख तक)
  - ब्याज अनुदान – पुरुषों के लिये अधिकतम 5%, महिलाओं के लिये अधिकतम 6%

  यह अनुदान अधिकतम 7 वर्षों तक, और ₹25,000/- प्रतिवर्ष की सीमा तक दिया जाता है।
- **मुख्यमंत्री आर्थिक कल्याण योजना** : यह योजना समाज के सबसे गरीब वर्ग के आर्थिक उत्थान के लिये 1 अगस्त 2014 से चलायी जा रही है। इस योजना के अंतर्गत लाभार्थियों को कम लागत के उपकरण या कार्यशील पूंजी उपलब्ध कराई जाती है, जिससे वे अपना छोटा व्यवसाय शुरू कर सकें या वर्तमान कार्य को आगे बढ़ा सकें। इस योजना में मार्जिन मनी सहायता दी जाती है, जो परियोजना लागत का 50% या अधिकतम ₹15,000 तक हो सकती है। यह सहायता सीधे लाभार्थी के बैंक खाते में दी जाती है, जिससे उन्हें ऋण प्राप्त करने में आसानी होती है।
- **विमुक्त जाति बस्ती विकास योजना** - विमुक्त, घुमक्कड़ और अर्द्धघुमक्कड़ बाहुल्य बस्तियों, ग्रामों, वार्डों, मोहल्लों, मजरों, टोलों **और** डेरों में अधोसंरचना के विकास हेतु विशेष योजना चलायी जा रही है। इस योजना के अंतर्गत **सी.सी. रोड**, **नाली**, **सार्वजनिक शौचालय**, **पेयजल व्यवस्था** आदि जैसी मूलभूत आवश्यकताओं के लिये सामुदायिक निर्माण कार्य कराये जाते हैं।
- **विमुक्त जाति बस्तियों में विद्युतीकरण योजना** : विमुक्त, घुमक्कड़ एवं अर्द्धघुमक्कड जनजाति के लोगों की बस्तियों में जहां पर 100 लोगों से कम की आबादी है एवं विद्युत व्यवस्था नहीं है, वहां विद्युत आपूर्ति की मूलभूत सुविधा उपलब्ध कराने हेतु विद्युत लाईन का विस्तार, ट्रांसफार्मर लगाना, खम्बे लगाना इत्यादि कार्य इस योजनान्तर्गत किये जाते हैं।
- **धानमंत्री आवास योजना** : जनजातीय समुदाय की आवास संबंधी समस्याओं को दूर करने के लिये **प्रधानमंत्री आवास योजना** 1 अप्रैल 2016 से चलायी जा रही है। इस योजना का उद्देश्य इन जनजातियों को **एक स्थान पर स्थायी आवासीय सुविधा** प्रदान करना है। इस योजना के अंतर्गत **प्रत्येक पात्र हितग्राही** को **₹1.50 लाख तक का अनुदान** दिया जाता है, जिससे वे अपने लिये सुरक्षित और सुविधाजनक आवास बना सकें।

❖ **शैक्षणिक योजनायें** : राज्य सरकार द्वारा कक्षा 1 से 5 तक अध्ययन करने वाले **विमुक्त, घुमक्कड़ और अर्द्धघुमक्कड़ जनजाति वर्ग** के छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। इस योजना के अंतर्गत विद्यार्थियों को **प्रति माह 15 रुपये** की दर से **10 माह के लिये कुल 150 रुपये** की छात्रवृत्ति दी जाती है। इस छात्रवृत्ति का वितरण **समेकित छात्रवृत्ति योजना** के अंतर्गत **लोक शिक्षण संचालनालय** के माध्यम से किया जाता है।

- **पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति (1976-77)** : योजनांतर्गत कक्षा 11वीं से लेकर महाविद्यालयीन कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिये चिकित्सा, इंजीनियरिंग तथा विज्ञान समूह, आयुर्वेद, यूनानी, होम्योपैथी, कृषि, विज्ञान, वाणिज्य इत्यादि समूहों के विभिन्न पाठ्यक्रमों के लिये 2.50 लाख की आयसीमा वाले परिवार के विद्यार्थियों को निर्धारित पूर्ण निवास भत्ता एवं शासकीय संस्थानों में निर्धारित शिक्षण शुल्क परीक्षा शुल्क सहित अनिवार्य शुल्क का भुगतान किया जाता है। 2.50 लाख से 3.00 लाख तक की आयसीमा वाले परिवार के विद्यार्थियों के लिये कोई निर्वाह भत्ता देय नहीं है। शासकीय संस्थाओं/अशासकीय संस्थाओं में अध्ययनरत रहने पर शासकीय संस्थाओं से संबंधित पाठ्यक्रम में निर्धारित शिक्षण शुल्क परीक्षा शुल्क सहित अनिवार्य शुल्कों की आधी राशि का भुगतान किया जाता है।
- **कन्या साक्षरता प्रोत्साहन योजना कक्षा 11वीं** : विमुक्त, घुमक्कड़ एवं अर्द्धघुमक्कड़ जनजाति की बालिकाओं को शिक्षा हेतु प्रोत्साहित करने के लिये कन्या साक्षरता प्रोत्साहन योजना 1 जनवरी 1990 से संचालित है। प्रथम बार कक्षा 11वीं में प्रवेश लेने पर रूपये 3,000/- की प्रोत्साहन राशि प्रदान की जाती है।
- **सिविल सेवा प्रोत्साहन योजना** : विमुक्त, घुमक्कड़ एवं अर्द्धघुमक्कड़ जनजाति के योग्यता प्राप्त शिक्षित अभ्यार्थियों को मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग एवं संघ लोक सेवा आयोग की सिविल सेवा परीक्षा में विभिन्न स्तरों में सफलता प्राप्त करने पर प्रोत्साहन राशि दी जाती है।
- **सैनिक स्कूल/पब्लिक स्कूलों के शिक्षण शुल्क प्रतिपूर्ति योजना :** सैनिक स्कूल / निजी संस्थाओं में प्रवेश लेने पर विमुक्त, घुमक्कड़ एवं अर्द्धघुमक्कड़ जनजाति के विद्यार्थियों के लिये शिक्षण शुल्क की प्रतिपूर्ति की योजना संचालित है।
- **विमुक्त जाति छात्रावास योजना** : विमुक्त, घुमक्कड़ एवं अर्द्धघुमक्कड़ जनजाति के दूरस्थ स्थान से अध्ययन हेतु आने वाले विद्यार्थियों को आवासीय सुविधा उपलब्ध कराने के लिये 141 विमुक्त जाति छात्रावास / आश्रम / सामुदायिक कल्याण केन्द्रों का संचालन किया जा रहा है। जिसमें 6550 सीट्स स्वीकृत है। योजनांतर्गत बालकों हेतु रूपये 1,090/- एवं बालिकाओं हेतु रूपये 1,130/- शिष्यवृत्ति प्रतिमाह (10 माह हेतु) से प्रदान की गई।
- **जाति प्रमाण पत्रों का मुद्रण** : सामान्य प्रशासन विभाग द्वारा दिये गये निर्देशानुसार विमुक्त, घुमक्कड़ एवं अर्द्धघुमक्कड जनजाति वर्ग के व्यक्तियों के जाति प्रमाण पत्र बनाये जाने हेतु अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) को अधिकृत किया गया है. जिसके तहत लोक सेवा केन्द्रों के माध्यम से जाति प्रमाण पत्र बनाये जा रहे हैं।
- **परीक्षा शुल्क की प्रतिपूर्ति (मा.शि.मं/ व्यापमं)** : माध्यमिक शिक्षा मण्डल की परीक्षाओं एवं व्यापम द्वारा संचालित पीईटी / पीएमटी / पीएटी इत्यादि परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले विमुक्त, घुमक्कड़ एवं अर्द्धघुमक्कड जनजाति के विद्यार्थियों के परीक्षा शुल्क की प्रतिपूर्ति हेतु योजना संचालित है।
- **नेतृत्व विकास योजना** : विमुक्त, घुमक्कड़ एवं अर्द्धघुमक्कड जनजाति के विद्यार्थियों में नेतृत्व क्षमता विकसित करने हेतु नेतृत्व विकास शिविर आयोजित कर, प्रदेश के प्रत्येक जिले से कक्षा 10वीं एवं 12वीं में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले बालक एवं बालिका को शिविर में आमंत्रित किया जाकर उन्हें नेतृत्व विकास का प्रशिक्षण दिये जाने का प्रावधान है।

▶ **विमुक्त, घुमक्कड़ एवं अर्द्धघुमक्कड़ जनजाति**

⊳ **पारधी जनजाति** : "**पारधी**" शब्द, मराठी भाषा के '**पारध**' का एक तत्भव रूप है, जिसका अर्थ होता है— "**आखेट**" या "**शिकार**"। यह जनजाति मध्यप्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में पाई जाती है, किंतु इनकी सर्वाधिक जनसंख्या **सीहोर** और **रायसेन** जिलों में मिलती है। **पारधी जनजाति** के लोग **वन्य पशुओं का शिकार करने** और उन्हें पकड़ने में **कुशल** माने जाते हैं। इनकी पारंपरिक जीवनशैली में शिकार का विशेष स्थान रहा है। **शासकीय सूचना** के अनुसार, पारधी जनजाति का क्षेत्र विशेष रूप से छिंदवाड़ा और सिवनी जिले, बालाघाट जिले की बैहर तहसील, बैतूल जिले की बैतूल और भैसदेही तहसील, जबलपुर जिले की मुड़वारा,

पाटन और सिहोरा तहसीलें, होशंगाबाद जिले की होशंगाबाद और सोहागपुर तहसील, नरसिंहपुर जिले में, खण्डवा जिले की हरसूद तहसील में फैला हुआ है, जो प्रशासनिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण माना जाता है।

पारधी जनजाति मध्य भारत की एक परंपरागत शिकारी जनजाति है, जो प्राचीन काल से ही **वन्य जीवों के शिकार** में माहिर रही है। **पारधी और शिकारी** में मुख्य अंतर यह है कि शिकारी प्रायः **बंदूक** का प्रयोग खुले रूप से करते हैं, जबकि पारधी पारंपरिक रूप से **जाल, फंदे** और अन्य उपायों से शिकार करते हैं।

पारधी और बहेलियों में भेद करना कठिन होता है, क्योंकि दोनों की जीवनशैली और शिकार की विधियाँ एक जैसी होती हैं। पारधी समुदाय अपनी **उत्पत्ति एक गोड़ पूर्वज** से मानता है। इनकी मान्यता है कि **भगवान महादेव** ने उन्हें **जाल से पशु पकड़ने की कला** सिखाई, जिससे वे **बंदूक से शिकार** करने के पाप से बच सके। हालाँकि, पारधी समुदाय के कुछ उपभेद, विशेषकर **भील पारधी**, शिकार के लिये **बंदूक** का प्रयोग करते हैं और इसमें कोई धार्मिक या सामाजिक प्रतिबंध नहीं मानते। **भील पारधी** मुख्य रूप से **भोपाल, रायसेन और सीहोर** जिलों में पाये जाते हैं। इनके सभी **गोत्र** प्रायः **राजपूतों से मिलते-जुलते** हैं, जैसे — **सिसोदिया, सोलंकी, चौहान** और **राठौर** आदि।

पारधियों की शिकार विधियाँ : **पारधी जनजाति** भारत की एक पारंपरिक शिकारी जनजाति है, जो विभिन्न प्रकार के शिकारों के लिये जानी जाती है। इस जनजाति की अलग-अलग उपशाखाएँ होती हैं, जो अपने-अपने विशेष कौशल के लिये प्रसिद्ध हैं।

- **चीता पारधी** — ये लोग **चीता पकड़ने में बहुत माहिर** होते हैं। वे बचपन में ही चीता पकड़कर उसे प्रशिक्षित करते हैं, ताकि वह शिकार में उनका साथ दे सके।
- **फाँस पारधी** — ये लोग **फंदे की सहायता से शिकार** करते हैं। वे जाल और अन्य उपकरणों का प्रयोग कर पशु-पक्षियों को पकड़ते हैं।
- **शीशी का तेल पारधी** — ये **मगरमच्छ का शिकार** करते हैं और उसकी **चर्बी से तेल निकालकर शीशी में भरकर** बेचते हैं। यह तेल परंपरागत औषधीय गुणों के लिये जाना जाता है।

पारधी समाज में महिलाओं को शिकार की अनुमति नहीं होती। वे पारंपरिक रूप से शिकार के कार्य में भाग नहीं लेतीं, बल्कि घरेलू और अन्य सहायक कार्यों में लगी रहती हैं।

- **धनगर जाति** : धनगर जाति एक परंपरागत पशुपालक समुदाय है, जो मुख्य रूप से **महाराष्ट्र**, **कर्नाटक**, **गोवा**, **मध्य प्रदेश** और **उत्तर प्रदेश** में निवास करता है। विभिन्न राज्यों में इस जाति को अलग-अलग नामों से जाना जाता है—
  - **दक्षिणी महाराष्ट्र, गोवा** और **उत्तरी कर्नाटक** में इन्हें **गवली** कहा जाता है।
  - **उत्तर प्रदेश** में इन्हें **गडरिया** के नाम से जाना जाता है।
  - **आंध्र प्रदेश** और **कर्नाटक** में ये **गोल्ला** कहलाते हैं।

  धनगर जाति को **एनटीसी (NTC)** यानी **खानाबदोश जनजाति श्रेणी** में शामिल किया गया है। यह श्रेणी **ओबीसी** (अन्य पिछड़ा वर्ग) की एक उप-श्रेणी के अंतर्गत आती है।

- **कालबेलिया** : **कालबेलिया** भारत के **राजस्थान** राज्य की एक प्रमुख जनजाति है। इस जनजाति के लोग पारंपरिक रूप से **साँप पकड़ने** का कार्य करते हैं। इसलिये इन्हें आमतौर पर **सपेरे** कहा जाता है। कालबेलिया जनजाति के लोग गाँव-गाँव घूमकर **साँप का खेल** दिखाते हैं और इसी से **अपना जीवन-यापन** करते हैं।



इनकी सांस्कृतिक पहचान का एक विशेष अंग है — कालबेलिया नृत्य, जो अपनी लय, गति और विशेष परिधानों के कारण प्रसिद्ध है। यह नृत्य इतना महत्वपूर्ण माना गया कि यूनेस्को द्वारा वर्ष 2010 इसे विश्व सांस्कृतिक विरासत सूची में शामिल किया गया है।

- **बंजारा** : **बंजारा** एक ऐसा मानव समुदाय है जो एक स्थान पर स्थायी रूप से न बसकर निरंतर एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर **भ्रमणशील जीवन** व्यतीत करता है। ये लोग पहले माल ढुलाई और व्यापार करते थे, परंतु **रेलवे के चलने के बाद** इनका पारंपरिक

व्यवसाय कम हो गया। अब यह जनजाति एक **मिश्रित जाति** के रूप में परिवर्तित हो गई है। बंजारा लोग अपने **जन्म संबंध** उत्तर भारत के **ब्राह्मण** अथवा **क्षत्रिय वर्ण** से जोड़ते हैं। दक्षिण भारत में ये आज भी अपने **प्राचीन विश्वासों और रिवाजों** का पालन करते हैं, जो कि **द्रविड़ वर्ग** से मेल खाते हैं। **कंघी का आविष्कार** सबसे पहले **बंजारा जाति** द्वारा ही किया गया था।

बंजारा समुदाय का धर्म **जादू-टोना** और **आस्था पर आधारित** होता है। ये अपने **गुरु** को बहुत मानते हैं और इनके **पुरोहित को "भगत"** कहा जाता है। इनके अनुसार, सभी बीमारियाँ **भूत-प्रेत, जादू-टोना** या किसी अलौकिक शक्ति के कारण होती हैं। इनके देवी-देवताओं की लंबी सूची होती है, जिसमें सबसे पहला नाम होता है—**मरियाई या महाकाली** (मातृदेवी का विकराल रूप)। यह देवी भगत के शरीर में उतरती है और तब वह **चमत्कार** दिखा सकता है।

अन्य पूजित देवता हैं : **गुरु नानक**, **बालाजी** या **कृष्ण का बालरूप**, **तुलजा भवानी** (दक्षिण भारत के तुलजापुर की प्रसिद्ध देवी), **शिव भैया**, **सती**, **मिट्ठू भूकिया** आदि।

मध्य भारत के बंजारा समुदाय में एक विशेष और **विचित्र वृषपूजा** का प्रचलन है। वे बैल को "**हतादिया**" (अवध्य) मानते हैं और उसे **बालाजी का सेवक** समझकर पूजते हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि बैल ही उनके पारंपरिक व्यवसाय का प्रमुख आधार रहा है। बंजारा लोग पहले **लाखों बैलों की पीठ पर बोरियाँ लादकर** व्यापार करते थे, इसलिये इन्हें "**लक्खी बंजारे**" कहा जाता था।

छत्तीसगढ़ के बंजारे "**बंजारा देवी**" की पूजा करते हैं, जो इस जाति की **मातृशक्ति** का प्रतीक मानी जाती हैं। सामान्यतः यह समुदाय **हिंदू धर्म के सभी देवी-देवताओं की आराधना** करता है।

विमुक्त जाति दिवस मध्यप्रदेश में किस दिनांक को मनाया जाता है।

[MPPSC Civil/Forest (Prelim) 2022, MPPSC State Sub-Engineer 2020]

(a) 31 August
(b) 15 July
(c) 15 September
(d) 21 March

मध्य प्रदेश में 'बंजारा समाज' को किस वर्ग में शामिल किया गया है?

[MPPSC State Forest (Main) 2023]

(a) अनुसूचित जाति
(b) अनुसूचित जनजाति
(c) अन्य पिछड़े वर्ग
(d) अनारक्षित

कंघी शिल्प निम्न में से किस जनजाति से संबंधित है

[MP Dairy Federation 2016]

(a) भील
(b) गोण्ड
(c) बंजारा

- **कंजर** : **कंजर** एक प्रमुख **घुमक्कड़ जनजाति** है, जो उत्तर भारत के ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रों में फैली हुई है। इनकी उत्पत्ति द्रविड़ मूल से हुयी है। 'कंजर' शब्द की उत्पत्ति **संस्कृत शब्द** '**कानन-चर**' से मानी जाती है, जिसका अर्थ है — **जंगलों में घूमने वाला**। हालाँकि, कंजरों की भाषा, नाम, वेशभूषा और संस्कृति में उत्तर भारतीय प्रवृत्तियाँ इतनी प्रबल हैं कि उन्हें पूर्ण रूप से द्रविड़ मूल का मानना उचित नहीं प्रतीत होता।

  कंजरों की जीवनशैली और संस्कृति में **साँसिया**, **हाबूरा**, **बेरिया**, **भाट**, **नट**, **बंजारा**, **जोगी** और **बहेलिया** जैसे अन्य घुमक्कड़ कबीलों से काफी समानतायें मिलती हैं। ये समुदाय पारंपरिक "**लहंगी नृत्य**" भी करते हैं, जो इनकी सांस्कृतिक पहचान का एक महत्वपूर्ण भाग है।

  एक प्रचलित कथा के अनुसार, कंजर **मान गुरु** नामक दिव्य पूर्वज की संतान माने जाते हैं। मान अपनी पत्नी **नथिया कंजरिन** के साथ जंगल में रहता था। माना जाता है कि उसने **दिल्ली के सुल्तान के दरबार में शाही पहलवान** को कुश्ती में हराया था, जिससे कंजरों की वीरता और सम्मान की परंपरा जुड़ी है।

कंजरों का सामाजिक संगठन असमान (विषम) प्रकार का है। सन् 1891 की जनगणना में इन्हें **अंतर्विवाही (एंडोगैमस) विभागों** और **बहिर्विवाही (एक्सोगैमस) उपविभागों** में विभाजित किया गया था। इन उपविभागों में — **106 हिंदू उपविभाग** और **6 मुसलमान उपविभाग** शामिल थे।

CHAPTER

13

जनजाति वर्ग से संबंधित निगम/मण्डल, कला और प्रसिद्ध व्यक्ति कलाकार

निगम / मण्डल



▶ **संत रविदास मध्य प्रदेश हस्तशिल्प एवं हथकरघा विकास निगम लिमिटेड**

मध्य प्रदेश सदियों से **संस्कृति, विरासत और परंपराओं** का संगम रहा है। यह प्रदेश **प्रेरणादायक** और **रहस्यमय शिल्पकला** का एक विशाल भंडार भी माना जाता है।

इसी सांस्कृतिक परंपरा के संरक्षण और संवर्धन के उद्देश्य से **मध्य प्रदेश सरकार** ने वर्ष **1981** में **संत रविदास मध्य प्रदेश हस्तशिल्प एवं हथकरघा विकास निगम लिमिटेड** की स्थापना की। यह निगम राज्य के **पारंपरिक एवं गैर-पारंपरिक शिल्प** के **संरक्षण और प्रचार-प्रसार** के लिये समर्पित संस्था है।

यह संस्था राज्य के **कारीगरों और बुनकरों** को **स्थायी रोजगार** के अवसर उपलब्ध कराने के लिये **हस्तशिल्प एवं हथकरघा** के **निर्माण, विपणन और बिक्री** से जुड़ी गतिविधियाँ संचालित करती है। आधुनिक समय की मांगों के अनुसार, यह निगम **उत्पाद डिज़ाइनिंग**, **प्रशिक्षण** और **कौशल उन्नयन** जैसी सेवाएँ भी प्रदान करता है, जिससे शिल्पकार बदलते समय के साथ आगे बढ़ सकें और अपने कार्य को बेहतर बना सकें

अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति समुदायों से संबंधित रोजगार और उद्यमशीलता को बढ़ावा देने के लिये, मध्य प्रदेश सरकार ने सिंगापुर सरकार के सहभागिता से 'ग्लोबल स्किल पार्क' की स्थापना की है, 16 फरवरी, 2022 को संत रविदास जयंती के अवसर पर मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने भोपाल में बनने वाले ग्लोबल स्किल पार्क का नाम संत शिरोमणि रविदास जी महाराज के नाम पर रखने की घोषणा की, जो हर साल 10 हजार युवाओं को प्रशिक्षित प्रदान करेगा। अनुसूचित जाति और जनजाति युवाओं को टंट्या मामा आर्थिक कल्याण (आर्थिक कल्याण), डॉ. भीमराव अंबेडकर आर्थिक कल्याण, भगवान बिरसा मुंडा आर्थिक कल्याण और मुख्यमंत्री उद्यम क्रांति योजनाओं का लाभ भी प्राप्त होगा।

▶ **राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति वित्त और विकास निगम (NSTFDC)** : जनजातियों के आर्थिक विकास के लिये विशेष रूप से स्थापित यह निगम, जनजातीय कार्य मंत्रालय के अधीन एक शीर्ष संस्था है। इसे सरकारी कंपनी के रूप में **कंपनी अधिनियम, 1956** की धारा 25 (वर्तमान में **कंपनी अधिनियम, 2013** की धारा 8) के तहत निगमित कर लाइसेंस प्रदान किया गया था।

- **स्थापना** : 10 April 2001
- **मुख्यालय** : भीकाजी कामा प्लेस, आरके पुरम, नई दिल्ली
- **प्रबंध निदेशक** : भारत सरकार के संयुक्त सचिव
- **प्रबंधनकर्ता** : केन्द्र सरकार, राज्य चौनेलाइजिंग एजेंसियों, भारतीय औद्योगिक विकास बैंक (आईडीबीआई), भारतीय जनजातीय सहकारी विपणन विकास संघ लि. (ट्राइफेड) के प्रतिनिधियों के द्वारा प्रबंधन का कार्य किया जाता है।
- **कार्य** : निगम, ब्याज की रियायती दरों पर वित्तीय सहायता उपलब्ध करा कर अनुसूचित जनजातियों के आर्थिक उत्थान में अग्रणी भूमिका निभाता है।

▶ **भारतीय जनजातीय सहकारी विपणन विकास संघ लिमिटेड** (TRIFED)

- **स्थापना** : 1987 में बहु राज्य सहकारी समिति अधिनियम, 1984 (अब बहु राज्य सहकारी समिति अधिनियम, 2002) के तहत स्थापित एक बहु राज्य सहकारी समिति है, **ट्राइब्स इंडिया**, भारतीय जनजातीय सहकारी विपणन विकास संघ यानी ट्राइफ़ेड का रिटेल आउटलेट है. इसे अप्रैल, 1999 में लॉन्च किया गया था। ट्राइफ़ेड ने नई दिल्ली के 9, महादेव रोड पर अपना पहला शोरूम खोला था।
- **मुख्यालय** : NSIT Estate, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली
- **कार्य** : ◈ सेवा प्रदाता और जनजातीय (आदिवासी) उत्पादों के लिये बाजार उपलब्ध कराना। ◈ खुदरा आउटलेट 'ट्राइब्स इंडिया' के नेटवर्क के माध्यम से जनजातीय (आदिवासी) उत्पादों का विपणन करना। ◈ अनुसूचित जनजाति के कारीगरों और लघु वनोपज (MFP) संग्रहकर्ताओं को प्रशिक्षण प्रदान करना।

चित्रकला



▶ **गोंड आदिवासी चित्रकला** : गोंड जनजाति भारत की सबसे बड़ी जनजातियों में से एक है। इस जनजाति की चित्रकला की विशिष्ट शैली को गोंड पेंटिंग कहा जाता है। हाल ही में इस कला को अप्रैल 2023 में **GI Tag (भौगोलिक संकेतक टैग)** प्राप्त हुआ है।

गोंड चित्रकला एक ऐसी कला है, जिसकी शुरुआत एक प्रेरित आत्मा से हुई, जिसने अपनी जीवंत कल्पनाशक्ति और आसपास की दुनिया की अनोखी समझ के माध्यम से अपने गाँव की दीवारों को चित्रों से सजाया।

गोंड चित्रकला की विशेषताएँ

इन चित्रों की सबसे बड़ी विशेषताएँ हैं —

- मुक्तहस्त शैली
- द्वि-आयामी दृश्य

गोंड चित्रकला की मुक्तहस्त शैली हर पेंटिंग को अद्वितीय बनाती है। इसमें तीसरा आयाम कलाकार के मन की सरलता और कल्पनाशक्ति को दर्शाता है। गोंड कलाकार सदियों से प्राकृतिक और पौराणिक दुनिया का अनोखा चित्रण करते आए हैं। उनके चित्रों में विवरण की सूक्ष्मता, रंगों की विविधता, रहस्य और हास्य का अद्भुत मेल देखने को मिलता है।

यह चित्रकला केवल सजावट का माध्यम नहीं है, बल्कि गोंड कलाकारों की धार्मिक आस्था, भावनात्मक जुड़ाव और जीवन-दर्शन की सजीव अभिव्यक्ति भी है। गोंड पेंटिंग में चित्रित किये जाने वाले विषय स्थानीय त्योहार, पशु और पक्षी, देवता और धार्मिक प्रतीक, दैनिक जीवन के दृश्य और यहाँ तक कि आधुनिक नवाचार जैसे – हवाई जहाज, कार आदि भी होते हैं।

▶ **बैगा कला** : **बैगा कला** आदिवासी कला का एक अनूठा और पारंपरिक रूप है, जिसे बैगा जनजाति के लोग **पीढ़ियों से अपनाते आ रहे हैं**। यह कला उनकी **संस्कृति, प्रकृति प्रेम और आध्यात्मिकता** को दर्शाती है। बैगा **किंवदंती** के अनुसार, इस कला का आरंभ "**मावई देवी**" ने किया था। यह माना जाता है कि मावई देवी ने ही बैगा समुदाय को **मिट्टी, पत्तियों और पौधों के रंगों** जैसी प्राकृतिक सामग्रियों से कला रचना की विधि सिखाई।

कला की विशेषतायें

- **जटिल डिजाइनों** और **चमकीले रंगों** के लिये प्रसिद्ध है।
- चित्रों की प्रेरणा **प्राकृतिक संसार** से ली जाती है। बैगा लोगों का यह **विश्वास** है कि प्रकृति में हर वस्तु एक-दूसरे से जुड़ी होती है, और यही सोच उनकी कला में भी दिखाई देती है।

बैगा समुदाय की दीवार चित्रकला मुख्य रूप से **घरों** और **मंदिरों की दीवारों** पर बनाई जाती है। इन चित्रों में अक्सर **अमूर्त डिजाइन**, **ज्यामितीय आकृतियाँ**, तथा **पशु-पक्षियों की आकृतियाँ** सम्मिलित होती हैं। ये चित्र **प्राकृतिक रंगों और रंगद्रव्यों** से बनाये जाते

हैं और अपने **जीवंत रंगों** तथा **सूक्ष्म विवरणों** के लिये जाने जाते हैं। बैगा कला को आगे बढ़ाने वालों में **जोधाईया बाई** का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उन्होंने इस कला को न केवल संरक्षित किया, बल्कि उसे देश-विदेश में पहचान भी दिलायी।

- **पिथौरा कला** : मध्य प्रदेश के **झाबुआ जिले** के **भाबरा ग्राम** को पिथौरा चित्रकला का उद्गम स्थल माना जाता है। यह चित्रकला जनजातीय समाज की एक प्रमुख सांस्कृतिक अभिव्यक्ति है, जिसका धार्मिक और सामाजिक दृष्टि से विशेष महत्व है। प्रारंभ में पिथौरा चित्रकला घर की दीवारों पर बनाई जाती थी, लेकिन वर्तमान समय में इसे कागज, कैनवास और कपड़ों पर भी चित्रित किया जाने लगा है।



इस कला में परंपरागत रूप से प्राकृतिक रंगों का उपयोग किया जाता है। पिथौरा चित्रों में आमतौर पर घोड़ों की आकृतियाँ बनाई जाती हैं, जो शक्ति और शुभता का प्रतीक मानी जाती हैं। पिथौरा चित्रकला बनाने वाले कलाकार को "लिखिंदरा" कहा जाता है, जबकि इन चित्रों का रिकॉर्ड रखने वाले व्यक्ति को "झोखरा" कहा जाता है।

शिल्प कला

- **पाषाण शिल्प** : पाषाण शिल्प एक **हस्तनिर्मित कला** है, जिसमें पत्थर को सावधानीपूर्वक **तराशकर** उसका आकार बनाया जाता है। इस प्रक्रिया में खुरदरे और प्राकृतिक पत्थर के टुकड़ों को **निश्चित रूप** प्रदान किया जाता है। मूर्तिकार सबसे पहले मिट्टी या मोम में **एक मॉडल** तैयार करता है, या फिर कागज़ पर मूर्ति की **आकृति उकेरता** है। कभी-कभी वह सीधे पत्थर पर ही उसकी **सामान्य रूपरेखा** अंकित कर लेता है।तराशने की प्रक्रिया की शुरुआत में कलाकार अवांछित पत्थर के **बड़े हिस्से को हटाकर** काम शुरू करता है। जब मूर्ति का सामान्य आकार बन जाता है, तब उसमें सूक्ष्म विवरण जोड़ने और उसे सुंदरता प्रदान करने के लिये मूर्तिकार **विशेष उपकरणों** का प्रयोग करता है। अंतिम चरण में मूर्ति की **सजावट और पॉलिश** के लिये **सैंडपेपर** का उपयोग किया जाता है, जिससे मूर्ति चिकनी और चमकदार बनती है। पाषाण शिल्प के कारीगर विभिन्न प्रकार की मूर्तियाँ बनाते हैं। इनमें **शालभंजिका**, **हिंदू देवी-देवताओं की प्रतिमाएँ**, **महिला आकृतियाँ**, तथा **विरासत भवनों के मॉडल** विशेष रूप से लोकप्रिय हैं।



- **बेल धातु** : बेल मेटल या '**ढोकरा**'*** धातु ढलाई की एक प्राचीन कला है। यह कला **हड़प्पा और मोहनजोदड़ो काल** के **प्रागैतिहासिक युग** से चली आ रही है। यह विधि भारत की सबसे प्रारंभिक और पारंपरिक धातु शिल्प कलाओं में से एक मानी जाती है। इस प्रक्रिया की शुरुआत उत्पाद को **मोम में तराशने** से होती है। यदि उत्पाद बड़ा होता है, तो उसकी आकृति पहले **मिट्टी से बनाई जाती है**। बेल मेटल ढलाई में **पीतल और तांबे** जैसी धातुओं का उपयोग कच्चे माल के रूप में किया जाता है। इन्हें पिघलाकर मिट्टी के सांचे में एक **छोटे छिद्र के माध्यम** से डाला जाता है। धातु के ठंडा होने के बाद, तैयार वस्तु को सांचे से निकाल लिया जाता है और उसे **देहाती व हस्तशिल्प रूप** दिया जाता है। जनजातीय समूहों ने परंपरागत रूप से घंटियाँ, देवताओं की आकृतियाँ, चिमनियाँ, धार्मिक समारोहों के लिये छोटे-छोटे दीयो का निर्माण करती है।



- **पंजा दरी***** : मध्य प्रदेश के **अलीराजपुर** जिले की **भील जनजाति** द्वारा बनाई जाने वाली **पंजा दरी** काफ़ी प्रसिद्ध है। वहीं, **सीधी जिला** पारंपरिक पंजा दरी और कालीन बुनाई का एक प्रमुख केंद्र माना जाता है। **सीधी की पंजा दरी** और **कालीनें** अपनी सुंदर डिज़ाइन, जीवंत रंग, समृद्ध वस्त्र गुणवत्ता और 50 वर्षों से अधिक के स्थायित्व के लिये जानी जाती हैं। इन विशेषताओं के कारण, ये उत्पाद **गुणवत्ता और सुंदरता** की पहचान बन चुके हैं। सीधी जिले के **सिहावल ब्लॉक** में लगभग **40 पंजा दरी और कालीन बुनाई इकाइयाँ** समूहों के रूप में कार्यरत हैं। इन इकाइयों द्वारा तैयार की गई दरियाँ और कालीनें **राष्ट्रीय** और **अंतरराष्ट्रीय हस्तशिल्प मेलों** के माध्यम से ख्याति प्राप्त कर चुकी हैं।

इस हस्तशिल्प को बढ़ावा देने के लिये इसे सरकार द्वारा "**एक जिला, एक उत्पाद**" (ODOP) योजना के अंतर्गत सीधी जिले ODOP चुना गया है। पंजा दरी और कालीन की बुनाई में कई **स्थानीय उपकरणों** का उपयोग किया जाता है

- **पंजा** : यह एक कंघी जैसे उपकरण की तरह होता है, जिसका उपयोग कारीगर **धागों की बुनाई को मजबूत** करने के लिये करते हैं। इससे गांठों की नई पंक्तियाँ अच्छी तरह से जम जाती हैं और कपड़ा मजबूत बनता है।
- **पट्टी** : यह उपकरण कालीन को **पीटने** के लिये उपयोग में लाया जाता है, जिससे सभी गांठें और धागे अच्छी तरह **व्यवस्थित** हो जाते हैं।
- **धुरी** : बुनाई पूरी होने के बाद, यह उपकरण **अतिरिक्त धागों को काटने** के लिये काम आता है।



▶ **बाटिक प्रिंट** : बाटिक एक प्राचीन कला है। उज्जैन के भैरवगढ़ की बाटिक प्रिंट को 9 अप्रैल 2023 को जीआई टैग प्राप्त हुआ। इसमें कपड़ों पर दृश्य कला बनाने के लिये **मोम और रंगों** का उपयोग किया जाता है। ऐसा माना जाता है कि 'बाटिक' शब्द 'अंबाटिक' से लिया गया है, जिसका शाब्दिक अर्थ है छोटे बिंदुओं वाले कपड़े का एक टुकड़ा, मोम से लिखना या टूटी हुई रेखाएं बनाना।



कारीगर मोम से भरे कपड़े पर पेन जैसे उपकरण का उपयोग करके प्रतिरोध स्वरूप बिंदु और रेखाएं बनाते हैं, फिर कपड़े को जीवंत रंगों में रंगकर फ्री-हैंड डिज़ाइन तैयार करते हैं। भारत में इस तकनीक में मोम लगाने के लिये नारियल के हेयर पेन का उपयोग किया जाता है। रंगाई के दौरान लगाया गया मोम कपड़े की सतह पर दरारें बनाता है, जिससे रंग कपड़े के अंदर तक प्रवेश कर जाते हैं। अंत में, मोम को गर्म पानी में उबालकर कपड़े से हटा दिया जाता है।

▶ **नंदना फैब्रिक** : नंदना मध्य प्रदेश की एक पारंपरिक मिट्टी-प्रतिरोधी ब्लॉक-प्रिंटिंग शिल्पकला है। जिसका नाम प्रिंटर समुदाय के स्थानीय देवता **'नंददेव'** से लिया गया है। इसका प्रचलन मुख्य रूप से नीमच जिले के तारापुर गांव में होता है। इस प्रकार से मुद्रित कपड़े को स्थानीय भील जनजाति की महिलाएं अपनी पारंपरिक पोशाक ('ओढ़नी', 'घाघरा' और 'पगड़ी') के रूप में पहनती हैं। तारापुर में नंदना प्रिंट, दाबू प्रिंट और इंडिगो प्रिंट की कला को एक परिवार द्वारा जीवित रखा गया है। इस क्षेत्र के प्रसिद्ध कलाकार पवन झिरिया को G-20 में आमंत्रण भी प्राप्त हुआ था।



नंदना की हैंड ब्लॉक प्रिंटिंग प्रक्रिया में कपड़े को पहले बेगार (फिटकरी) से मुद्रित किया जाता है, फिर लाल डिज़ाइन पैटर्न प्राप्त करने के लिये एलिज़ारिन से रंगा जाता है। परंपरागत रूप से, बेहतर प्रतिरोध के लिये राल पेस्ट का उपयोग किया जाता है, जिससे कपड़े को गहरे नीले रंग में रंगने के लिये कम से कम 5-6 बार नील के टैंक में डुबोया जा सके।

नंदना की छपाई में चार प्रमुख रूपांकनों का उपयोग किया जाता है, जिन्हें चंपाकली, अंबा (आम), मिर्च और जालम बूटा (लता जाल) के रूप में जाना जाता है।

- **बाग प्रिंट** : "**बाग**" नाम की उत्पत्ति **स्थानीय नदी 'बाघिनी'** से हुई है। इस क्षेत्र के **ब्लॉक प्रिंटरों** ने अपनी पारंपरिक तकनीकों को संरक्षित रखते हुए बाग प्रिंट की कला को विकसित किया है। इन कलाकारों को नदी और उसके आसपास के प्राकृतिक वातावरण से गहरी प्रेरणा मिलती है। **बाग मुद्रण** एक अत्यंत जटिल प्रक्रिया है। इसमें कपड़े का एक टुकड़ा उपयोग के लिये तैयार होने से पहले **लगभग 25 से 30 दिनों** तक कई चरणों से गुजरता है। प्रत्येक चरण सावधानीपूर्वक किया जाता है, जिससे कपड़े पर रंग, डिज़ाइन और गुणवत्ता टिकाऊ बनी रहती है।
- **भीली गुड़िया***** : भीली गुड़िया मध्यप्रदेश के झाबुआ जिले की **भील** और **भिलाला जनजातियों** द्वारा बनाई जाती है। यह गुड़िया इन जनजातियों की **सांस्कृतिक विरासत** का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। गुड़िया बनाने की यह परंपरा न केवल **लोककला** का प्रतीक है, बल्कि आदिवासी समुदाय की **आजीविका** का भी एक साधन है। आदिवासी कलाकार इन गुड़ियों को **विभिन्न रंगों से सजाते हैं** और उन्हें **अलग-अलग प्रकार की पारंपरिक पोशाकों** से सुसज्जित करते हैं। हाल ही में **भीली गुड़िया को भौगोलिक संकेतक (GI) टैग** प्राप्त हुआ है, जो इस कला के विशेष क्षेत्रीय महत्व को दर्शाता है।

  वर्ष 2023 में **आदिवासी गुड़िया (भीली गुड़िया)** के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिये **रमेश परमार** और **शांति परमार** को **पद्मश्री सम्मान** से सम्मानित किया गया।



- **काष्ठ शिल्प** : काष्ठ शिल्प मध्य प्रदेश की एक अत्यंत प्राचीन कला है, जो आदिम युग से ही प्रचलित रही है । मध्य प्रदेश के कई क्षेत्रों में लकड़ी पर नक्काशी की कला अत्यधिक विकसित है। मण्डला, बैतूल, होशंगाबाद, धार और झाबुआ जैसे जिलों में काष्ठ शिल्प की समृद्ध परंपरा रही है । मध्य प्रदेश की कई जनजातियाँ भी लकड़ी के शिल्प में पारंगत हैं । उदाहरणस्वरूप, कोरकू जनजाति की "**मांडो**" और भील जनजाति की "**दिव्याना**" काष्ठ कला का उत्कृष्ट उदाहरण हैं । मण्डला जिले में बैगा और गोंड जनजातियों द्वारा बनाये गये **मुखौटे** विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं ।



- **खराद कला** : मध्यप्रदेश में **खराद पर लकड़ी को सुडौल आकार देने की कला** बहुत ही प्राचीन और प्रसिद्ध है। इस कला के माध्यम से **खिलौने** और **सजावटी सामग्री** तैयार की जाती है, जिनमें अनगिनत भावनाएँ और परंपराएँ समाहित होती हैं। खराद का कार्य पारंपरिक रूप से उन्हीं कलाकारों द्वारा किया जाता है, जो पीढ़ियों से इस कला में निपुण होते आए हैं। **श्योपुरकलाँ**, **बुदनीघाट**, **रीवा** और **मुरैना** की खराद कला ने न केवल मध्यप्रदेश में, बल्कि प्रदेश के बाहर भी विशेष ख्याति प्राप्त की है। इस कला में उपयोग की जाने वाली प्रमुख लकड़ियाँ हैं— **सागवान**, **दूधी**, **कदम्ब**, **सलई**, **गुरजैल**, **मेडला**, और **खैर**। रंग तैयार करने के लिये पारंपरिक रूप से **लाख चपड़ी**, **राजन बेरजा**, **सरेस**, **गोंद** और **जिंक पाउडर** का उपयोग किया जाता है। इन रंगों में **केवड़े के पत्तों** की सहायता से चमक भी उत्पन्न की जाती है। **श्योपुरकलाँ**, **रीवा** और **बुदनीघाट** को **खराद कला के पारंपरिक केंद्र** के रूप में जाना जाता है।



- **कंघी कला** : संपूर्ण भारत के **ग्रामीण समाज**, विशेषकर **आदिवासी समुदाय** में, विभिन्न प्रकार की **कंघियों** का प्रचलन **प्राचीन काल** से रहा है।आदिवासी समाज में कंघियों का महत्व केवल **सौंदर्य सज्जा** तक सीमित नहीं है, बल्कि वे **अलंकरण**, **गोदना** (शारीरिक चित्रांकन) और **भित्ति चित्रों** में भी एक **विशिष्ट प्रतीक** के रूप में प्रतिष्ठित हैं। **कंघी निर्माण का श्रेय** विशेष रूप से **बंजारा जनजाति** को दिया जाता है। **मालवा क्षेत्र** में कंघी निर्माण का कार्य मुख्य रूप से **उज्जैन**, **रतलाम** और **नीमच** जैसे स्थानों में किया जाता है।

आदिवासी समाज में **कंघी** का केवल सौंदर्य प्रसाधन के रूप में ही नहीं, बल्कि एक **महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और भावनात्मक प्रतीक** के रूप में भी उपयोग होता है। **युवक अपनी प्रेम भावना** को प्रकट करने के लिये प्रेमिकाओं को **सजावटी कंघियाँ भेंट** करते हैं। इन कंघियों पर सुंदर **अलंकरण** उकेरे जाते हैं, जो प्रेम, स्नेह और कलात्मकता के प्रतीक होते हैं। कंघियों का उपयोग केवल **केश सज्जा** के लिये नहीं किया जाता, बल्कि इन्हें **जादू-टोने से बचाव** और **प्रतीकात्मक उद्देश्यों** के लिये भी पहना जाता है। **मुरिया आदिवासी युवक** विशेष रूप से लकड़ी (काष्ठ) से **कलात्मक कंघियाँ** बनाते हैं। इन कंघियों पर पक्षियों, पशुओं और अन्य आकर्षक आकृतियों को उकेरा जाता है, जो इन्हें देखने में सुंदर और अनोखा बनाता है।कंघी का प्रयोग कभी-कभी **सामाजिक और वैवाहिक स्थिति** को दर्शाने के लिये भी किया जाता है।

- **अविवाहित युवतियाँ** कंघी पहनती हैं।
- जबकि **विवाहित महिलायें** इसे पहनना छोड़ देती हैं।

- **तीर-धनुष कला** : वन्य जातियों में तीर धनुष रखने की परम्परा है। तीर-धनुष बाँस, मोरपंख, लकड़ी, लोहे, रस्सी आदि से बनाये जाते हैं। तीर-धनुष शिकार के लिये बनाये जाते हैं। भील, पहाड़ी कोरवा, कमार आदि तीर-धनुष चलाने में कुशल होते हैं। तीर-धनुष भील आदिवासियों की पहचान बन गई है। प्रत्येक भील धनुष बाण अपने साथ रखता है। भील तीर चलाने में निपुण और निशाना लगाने में अचूक होते हैं। प्रत्येक आदिवासी तीर-कमान अपने हाथो से तैयार करते हैं।
- **बाँस शिल्प** : बाँस से बनी कलात्मक वस्तुएँ सौन्दर्यपरक और जीवनोपयोगी भी होती हैं, इसलिये शिल्प की महत्ता जीवन में और बढ़ जाती है। बस्तर, झाबुआ, मण्डला आदि जिलों में जनजातियों के लोग अपने दैनिक जीवन में उपयोग के लिये बाँस की बनी कलात्मक चीजों का स्वयं अपने हाथों से निर्माण करते हैं। बाँस का कार्य करने वाली कई जातियों में कई सिद्धहस्त कलाकार हैं। झाबुआ, मण्डला में बाँस शिल्प के अनेक परंपरागत कलाकार हैं।
- **पत्ता शिल्प** : पत्ता शिल्प के कलाकार मूलतः झाड़ू बनाने वाले होते हैं। पेड़-पौधों में विभिन्न आकारों में मिलने वाले पत्तों के प्रति मनुष्य का मन आदिकाल से ही आकर्षित रहा है। मनुष्य ने इन पत्तों में कला के आयाम ढूँढ लिये। छिंद पेड़ के पत्तों से कलात्मक खिलौने, चटाई, आसन, दूल्हा-दुल्हन के मौर आदि बनाये जाते हैं।
- **कठपुतली** : ऐतिहासिक घटनाओं को नाटकीय अंदाज में व्यक्त करने की मनोरंजक विधा कठपुतली है, जिसमें मानवीय विचारों और भावों को अभिव्यक्त करने की गुंजाइश निहित है। कठपुतली के प्रसिद्ध पात्र अनारकली, बीरबल, बाहशाह अकबर, पुंगीवाला, घुड़सवार, साँप और जोगी होते थे।
- **छीपा शिल्प** : कपड़े पर हाथ से बनाये जाने वाले छीपा शिल्प में विभिन्न छापों को उकेरा जाता है। इनमें भील आदिवासियों के विभिन्न जातीय प्रतीकों का समावेश होता है। आज भी अधिकांश भील आदिवासियों द्वारा इन्हीं वस्त्रों का उपयोग किया जाता है। पिछले वर्षों में छीपा शिल्प कला ने एक व्यावसायिक उद्योग का रूप ले लिया है। **बाग, कुक्षी, मनावर, गोगावाँ, खिराला, उज्जैन,** छीपा शिल्प के पारम्परिक केन्द्र हैं। उज्जैन का छीपा शिल्प **भैरूगढ़***** के नाम से देश तथा विदेश में विख्यात है। छीपा शिल्प में कई कलाकारों को प्रदेश स्तर और राष्ट्रीय स्तर के सम्मान मिल चुके हैं।
- **महेश्वरी साड़ी** : महेश्वरी साड़ियाँ अपनी बनावट, सजावट रंग और कलात्मकता के लिये भारत ही नहीं अपितु विदेशों में भी सराही जाती हैं। महेश्वर के पारम्परिक बुनकरों द्वारा बुनी गयी सूती और रेशमी साड़ियाँ सुंदर टिकाऊ एवं पक्के रंग की होती हैं, जिन पर जरी और केले के धागों से छोटे बेल-बूटे काढ़े जाते हैं। महेश्वरी साड़ी उद्योग कला को स्थापित करने का श्रेय प्रसिद्ध शासिका अहिल्याबाई को जाता है। महेश्वरी साड़ी पूर्णतः देशी वस्त्र कला की देन है, यह कला महेश्वर में जन्मी, पनपी और विस्तारित हुई है।

मध्य प्रदेश की **बैगा आदिवासी महिला, लहरी बाई,** को वर्ष **2023 के अंतरराष्ट्रीय मिलेट्स** वर्ष की **ब्रांड एंबेसडर** चुना गया। लहरी बाई ने 150 से अधिक दुर्लभ बीजों का एक बैंक तैयार किया है, जिसे उन्होंने अपने छोटे से झोपड़े में ही बनाया। इन बीजों को अपने समुदाय और किसानों के बीच बांटकर उन्होंने जैव विविधता को बढ़ावा दिया। कुटकी, सांवा, कोदो और कटकी जैसे बाजरे के संरक्षण के लिये उन्हें G20 AWG बैठक में सम्मानित भी किया गया।

गौरतलब है कि यूनेस्को ने 2023 को 'इंटरनेशनल ईयर ऑफ मिलेट्स' घोषित किया था, लेकिन लहरी बाई का मिलेट्स को संरक्षित करने का संघर्ष उस समय शुरू हो गया था, जब इस पोषक अनाज की महत्ता दुनिया के सामने नहीं आई थी। **लहरी बाई** ने बीज संजोने की यह प्रेरणा अपनी दादी से सीखी, जिनसे वे बचपन में किस्से और कहानियां सुना करती थीं।

- **चंदेरी साड़ी***** : चंदेरी में बनने के कारण इस साड़ी का नाम चंदेरी साड़ी पड़ा। चंदेरी साड़ी रेशमी और सूती दोनों तरह की बनायी जाती हैं। साड़ी में सूती और रेशमी बड़े-छोटे बूते डाले जाते हैं। चंदेरी साड़ी की विशेषता उसके हल्के और गहरे रंग, कलात्मक चौड़े बार्डर तथा साड़ी के बीच में बड़े आकार के जरी, रेशमी और सूती बेल-बूटे हैं। चंदेरी साड़ी की बनावट प्रायः सादी होती है, लेकिन उसके पल्लू पर विभिन्न रंगीन धागों से संयोजित बड़े आकार के बेल-बूटे, मोर, बत्तख आदि की आकृतियाँ काढ़ी जाती हैं। चंदेरी साड़ी की लोकप्रियता प्रदेश से बाहर विदेशों तक पहुँची हैं।
- **भीली चोमल बटुआ, थैलियाँ, मोतीमाला** : भील भिलाल महिलायें दैनिक उपयोग के लिये रंगीन धागों से सुंदर धोमल, बटुआ और थैलियाँ बनाती हैं। धार, झाबुआ क्षेत्र में कलात्मक चोमल बटुआ अत्यधिक लोकप्रिय है। भीली महिलायें उन्हें बनाने में पारम्परिक रूप से पारंगत होती हैं। भीली महिलायें तरह-तरह के मोतियों की मालाएँ पहनने की अत्यधिक शौकीन होती हैं। ये मालाएँ भीली स्त्रियाँ स्वयं तैयार करती हैं। मोती मालाओं की प्रमुख विशेषता उनकी गुंधावन है, जिससे मालाओं में सुंदर जालियों तथा फूलों का आकार बनता है।
- **प्रस्तर शिल्प** : मंदसौर और रतलाम जिला इसके केन्द्र कहे जा सकते हैं जहाँ पत्थर को विभिन्न आकार प्रदान करने वाले श्रेष्ठ और परम्परागत कलाकार मौजूद हैं। ये शिल्पकार गूजर, गायरी, जाट, भील आदि जातियों और जनजातियों के लिये देवनारायण, बाधा पाट्य, चीर्या, नाग, बावजी, भेरू बावजी, रामदेवजी, शक्ति, भैसासुरी माता, नाहरसुरी माता, गपल्या, वीर तेजाजी, गणपति, दुर्गा, हनुमान, आदि हिन्दू देवलोक से जुड़ी मूर्तियों का निर्माण करते हैं। भेड़ाघाट संगमरमर की मूर्तियाँ और ग्वालियर पौराणिक देवी-देवताओं की मूर्तियाँ बनाने का केन्द्र हैं।
- **लाख शिल्प** : वृक्ष के गोंद या रस से लाख बनायी जाती है। लाख को गरम करके उसमें विभिन्न रंगों को मिलकार अलग-अलग रंगों के चूड़े बनाये जाते हैं। लाख का काम करने वाली एक जाति का नाम ही **लखार** है। लखार जाति के स्त्री-पुरुष दोनों पारम्परिक रूप से लाखकर्म में दक्ष होते हैं। उज्जैन, इन्दौर, रतलाम, मंदसौर, महेश्वर लाख शिल्प के परंपरागत केन्द्रों में से हैं।
- **टेराकोटा कला** : टेराकोटा कला की शुरुआत सिंधु घाटी सभ्यता से मानी जाती है। शुरुआती कारीगर मिट्टी से मूर्तियाँ, खिलौने, और उपयोगी वस्तुएँ बनाते थे। वर्तमान में मध्य प्रदेश टेराकोटा कारीगरों के प्रमुख केंद्रों में से एक है। छतरपुर, सागर, और छिंदवाड़ा क्षेत्र अपनी बारीक और आकर्षक टेराकोटा कलाकृतियों के लिये प्रसिद्ध हैं, ग्राम्य परंपराओं और गोंड जनजाति की धार्मिक प्रथाओं में भी इनका अहम योगदान है।

जनजाति कलाकार



- **जनगड सिंह श्याम***** : जनगढ़ सिंह श्याम का जन्म मध्य प्रदेश के **मंडला जिले** के **पाटनगढ़ (प्रतापगढ़)** गाँव में हुआ था। वे गोंड जनजाति की **परधान शाखा** से संबंध रखते थे। जनगढ़ सिंह श्याम अपनी **चित्रकारी**, **शिल्पकला** और **भित्तिचित्र** के लिये देश-विदेश में प्रसिद्ध रहे हैं।

  भोपाल स्थित **भारत भवन संग्रहालय** में कार्य करते समय प्रसिद्ध चित्रकार **जगदीश स्वामीनाथन** ने उन्हें प्रेरित किया और एक चित्रकार के रूप में प्रोत्साहन दिया। जनगढ़ सिंह श्याम ने **गोंड पेंटिंग** को नयी पहचान दिलाई और इस कला को अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहुँचाया। हालाँकि, गोंड चित्रकला पारंपरिक चित्रकला से थोड़ी भिन्न मानी जाती है। **पारंपरिक चित्रकला** वह होती है, जो **पीढ़ी दर पीढ़ी** समाज के भीतर विकसित होती रही है। इसे किसी एक व्यक्ति, संस्था, विशेष दिन या समय पर शुरू नहीं किया गया होता। जनगढ़ सिंह श्याम ने इस पारंपरिक कला को एक **नवीन रूप** दिया, जिससे गोंड चित्रकला को आधुनिक कला मंच पर पहचान मिली।



- **श्रीमती दुर्गा बाई व्याम** *** : दुर्गाबाई व्याम जिला डिंडोरी की निवासी हैं। दुर्गाबाई के चित्र डिगना कला*** गोंड परधान समुदाय के देवकुल पर आधारित हैं। उनकी सबसे चर्चित किताबों में से एक भीमायना है। इस किताब में उन्होंने अंबेडकर जी की जीवनशैली को दर्शाने का प्रयास किया है। उन्हें रानी दुर्गावती राष्ट्रीय सम्मान से भी नवाजा जा चुका है। **डिगना कला** शादी-विवाह और उत्सवों के अवसरों पर घरों की

दीवारों और फर्श पर ज्यामितीय पैटर्न को चित्रित करने की एक पारंपरिक कला है। वर्ष 2022 में उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया गया था।

- **श्री अर्जुन सिंह धुर्वे***** : श्री अर्जुन सिंह धुर्वे मध्य प्रदेश के **डिंडोरी जिले** के **बैगाचक क्षेत्र** के **वनग्राम धुरकुटा** के निवासी हैं। वे **बैगा जनजाति** से संबंध रखते हैं और जनजातीय सांस्कृतिक परंपराओं के संरक्षण में उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। श्री धुर्वे **परधोनी नृत्य** के प्रमुख नृत्यकार हैं। यह नृत्य बैगा जनजाति की एक पारंपरिक कला है, जिसे वे वर्षों से जीवित रखे हुए हैं।

  उनके योगदान को देखते हुए उन्हें वर्ष **1993-94** में **जनजातीय संपदा के कलात्मक संवर्धन और विकास** के लिये **मध्य प्रदेश शासन द्वारा तुलसी सम्मान** प्रदान किया गया। इसके साथ ही, उनके विशिष्ट योगदान के लिये उन्हें वर्ष **2022 में भारत सरकार द्वारा पद्मश्री** से भी सम्मानित किया गया।

- **भूरी बाई*****: भूरी बाई मध्य प्रदेश की एक प्रसिद्ध **भील जनजाति** की कलाकार हैं। उनका जन्म **मध्य प्रदेश के झाबुआ जिले** के **पिटोल गाँव** में हुआ था। भूरी बाई ने **मध्य प्रदेश सरकार** द्वारा दिए जाने वाले कई **प्रतिष्ठित पुरस्कार** प्राप्त किये हैं, जिनमें **शिखर सम्मान** प्रमुख है। वे **कागज और कैनवास** का उपयोग कर चित्रकारी करने वाली **प्रथम भील महिला कलाकार** मानी जाती हैं।



  जब भूरी बाई भोपाल में कार्यरत थीं, तब **भारत भवन** के तत्कालीन निदेशक **जे. स्वामीनाथन** ने उन्हें कागज पर चित्र बनाने के लिये प्रेरित किया। उसी दिन भूरी बाई ने अपने **पैतृक घोड़े** का चित्र बनाया। जब उन्होंने सफेद कागज पर पोस्टर रंगों के प्रभाव को देखा, तो वे **अत्यंत उत्साहित** हो उठीं। इसके बाद चित्रकला का आकर्षण उनके जीवन का हिस्सा बन गया। वर्तमान में भूरी बाई भोपाल की **आदिवासी लोककला अकादमी** में एक कलाकार के रूप में कार्यरत हैं।

  पुरस्कार और सम्मान

  - उन्हें **सन् 1986-87** में मध्य प्रदेश सरकार द्वारा **शिखर सम्मान** प्रदान किया गया।
  - वर्ष **1998** में उन्हें **अहिल्या सम्मान** से सम्मानित किया गया।
  - और वर्ष **2021** में भारत सरकार द्वारा उन्हें **पद्म श्री**, जो कि देश का चौथा सर्वोच्च नागरिक सम्मान है, से अलंकृत किया गया।

- **पेमा फत्या*****: पेमा फत्या को भारत के प्रसिद्ध लोक कलाकारों में गिना जाता है। उन्होंने **पिथौरा चित्रकला** की परंपरा अपने परिवार से वंशानुगत रूप में सीखी थी। यह चित्रकला "**पिठोरा**" नाम से भी जानी जाती है। पेमा फत्या **मध्य प्रदेश के झाबुआ जिले** के निवासी थे। झाबुआ के तत्कालीन कलेक्टर **श्री जी. गोपालकृष्णन** जब पहली बार पेमा फत्या की चित्रकला से रूबरू हुए, तो वे उनकी प्रतिभा से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने पेमा फत्या की पेंटिंग को प्रदर्शनी में भिजवाया, जहाँ उसे राज्य स्तर के **दो पुरस्कार** प्राप्त हुए।



  वर्ष **1986** में मध्य प्रदेश सरकार ने पेमा फत्या को **शिखर सम्मान** से सम्मानित किया। इसके बाद, वर्ष **2017** में उन्हें **मध्यप्रदेश शासन के संस्कृति विभाग** द्वारा **आदिवासी लोक और पारंपरिक कलाओं** के क्षेत्र में दिए जाने वाले **तुलसी सम्मान** से भी नवाज़ा गया। यह सम्मान उन्हें **भोपाल के जनजातीय संग्रहालय** में प्रदान किया गया। दुर्भाग्यवश, **31 मार्च 2020** की रात को पेमा फत्या का निधन हो गया। वे लगभग **15 वर्षों से पैरालिसिस** की बीमारी से पीड़ित थे।

- **जोधइया बाई** : इनका **जन्म उमरिया जिले के लोढ़ा गाँव** में हुआ। जोधाइया बाई बैगा जनजाति की पारंपरिक पेंटिंग्स बनाती थीं। उनके द्वारा बनायी गयी पेंटिंग्स की प्रदर्शनी देश-विदेश में लगायी जा चुकी है। उन्हें वर्ष 2022 में नारी शक्ति पुरस्कार तथा वर्ष 2023 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया था। 15 दिसंबर 2024 को उनका निधन हो गया।

- **शांता भूरिया** : चित्रकार **शांता भूरिया** मध्य प्रदेश के **भील बाहुल्य क्षेत्र झाबुआ** में जन्मी हैं। उन्हें चित्रकला **विरासत में** प्राप्त हुई है। शांता, प्रसिद्ध भील चित्रकार और पद्मश्री से सम्मानित **भूरी बाई** की पुत्री हैं। उनकी माँ न केवल उनकी प्रेरणा रही हैं, बल्कि उनकी **प्रथम गुरु** भी हैं। शांता के चित्रों में भूरी बाई की चित्रशैली का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। शांता बताती हैं कि आरंभ में उन्हें

चित्रकला में विशेष रुचि नहीं थी, लेकिन **माँ के आग्रह और अनुशासन** के कारण उन्होंने इसे सीखना शुरू किया। उन्होंने **12-13 वर्ष की उम्र में अपनी पहली पेंटिंग** बनाई थी। लगभग 20 वर्ष पूर्व, कम आयु में ही उनका **विवाह** हो गया।

विवाह के बाद उनके **ससुराल** में लोग भील चित्रकला के विषय में अधिक नहीं जानते थे। परंतु जब भूरी बाई को **सम्मान** मिलने लगा, तो लोगों को इस कला के महत्व का एहसास हुआ। अब शांता को न केवल अपने ससुराल से, बल्कि पूरे **परिवार** से **प्रोत्साहन** प्राप्त हो रहा है।



प्रसिद्ध व्यक्ति

- **राजा नरेशचंद्र सिंह** : राजा नरेशचंद्र सिंह का जन्म **21 नवंबर 1908** को हुआ था। वे **सारंगढ़ रियासत** के अंतिम शासक थे और **1 जनवरी 1948** तक इस पद पर कार्यरत रहे। इसी दिन उन्होंने अपने राज्य का भारत संघ में **विलय** कर दिया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद, **गोंड राजा नरेशचंद्र सिंह** भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हो गये। उन्होंने **1951 में मध्य भारत की राज्य विधानसभा** के पहले आम चुनाव में भाग लिया और जीत प्राप्त की। इसके बाद वे **1951 और 1957** के चुनावों में सारंगढ़ विधानसभा क्षेत्र से विजयी होकर विधानसभा में पहुँचे।

  बाद में, उन्होंने **1962 और 1967** में **पुसौर विधानसभा क्षेत्र** से चुनाव जीतकर प्रतिनिधित्व किया। **1952 में**, उन्हें मुख्यमंत्री **पंडित रविशंकर शुक्ल** के मंत्रिमंडल में **कैबिनेट मंत्री** नियुक्त किया गया। **1955 में**, जब **आदिम जाति कल्याण विभाग** का गठन किया गया, तब वे इस विभाग के **पहले मंत्री** बने।

  13 मार्च 1969 से 26 मार्च 1969 तक, वे **मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री** पद पर कार्यरत रहे। यह कार्यकाल केवल **13 दिनों** का रहा। उस समय की राजनीतिक परिस्थितियों से निराश होकर उन्होंने **मुख्यमंत्री पद** और **राज्य विधानसभा की सदस्यता** से **इस्तीफा** दे दिया।

- **जमुना देवी** : श्रीमती **जमुना देवी** का जन्म **29 नवंबर 1929** को मध्यप्रदेश के धार जिले के **सरदारपुर** में हुआ था। वे एक वरिष्ठ **आदिवासी नेता** थीं और मध्यप्रदेश विधानसभा में **धार जिले के कुक्षी निर्वाचन क्षेत्र** का प्रतिनिधित्व करती थीं। वे वर्ष **1952 से 1957** तक तत्कालीन **मध्य भारत राज्य** की पहली विधानसभा की सदस्य रहीं। बाद में, वर्ष **1962** में वे **झाबुआ** से लोकसभा की सदस्य चुनी गईं और **1978 से 1981** तक **राज्यसभा** की सदस्य भी रहीं। वर्ष **2003** में वे पहली बार मध्यप्रदेश विधानसभा में **नेता प्रतिपक्ष** बनीं। उनके कुशल नेतृत्व को देखते हुए **जनवरी 2009** में उन्हें पुनः इस पद पर नियुक्त किया गया। श्रीमती जमुना देवी ने कांग्रेस की **दिग्विजय सिंह सरकार** में राज्य की **उप-मुख्यमंत्री** और इससे पहले **मोतीलाल वोरा सरकार** में **मंत्री** के रूप में अपने कर्तव्यों का सफलतापूर्वक निर्वहन किया। उन्होंने **समाज सेवा और राजनीति** में **58 वर्षों से अधिक समय** तक सक्रिय योगदान दिया। वे **जनजातीय वर्ग** के **हितों और अधिकारों** के लिये लगातार संघर्ष करती रहीं। अपने लंबे राजनीतिक जीवन में उन्होंने **विधायक**, **सांसद**, **मंत्री**, **उप-मुख्यमंत्री** और **नेता प्रतिपक्ष** जैसे कई महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया। मध्यप्रदेश विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष और कांग्रेस की वरिष्ठ नेता **श्रीमती जमुना देवी** का **24 सितंबर 2010** को **81 वर्ष की आयु** में **कैंसर रोग** से लंबे संघर्ष के बाद निधन हो गया। वे हमेशा **जनजातीय हितों की पक्षधर** और **समर्पित जननेता** के रूप में याद की जायेगी।
- **कांतिलाल भूरिया**
- **दिलीप सिंह भूरिया**
- **फग्गन सिंह कुलस्ते**

EXERCISE – 13

1. राष्ट्रीय हथकरघा विकास निगम लिमिटेड (NHDC) की स्थापना किस वर्ष में की गई थी?
[MPPSC Gramodhyog (Handloom) 2023]
(a) फरवरी, 1983
(b) जनवरी, 1983
(c) मार्च, 1983
(d) मई, 1983

2. संत रविदास ग्लोबल स्किल पार्क की स्थापना के लिये किस देश ने मध्यप्रदेश सरकार के साथ सहयोग किया?
[MPPSC Assistant Professor 2022]
(a) जापान
(b) सिंगापुर
(c) चीन
(d) संयुक्त राज्य अमेरिका

3. संत शिरोमणि रविदास ग्लोबल स्किल्स पार्क मध्य प्रदेश में कहाँ अवस्थित है? [MP State Engineering 2022]
(a) भोपाल
(b) शाजापुर
(c) छिंदवाड़ा
(d) नरसिंहपुर

4. ट्राईफेड की स्थापना कब हुई?
[MPPSC Gramodhyog (Handloom) 2023]
(a) 1981
(b) 1985
(c) 1987
(d) 1991

5. जनजातीय उत्पादों के विकास और संवर्धन हेतु ट्राइफेड के साथ किसने समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये हैं?
[MPPSC Gramodhyog (Handloom) 2023]
(a) ट्राइबल ट्रेड
(b) ट्राइप्रोडक्ट
(c) नेशनल फेडरेशन
(d) नाफेड

6. देश में जनजातीय उत्पादों के विपणन विकास से संबंधित रिटेल आउटलेट्स हैं [MPPSC Gramodhyog (Handloom) 2023]
(a) ट्राइबल स्टोर
(b) ट्राइब्स इंडिया
(c) इंडिया ट्राइब्स
(d) जनजातीय उत्पाद केंद्र

7. ट्राइब्स इंडिया, ट्राइफेड के अंतर्गत ब्राण्ड नाम है। इसे किस वर्ष में लॉन्च किया गया था?
[MPPSC Gramodhyog (Handloom) 2023]
(a) 1985
(b) 1986
(c) 1987
(d) 1988

ट्राइब्स इंडिया, भारतीय जनजातीय सहकारी विपणन विकास संघ यानी ट्राइफ़ेड का रिटेल आउटलेट है. इसे अप्रैल, 1999 में लॉन्च किया गया था. ट्राइफ़ेड ने नई दिल्ली के 9, महादेव रोड पर अपना पहला शोरूम खोला था।

8. ट्राइफेड (TRIFED) का मुख्य उद्देश्य कौन-सा नहीं है?
[MP Forest service (Main) 2022]
(a) जनजातियों का आर्थिक विकास
(b) जनजातियों का सामाजिक विकास
(c) कृषि तकनीकी में सुधार
(d) मातृत्व एवं बाल मृत्यु दर में कमी

9. बटिक छाप कला कितने वर्ष पुरानी मानी जाती है?
[MPPSC Gramodhyog (Handloom) 2023]
(a) 500 वर्ष
(b) 100 वर्ष
(c) 1000 वर्ष
(d) 2000 वर्ष

10. "दाबू" प्रतिरोधी रंगाई की क्रिया में प्रारंभ में किस का उपयोग किया जाता था? [MPPSC Gramodhyog (Handloom) 2023]
(a) मोम (c) धागा
(b) लकड़ी (d) रेत

11. नंदना मुद्रण कार्य किन जनजातियों में लोकप्रिय है?
[MPPSC Gramodhyog (Handloom) 2023]
(a) बैगा
(b) गोंड
(c) चेंचू
(d) भील

12. छीपा कला का संबंध है
[MPPSC Gramodhyog (Handloom) 2023]
(a) आदिवासियों से
(b) बुनकरों से
(c) रविदासी शिल्पियों से
(d) माटीकला के कलाकारों से

13. 'भीली गुड़िया' का केन्द्र निम्नलिखित में से किस जिले में स्थित है? [MPPSC State Forest (Main) 2021]

(a) धार
(b) झाबुआ
(c) मंडला
(d) डिंडोरी

14. मध्य प्रदेश का कौन-सा क्षेत्र काष्ठ खिलौना उद्योग के लिये प्रसिद्ध है ? [MPPSC State Forest (Main) 2024]

(a) देवास
(b) बुधनी
(c) मंडला
(d) ग्वालियर

15. पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित श्री अर्जुन सिंह धुर्वे किस जनजाति से है ? [MPPSC State Forest (Main) 2024]

(a) बैगा
(b) भील
(c) सहरिया
(d) गोंड

16. निम्नलिखित में से कौन सा कथन प्रसिद्ध ढोकरा कला के लिये सही नहीं है। [MPPSC Civil/Forest (Prelim) 2022]

(a) यह कला बैतूल की भारेवा आदिवासी समुदाय से संबंधित है।
(b) यह एक अलौह धातु ढलाई कला है।
(c) यह विवाह समारोह से जुड़ी एक सजावटी कपड़ा कला है।
(d) सभी कथन सही है।

17. चंदेरी साड़ी को किस वर्ष में भौगोलिक संकेत टैग (GI Tag) मिला? [MPPSC Gramodhyog (Handloom) 2023]

(a) 2002 – 03
(b) 2003 – 04
(c) 2004 – 05
(d) 2005 – 06

18. आनंद सिंह श्याम एवं धनइया बाई कलाकारों का संबंध निम्नलिखित में से किस कला से है ? [MPPSC Civil/Forest (Prelim) 2023]

(a) ढोकरा कला
(b) गोण्ड चित्रकला
(c) पिथौरा चित्रकला
(d) बाघ प्रिंटिंग

19. 'लहरी बाई', जिन्हें अन्तर्राष्ट्रीय मिल्लेट्स वर्ष, 2023 का ब्रांड अम्बेसडर बनाया गया है, किस जनजाति से सम्बंधित हैं? [MPPSC State Forest service (Main) 2022]

(a) सहरिया
(b) भील
(c) भारिया
(d) बैगा

20. 'मैगनी कर्ण' के नाम से प्रसिद्ध है? [MPPSC Gramodhyog (Handloom) 2023]

(a) बांस शिल्प
(b) गुड़िया शिल्प
(c) बाग प्रिंट
(d) सारंगपुर का हस्तशिल्प

1. (a), 2. (a), 3. (a), 4. (c), 5. (d), 6. (b), 7. ( ), 8. (d), 9. (d), 10. (d), 11. (d), 12. (a), 13. (b), 14. (b), 15. (a), 16. (c / d), 17. (c), 18. (b), 19. (d), 20. (c),

Chapter

14

आदिवासी शोध केन्द्र, संग्रहालय एवं निगम

- **आदिवासी शोध संचार केन्द्र** : **आदिवासी शोध संचार केंद्र** स्थापित करने की घोषणा **वर्ष 1994** में की गई थी। इसी वर्ष इस केंद्र का **शिलान्यास** भी किया गया। यह केंद्र **मध्य प्रदेश के झाबुआ जिले** में स्थापित होना था। इसका उद्देश्य आदिवासी समाज से जुड़ी जानकारी एकत्र करना, उसका विश्लेषण करना तथा उसे संचार माध्यमों से जनसामान्य तक पहुँचाना था। हालाँकि, वर्तमान समय में यह केंद्र **कार्यरत नहीं है** और इसका संचालन **बंद** है।
- **इंदिरा गांधी जनजाति विश्वविद्यालय*****: **गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय** की स्थापना **भारत की संसद** के एक अधिनियम द्वारा की गई है।यह "**इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय अधिनियम, 2007**" के माध्यम से अस्तित्व में आया और **जुलाई 2008** से क्रियान्वित हुआ। यह विश्वविद्यालय **मध्य प्रदेश के अनूपपुर जिले** के **अमरकंटक** में स्थित है। इसका **अधिकार क्षेत्र पूरे देश में** फैला हुआ है।



यह विश्वविद्यालय **विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC)** के माध्यम से **केंद्र सरकार** द्वारा **पूरी तरह से वित्त पोषित** है। इस विश्वविद्यालय की स्थापना का उद्देश्य देश के **आदिवासी समुदायों को उच्च शिक्षा** प्रदान करना है। यह विश्वविद्यालय **आदिवासियों के लंबे समय से चले आ रहे उच्च शिक्षा के सपने को साकार** करता है।

विश्वविद्यालय के लक्ष्य और उद्देश्य

- मुख्य रूप से भारत की जनजातीय आबादी के लिये शिक्षा, विशेष रूप से उच्च शिक्षा और अनुसंधान सुविधाएं प्रदान करना।
- जनजातीय कला, परंपरा, संस्कृति, भाषा, औषधीय प्रणालियों, रीति-रिवाजों, वन आधारित आर्थिक गतिविधियों, वनस्पतियों, जीवों और जनजातीय क्षेत्रों के प्राकृतिक संसाधनों से संबंधित प्रौद्योगिकियों में उन्नति में निर्देशात्मक और अनुसंधान सुविधाएं प्रदान करके ज्ञान का प्रसार और उन्नति करना।
- राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों और संगठनों के साथ सहयोग करना, विशेष रूप से आदिवासी समुदायों पर सांस्कृतिक अध्ययन और अनुसंधान करने के लिये।
- जनजातीय केंद्रित विकास मॉडल तैयार करना, रिपोर्ट और मोनोग्राफ प्रकाशित करना और जनजातियों से संबंधित मुद्दों पर सम्मेलन और सेमिनार आयोजित करना।
- जनजातीय समुदायों के सदस्यों को अपने स्वयं के विश्वविद्यालय के माध्यम से उच्च शिक्षा तक पहुंच प्रदान करके अपनी आवश्यकताओं का प्रबंधन, प्रशासन और देखभाल करने में सक्षम बनाने के लिये उचित उपाय करना।
- अंतर-विषयक अध्ययन और अनुसंधान में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में नवाचारों को बढ़ावा देने के लिये उचित उपाय करना और भारत संघ के भीतर अनुसूचित जनजातियों की सामाजिक, शैक्षिक और आर्थिक स्थितियों में सुधार और कल्याण पर विशेष ध्यान देना।

- **बादल भोई जनजातीय संग्रहालय छिदंवाड़ा*****: छिंदवाड़ा में स्थित इस जनजातीय संग्रहालय की स्थापना **20 अप्रैल 1954** को की गई थी। वर्ष **1975** में इसे **स्टेट म्यूज़ियम** का दर्जा प्राप्त हुआ। बाद में, **8 सितंबर 1997** को इसका नाम बदलकर "**श्री बादल भोई स्टेट ट्राइबल म्यूज़ियम**" रखा गया।

श्री बादल भोई, जिले के एक क्रांतिकारी आदिवासी नेता थे, जिन्होंने **राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम** में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनके

सम्मान में संग्रहालय का नाम बदलकर **"श्री बादल भोई राज्य जनजातीय संग्रहालय"** कर दिया गया। **15 अगस्त 2003** से यह संग्रहालय **रविवार** को भी पर्यटकों के लिये खुला रहने लगा।

संग्रहालय की विशेषतायें

इस संग्रहालय में कुल **14 कमरे**, **3 बंद गैलरी**, और **2 खुली गैलरी** हैं। यहाँ **मध्य प्रदेश** और **छत्तीसगढ़** की लगभग **45 जनजातियों की संस्कृति** को प्रदर्शित किया गया है। यह संग्रहालय राज्य का **सबसे प्राचीन और सबसे बड़ा जनजातीय संग्रहालय** माना जाता है। संग्रहालय में **गोंड** और **बैगा** जैसी प्रमुख जनजातियों के **परिवारों की जीवन शैली**, रहन-सहन, परंपराएँ और सामाजिक ढांचे को सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया गया है।**भारिया जनजाति** द्वारा उपयोग किये जाने वाले **लोहे के औज़ार**, और **पातालकोट की ढलानों पर की जाने वाली देहिया कृषि प्रणाली** को भी चित्रों और मॉडलों के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है। ये चित्र जीवंत प्रतीत होते हैं और पर्यटकों को विशेष रूप से आकर्षित करते हैं



- **आदिम जातीय अनुसंधान और विकास संस्थान** : **जनजाति अनुसंधान एवं विकास संस्था** की स्थापना **20 अप्रैल 1954** को **जिला छिंदवाड़ा** के मुख्यालय में की गई थी। बाद में **10 अप्रैल 1965** को इस संस्था का मुख्यालय **भोपाल** के **श्यामला हिल्स** स्थित नवनिर्मित कार्यालय भवन में स्थानांतरित किया गया। संस्था का **संग्रहालय** अभी भी छिंदवाड़ा स्थित भवन में ही स्थित है, जिसे आज **"श्री बादल भोई राज्य आदिवासी संग्रहालय"** के नाम से जाना जाता है और यह संस्था द्वारा संचालित किया जा रहा है।

  संस्था के प्रमुख कार्य

  यह संस्था मध्यप्रदेश की जनजातियों के **मानवशास्त्रीय शोध**, **जनजातीय विषयों पर अनुसंधान**, **विकास कार्यों का मूल्यांकन**, तथा **भाषा और नागरिक शिक्षा** से संबंधित गतिविधियों का संचालन करती है। संस्था के अन्य प्रमुख कार्य निम्नलिखित हैं:
  - जनजातीय संस्कृति और सांस्कृतिक आयामों का **संकलन**, **अभिलेखीकरण**, **संवर्धन** और **संरक्षण**
  - जनजातीय कलाओं पर **कार्यशालाओं का आयोजन**, उनका **छायांकन** और **फिल्मांकन**
  - जनजातीय समाज से जुड़े **शिक्षा**, **स्वास्थ्य** और अन्य सामाजिक विषयों पर **सेमिनार** आयोजित करना
  - प्रदेश के **राजस्व, पुलिस और अन्य विभागीय अधिकारियों** का **पुनः अध्ययन प्रशिक्षण**
  - जनप्रतिनिधियों को **जनजातियों के लिये संवैधानिक और संरक्षणात्मक उपायों** पर प्रशिक्षण देना
- **आदिवासी कला संग्रहालय, खजुराहो (छतरपुर)***** : जनजातीय और लोक कला का **राज्य संग्रहालय** मध्य प्रदेश के खजुराहो में **चंदेला सांस्कृतिक परिसर** के भीतर स्थित है। यह संग्रहालय विभिन्न **प्राचीन अवशेषों** और **कलाकृतियों** के लिये एक प्रमुख केंद्र है। यहाँ प्रवेश करते ही आगंतुकों का ध्यान **कारीगरों द्वारा बनाये गये सुंदर जनजातीय शिल्प** की ओर आकर्षित होता है। संग्रहालय में प्रदर्शित वस्तुएँ जनजातीय जीवन, परंपराओं और सांस्कृतिक विविधता को दर्शाती हैं। यह संग्रहालय उन लोगों के लिये विशेष आकर्षण का केंद्र है जो **इतिहास**, **लोककथाओं** और **भारतीय संस्कृति** में रुचि रखते हैं।



जिज्ञासु पर्यटक, शोधकर्ता और संस्कृति प्रेमी यहाँ आकर जनजातीय समाज की जीवनशैली, कला और विरासत से रूबरू होते हैं।

- **आदिवर्त खजुराहो (छतरपुर)***** : मध्य प्रदेश के **खजुराहो** स्थित **आदिवर्त संग्रहालय** को राज्य के विभिन्न अंचलों और जनजातियों की **सभ्यता** और **संस्कृति** से पर्यटकों को परिचित कराने के उद्देश्य से विकसित किया जा रहा है। इसका निर्माण **मध्यप्रदेश जनजातीय एवं लोक कला राज्य संग्रहालय**, संस्कृति विभाग द्वारा किया जा रहा है। इस संग्रहालय में प्रदेश के विभिन्न



लोक अंचलों और **जनजातीय समुदायों** के एक-एक पारंपरिक **आवासों** का निर्माण किया जा रहा है। इन आवासों में उस समुदाय द्वारा दैनिक जीवन में उपयोग की जाने वाली वस्तुएँ भी प्रदर्शित की गई हैं।

लोकार्पण समारोह



संग्रहालय के **पहले चरण का कार्य पूर्ण** हो चुका है। इसका लोकार्पण **22 फरवरी 2023** को सायं 7:30 बजे माननीय मुख्यमंत्री **श्री शिवराज सिंह चौहान** के मुख्य आतिथ्य में किया गया। इस अवसर पर भारत सरकार के पर्यटन, संस्कृति, धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व मंत्री **श्री जी. किशन रेड्डी** और मध्यप्रदेश की संस्कृति मंत्री **सुश्री उषा ठाकुर** भी उपस्थित रहीं। इस अवसर पर **कलाकार पंचायत**, **राज्य सम्मान अलंकरण** और **संग्रहालय का विधिवत उद्घाटन** हुआ।

जनजातियाँ और लोक अंचल

मध्य प्रदेश में **गोंड, बैगा, कोरकू, भील, भारिया, सहरिया** और **कोल** जैसी प्रमुख जनजातियाँ निवास करती हैं, जिनकी अपनी-अपनी अलग सांस्कृतिक पहचान और परंपराएँ हैं। इन सभी की **पारंपरिक आवासीय संरचनाओं** को आदिवर्त संग्रहालय में सम्मिलित किया गया है।

- **म.प्र. जनजाति संग्रहालयय, भोपाल** : **मध्य प्रदेश जनजाति संग्रहालय** की स्थापना सबसे पहले **वर्ष 1964** में राज्य संग्रहालय के रूप में **राजधानी भोपाल** में की गई थी। बाद में इसका **नवीन भवन 6 जून 2013** को तैयार हुआ, जिसका **उद्घाटन तत्कालीन राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी** द्वारा किया गया। यह संग्रहालय **मध्यप्रदेश शासन के संस्कृति विभाग** द्वारा संचालित किया जाता है। इस संग्रहालय में **मध्यप्रदेश में निवासरत जनजातीय समुदायों** की **कला, संस्कृति, परंपरा**, और **जीवन उपयोगी शिल्प** को **चित्रों, मूर्तियों और प्रदर्शनों** के माध्यम से दर्शाया गया है। यहाँ जनजातियों के **रहन-सहन**, **रीति-रिवाज**, और **मान्यताओं** को देखने और समझने का अवसर मिलता है। संग्रहालय में **कई ऐसे प्रादर्श** भी रखे गयेहैं, जो **मूल रूप से आदिवासी जीवन** में उपयोग किये जाते हैं। इसके अलावा, समय-समय पर यहाँ **सांस्कृतिक कार्यक्रम**, **कार्यशालाएँ** और अन्य आयोजन भी होते रहते हैं, जिनके माध्यम से लोगों को **आदिवासी समाज की संस्कृति और परंपराओं** की जानकारी मिलती है। इस भवन की **रूपरेखा (डिज़ाइन)** प्रसिद्ध वास्तुविद **रेवाची कामथ** के संस्थान **कामथ स्टूडियो, दिल्ली** द्वारा तैयार की गई है।



- **म.प्र. आदिवासी लोक कला परिषद**, **भोपाल** ***
  - स्थापना सन् 1980 में की गयी ।
  - कला परिषद द्वारा चौमासा नामक पत्रिका का संपादन का कार्य वर्ष 1980 से निरंतर किया जा रहा है। (संपादक:- धर्मेंद्र पारे)
- **राष्ट्रीय जनजाति स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान (NIRTH), जबलपुर*****: Indian Council Medical Research (ICMR) की सहायता से राष्ट्रीय जनजाति स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान (**National Institute of Research in Tribal Health**) की स्थापना वर्ष 1984 क्षेत्रीय जनजाति आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्र (RMRCT) के नाम से नेताजी सुभाष चंद्र बोस चिकित्सा महाविद्यालय, जबलपुर के तीन कमरों से की गयी थी। RMRCT (Regional Medical Research Centre for Tribal) को 36 एकड़ के हरे-भरे परिसर में निर्मित मुख्य भवन में अप्रैल 2002 में स्थानांतरित किया गया, तथा **2014** में इसका नाम परवर्तित करके राष्ट्रीय जनजाति स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान कर दिया गया। यह संस्थान जनजाति स्वास्थ्य वायरल निदान, आणविक आनुवांशिकी, आणविक परजीवी विज्ञान, आनुवांशिकी महामारी विज्ञान आदि पर अनुसंधान करता है।

Indian Council Medical Research (ICMR) - NIRTH का उदेश्य?

- देश के जनजातीय समुदायों की विशिष्ट स्वास्थ्य समस्याओं और स्वास्थ्य आवश्यकताओं को सामने लाने के लिये अनुसंधान की योजना बनाना, संचालन और समन्वय करना।
- जनजातीय समुदायों के बीच संक्रामक एवं गैर-संक्रामक रोगों के ऐपीडेमियोलॉजीकल (महामारी विज्ञान) अध्ययनों का संचालन करना।
- आदिवासी और अन्य समुदायों में हीमोग्लोबिनोपैथीज की जांच करना।
- जनजातीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों के नियोजन, क्रियान्वयन, निगरानी और मूल्यांकन में स्वास्थ्य कर्मचारियों को प्रशिक्षण देने में सरकार की सलाह और सहायता करना।
- आईसीएमआर - **NIRTH** का अंतिम लक्ष्य बुनियादी, व्यावहारिक और परिचालनगत अनुसंधान के माध्यम से जनजातियों के बीच स्वास्थ्य, पोषण और स्वास्थ्य जागरूकता में सुधार करना है क्योंकि उन्हें अब देश में स्वास्थ्य अनुसंधान के तहत विशेषाधिकार प्राप्त नहीं माना जाता है।



- **सहरिया संग्रहालय (श्योपुर)** : पूरे देश में एकमात्र सहरिया संग्रहालय है, जो श्योपुर में है। इसकी परिकल्पना वर्ष 1986 मे तत्कालीन सहरिया विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष अजय शंकर के द्वारा रखी गयी। तथा इसे मूर्ति रूप वर्ष 1990 में श्योपुर के किले स्थित बड़े भवन में सहरिया संग्रहालय स्थापित कर प्रदान किया गया। संग्रहालय में सहरिया समाज के पूरे जीवन दर्शन का समावेश है। इस संग्रहालय में सहरिया समाज की संस्कृति के जीवंत दर्शन होते हैं। सहरिया समाज के खान-पान, रहन-सहन, पहनावा, ज्वैलरी, आवास आदि के बारे में संग्रहालय में विस्तार से प्रदर्शित किया हुआ है।

- **राजा शंकर शाह और कुंवर रघुनाथ शाह संग्रहालय (जबलपुर)** : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 15 नवंबर 2024 को मध्य प्रदेश के जबलपुर में राजा शंकर शाह और कुंवर रघुनाथ शाह की स्मृति में निर्मित संग्रहालय का वर्चुअल उद्घाटन किया। यह संग्रहालय 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में आदिवासी नायकों के योगदान और बलिदान को श्रद्धांजलि देने के उद्देश्य से स्थापित किया गया है। संग्रहालय का निर्माण उसी स्थान पर किया गया है, जहां इन दोनों वीरों ने अपने प्राणों की आहुति दी थी। इसमें पांच प्रमुख गैलरी हैं, जिनमें गोंडवाना जनजाति की सांस्कृतिक धरोहर और 1857 के स्वतंत्रता संग्राम की प्रमुख घटनाओं को प्रदर्शित किया गया है। इस परियोजना की आधारशिला 2021 में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने रखी थी। यह संग्रहालय, मध्य प्रदेश सरकार और केंद्र सरकार की उस पहल का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उन गुमनाम नायकों को सम्मानित करना है, जिन्हें ऐतिहासिक रूप से कम मान्यता मिली है। संग्रहालय में राजा शंकर शाह की कविताओं और उनके द्वारा ब्रिटिश शासन के खिलाफ जनजागरण को प्रोत्साहित करने वाले योगदान को भी प्रदर्शित किया गया है।



- **क्रांतिसूर्य टंट्या भील विश्वविद्यालय** : मध्य प्रदेश के खरगोन में **क्रांतिसूर्य टंट्या भील विश्वविद्यालय** की स्थापना की जाएगी। मध्य प्रदेश सरकार ने विश्वविद्यालय की स्थापना और सत्र 2024-25 से इसके परिचालन के लिये सैद्धांतिक स्वीकृति प्रदान कर दी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 11 फरवरी 2024 को मध्य प्रदेश का दौरा किया और **टंट्या मामा भील विश्वविद्यालय** की आधारशिला रखी। यह विश्वविद्यालय विशेष रूप से इस क्षेत्र के जनजातीय बहुल जिलों के युवाओं को उच्च शिक्षा की सुविधाएं प्रदान करने के उद्देश्य से स्थापित किया जा रहा है। क्रांतिसूर्य टंट्या भील विश्वविद्यालय खरगोन के क्षेत्राधिकार में 5 जिले रहेंगे. इसमें खरगोन, बड़वानी, खण्डवा, बुरहानपुर तथा अलीराजपुर जिले के 83 महाविद्यालय सम्बद्ध होंगे। इससे 25 हजार 500 विद्यार्थी लाभान्वित होंगे।



- **वन्या प्रकाशन** : वन्या प्रकाशन*** की स्थापना वर्ष 1980 को म.प्र. शासन, आदिम जाति, अनुसूचित जाति एवं पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग के उपक्रम के रूप में हुई है। वन्या का पंजीयन मध्यप्रदेश फर्म्स एवं सोसायटीज म.प्र. भोपाल द्वारा किया गया।

वन्या के मुख्य उद्देश्य

वन्या जनजातीय कार्य विभाग मध्यप्रदेश शासन

- आदिवासी संस्कृति से संबंधित श्रेष्ठ साहित्य को आदिवासी समुदाय तक पहुँचाना, ताकि वे अपनी जड़ों और परंपराओं को अच्छे से समझ सकें।
- नवसाक्षर और शिक्षित आदिवासियों के लिये श्रेष्ठ साहित्य का निर्माण, प्रकाशन, क्रय और वितरण किया जाता है, ताकि वे अपने ज्ञान को और आगे बढ़ा सकें।
- प्रमुख आदिवासी बोलियों में श्रेष्ठ साहित्य और पाठ्यपुस्तकों का प्रकाशन किया जाता है, जिससे शिक्षा उनकी मातृभाषा में सुलभ हो सके।
- आदिवासी क्षेत्रों और जन-जीवन से जुड़ी पुरानी पांडुलिपियों और अभिलेखों का संपादन और प्रकाशन किया जाता है, साथ ही पूर्व प्रकाशित दुर्लभ साहित्य का पुनर्प्रकाशन भी किया जाता है।
- भारतीय संस्कृति और महापुरुषों से संबंधित चयनित साहित्य का प्रकाशन और पूर्व प्रकाशित सामग्री का पुनर्प्रकाशन, साथ ही आदिवासी क्षेत्रों में इसका वितरण किया जाता है।
- अन्य प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित उपयोगी पुस्तकों को आदिवासी क्षेत्रों, छात्रों और शैक्षणिक संस्थानों के लिये खरीदा, वितरित किया जाता है तथा उनके विशेष संस्करणों का प्रकाशन भी किया जाता है।
- संचालक मंडल की सहमति से अनुसूचित जाति और आदिवासी छात्र-छात्राओं के शैक्षणिक स्तर को ऊँचा उठाने के लिये अन्य कल्याणकारी योजनाओं को भी लागू किया जाता है। इसके लिये आवश्यकतानुसार दान और आर्थिक सहयोग लिया जाता है।
- आदिवासी संस्कृति के संरक्षण और प्रसार हेतु आवश्यक सामग्री का संकलन और प्रकाशन किया जाता है, जिससे यह समृद्ध परंपरा आने वाली पीढ़ियों तक सुरक्षित रूप में पहुँच सके।

EXERCISE – 14

1. इन्दिरा गांधी ट्राईबल विश्वविद्यालय मध्यप्रदेश के किस शहर में स्थित है। [MPPSC Civil/Forest (Prelim) 2021]
(a) महेश्वर
(b) अमरकंटक
(c) मुरैना
(d) दतिया

2. NIRTH का पूर्ण रूप है [MPPSC Forest Service (Main) 2024]
(a) नेशनल इन्स्टिट्यूट फॉर रूरल ट्राइबल हेल्थ
(b) नेशनल इन्स्टिट्यूट ऑफ रिसर्च इन ट्राइबल हेल्थ
(c) नेशनल इन्स्टिट्यूट फॉर रिसर्च इन टूरिज्म एण्ड हॉस्पिटालिटी
(d) नेशनल इन्स्टिट्यूट फॉर रूरल टूरिज्म एण्ड हॉस्पिटालिटी

3. ICMR द्वारा स्थापित राष्ट्रीय जनजाति स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान ___ स्थित है। [MPPSC Forest Service (Main) 2020]
(a) भोपाल
(b) जबलपुर
(c) इंदौर
(d) ग्वालियर

4. मध्य प्रदेश में प्रथम भील सामुदायिक रेडियो केन्द्र कहाँ प्रारंभ किया गया है। [MPPSC Ayurveda Medical Officer 2021]
(a) नरसिंहपुर
(b) भाबरा
(c) महू
(d) सैलाना

5. कौन-सा रेडियो चैनल स्थानीय भाषाओं में आदिवासी कल्याण योजनाओं पर केन्द्रित है ? [MPPSC Forest Service (Main) 2024]
(a) विविध भारती
(b) वन्या सामुदायिक रेडियो
(c) रेडियो मिर्ची
(d) आकाशवाणी

6. आदिवासियों की बोलियों में संवाद करने एवं सूचनाएँ प्रसारित करने वाले सामुदायिक रेडियो का नाम क्या है। [MPPSC ADPO 2021]
(a) अरूणिमा
(b) वन्या
(c) संवेदना
(d) नवजीवन

7. बादल भोई संग्रहालय (म्यूज़ियम) मध्य प्रदेश के किस जिले में स्थित है ? [MPPSC Forest Service (Main) 2024]
(a) छिंदवाड़ा
(b) डिंडोरी
(c) मंडला
(d) बैतूल

8. आदिम जातीय अनुसंधान एवं विकास संस्थान की स्थापना कब की गई थी? [MP Forest Service (Main) 2022]
(a) 1953
(b) 1951
(c) 1956
(d) 1954

9. मध्य प्रदेश का जनजातीय संग्रहालय कहां पर स्थित है? [MPPSC Forest Service (Main) 2022]
(a) इन्दौर
(b) उज्चैन
(c) भोपाल
(d) जबलपुर

10. मध्य प्रदेश जनजातीय संग्रहालय किस शहर में अवस्थित है ? [MPPSC Civil/Forest (Prelim) 2020]
(a) छिन्दवाड़ा
(b) इंदौर
(c) भोपाल
(d) रतलाम

11. श्री बादल भोई राज्य आदिवासी संग्रहालय स्थित है। [MPPSC Forest Service (Main) 2020]
(a) रीवा
(b) बालाघाट
(c) छिन्दवाड़ा
(d) मण्डला

12. जनजातीय कार्य विभाग प्रकाशन प्रतिष्ठान 'वन्या' का स्थापना वर्ष है? [MPPSC Civil/Forest (Prelim) 2024]
(a) 1965
(b) 1970
(c) 1975
(d) 1980

13. ICMR–राष्ट्रीय जनजाति स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान (NIRTH) मध्यप्रदेश के किस शहर में स्थापित है? [MPPSC Civil/Forest (Prelim) 2025]
(a) इंदौर
(b) भोपाल
(c) ग्वालियर
(d) जबलपुर

1.(b), 2. (b), 3. (b), 4. (b), 5. (b), 6. (b), 7. (a), 8. (d), 9. (c), 10. (a,c), 11. (c), 12. (d), 13. (d),

Chapter 15

जनजाति शिक्षा, उनके विकास के लिये संचालित कल्याणकारी योजनायें और पुरस्कार

जनजातीय विकास योजनायें

भारत सरकार द्वारा जब आदिवासी उपयोजना की रणनीति को स्वीकार किया गया, तब उसके अनुरूप मध्यप्रदेश में भी योजनाओं की रूपरेखा तैयार की गयी। इसके अंतर्गत **अनुसूचित क्षेत्र**, तथा वे जिले, तहसीलें एवं विकासखंड जहाँ **जनजातीय जनसंख्या 50 प्रतिशत से अधिक** है—उन्हें इकाई मानकर **आदिवासी उपयोजना क्षेत्र** निर्धारित किया गया।

राज्य में विभिन्न **आदिवासी परियोजना क्षेत्र** चिन्हित किये गये हैं। प्रदेश की जनजातियों के **सामाजिक, आर्थिक** और **शैक्षणिक** विकास के लिये राज्य सरकार तथा केंद्र सरकार द्वारा अनेक योजनाएँ चलाई जा रही हैं, जो विभिन्न विकास विभागों के माध्यम से संचालित होती हैं।

- **भौगोलिक विस्तार** : मध्यप्रदेश के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल — **3.08 लाख वर्ग किलोमीटर** में से लगभग **3.18 % क्षेत्र (0.98 लाख वर्ग किलोमीटर)** को **आदिवासी उपयोजना क्षेत्र** के रूप में चिन्हित किया गया है।
- **वर्तमान स्थिति** : वर्तमान में राज्य में आदिवासी उपयोजना क्षेत्र के अंतर्गत निम्न योजनायें संचालित हैं:
  - **31 एकीकृत आदिवासी परियोजनायें***** (जिसमें 26 वृहद और 5 मध्यम परियोजनायें)
  - **30 माडा पॉकेट्स** (MADA – Modified Area Development Agency) ***
  - **06 लघु अंचल**
- **शिक्षा के क्षेत्र में प्रयास** : जनजातियों के लिये **शिक्षा की महत्ता** को समझते हुए, भारतीय संविधान के Article 15(4) और Article 46 में **अनुसूचित जनजातियों की शिक्षा** के लिये विशेष उपबंधों का प्रावधान किया गया है। इन्हीं उपबंधों के आधार पर, आदिवासी विद्यार्थियों के लिये **विद्यालय से लेकर विश्वविद्यालय स्तर** तक योजनाएँ बनायी गयी हैं।
- **जनजातीय कार्य विभाग** द्वारा ◈ प्राथमिक से लेकर उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का संचालन किया जा रहा है, और साथ ही, ◈ **जनजातीय विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियाँ** भी प्रदान की जा रही हैं।
- **जनजाति शिक्षा**

एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय	71 (63 कार्यरत + 8 Non-functional)
आदर्श उच्चतर माध्यमिक विद्यालय	8
गुरूकुलम (6^{th} to 12^{th})	4
कन्या शिक्षा परिसर	82
जिला स्तरीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय	9

- **MP Tribal Welfare Residential and Ashram Educational Institutions Society**

  भारत सरकार के जनजातीय कार्य मंत्रालय द्वारा शत-प्रतिशत अनुदान पर मध्य प्रदेश के जनजातीय क्षेत्रों में **67 एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालयों** तथा **04 विशेष जनजाति (PVTG)** के लिये शिक्षा संस्थाएँ संचालित की जा रही हैं। इनका संचालन **म.प्र. ट्रायबल वेलफेयर रेसिडेंशियल एंड आश्रम एजुकेशनल इंस्टीट्यूशन्स सोसायटी**, भोपाल (पंजीयन क्रमांक 6125/98) द्वारा किया जा रहा है। इस सोसायटी के **पदेन अध्यक्ष** माननीय मंत्री, जनजातीय कार्य विभाग होते हैं। **प्रमुख सचिव**, जनजातीय कार्य विभाग इस सोसायटी के **उपाध्यक्ष** तथा **आयुक्त**, जनजातीय कार्य विभाग, म.प्र. इसके **सचिव** होते हैं।

सोसायटी के **संचालक मंडल की बैठक** प्रत्येक तीन माह में आयोजित किये जाने का प्रावधान है।



- **एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय** (भारत सरकार के वित्तीय अनुदान से)

  राज्य में **एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालयों** के संचालन के लिये **मध्य प्रदेश ट्रायबल वेलफेयर रेसिडेंशियल एंड आश्रम एजुकेशनल इंस्टीट्यूशन्स सोसायटी**, भोपाल का गठन किया गया है। यह गठन **फर्म एवं सोसायटी अधिनियम** के अंतर्गत किया गया है।

  इन विद्यालयों की शुरुआत वर्ष **1997-98** में हुई थी। इनके कुशल संचालन हेतु **राज्य स्तर पर संचालक मंडल** तथा **जिला स्तर पर कलेक्टर की अध्यक्षता में जिला स्तरीय प्रबंधन समिति** गठित की गई है।

  वर्तमान में मध्य प्रदेश में **कक्षा 6वीं से 12वीं** तक की शिक्षा प्रदान करने हेतु कुल **71 एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय** संचालित हैं। इनमें से **67 विद्यालय अनुसूचित जनजातियों** के लिये और **4 विद्यालय विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों (PVTG)** के लिये हैं।

  ये विद्यालय **इंदौर**, **गुना**, **जबलपुर** और **करहल (श्योपुर)** जैसे जिलों में स्थित हैं तथा जनजातीय विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से संचालित किये जा रहे हैं।

  पात्रता एवं प्रवेश पक्रिया : कक्षा 6वीं एवं 9वीं में प्रवेश हेतु ऑनलाईन आवेदन पत्र प्राप्त कर, प्रवेश परीक्षा की मैरिट के आधार पर 6वीं में 30 बालक एवं 30 बालिकाओं को चयनित किया जाता है। कक्षा 9वीं में रिक्त स्थान के विरुद्ध चयन किया जाता है। शेष कक्षाओं में रिक्तियाँ होने पर सीधे प्राचार्य को आवेदन किया जा सकता है।

- **आदर्श आवासीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय**

  जनजातीय वर्ग के प्रतिभावान विद्यार्थियों के लिये विभाग द्वारा कुल **08 आवासीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय** संचालित किये जा रहे हैं। ये विद्यालय **कक्षा 6वीं से 12वीं** तक के लिये स्थापित हैं। इन विद्यालयों में **पाठ्यक्रम और शिक्षण व्यवस्था** मध्य प्रदेश माध्यमिक शिक्षा मण्डल के निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुरूप होती है। **प्रत्येक कक्षा के लिये 35 सीटें** स्वीकृत हैं। इस प्रकार, प्रत्येक विद्यालय की कुल क्षमता **245 विद्यार्थियों** की है।

  पात्रता एवं प्रवेश प्रक्रिया : कक्षा 6वीं एवं 9वीं में प्रवेश हेतु ऑनलाईन आवेदन पत्र प्राप्त कर, प्रवेश परीक्षा की मैरिट के आधार पर 6वीं में 30 बालक एवं 30 बालिकाओं को चयनित किया जाता है । कक्षा 9वीं में रिक्त स्थान के विरूद्ध चयन किया जाता है । शेष कक्षाओं में रिक्तियाँ होने पर सीधे प्राचार्य को आवेदन किया जा सकता है ।

- **संभागीय आवासीय गुरूकुलम विद्यालय**

  जनजातीय वर्ग के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को **उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा** प्रदान करने के उद्देश्य से मध्य प्रदेश के प्रमुख संभागीय मुख्यालयों — **भोपाल, इंदौर, जबलपुर** और **शहडोल** में **गुरुकुलम विद्यालय** संचालित किये जा रहे हैं। इन विद्यालयों में **केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा मंडल (CBSE)** का पाठ्यक्रम लागू है। शिक्षा का माध्यम **हिन्दी और अंग्रेजी** दोनों है, और यह **कक्षा 6 से 12वीं** तक दी जाती है।

  कक्षा 11वीं और 12वीं में विद्यार्थियों के लिये **विज्ञान और गणित संकाय** उपलब्ध हैं, जो दो-दो वर्गों में संचालित किये जाते हैं।

  प्रत्येक कक्षा में अधिकतम **40 विद्यार्थियों** के अध्ययन की व्यवस्था है। इनमें से **50% सीटें बालिकाओं के लिये आरक्षित** रखी गई हैं, जिससे लैंगिक समानता को बढ़ावा मिलता है। इन विद्यालयों में शिक्षा के साथ-साथ विद्यार्थियों को **राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगी परीक्षाओं** के लिये भी तैयार किया जाता है, ताकि वे आगे चलकर श्रेष्ठ करियर की दिशा में अग्रसर हो सकें।

  पात्रता एवं प्रवेश प्रक्रिया : कक्षा 6वीं एवं 9वीं में प्रवेश हेतु ऑनलाईन आवेदन पत्र प्राप्त कर, प्रवेश परीक्षा की मैरिट के आधार पर 6वीं में 30 बालक एवं 30 बालिकाओं को चयनित किया जाता है । कक्षा 9वीं में रिक्त स्थान के विरूद्ध चयन किया जाता है । शेष कक्षाओं में रिक्तियाँ होने पर सीधे प्राचार्य को आवेदन किया जा सकता है ।

- **कन्या शिक्षा परिसर** : अनुसूचित जनजाति वर्ग की बालिकाओं को शिक्षा से जोड़ने और उनके समग्र विकास हेतु यह **योजना वर्ष 2012-13** में प्रारंभ की गई। इस योजना का मुख्य उद्देश्य **कक्षा 6वीं से 12वीं** तक की जनजातीय छात्राओं को **नि:शुल्क आवासीय सुविधा**, **गुणवत्तापूर्ण**

शिक्षा, और **राष्ट्रीय प्रतियोगी परीक्षाओं के अनुकूल वातावरण** प्रदान करना है। यह योजना **कन्या साक्षरता में वृद्धि** तथा छात्राओं की **शाला त्याग दर (Drop Out Rate)** को कम करने के उद्देश्य से संचालित की जा रही है। वर्तमान में **विभाग द्वारा 82 कन्या शिक्षा परिसर** माध्यमिक शिक्षा मंडल (माशिमं) के पाठ्यक्रम के अंतर्गत संचालित किये जा रहे हैं। प्रत्येक परिसर में **490 सीटों** की स्वीकृति है, जहां बालिकाओं को **नि:शुल्क आवास और शिक्षण सुविधा** उपलब्ध करायी जाती है। इस योजना के माध्यम से जनजातीय बालिकाओं को एक **सुरक्षित, सशक्त और प्रेरणादायक शैक्षिक वातावरण** प्रदान किया जा रहा है।



पात्रता एवं प्रवेश प्रक्रिया : कक्षा 6वीं एवं 9वीं में प्रवेश हेतु ऑनलाईन आवेदन पत्र प्राप्त कर, प्रवेश परीक्षा की मैरिट के आधार पर 6वीं बालिकाओं को चयनित किया जाता है। कक्षा 9वीं में रिक्त स्थान के विरूद्ध चयन किया जाता है। शेष कक्षाओं में रिक्तियाँ होने पर सीधे प्राचार्य को आवेदन किया जा सकता है।

- **छात्रावास/आश्रम योजना** : प्रदेश के जनजातीय छात्रों के लिये कक्षा 1 से 12वीं एवं महाविद्यालयीन स्तर तक **छात्रावास और आश्रम योजनाएँ** संचालित हैं। इन योजनाओं का उद्देश्य जनजातीय छात्रों को सरकारी या मान्यता प्राप्त संस्थानों में अध्ययन हेतु नि:शुल्क आवासीय व शैक्षणिक सुविधाएँ प्रदान करना है। छात्रावास में भवन, बिजली-पानी, भोजन, फर्नीचर, बिस्तर सामग्री, पुस्तकालय और कोचिंग जैसी सुविधाएँ नि:शुल्क उपलब्ध कराई जाती हैं।
  - **क्रीड़ा परिसर** : जनजातीय छात्र-छात्राओं की खेल प्रतिभा विकसित करने के उद्देश्य से विभाग द्वारा प्रदेश में 26 विभागीय क्रीड़ा परिसर संचालित हैं, इनमें **19 बालक तथा 07 कन्या क्रीड़ा परिसर** हैं। ये क्रीड़ा परिसर पूर्णतः आवासीय हैं। प्रत्येक क्रीड़ा परिसर में 100 छात्रों के लिये सीटें स्वीकृत है।

1.	बालक क्रीड़ा परिसर	इंदौर	एथेलेटिक्स, स्वीमिंग एवं डायविंग
2.	बालक क्रीड़ा परिसर	श्योपुर	एथेलेटिक्स
3.	बालक क्रीड़ा परिसर	खरगोन	जिमनास्टिक
4.	बालक क्रीड़ा परिसर	शहडोल	क्लाइंबिंग एण्ड बोल्डरिंग
5.	कन्या क्रीड़ा परिसर जबलपुर	जबलपुर	साइकिलिंग
6.	कन्या क्रीड़ा परिसर डही	धार	टेबल टेनिस, बेडमिंटन एवं स्क्वेश
7.	कन्या क्रीडा परिसर	झाबुआ	तीरंदाजी

  - **पात्रता** : प्रत्येक क्रीड़ा परिसर में कक्षा 6वीं एवं 9वीं में प्रवेश के लिये आयु, वजन, उंचाई का आदर्श चार्ट मापदण्डों के अनुसार **बैटरी टैस्ट** के आधार पर चयनित कर प्रवेश दिया जाता है। 26 क्रीड़ा परिसरों में से 07 क्रीड़ा परिसरों को चिन्हांकित कर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की खेल सुविधा उपलब्ध कराये जाने हेतु क्रीड़ा परिसरों का उन्नयन कर विशिष्ट संस्थाओं के रूप में विशिष्ट खेल विधाओं हेतु क्रीड़ा परिसर बनाये जाने की योजना है। छात्रों को राष्ट्रीय/अंर्तराष्ट्रीय खेल प्रतिस्पर्धाओं के लिये विशिष्ट कोचिंग सुविधा प्रदान की जाती है। इन क्रीड़ा परिसरों में निवासरत विद्यार्थियों को राशि रु 6000/- प्रतिमाह शिष्यवृत्ति का प्रावधान किया गया है।

शैक्षणिक प्रोत्साहन योजनायें

- **छात्रवृत्ति योजना** : प्रदेश के **अनुसूचित जनजाति वर्ग** के विद्यार्थियों को **शिक्षा में प्रोत्साहन** देने के उद्देश्य से **छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है**, ताकि वे समाज की **मुख्यधारा से जुड़ सकें** और आगे बढ़ सकें। यह योजना **केंद्र सरकार द्वारा सहायता प्राप्त** है, जिसके माध्यम से जनजातीय वर्ग के बच्चों को शिक्षा में बराबरी का अवसर प्रदान किया जाता है।

  पात्रता : यह छात्रवृत्ति कक्षा 11वीं, 12वीं, महाविद्यालयों, पी.एच.डी. एवं व्यवसायिक पाठयक्रमों में अध्ययनरत् अनुसूचित जनजाति वर्ग के ऐसे विद्यार्थियों जो म.प्र. के मूल निवासी को प्रदाय की जाती है।

- **भारत सरकार की नवीन प्रीमैट्रिक छात्रवृत्ति योजना (कक्षा 9 एवं 10 में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के लिये)** : भारत सरकार के **जनजातीय कार्य मंत्रालय** द्वारा **दिनांक 10 सितम्बर 2012** को **केन्द्र प्रायोजित प्री-मैट्रिक छात्रवृत्ति योजना** प्रारंभ की गई। यह योजना **1 जुलाई 2012** से लागू मानी गयी है।

  इस योजना को **मध्य प्रदेश शासन** द्वारा भी **वर्ष 2015-16** से अपनाया गया है। राज्य सरकार ने इसे **कुछ विशेष प्रावधानों** के साथ लागू किया है, ताकि जनजातीय विद्यार्थियों को प्रारंभिक स्तर पर ही **शैक्षणिक सहायता** प्रदान की जा सके।

योजना **कक्षा 9 एवं 10** में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के लिये लागू है। योजना का लाभ ऐसे विद्यार्थियों को दिया जायेगा, जिनके माता- पिता/अभिभावक की वार्षिक आय रु. 2.00 लाख तक है।

ये विद्यार्थी अन्य किसी केन्द्र पोषित प्री-मैट्रिक छात्रवृत्ति योजना से लाभान्वित नहीं होगें।

- **राज्य छात्रवृत्ति (प्रीमैट्रिक)** : अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों को शिक्षा प्राप्त करने में **आर्थिक सहायता** प्रदान करने के उद्देश्य से यह योजना चलाई जा रही है। इस योजना के अंतर्गत **कक्षा 1 से 10 तक** निरंतर अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों को **छात्रवृत्ति** प्रदान की जाती है। यह छात्रवृत्ति केवल उन्हीं **अनुसूचित जनजाति** के छात्र-छात्राओं को दी जाती है—
  - जो **मध्यप्रदेश के मूल निवासी** हों।
  - और किसी **मान्यता प्राप्त संस्था** में **नियमित रूप से अध्ययनरत** हों।

  इस योजना की एक विशेष बात यह है कि इसमें **परिवार की आय सीमा का कोई बंधन नहीं** है। अर्थात्, सभी पात्र विद्यार्थी बिना आय सीमा की शर्त के इस योजना का लाभ ले सकते हैं।



- **आवास सहायता योजना** : **मध्यप्रदेश जनजाति कार्य विभाग** द्वारा वर्ष **2013-14** में **आवास सहायता योजना** की शुरुआत की गई। इस योजना का उद्देश्य जनजातीय वर्ग के **महाविद्यालयीन एवं उच्च शिक्षा** प्राप्त कर रहे **छात्र-छात्राओं** को आवास सुविधा उपलब्ध कराना है। इस योजना के अंतर्गत ऐसे विद्यार्थी जो किराए के मकान में रहते हैं, उन्हें **एक निश्चित सीमा तक किराया प्रतिपूर्ति** प्रदान की जाती है।
- **विदेश में उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु छात्रवृत्ति** : अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों को **विदेश में उच्च शिक्षा** प्राप्त करने का अवसर देने के लिये विभाग द्वारा एक विशेष **छात्रवृत्ति योजना** संचालित की जाती है।इस योजना के अंतर्गत प्रत्येक वर्ष **50 छात्र-छात्राओं** को विदेश में अध्ययन के लिये **छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है**। चयनित विद्यार्थियों को यह छात्रवृत्ति **दो वर्षों तक** दी जाती है, जो मुख्य रूप से **स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों** तथा **शोध उपाधि (पीएच.डी.)** के लिये होती है।
- **कन्या साक्षरता प्रोत्साहन योजना** : **कन्या साक्षरता प्रोत्साहन योजना** की शुरुआत **जनवरी 2006** में की गई थी। इस योजना का उद्देश्य **अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं** को शिक्षा के प्रति प्रेरित करना और **शाला त्याग दर** (ड्रॉपआउट रेट) को कम करना है।
  योजना की पात्रता : इस योजना के अंतर्गत कक्षा 10वीं उत्तीर्ण होकर कक्षा 11वीं में प्रवेश लेने वाली बालिकाओं को ₹3000 प्रोत्साहन राशि दी जाती है। वर्ष 2017-18 से लाभ के लिये अभिभावक की वार्षिक आय सीमा ₹6 लाख निर्धारित है।
  योजना अंतर्गत देय सहायता / राशि : अनुसूचित जनजाति सभी प्रवेशित बालिकाओं को रुपये 3000/- वार्षिक एकवार प्रोत्साहन राशि दी जाती है।
- **अनुसूचित जनजाति बालिकाओं हेतु सायकिल प्रदाय योजना** : इस योजना की शुरुआत वर्ष **2004** में की गई थी। इसका उद्देश्य अनुसूचित जनजाति की **बालिकाओं की सतत शिक्षा** को बढ़ावा देना और **शाला त्याग दर (ड्रॉपआउट रेट)** को कम करना है।
  इस योजना के अंतर्गत, जब कोई बालिका **कक्षा 10वीं** उत्तीर्ण करने के बाद **अन्य ग्राम में स्थित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय** में प्रवेश लेती है, तो उसे विद्यालय आने-जाने के लिये **साइकिल प्रदान की जाती है**।
- **विद्यार्थी कल्याण योजना** : **विद्यार्थी कल्याण योजना** का क्रियान्वयन वर्ष **2013-14** में किया गया। इस योजना का उद्देश्य **आर्थिक रूप से कमजोर अनुसूचित जनजाति** के विद्यार्थियों को विशेष परिस्थितियों(आकस्मिक विपत्ति, विशेष रोग और लोक नृत्य, लोक गीत, खेलकूद जैसी **विशेष अभिरुचियों के प्रोत्साहन**) में सहायता प्रदान करना है।
- **विशेष पिछड़ी जनजाति के विद्यार्थियों को गणवेश प्रदाय** : इस योजना की शुरुआत **9 नवम्बर 2004** से की गई थी। इसका उद्देश्य प्रदेश के 15 जिलों में निवासरत **विशेष पिछड़ी जनजातियों**— **बैगा**, **सहरिया** और **भारिया**—के **शैक्षणिक विकास** को प्रोत्साहित करना है। इस योजना के अंतर्गत कक्षा **1 से 12वीं** तक के प्रत्येक विद्यार्थी को प्रति वर्ष **गणवेश, स्वेटर, जूते-मोज़े और स्कूल बैग** प्रदान किये जाते हैं।
- **प्रतिभा योजना** : इस योजना की शुरुआत **9 नवम्बर 2004** से की गई थी। इसका उद्देश्य प्रदेश के 15 जिलों में निवासरत **विशेष पिछड़ी जनजातियों**— **बैगा**, **सहरिया** और **भारिया**—के **शैक्षणिक विकास** को प्रोत्साहित करना है। इस योजना के अंतर्गत कक्षा **1 से 12वीं** तक के प्रत्येक विद्यार्थी को प्रति वर्ष **गणवेश, स्वेटर, जूते-मोज़े और स्कूल बैग** प्रदान किये जाते हैं।

विद्यार्थियों को देय पुरस्कार राशि

क्र.	पाठ्यक्रम	प्रोत्साहन राशि
1.	(जे.ई.ई.) आई.आई.टी.	रू.50,000/-
2.	एम्स	रू.50,000/-
3.	एन.डी.ए.	रू.50,000/-
4.	क्लेट से एन.एल.आई.यू.	रू.50,000/-
5.	(नीट) मेडिकल कॉलेज (शासकीय कालेज)	रू.25,000/-
6.	(जे.ई.ई.) एन.आई.टी.	रू.25,000/-

- **आकांक्षा योजना** : मध्यप्रदेश सरकार के जनजातीय कार्य विभाग द्वारा **वर्ष 2018-19** में **"आकांक्षा योजना"** की शुरुआत की गई। यह योजना विशेष रूप से **अनुसूचित जनजाति** के उन छात्र-छात्राओं के लिये बनाई गई है, जिन्होंने **कक्षा 10वीं में 60 प्रतिशत या उससे अधिक अंक** प्राप्त किये हैं। इस योजना का उद्देश्य, कक्षा 11वीं और 12वीं में अध्ययन कर रहे विद्यार्थियों को **राष्ट्रीय स्तर की प्रवेश परीक्षाओं** — जैसे **जेईई (इंजीनियरिंग), नीट/एम्स (मेडिकल)** और **क्लैट (कानून)** की तैयारी के लिये सहायता प्रदान करना है।

  पात्रता की शर्तें

  - आवेदक **मध्यप्रदेश का मूल निवासी** हो।
  - वह **अनुसूचित जनजाति** वर्ग का सदस्य हो।
  - उसकी **संपूर्ण पारिवारिक वार्षिक आय ₹6 लाख से अधिक न हो।**
  - शासकीय सेवकों के बच्चों के लिये **फॉर्म-16 की प्रमाणित प्रति** देना अनिवार्य है।
  - अन्य अभ्यर्थियों को **स्व-घोषित आय प्रमाण पत्र** प्रस्तुत करना होता है।
  - आवेदक ने **कक्षा 10वीं उत्तीर्ण की हो** और **कक्षा 11वीं में प्रवेश लिया हो**, यह अनिवार्य है।

आर्थिक सहायता

भारत सरकार के **जनजातीय कार्य मंत्रालय** द्वारा संविधान के **Article 275(1)** के अंतर्गत दिनांक **20.06.2016** को जारी किये गये निर्देशों के अनुसार, **अनुसूचित जनजातियों** के हितग्राहियों को **परिवार**, **स्व-सहायता समूह** अथवा **समुदाय आधारित रोजगार** एवं **आय सृजन योजनाओं** में **अनुदान/सहायता** प्रदान की जाती है। इन योजनाओं के अंतर्गत **कृषि**, **उद्यानिकी**, **पशुपालन**, **मत्स्य पालन**, **रेशम उत्पादन**, **कौशल विकास**, **वन एवं स्वास्थ्य संबंधी गतिविधियाँ**, तथा अधोसंरचना विकास से संबंधित कार्य जैसे — स्टॉप डेम, चेक डेम, सोलर ट्यूबवेल, नल-जल योजना, सीसी रोड, भवन निर्माण की गतिविधियाँ शामिल हैं इन सभी योजनाओं का उद्देश्य अनुसूचित जनजातियों को **आर्थिक रूप से सशक्त बनाना** और उनके जीवन स्तर को बेहतर बनाना है।इन निर्देशों की विस्तृत जानकारी **जनजातीय कार्य मंत्रालय** की वेबसाइट www.tribal.nic.in पर उपलब्ध है।

पात्रता एवं प्रक्रिया

भारतीय संविधान के **अनुच्छेद 275(1)** के अंतर्गत आदिवासी क्षेत्रों में आवश्यक सुविधाओं की कमी को दूर करने के लिये **आदिवासी उपयोजना** के *एडिटिव रूप* में योजनाएँ चलाई जाती हैं। इन योजनाओं का उद्देश्य जनजातीय क्षेत्रों में विकास को गति देना है। भारत सरकार के दिशा-निर्देशों के अनुसार, विभिन्न **विकास विभागों** से योजनाओं के प्रस्ताव प्राप्त किये जाते हैं। इन प्रस्तावों का चयन **जनसंख्या** और **क्षेत्रफल** के आधार पर किया जाता है।

प्रत्येक प्रस्ताव को पहले **परियोजना सलाहकार मंडल** अथवा **जिला योजना समिति की उपसमिति** द्वारा अनुमोदित किया जाता है। अनुमोदन के पश्चात ये प्रस्ताव **संचालनालय, आदिम जाति क्षेत्रीय विकास योजनाएँ, भोपाल** को भेजे जाते हैं। संचालनालय इन प्रस्तावों की **जाँच-पड़ताल**

और संकलन कर उन्हें **मध्यप्रदेश शासन, जनजातीय कार्य विभाग** को भेजता है। वहाँ से **प्रशासकीय स्वीकृति** मिलने के बाद यह योजना **मुख्य सचिव की अध्यक्षता** में गठित **राज्य कार्यपालन समिति** के पास भेजी जाती है।

राज्य कार्यपालन समिति की **स्वीकृति के पश्चात**, ये प्रस्ताव **भारत सरकार, जनजातीय कार्य मंत्रालय, नई दिल्ली** को भेजे जाते हैं। भारत सरकार में **सचिव, जनजातीय कार्य मंत्रालय** की अध्यक्षता में गठित **प्रोजेक्ट अप्रेज़ल कमेटी** द्वारा इन प्रस्तावों पर विचार किया जाता है और आवश्यकतानुसार उन्हें **स्वीकृति प्रदान** की जाती है। स्वीकृत प्रस्तावों के लिये भारत सरकार, **राज्य शासन को अनुदान राशि जारी** करती है। इसके बाद यह राशि **संचालनालय, आदिम जाति क्षेत्रीय विकास योजनाएँ, भोपाल** के माध्यम से **संबंधित विभागों और परियोजनाओं** को वितरित कर दी जाती है।

- **आदिवासी उपयोजना** : पाँचवीं पंचवर्षीय योजना से पूर्व **योजना आयोग** ने **जनजातीय समुदायों के कल्याण** हेतु एक **विशेष समिति** का गठन किया। इस समिति में **स्वर्गीय एल.पी. विद्यार्थी**, **एस.सी. दुबे** सहित अन्य **जाने-माने मानवशास्त्री** सम्मिलित थे। सभी सदस्यों द्वारा दिए गये सुझावों के आधार पर **आदिवासी विकास** के लिये एक **विशेष दृष्टिकोण** अपनाया गया, जिसे **"जनजातीय उपयोजना"** (Tribal Sub-Plan) के नाम से जाना गया।
- **सिविल सेवा प्रोत्साहन योजना** : मध्य प्रदेश शासन द्वारा **प्रदेश लोक सेवा आयोग** (म.प्र. पी.एस.सी.) तथा **संघ लोक सेवा आयोग** (यू.पी.एस.सी.) द्वारा आयोजित **सिविल सेवा परीक्षा** के **प्रारंभिक, मुख्य एवं साक्षात्कार** चरणों में सफल होने वाले छात्र-छात्राओं को **प्रोत्साहन राशि** प्रदान करने के उद्देश्य से एक विशेष योजना चलायी जा रही है।

  इस योजना का नाम है — **"सिविल सेवा परीक्षा में उत्तीर्ण छात्र-छात्राओं को प्रोत्साहन" योजना**। इसका उद्देश्य जनजातीय वर्ग के प्रतिभावान विद्यार्थियों को उच्च स्तरीय सेवाओं में चयन के लिये प्रोत्साहित करना तथा उनकी उपलब्धियों को सम्मान देना

संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित अखिल भारतीय सिविल सेवा परीक्षा में विभिन्न स्तरों पर सफल होने वाले जनजातीय वर्ग के अभ्यर्थियों को	मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित सिविल सेवा परीक्षा में विभिन्न स्तरों पर सफल होने वाले जनजातीय के सफल प्रतियोगियों को जिनके माता-पिता / अभिभावक की वार्षिक आय रुपये 8.00 लाख ** से अधिक न हो,
प्रारंभिक परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर - 40,000/-	प्रारंभिक परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर - 20,000/-
मुख्य परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर - 60,000/-	मुख्य परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर - 30,000/-
साक्षात्कार उपरांत सफल होने पर - 50,000/-	साक्षात्कार उपरांत सफल होने पर - 25,000/-
	*** दूसरी बार सफलता प्राप्त करने पर अभ्यर्थी को उपरोक्त उल्लेखित राशि की 50 प्रतिशत राशि देय होगी।

▶ मध्य प्रदेश रोजगार एवं प्रशिक्षण परिषद् (मेपसेट)

मध्य प्रदेश रोजगार एवं प्रशिक्षण परिषद् (MEPSET), जिसे प्रारंभ में **आदिवासी तकनीकी शिक्षा मंडल** के नाम से जाना जाता था, की स्थापना **वर्ष** 1981 में की गई थी। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य **जनजातीय वर्ग के शिक्षित बेरोजगार युवाओं** को तकनीकी एवं व्यावसायिक क्षेत्रों में प्रशिक्षित कर **उनकी कुशलता का विकास करना** तथा **रोजगार/स्वरोजगार के अवसरों** को बढ़ाना है। यह संस्था **शासन द्वारा सोसायटी रजिस्ट्रीकरण अधिनियम 1973** के अंतर्गत स्थापित की गई है। **वर्ष 1989** में इस संस्था के उद्देश्यों का विस्तार करते हुए, इसमें **अनुसूचित जाति वर्ग** के युवाओं के लिये भी **तकनीकी प्रशिक्षण कार्यक्रमों** का आयोजन सम्मिलित किया गया। इसी के साथ संस्था के नाम में भी परिवर्तन कर इसे **मध्य प्रदेश रोजगार एवं प्रशिक्षण परिषद्** (MEPSET) नाम दिया गया।

मेपसेट संस्था के उद्देश्य

- कुशल एवं अर्द्धकुशल मजदूरों का प्रशिक्षण।
- सभी स्तर की औपचारिक तकनीकी शिक्षा की व्यवस्था जिसमें कुशल मजदूर, तकनीशियन आदि भी सम्मिलित हों।
- प्रशिक्षित एवं गैर प्रशिक्षित व्यक्तियों के लिये प्रशिक्षण जिससे कि वे अन्य रोजगार अपना सकें।

- तकनीकी कौशल के विकास के लिये व्यापक आयोजन व उसके आवश्यक क्रियान्वयन की व्यवस्था करना।
- शासकीय विभागों एवं शासन के अधीनस्थ संस्थाओं में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों का प्रशिक्षण।
- आदिवासी क्षेत्रों में तकनीकी कौशल के विकास के लिये वे अन्य समस्त कार्य करना जो वांछनीय, आवश्यक अथवा सहायक हो।
- व्यावसायिक प्रशिक्षण की योजना बनाना व जिन क्षेत्रों में प्रशिक्षण की आवश्यकता हो, वहां इसके प्रबंध करना।

▶ **मध्यप्रदेश आदिवासी वित्त एव विकास निगम** : इसकी स्थापना **इंडियन कंपनी एक्ट, 1956** की **धारा 25** के अंतर्गत *"**लाभ के लिये नहीं**"* उद्देश्य के साथ की गई है। इस निगम का पंजीयन **रजिस्ट्रार ऑफ कंपनीज़, ग्वालियर** द्वारा **दिनांक 29 सितम्बर 1994** को किया गया। निगम द्वारा **आर्थिक सहायता** और **स्वरोजगार योजनाओं** का संचालन **1 अप्रैल 1995** से प्रारंभ किया गया।



निगम के उद्देश्य

- जनजातीय समाज का आर्थिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक विकास करना।
- शोषण समाप्त कर उन्हें विकसित कर गरीबी रेखा से ऊपर उठाना।

निगम द्वारा संचालित योजनाएँ.

- मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना***
- मुख्यमंत्री युवा उद्यमी योजना

▶ **उद्यमी विकास संस्थान, मध्य प्रदेश** : **उद्यमी विकास संस्थान** की स्थापना **20 मार्च 1980** को मध्य प्रदेश शासन के **आदिम जाति, अनुसूचित जाति तथा पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग** के एक उपक्रम के रूप में की गई थी। इस संस्थान का **पंजीयन "फर्म्स एवं सोसायटीज़, भोपाल"** कार्यालय द्वारा किया गया है। इसका **पंजीयन क्रमांक 8874** है। संस्थान का उद्देश्य विभिन्न सामाजिक वर्गों के युवाओं को **उद्यमिता के क्षेत्र में प्रशिक्षित** कर उन्हें **स्वरोजगार और आत्मनिर्भरता** की दिशा में प्रेरित करना है।

संस्थान के मुख्य उद्देश्य

मध्यप्रदेश में **आदिवासी, अनुसूचित जाति** तथा **आर्थिक रूप से पिछड़े वर्गों** के व्यक्तियों को **उद्योग एवं व्यापार** प्रारंभ करने के लिये **प्रशिक्षण, आर्थिक** और **तकनीकी सहायता** प्रदान करना इस संस्थान का प्रमुख उद्देश्य है। इसके साथ ही, **उत्पादन** और **विपणन** में सहयोग प्रदान किया जाता है तथा **उद्यमों का मार्गदर्शन, समन्वय** और **नियंत्रण** भी किया जाता है। संस्थान द्वारा **उद्यमी विकास केंद्रों** (उत्पादन सह प्रशिक्षण केंद्रों) की **स्थापना, संचालन, मार्गदर्शन** और **नियंत्रण** किया जाता है।

▶ **भगवान बिरसा मुंडा स्व-रोजगार योजना 2022*****: यह योजना **6 सितंबर 2022** से प्रारंभ की गई है। इसके अंतर्गत **स्व-रोजगार** को बढ़ावा देने के लिये ऐसे **परियोजनाएँ (प्रोजेक्ट्स)** शामिल की गई हैं, जिनकी लागत **1 लाख से 50 लाख रुपये** तक हो सकती है। इस योजना का उद्देश्य जनजातीय युवाओं को **आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर** बनाना और उन्हें **रोजगार के नए अवसर** प्रदान करना है।



▶ **टंटया मामा आर्थिक कल्याण योजना 2022*****: यह योजना **6 सितंबर 2022** से प्रारंभ की गई है। इस योजना के अंतर्गत **स्वरोजगार** के लिये लाभार्थियों को **₹10,000 से ₹1,00,000** तक का **बैंक लोन** प्रदान किया जाता है। इसका उद्देश्य लोगों को स्वयं का व्यवसाय शुरू करने के लिये **आर्थिक सहायता** देना है, ताकि वे आत्मनिर्भर बन सकें और अपने जीवन स्तर को सुधार सकें।

- **मुख्यमंत्री अनुसूचित जनजाति विशेष परियोजना वित्त पोषण योजना** : यह योजना **6 सितंबर 2022** से प्रारंभ की गई है। इस योजना के अंतर्गत **2 करोड़ रुपये तक की परियोजनाओं** के लिये **वित्तीय सहायता उपलब्ध करायी जाती है**।
- **मुख्यमंत्री कौशल्या योजना** : **18 से 35 वर्ष** की आयु के शिक्षित युवाओं को विभिन्न **रोजगारोन्मुखी व्यवसायों** में **नियोजित करने** के उद्देश्य से यह योजना वर्ष **2017-18** में प्रारंभ की गई थी। इस योजना का उद्देश्य युवाओं को उनके कौशल और रुचि के अनुसार प्रशिक्षण देकर उन्हें **स्वावलंबी** बनाना तथा **रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना** है।
- **मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना** : न्यूनतम 50 हजार से रुपये 10 लाख तक का बैंक ऋण देने हेतु योजना वर्ष 2014 में प्रारम्भ की गयी। BPL /SC/ST/OBC (Non creamy layer) / महिला / अल्पसंख्यक / निःशक्तजन हेतु परियोजना लागत का **30 प्रतिशत तक वित्तीय सहायत** प्रदान की जाति है ।
- **मुख्यमंत्री युवा उद्यमी योजना** : 18 से 40 वर्ष तक के युवाओ को न्यूनतम 10 लाख रूपये से 2 करोड़ रूपये तक का बैंक ऋण उपलब्ध कराया जाता है।



- **मुख्यमंत्री आर्थिक कल्याण योजना** : इस योजना के अंतर्गत 50 हजार तक के ऋण 18 से 55 वर्ष आयु के बी.पी.एल श्रेणी के व्यक्तियों को दिया जाता हैं योजना का **प्रारम्भ 1 अगस्त 2014** में हुआ।
- **टंट्या भील स्वरोजगार योजना 2013** : शिक्षित युवक युवतियो को 50000 से 25 लाख तक का ऋण देने का प्रावधान है। योजना का क्रियान्वयन **मध्य प्रदेश अनुसूचित जनजाति वित्त एवं विकास निगम** द्वारा किया जाता है।

15 नवंबर को भगवान **बिरसा मुंडा** के जन्मदिवस के सम्मान में **'जनजाति गौरव दिवस'** घोषित किया गया। **4 दिसंबर** को **टंट्या मामा** के बलिदान के सम्मान में **'बलिदान दिवस'** घोषित किया गया है।

हितग्राही मूलक योजनाएं

- **आहार अनुदान योजना** : **सहरिया, बैगा** और **भारिया** जैसी **विशेष पिछड़ी जनजातियों** के परिवारों को **कुपोषण से मुक्ति** दिलाने के उद्देश्य से यह योजना **दिसंबर 2017** से प्रारंभ की गई है। इस योजना के अंतर्गत, **विशेष पिछड़ी जनजातियों** की **महिला मुखिया** को प्रतिमाह **रु. 1000/-** की राशि सीधे उनके **बैंक खाते** में प्रदान की जाती थी। **वर्ष 2024 में** इस राशि को **बढ़ाकर रु. 1500/- प्रति माह** कर दिया गया है, ताकि लाभार्थी परिवारों को बेहतर पोषण और आर्थिक सहयोग मिल सके।
- **रानी दुर्गावती श्रीअन्न प्रोत्साहन योजना** : **श्रीअन्न** (कोदो-कुटकी) को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से मध्य प्रदेश शासन की **मंत्रिपरिषद द्वारा "रानी दुर्गावती श्रीअन्न प्रोत्साहन योजना"** को वर्ष **2023-24 से 2025-26** की अवधि के लिये स्वीकृति प्रदान की गई है।

  इस योजना की **कुल लागत 10.97 करोड़ रुपये** निर्धारित की गई है। योजना का उद्देश्य श्रीअन्न उत्पादन से जुड़े **किसानों, एफपीओ (किसान उत्पादक संगठनों)** तथा अन्य **संबंधित समूहों** को एकजुट कर उनका **महासंघ (फेडरेशन)** बनाना है, ताकि श्रीअन्न आधारित उत्पादों को **राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर** पर एक **विशिष्ट पहचान** दिलाई जा सके।



- **वन धन योजना** : **वन धन योजना** की शुरुआत **14 अप्रैल, 2018** को प्रधानमंत्री **श्री नरेंद्र मोदी** द्वारा की गई थी। यह योजना **जनजातीय कार्य मंत्रालय** के माध्यम से **केंद्रीय स्तर पर नोडल विभाग** के रूप में तथा **राष्ट्रीय स्तर पर नोडल एजेंसी** के रूप में संचालित की गई है।

  योजना के प्रमुख कार्य : **वन धन योजना** का उद्देश्य आदिवासी समुदाय के लिये **आजीविका सृजन** करना और उन्हें **स्वावलंबी उद्यमी** के रूप में विकसित करना है। इस योजना के अंतर्गत **वनाच्छादित जनजातीय जिलों** में **वन धन विकास केंद्र (VDVK)** की स्थापना की जा रही

है, जिनका स्वामित्व स्वयं जनजातीय समुदाय के पास होता है। **केंद्र सरकार** का लक्ष्य है कि देश के जनजातीय क्षेत्रों में **50,000 वन धन विकास केंद्र** स्थापित किये जाएँ। इसका उद्देश्य है कि **वन उत्पादों** का **प्राथमिक प्रसंस्करण** और **मूल्य संवर्धन** स्थानीय स्तर पर हो सके, जिससे आदिवासी लोगों को उनके उत्पादों का उचित मूल्य मिले और उन्हें **स्थानीय स्तर पर रोजगार** भी प्राप्त हो। अब तक देशभर में **141 आउटलेट** खोले जा चुके हैं, जहाँ जनजातीय उत्पादों को प्रदर्शित और बढ़ावा दिया जा रहा है।

- **PESA नियम 2022** : मध्य प्रदेश सरकार अनुसूचित जनजातियों के सामाजिक और आर्थिक समावेशन के लिये प्रतिबद्ध है। सरकार ने **15 नवंबर 2022** को **मध्य प्रदेश पंचायत उपबंध (अनुसूचित क्षेत्रों पर विस्तार) नियम, 2022 (PESA)** के कार्यान्वयन दिशानिर्देश जारी किये। PESA ग्राम सभाओं को प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन और स्व-शासन का विशेष अधिकार देता है। यह राज्य के **89 जनजातीय ब्लॉकों**, **5,212 पंचायतों** और **2,350 गांवों** में लागू होकर **1.5 करोड़ जनजातीय आबादी** (जनगणना 2011) को लाभान्वित करेगा। PESA बंधुआ मजदूरी पर अंकुश, सरकारी योजनाओं के कार्यान्वयन, प्रवासी मजदूरों के रिकॉर्ड रखने और लघु वन उपज, भूमि व जल निकायों से संबंधित मामलों को तय करने की अनुमति देता है। नियमों के अनुसार, पुलिस को किसी भी **एफआईआर** दर्ज होने के बाद समिति को सूचित करना अनिवार्य है।
- **देवारण्य योजना** : **योजना** की शुरुआत **26 जुलाई 2021** को की गई। इस योजना का मुख्य उद्देश्य है — **आयुर्वेद के माध्यम से स्वास्थ्य लाभ पहुँचाना** और **जनजातीय क्षेत्रों में रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना**। इस योजना के अंतर्गत **आयुष औषधियों के उत्पादन की पूरी वैल्यू चेन** का विकास किया जाएगा।



- **आदिवासी महिला सशक्तिकरण योजना** : **राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति वित्त और विकास निगम (NSTFDC)** द्वारा चलाई जा रही **आदिवासी महिला सशक्तिकरण योजना** का उद्देश्य आदिवासी महिलाओं को **आय सृजन की गतिविधियाँ** प्रारंभ करने में सहयोग देना है। इस योजना के अंतर्गत, आदिवासी महिलाओं को **2 लाख रुपये तक की परियोजना लागत** पर **90% तक ऋण** प्रदान किया जाता है। यह ऋण केवल **4% वार्षिक की रियायती ब्याज दर** पर उपलब्ध कराया जाता है।

बस्ती विकास योजनाएं

- **प्रधान मंत्री जन मन योजना** : **प्रधानमंत्री जनजाति आदिवासी न्याय महाअभियान (पीएम-जनमन)** भारत सरकार द्वारा प्रारंभ किया गया एक महत्त्वपूर्ण प्रयास है, जिसका उद्देश्य विशेष रूप से पिछड़े जनजातीय समूहों (PVTG) को उनके **अधिकारों के प्रति जागरूक** करना तथा उन्हें **आवश्यक बुनियादी सुविधाओं से संतृप्त** करना है।



इस अभियान के अंतर्गत PVTG परिवारों को **व्यक्तिगत अधिकार** प्रदान किये जाते हैं, साथ ही उनकी **बस्तियों में शिक्षा, स्वास्थ्य, बिजली, पानी, सड़क और अन्य मूलभूत सुविधाएँ** सुनिश्चित की जाती हैं। इस योजना की शुरुआत **15 नवंबर, 2023** को की गई थी। यह अभियान जनजातीय समाज के **समग्र विकास** और **सशक्तिकरण** की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण पहल है।

- **प्रधानमंत्री जन-मन कॉलोनी** मध्य प्रदेश के **शिवपुरी जिले** में बनायी गयी। यह कॉलोनी देश की **पहली जन-मन कॉलोनी** मानी जाती है, जो जनजातीय परिवारों के लिये विशेष रूप से विकसित की गयी है।
- **प्रधानमंत्री जन-मन सड़क** योजना के अंतर्गत **मध्य प्रदेश के बालाघाट जिले** में एक सड़क का निर्माण किया गया है। यह सड़क देश की **पहली जन-मन सड़क** है।

- **पीएम जन-मन मिशन** के अंतर्गत **बैगा, भारिया और सहरिया** जनजातियों के घरों तक **बिजली पहुँचाने की कार्ययोजना** स्वीकृत की गई है। यदि किसी परिवार के विद्युतीकरण में **एक लाख रुपये प्रति परिवार से अधिक** की लागत आती है, तो उन बस्तियों में **एक किलोवाट क्षमता की ऑफ-ग्रिड प्रणाली (सोलर + बैटरी)** के माध्यम से बिजली पहुँचायी जायेगी।

▶ **धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान** : केंद्र सरकार द्वारा **2 अक्टूबर 2024** से एक विशेष अभियान की शुरुआत की गई है। इस अभियान का उद्देश्य मध्यप्रदेश सहित देश के विभिन्न राज्यों में निवास करने वाली **जनजातीय आबादी** के लिये **समान अवसरों का सृजन** करना है। इस अभियान के अंतर्गत जनजातीय समुदायों के **सामाजिक और आर्थिक स्तर** को ऊँचा उठाने, **बुनियादी ढाँचे में सुधार** करने तथा **स्वास्थ्य, शिक्षा और आजीविका** के क्षेत्रों में **ठोस प्रगति** सुनिश्चित करने के प्रयास किये जा रहे हैं।

जनजाति वर्ग के पुरस्कार और सम्मान

▷ **शंकर शाह पुरस्कार एवं रानी दुर्गावती पुरस्कार** : **कक्षा 10 वी एवं 12वी की बोर्ड परिक्षाओं में** सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले प्रथम तीन जनजातीय **छात्रो** को **शंकर नारायण** व **छात्राओं** को **दुर्गावती** अवार्ड **वर्ष 2015** से दिया जा रहा है। इसके तहत प्रथम स्थान वाले का 51,000 तथा द्वितीय 40,000 तथा तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले को 30,000 है।

▷ **अनुसूचित जनजाति बालिका विज्ञान पुरस्कार योजना** : मध्य प्रदेश राज्य की **अनुसूचित जनजाति की छात्राओं** को उच्च शिक्षा हेतु प्रेरित करने के लिये विशेष योजना लागू की गई है। इस योजना के अंतर्गत, **कक्षा 12वीं** में **विज्ञान विषय** में **मेरिट स्थान** प्राप्त करने वाली **दस छात्राओं** को **प्रत्येक को ₹50,000/-** की पुरस्कार राशि प्रदान की जाती है। यह योजना **केवल मध्य प्रदेश राज्य की अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं** के लिये लागू है। इसका उद्देश्य विज्ञान के क्षेत्र में जनजातीय छात्राओं को आगे बढ़ने के लिये **प्रोत्साहित करना और उनकी प्रतिभा को सम्मान देना** है।

▷ **मेधावी विद्यार्थी पुरस्कार योजना** : इस योजना के अंतर्गत, **बोर्ड परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले 52 बालकों तथा 52 बालिकाओं** को **जिला स्तर पर ₹1000 की प्रोत्साहन राशि** तथा **प्रशस्ति पत्र** प्रदान किया जाता है।

▷ **राष्ट्रीय तुलसी सम्मान** : मध्यप्रदेश शासन के **संस्कृति विभाग** द्वारा जनजातीय, लोक और पारंपरिक कलाओं में **उत्कृष्टता और श्रेष्ठ उपलब्धियों** को सम्मानित करने हेतु **राष्ट्रीय तुलसी सम्मान** की स्थापना **वर्ष 1983** में की गई थी।यह सम्मान प्रतिवर्ष दिया जाता है, और इसे केवल **पुरुष कलाकारों** को प्रदान किया जाता है। राष्ट्रीय तुलसी सम्मान की विशेषता यह है कि यह **तीन वर्षों में दो बार प्रदर्शनकारी कलाओं** (जैसे—नृत्य, नाटक, लोकगान आदि) और **एक बार रूपंकर कलाओं** (जैसे—चित्रकला, मूर्तिकला आदि) के लिये प्रदान किया जाता है



▷ **राष्ट्रीय देवी अहिल्या सम्मान***** : जनजातीय लोक एवं पारंपरिक कलाओं के क्षेत्र में **महिला कलाकारों** को सम्मानित करने के उद्देश्य से **"राष्ट्रीय देवी अहिल्या सम्मान"** की स्थापना **वर्ष 1996** में की गई थी। इस सम्मान की शुरुआत **संस्कृति विभाग** द्वारा की गयी। यह सम्मान उन महिला कलाकारों को दिया जाता है, जिन्होंने जनजातीय लोक कलाओं और पारंपरिक सांस्कृतिक विरासत को सहेजने और आगे बढ़ाने में विशेष योगदान दिया हो। **राष्ट्रीय तुलसी सम्मान** और **राष्ट्रीय देवी अहिल्या सम्मान** के अंतर्गत चयनित कलाकारों को **₹2,00,000 (दो लाख रुपये)** की सम्मान राशि, **सम्मान पट्टिका शॉल और श्रीफल** प्रदान किये जाते हैं।



▷ **जननायक टंट्या भील सम्मान** : **जननायक टंट्या भील सम्मान** मध्य प्रदेश शासन द्वारा प्रारंभ किया गया एक **राज्य स्तरीय सम्मान** है। यह सम्मान वर्ष **2008** से उन **आदिवासी युवाओं** को प्रदान किया जाता है, जिन्होंने **शिक्षा** और **खेल गतिविधियों** में **उल्लेखनीय साधना** और **उत्कृष्ट प्रदर्शन** किया है। इस सम्मान के अंतर्गत चयनित युवक या युवती को **एक लाख रुपये की सम्मान निधि** और एक **प्रशस्ति पट्टिका** प्रदान की जाती है।

- **ठक्कर बापा राष्ट्रीय सम्मान** : **ठक्कर बापा राष्ट्रीय सम्मान** मध्य प्रदेश शासन द्वारा उन व्यक्तियों या संस्थाओं को प्रदान किया जाता है, जो **गरीब, पीड़ित और पिछड़े आदिवासी समुदायों** की **ममतापूर्ण सेवा** और **दीर्घकालीन साधना** में जुटे रहे हैं। यह सम्मान किसी एकल उपलब्धि के लिये नहीं, बल्कि **लगातार किये गये सेवा कार्यों** और **समर्पित योगदान** के लिये दिया जाता है। इस राष्ट्रीय सम्मान के अंतर्गत पुरस्कार स्वरूप **रुपये 2 लाख की सम्मान राशि** तथा एक **प्रशस्ति पट्टिका** प्रदान की जाती है।

- **वीर शंकर शाह-रघुनाथ शाह राष्ट्रीय सम्मान** : मध्य प्रदेश शासन द्वारा भारतीय साहित्य में जनजातीय जीवन की सांस्कृतिक परंपरा और विशिष्टताओं पर लेखन के लिये तथा आदिवासी पारम्परिक कलाओं के क्षेत्र में उल्लेखनीय साधना के लिये दिया जाता है। इस राष्ट्रीय सम्मान के अंतर्गत रुपये 2 लाख की सम्मान निधि एवं प्रशस्ति पट्टिका प्रदान की जाती है।

- **रानी दुर्गावती राष्ट्रीय सम्मान** : मध्य प्रदेश शासन द्वारा आदिवासी एवं पारम्परिक सृजनात्मक कला, शिल्प, समाज सेवा और प्रशासन में अद्वितीय उपलब्धि एवं योगदान के लिये आदिवासी महिला को दिया जाता है। इस राष्ट्रीय सम्मान के अन्तर्गत रुपये 2 लाख की सम्मान निधि एवं प्रशस्ति पट्टिका प्रदान की जाती है।

- **विष्णु कुमार जनजातीय समाज सेवा सम्मान** : मध्य प्रदेश शासन द्वारा जनजातीय समुदाय के लोगों की नि:स्वार्थ सेवा के लिये व्यक्ति या स्वयंसेवी संस्था को 'अनुसूचित जनजाति कल्याण विभाग' द्वारा प्रदान किया जाता है। यह एक राज्य स्तरीय सम्मान है। इस राज्य स्तरीय सम्मान के अंतर्गत एक लाख रुपये की सम्मान निधि एवं प्रशस्ति पट्टिका प्रदान की जाती है।

- **बादल भोई सम्मान** : यह सम्मान सामाजिक क्षेत्र में अदम्य साहस व वीरता के लिये जनजातीय महिला/ पुरुष/बालक/बालिका को प्रदान किया जाएगा।

- **जन गढ़ श्याम सम्मान** : यह सम्मान परंपरागत एवं सृजनात्मक जनजातीय कला एवं शिल्प के क्षेत्र में अद्वितीय उपलब्धि एवं योगदान के लिये जनजातीय महिला या पुरुष को प्रदान किया जाएगा।

स्वास्थ्य संबंधित योजनाएं

सिकल सेल एनीमिया*** : **सिकल सेल रोग** एक गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या है, जिसे प्राथमिक क्षेत्र में नियंत्रित करने के लिये सरकार द्वारा कई प्रयास किये जा रहे हैं। इस रोग को समाप्त करने के लिये एक **समयबद्ध लक्ष्य** निर्धारित किया गया है। इसे प्राप्त करने हेतु कई महत्त्वपूर्ण कार्यों की आवश्यकता है, समुदाय में सिकल सेल रोग के प्रति **जागरूकता बढ़ाना** आवश्यक है, ताकि लोग समय रहते इसके लक्षणों को पहचान सकें और उपचार प्राप्त कर सकें। रोग की **समय पर पहचान** के लिये बड़े पैमाने पर **स्क्रीनिंग कार्यक्रमों** का आयोजन किया जाना चाहिए, जिससे प्रभावित व्यक्तियों की पहचान हो सके। प्राथमिक स्तर पर रोगियों को **नैदानिक और चिकित्सकीय देखभाल** उपलब्ध कराना अनिवार्य है। रोगियों की स्थिति की **लगातार निगरानी** करने हेतु **सुदृढ़ मॉनिटरिंग प्रणाली** को लागू किया जाना चाहिए। मौजूदा **प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं** को सिकल सेल रोग से संबंधित **रणनीतियों** से जोड़ना आवश्यक है, ताकि रोग के प्रबंधन में मजबूती लाई जा सके। प्राथमिक, माध्यमिक एवं तृतीयक स्तर की **स्वास्थ्य देखभाल टीमों** को प्रशिक्षित कर उनकी **कार्य क्षमता** बढ़ाई जानी चाहिए। सिकल सेल रोग से ग्रस्त सभी रोगियों को **कम लागत में गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा सेवाओं** की **सुलभता** सुनिश्चित की जानी चाहिए।



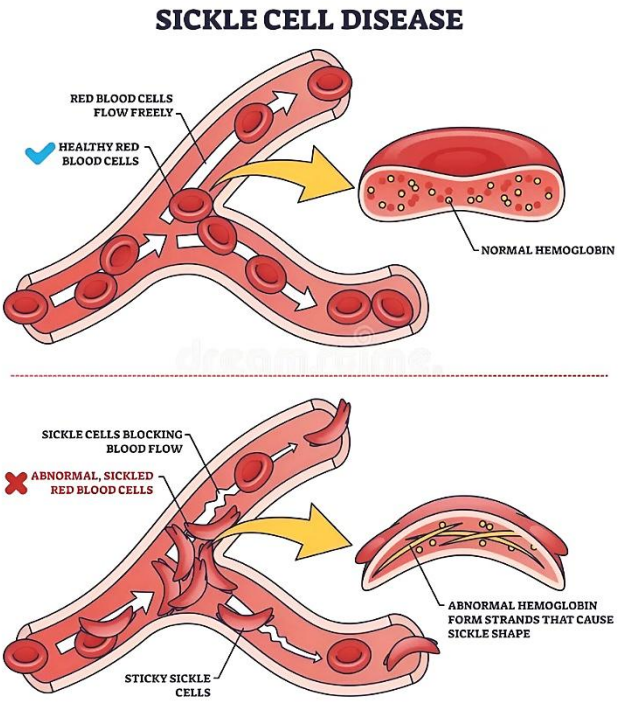
जागरूकता फैलाने, व्यवहार में बदलाव लाने और स्क्रीनिंग के निर्देशों के माध्यम से **रोग के प्रसार को नियंत्रित करना** इस कार्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य है।

उद्देश्य : कार्यक्रम के **प्रथम वर्ष** में प्राथमिकता उन लोगों को दी जाएगी, जिनकी आयु **जन्म से 18 वर्ष** तक है। इसके पश्चात **द्वितीय और तृतीय वर्ष** में चरणबद्ध रूप से **40 वर्ष तक की संपूर्ण जनसंख्या** की स्क्रीनिंग की जाएगी। यह योजना **राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन** का हिस्सा है,

मुख्य उद्देश्य : **सिकल सेल एनीमिया** की **स्क्रीनिंग, रोकथाम और प्रबंधन, आदिवासी और उच्च प्रबलता वाले क्षेत्रों** पर विशेष ध्यान, जनसंख्या आधारित रणनीति द्वारा रोग की पहचान और उपचार कार्यक्रम की शुरुआत उन **राज्यों** से की जाएगी जहाँ सिकल सेल रोग का **अधिक प्रसार** है।

योजना के अंतर्गत धीरे-धीरे **सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों** को शामिल किया जाएगा। मिशन का लक्ष्य है कि **तीन वर्षों** में **7 करोड़ लोगों** की स्क्रीनिंग की जाए, **रोकथाम के लिये परामर्श** प्रदान किया जाए, **सिकल सेल रोगियों को उपयुक्त देखभाल** दी जाए और वर्ष **2047 से पहले भारत से सिकल सेल रोग को समाप्त** किया जा सके।

प्रारंभिक चरण में जिन **17 राज्यों** को प्राथमिकता दी गई है, वे हैं—**मध्य प्रदेश**, **गुजरात**, **महाराष्ट्र**, **राजस्थान**, **छत्तीसगढ़**, **बिहार**, **झारखंड**, **पश्चिम बंगाल**, **ओडिशा**, **तमिलनाडु**, **तेलंगाना**, **कर्नाटक**, **असम**, **आंध्र प्रदेश**, **उत्तराखंड**, **उत्तर प्रदेश** और **केरल**।



EXERCISE – 15

1. एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय (EMRS) की शुरूआत कब हुई थी? [MPPSC Forest Service (Main) 2022]
(a) 1997 – 1998 (c) 1995 – 1996
(b) 1999 – 2000 (d) 1993 – 1994

2. सिविल सेवा प्रोत्साहन योजना के अन्तर्गत मध्य प्रदेश शासन द्वारा संघ लोक सेवा आयोग की प्रारंभिक परीक्षा उत्तीर्ण होने पर कितनी राशि दी जाती है ? [MPPSC Forest Service (Main) 2024]
(a) ₹ 10,000 (c) ₹ 30,000
(b) ₹ 20,000 (d) ₹ 40,000

3. मध्यप्रदेश में जनजाति कल्याण विभाग जनजातीय बच्चों को शिक्षा की सुविधा हेतु कौन सी योजनाओं को चलाता है [MPPSC Tax Assistant 2010]
(a) पाठशालाएं (c) छात्रावास
(b) छात्रवृत्तियां (d) ये सभी

4. आदिवासी महिला सशक्तीकरण योजना के अन्तर्गत अधिकतम कितने रूपये का ऋण प्रदान किया जाता है? [MPPSC Forest Service (Main) 2022]
(a) ₹ 5 लाख (c) ₹ 1 लाख
(b) ₹ 2 लाख (d) ₹ 3 लाख

5. 'आहार अनुदान योजना' में विशेष पिछड़ी जनजाति परिवार की महिला मुखिया को प्रतिमाह दी जाने वाली राशि (2022-23 के सन्दर्भ में) है! [MPPSC Forest Service (Main) 2023]
(a) ₹ 500 (c) ₹ 1,500
(b) ₹ 1,000 (d) ₹ 2,000
Hint : वर्तमान में इसे बढ़ाकर 1500 रुपये कर दी गयी है।

6. सिकल सेल एनीमिया मिशन 2047 का शुभारंभ किस राज्य से किया गया है? [MPPSC Forest Service (Main) 2021]
(a) मध्यप्रदेश (c) झारखंड
(b) छत्तीसगढ (d) राजस्थान

7. जननी सुरक्षा योजना सम्बन्धित है [MPPSC Forest Service (Main) 2024]
(a) प्रसवोत्तर देखभाल
(b) संस्थागत प्रसव
(c) टीकाकरण
(d) पोषण

8. मध्यप्रदेश में मुख्यमंत्री उद्यम क्रान्ति योजना किस वर्ष में लागू की गई ? [MP Computer programmer Examination 2021]

(a) 2019
(b) 2020
(c) 2021
(d) 2022

दिनांक 5 अप्रैल, 2022 को माननीय मुख्यमंत्री जी के मुख्य आतिथ्य में कुशाभाऊ ठाकरे सभागृह में मुख्यमंत्री उद्यम क्रांति योजना के शुभारंभ का राज्य स्तरीय कार्यक्रम आयोजित किया गया।इस योजना हेतु पात्र हितग्राही की उम्र 18 से 40 साल के बीच होनी चाहिए। इस योजना के तहत, विनिर्माण इकाइयों के लिये 1 लाख से 50 लाख रुपये तक का लोन मिलता है। सेवा इकाइयों या खुदरा कारोबार के लिये 1 लाख से 25 लाख रुपये तक का लोन मिलता है।

9. मध्यप्रदेश शासन की "मुख्यमंत्री उद्यम क्रांति योजना" के लिये आयु सीमा क्या है? [MPPSC Assistant Professor 2022]

(a) 18 से 40 वर्ष के मध्य
(b) 18 से 45 वर्ष के मध्य
(c) 18 से 50 वर्ष के मध्य
(d) कोई आयु सीमा नहीं

10. रानी दुर्गावती श्री अन्न प्रोत्साहन योजना के बारे में निम्नलिखित में से कौन-से कथन सही हैं? [MPPSC Civil/Forest (Prelim) 2024]

(1) यह मध्यप्रदेश में मिलेट (मोटा अनाज) को प्रोत्साहित करती है।
(2) यह पूरे मध्य प्रदेश में लागू है।
(3) यह योजना 2023 - 24 से 2025 - 26 तक की अवधि की है।

सही विकल्प है ?

(a) केवल 1 और 2 सही हैं।
(b) केवल 1 और 3 सही हैं।
(c) केवल 2 और 3 सही हैं।
(d) 1, 2 तथा 3 सही हैं।

11. जनजातीय वर्ग के विद्यार्थियों को शंकर शाह और रानी दुर्गावती पुरस्कार योजना दिए जाने का उद्देश्य है [MPPSC Civil/Forest (Prelim) 2025]

(a) उच्च अध्ययन के लिये आवासीय सुविधा हेतु
(b) 10वीं और 12वीं कक्षा की परीक्षाओं में मेधावी स्थान पाने वाले विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने हेतु
(c) तकनीकी शिक्षा में प्रोत्साहन हेतु
(d) राष्ट्रीय प्रवेश परीक्षाओं में सफल विद्यार्थियों को उच्च अध्ययन के लिये प्रोत्साहित करने हेतु

12. दिनांक 23.12.2017 से 'आहार अनुदान योजना' किस जनजातीय समुदाय के कुपोषण को दूर करने की योजना है? [MPPSC Civil/Forest (Prelim) 2025]

(a) भील जनजातीय समुदाय
(b) विशेष पिछड़े जनजातीय समुदाय
(c) अशिक्षित जनजातियाँ
(d) बेरोज़गार जनजातियाँ

13. अनुसूचित जनजाति वर्ग के लिये नवीन उद्यमों की स्थापना हेतु प्रारम्भ की गई योजना का नाम है! [MP Forest Service (Main) 2023; MPPSC Civil/Forest (Prelim) 2024]

(a) भगवान बिरसा मुंडा स्वरोजगार योजना
(b) कौशल विकास प्रशिक्षण योजना
(c) आहार अनुदान योजना
(d) मुख्यमंत्री विशेष योजना

14. मध्य प्रदेश टंट्या मामा आर्थिक कल्याण योजना के अंतर्गत, लाभार्थी को किस सीमा तक बैंक ऋण दिया जायेगा ? [MP Assistant Geologist 2023]

(a) ₹ 10,000 – 50,000
(b) ₹ 10,000 – 1,00,000
(c) ₹ 10,000 – 1,50,000
(d) ₹ 10,000 – 2,00,000

15. टंट्या मामा आर्थिक कल्याण योजना का उद्देश्य क्या है ? [MPPSC Civil Prelims 2023]

(a) आदिवासी महिलाओं को निःशुल्क शिक्षा प्रदान करना
(b) अनूसूचित जनजाति के बीपीएलं श्रेणी के लाभार्थियों को नए उद्योगों/व्यवसायों के लिये कम लागत वाले उपकरण और कार्यशील पूँजी की आपूर्ति करना !
(c) आदिवासी क्षेत्रों में बुनियादी ढ़ाँचे के विकास का वित्तपोषण करना !
(d) आदिवासी युवाओं के बीच खेलों को बढ़ावा देना

16. टंट्या मामा आर्थिक कल्याण योजना निवासियों को कम मूल्य के उपकरण तथा व्यावसायिक पूँजी उपलब्ध करवाती है। [MPPSC Forest service (Main) 2021]

(a) अनुसूचित जाति
(b) अनुसूचित जनजाति
(c) अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

17. मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना के अंतर्गत अनुसूचित जनजाति हितग्राहियों को _____ परियोजना लागत का लाभ दिया जाता है। [MPPSC Gramodhyog (Handloom) 2023]

(a) 20 प्रतिशत
(b) 25 प्रतिशत
(c) 30 प्रतिशत
(d) 35 प्रतिशत

18. मध्यप्रदेश सरकार ने भगवान बिरसा मुंडा स्वरोजगार योजना की अनुशंसा 2022 में किस तिथि पर की। [MPPSC DSP Radio 2020]

(a) 6 अगस्त
(b) 9 सितम्बर
(c) 6 सितम्बर
(d) 9 अगस्त

19. देवी अहिल्या सम्मान पुरस्कार निम्न में से किस क्षेत्र से जुड़ी महिलाओं को दिया जाता है? [MP Forest Service (Main) 2021]

(a) लोककला, आदिवासी कला
(b) दलित साहित्य
(c) लिंग समानता
(d) बालिका शिक्षा

20. मध्यप्रदेश सरकार द्वारा आदिवासी, लोक व पारंपरिक कलाओं के लिये महिलाओं को कौन-सा सम्मान दिया जाता है? [MPPSC Civil/Forest (Prelim) 2024]

(a) राष्ट्रीय कबीर सम्मान
(b) राज्य स्तरीय शिखर सम्मान
(c) राष्ट्रीय देवी अहिल्या सम्मान
(d) राष्ट्रीय तुलसी सम्मान

21. भारतीय साहित्य में जनजातीय जीवन की सांस्कृतिक परंपरा और विशिष्टताओं पर लेखन के लिये कौन-सा सम्मान दिया जाता है? [MPPSC Civil/Forest (Prelim) 2024]

(a) ठक्कर बापा राष्ट्रीय सम्मान
(b) वीर शंकर शाह - रघुनाथ शाह राष्ट्रीय सम्मान
(c) रानी दुर्गावती राष्ट्रीय सम्मान
(d) राष्ट्रीय देवी अहिल्या सम्मान

22. वर्ष 2022 में मध्यप्रदेश राज्य स्तरीय आदिवासी गौरव दिवस किस स्थान पर मनाया गया। [MPPSC Paper Computer Programmer 2021; MPPSC Assistant Geologist 2023]

(a) भोपाल
(b) इंदौर
(c) झाबुआ
(d) शहडोल

23. धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान की शुरुआत कब हुई? [MPPSC Assistant Registrar 2023]

(a) 30 सितंबर, 2024
(b) 2 अक्टूबर, 2024
(c) 2 सितंबर, 2024
(d) 2 नवंबर, 2024

24. मध्यप्रदेश में वर्ष 2023 -24 में कुल कितनी वृहद एवं मध्यम एकीकृत जनजातीय विकास परियोजनाएँ अस्तित्व में हैं? [MPPSC Civil Prelims 2025]

(a) 20
(b) 25
(c) 31
(d) 36

25. "राष्ट्रीय सिकल सेल एनीमिया उन्मूलन मिशन" ने किस वर्ष तक सिकल सेल एनीमिया को भारत से समाप्त करने का लक्ष्य निर्धारित किया है? [MPPSC Civil Prelims 2025]

(a) 2032
(b) 2037
(c) 2042
(d) 2047

26. मध्यप्रदेश सरकार ने रानी दुर्गावती की 500वीं जयंती मनाने के लिये कई पहल की हैं। निम्नलिखित में से कौन-सी/से सही है/हैं? [MPPSC Civil Prelims 2025]

1. रानी दुर्गावती अन्न प्रोत्साहन योजना
2. जबलपुर में रानी दुर्गावती स्मारक एवं उद्यान का निर्माण
3. मध्यप्रदेश जनजाति महिला कल्याण बोर्ड की स्थापना
4. रानी दुर्गावती की जयंती पर सार्वजनिक अवकाश घोषित करना

कूट (Code)

(a) केवल 1
(b) 1 एवं 2
(c) 1, 2 एवं 3
(d) 1, 2, 3 एवं 4

1. (a), 2. (d), 3. (d), 4. (b), 5. (b), 6. (a), 7. (b), 8. (d), 9. (a), 10. (d), 11. (b), 12. (b), 13. (a), 14. (b), 15. (b), 16. (b), 17. (c), 18. (c), 19. (a), 20. (c), 21. (b), 22. (d), 23. (b), 24. (c), 25. (d), 26. (a),

Chapter

16

स्वतंत्रता संग्राम में जनजाति वर्ग की भूमिका

अंग्रेजों के खिलाफ आदिवासियों की लड़ाई एक सशस्त्र संघर्ष की गाथा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये हथियार उठाना आदिवासी परंपरा का एक हिस्सा रहा है, जिसे उन्होंने सदियों से निभाया है। ब्रिटिश शासन के विरुद्ध हुए आंदोलनों में भी जनजातीय समाज ने इसी परंपरा को निभाते हुए साहसपूर्वक भाग लिया। उन्होंने अपने पारंपरिक अस्त्र-शस्त्र के साथ जंगलों और पहाड़ों में संघर्ष किया और अपने क्षेत्र, संस्कृति तथा स्वतंत्रता की रक्षा के लिये ब्रिटिश सत्ता को चुनौती दी।

- **भील विद्रोह (1818)** : **सन् 1818** तक ब्रिटिश उपनिवेशवाद का प्रभाव संपूर्ण भारत के साथ-साथ मध्य प्रदेश के दूर-दराज़ के क्षेत्रों तक भी फैल चुका था। मध्य प्रदेश में भील जनजाति का सर्वाधिक संकेन्द्रण पाया जाता था। भीलों का यह क्षेत्र उत्तर में विंध्याचल पर्वतमाला से लेकर दक्षिण में पश्चिमी घाटों तक फैला हुआ था। ब्रिटिश शासन का प्रभाव धीरे-धीरे उन जनजातीय क्षेत्रों तक पहुँच गया, जो पहले तक अपेक्षाकृत स्वतंत्र और अपने पारंपरिक जीवन में रमे हुए थे।

  विद्रोह की शुरुआत : सन् 1817 में खानदेश क्षेत्र में भील जनजाति ने विद्रोह प्रारंभ किया। इसे मध्य प्रदेश में राष्ट्रवाद के विकास का एक प्रारंभिक चरण माना जाता है। भील जनजाति सामंत सरदारों और अंग्रेजों के अत्याचारों से अत्यधिक पीड़ित थी। सरदारों द्वारा किये गये निरंतर उत्पीड़न और शोषण से परेशान होकर भीलों ने सतपुड़ा और सतमाला की पहाड़ियों में शरण ली। इन पहाड़ी क्षेत्रों में भील लोग एकत्र होकर संगठित हुए और सामंतों तथा अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह की योजना बनायी।

  भील विद्रोह का स्वरूप और प्रतीक : अंग्रेजों के खानदेश के क्षेत्र में आगमन के पश्चात सन् 1818 में **भीलों** ने उनका विरोध करना आरंभ कर दिया। अंग्रेजों ने इस विद्रोह को दबाने के लिये कई प्रयास किये, किंतु वे भीलों की **बहादुरी** और **साहस** को कम नहीं कर सके। भील राष्ट्रीयता को बढ़ावा देने और क्रांति का संदेश फैलाने के उद्देश्य से दो **प्रतीक चिन्ह** निर्धारित किये गये थे-

  - **लाल कमल** : बलिदान और सेना की ताकत का प्रतीक।
  - **रोटी** : क्रांति में भागीदारी का प्रतीक।

  प्रमुख विद्रोह : मध्य प्रदेश और इसके आसपास के क्षेत्रों में भील विद्रोह समय-समय पर भड़कता रहा। यह विद्रोह कई चरणों में हुआ, जिनके प्रमुख चरण निम्नलिखित हैं—

  - 1831 : धार क्षेत्र में विद्रोह।
  - 1846 : मालवा क्षेत्र में विद्रोह।
  - 1852 : पुनः खानदेश में भीलों ने विद्रोह किया।

- **बुंदेला विद्रोह (1842)** : सन् 1818 में जब पेशवा का पद समाप्त कर दिया गया, तब मध्य प्रदेश के सागर और दमोह जिले अंग्रेजों के अधीन आ गये। इस क्षेत्र में भूमि स्वामी मुख्यतः **गोंड़**, **लोधी** और **बुंदेला राजपूत** थे। सन् 1842 में, सागर जिले के चंद्रपुर के **जवाहर सिंह बुंदेला** और नरहुत के **मधुकर शाह** ने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध विद्रोह का बिगुल फूँका। इस विद्रोह में गोंड़ जमींदारों और मुखियाओं ने भी सक्रिय रूप से भाग लिया और भरपूर सहयोग किया। यह विद्रोह **नरसिंहपुर** जिले में सबसे अधिक सफल रहा।

  अप्रैल 1842 में होशंगाबाद की नर्मदा घाटी में भी विद्रोह हुआ। इसका नेतृत्व **मदनपुर** के गोंड़ मुखिया **राजा ढिलहन शाह** और **ढिलावर** के गोंड़ शासक **नरवर सिंह** ने किया। नवंबर 1842 की शुरुआत में, गोंड़ विद्रोहियों के एक दल ने होशंगाबाद जिले से गुजर रहे **प्रिंसिपल असिस्टेंट कमिश्नर ह्यू फ्रेजर** पर हमला कर दिया। यह दल गोंड़ सरदार **ढेलन सिंह** और नरवर सिंह के नेतरत्व जंगल क्षेत्र से आया था। हमले में फ्रेजर गंभीर रूप से घायल हो गया और अंततः **10 नवंबर 1842** को उसकी मृत्यु हो गयी। विद्रोह के पश्चात, **नरहुत** के **मधुकर**

शाह और **गनेश जू** को **बानपुर रियासत** में गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हें **सागर जेल** में फाँसी दी गई। आज भी वहीं पर उनकी समाधियाँ स्थित हैं।

बुंदेला विप्लव (1842) के जनजातीय नायक

- **हीरालाल चाँदरी** : जबलपुर जिले के पितरस गांव के हीरालाल चांदरी 1842 के बुंदेला विप्लव के समय मदनपुर के राजा ढिल्लनशाह के सहयोगी थे। कैप्टन बोलैंड द्वारा लल्ला गोंड एवं फूलसिंह गोंड के साथ इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।
- **राजा ढिल्लन शाह गोंड** : राजा मदनपुर के जागीरदार थे, जो नरसिंहपुर जिले में भोपाल जबलपुर राजमार्ग के पास नर्मदा नदी के उत्तर में स्थित एक छोटा सा गांव है। राजा ढिल्लन शाह ने 1842 के बुंदेला विद्रोह में भी भाग लिया था और 24 नवंबर 1842 को इनके ऊपर 1000 रुपये का इनाम घोषित किया गया था, जो 19 दिसंबर को बढ़ाकर 2000 रुपये कर दिया गया। 1857 के महासमर में ढिल्लन शाह एक बार फिर अंग्रेजी शासन के विरुद्ध रणक्षेत्र में उतरे। कैप्टन टर्नन के नेतृत्व में मदनपुर पर हुए अंग्रेजी आक्रमण का डटकर सामना किया परंतु अंततः गिरफ्तार कर लिये गये और उनकी जागीर जब्त कर उन्हें फाँसी दे दी गयी।
- **दिलराज सिंह गोंड** : दिलराज सिंह गोंड, बुंदेला विप्लव के नायक थे, जिन्होंने बुंदेलखंड क्षेत्र के क्रान्तिकारियों में एक सम्मानजनक स्थान अर्जित किया। अंग्रेज तमाम प्रयासों के बाद भी उन्हें पकड़ने में सफल न हो सके। अक्टूबर 1856 में उनकी मृत्यु हो गई।
- **राव अमान सिंह गोंड** : दमोह जिले के अंतर्गत आने वाले चौराई गांव के अमान सिंह गोंड ने अपने सहयोगियों के साथ मिलकर अंग्रेजी राज के विरुद्ध बुंदेला विलय में क्रांतिकारियों का सहयोग किया।
- **शिवराज सिंह गोंड** : सागर जिले के देवरी तहसील के जागीरदार शिवराज सिंह ने बुंदेला विलय में **जैतपुर** के राजा परीछत का सहयोग किया। विद्रोह में भाग लेने के कारण अपनी जागीर से बेदखल कर दिए गये। अंततः नागपुर में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।
- **रणजोर सिंह गोंड** : सुथल्ला के निवासी रणजोर सिंह ने 1842 के बुंदेला विप्लव में राजा पारीछत के सहयोगी रहे। फूलशाह गोंड, लल्ला गोंड उनके सैन्य दल में शामिल थे। उन पर एक हजार रुपये का इनाम घोषित किया गया था। कालांतर में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।
- **निहाल सिंह कोरकू** : नेमावर के सिकंदरी-खेड़ा महल के मालगुजार निहाल सिंह ने कोरकू जनजातीय समुदाय के लोगों को संगठित कर अंग्रेजों के विरुद्ध बुंदेला विप्लव के दौरान क्रांतिकारियों का साथ दिया।

▶ **मंडलेश्वर जेल कांड (22 अगस्त 1859)** : 22 अगस्त 1859 की एक बरसाती रात को **मंडलेश्वर जेल** में बंद क्रांतिकारियों ने विद्रोह कर दिया। उन्होंने जेल पर कब्जा कर लिया और अंग्रेज एजेंट **कैप्टन हैमस** की हत्या कर दी।

विद्रोहियों ने जेल का पिछला दरवाज़ा तोड़कर वहाँ रखे **कोष के 7696 रुपये** भी अपने साथ ले लिये। इस घटना के पीछे एक प्रमुख कारण यह था कि अंग्रेजों द्वारा दी गई यातनाओं के कारण **भीमा नायक की माता जी** का निधन हो गया था। इसी दुखद घटना से आक्रोशित होकर क्रांतिकारियों ने यह साहसिक कदम उठाया।

1857 की क्रांति मे जनजाति वर्ग की भूमिका

▷ **खाज्या नायक** : खाज्या नायक का जन्म साउगवी गाँव में गुमान नायक के घर हुआ था। सन् 1833 में गुमान नायक की मृत्यु के पश्चात खाज्या नायक को **सेंधवा घाट** का नायक नियुक्त किया गया। प्रारंभ में खाज्या नायक ने अंग्रेज अधिकारी **कैप्टन मारिस** को विद्रोही भीलों के विरुद्ध सहयोग दिया। किंतु कुछ समय बाद उन्हें सेंधवा घाट की चौकीदारी से निलंबित कर दिया गया। इसके पश्चात एक हत्या के आरोप में उन्हें 10 वर्ष की सजा सुनायी गयी। सन् 1856 में अंग्रेज सरकार ने उन्हें सजा पूरी होने से पूर्व रिहा कर फिर से नौकरी पर बहाल कर लिया। लेकिन अब खाज्या नायक का मन सरकारी सेवा में नहीं लगा और वे विद्रोही गतिविधियों में सक्रिय हो गये। धीरे-धीरे उनके दल में 800 से अधिक साथी शामिल हो गये।



▷ **17 अक्टूबर 1857** को **महादेव नायक**, **ओचित्या नायक** और **देवलिया नायक** अपने लगभग 200 साथियों के साथ खाज्या नायक के दल में सम्मिलित हो गये। इसके बाद इस दल ने **सिरपुर**, **धावा** और **बावली** में लूटपाट की। दुर्भाग्यवश, **रोहितदीन** नामक एक

युवक ने विश्वासघात किया। जब खाज्या नायक नदी में स्नान कर रहे थे, उसी समय उसने गोली मारकर उनकी हत्या कर दी। **नायक बंधु** गोरिल्ला युद्ध शैली में निपुण थे और उन्होंने आज़ादी की लड़ाई में अद्भुत वीरता का परिचय दिया।

- **भीमा नायक** : भीमा नायक का जन्म मध्य प्रदेश के बड़वानी ज़िले में स्थित पंचवाली के जंगलों के बीच एक छोटी सी भील बस्ती **पंचमोहली** में हुआ था। वे बचपन से ही क्रांतिकारी विचारों से प्रभावित थे। युवा अवस्था में वे अपने साथियों के साथ **खाज्या नायक** के दल में शामिल हो गये। उस समय खाज्या नायक का भील समुदाय पर गहरा प्रभाव था। सन् 1858 के मई माह में अधिक दबाव के कारण भीमा नायक ने **मेजर कीटिंग** के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। उन्हें मंडलेश्वर जेल में कैद रखा गया। भीमा नायक ने **रघुनाथ सिंह मंडलोई** के साथ मिलकर सम्पूर्ण निमाड़ क्षेत्र में विद्रोह की घटनाओं को अंजाम दिया। बाद में उन्हें इस शर्त पर छोड़ा गया कि वे **मौवा सिया नायक** को पकड़कर लाकर देंगे। किन्तु रिहा होने के बाद भीमा नायक ने पुनः अपनी क्रांतिकारी गतिविधियाँ प्रारंभ कर दीं और **तात्या टोपे** से जा मिले। सतपुड़ा के पर्वतीय क्षेत्र में स्थित **रामगढ़ दुर्ग** के पास **पंचवाली** नामक स्थान पर 13 फरवरी 1859 को एक निर्णायक युद्ध हुआ।



भीमा नायक [MPPSC (Civil Main) GS-1 2019 | 3 M]

2 अप्रैल 1867 को, जब वे **बालकुआ** से तीन मील दूर एक स्थान पर सो रहे थे, तब उन्हें पकड़ लिया गया। उनके विरुद्ध मुकदमा चलाया गया और उन्हें **अंडमान की जेल** में भेज दिया गया। भीमा नायक को निमाड़ के "**रॉबिन हुड**" के रूप में जाना जाता है। नायक बंधु **गोरिल्ला युद्ध नीति** में निपुण थे।

- **टंट्या भील** : **भारतीय रॉबिन हुड***** के नाम से मशहूर **टंट्या भील**, जिन्हें प्रेम से **टंट्या मामा** कहा जाता है, भारत के महान जननायकों में से एक थे। उनका जन्म सन् **1840** में (कुछ स्थानों पर सन् 1842 भी मिलता है) तत्कालीन मध्य प्रांत के पूर्वी निमाड़ (वर्तमान खंडवा जिले) की **पंधाना तहसील** के **बड़दा अहीर** गाँव में **भाऊसिंह भील** के घर हुआ था। उनका वास्तविक नाम **तातिया** था, परंतु अंग्रेज तातिया शब्द को सही ढंग से नहीं बोल पाते थे, इसलिये उन्हें **टंट्या** कहने लगे। भील समुदाय में **मामा** शब्द अत्यंत सम्मानजनक माना जाता है, इसलिये लोग उन्हें सम्मान से **टंट्या मामा** कहकर पुकारते थे।



टंट्या मामा के दो प्रमुख अनुयायी थे — **दीप्या** और **बिजनिया**। सन् 1880 में अंग्रेजों ने इन्हें पकड़ लिया, और **बिजनिया** को फाँसी दे दी गई। **मकड़ाई रियासत** के राजा ने टंट्या मामा को संरक्षण प्रदान किया, किंतु जब यह बात अंग्रेजों को पता चली, तो उन्होंने राजा को उनके पद से हटा दिया। एक बार टंट्या मामा अपनी बहन के घर **राखी बँधवाने** गये थे। वहाँ कुछ विश्वासघाती व्यक्तियों ने अंग्रेजों को सूचना दे दी, जिससे उन्हें गिरफ़्तार कर लिया गया। पहले उन्हें **इंदौर स्थित ब्रिटिश रेजीडेंसी क्षेत्र की सेंट्रल इंडिया एजेंसी जेल** में रखा गया, बाद में उन्हें **जबलपुर जेल** स्थानांतरित कर दिया गया। **जबलपुर सत्र न्यायालय** ने 19 अक्टूबर, 1889 को उन्हें फाँसी की सज़ा सुनाई और 4 दिसंबर, 1889 को फाँसी दे दी गई। फाँसी के बाद, अंग्रेजों ने उनके पार्थिव शरीर को लोगों में विद्रोह की आशंका के चलते, चुपचाप रात में **पातालपानी रेलवे स्टेशन** के पास फेंक दिया। यही स्थान आज "**टंट्या मामा की समाधि स्थल**" के रूप में प्रसिद्ध है।

टंट्या मामा **गोरिल्ला युद्ध कला** में निपुण थे। उन्होंने यह विद्या **तात्या टोपे** से सीखी थी। अंग्रेजी शासनकाल में न केवल आमजन, बल्कि आस-पास के **जमींदारों और राजाओं** में भी उनके प्रति गहरी सहानुभूति थी।

- **राजा शंकर शाह और कुँवर रघुनाथ शाह***** : गोंडवाना राजवंश के वीर **राजा शंकर शाह** और उनके पुत्र **कुँवर रघुनाथ शाह** ने 1857 की स्वतंत्रता संग्राम के समय **वनवासी क्रांति** का सूत्रपात कर अंग्रेजी शासन की नींव हिला दी थी। राजा शंकर शाह का जन्म एक प्रतापी गोंड राजघराने में सन् **1789** में **राजा सुमेर शाह** के यहाँ हुआ था। उस समय मराठों ने राजा सुमेर शाह को बंदी बना लिया

था और उन्हें **सागर किले** में कैद कर रखा था। लंबे समय तक पति की प्रतीक्षा करने के बाद रानी अपने पुत्र शंकर शाह के साथ जबलपुर राजधानी के **गढ़ा पुरवा** में रहने आ गयी।



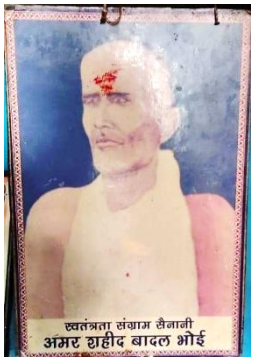
सन् 1857 की क्रांति के समय राजा शंकर शाह अंग्रेज कंपनी सरकार के पेंशनभोगी थे और अपने पुत्र रघुनाथ शाह के साथ गढ़ा पुरवा में रहते थे। पिता-पुत्र दोनों ही अच्छे कवि थे। वे अपनी वीर रस से भरपूर कविताओं के माध्यम से लोगों में **राष्ट्रभक्ति** की भावना जागृत करते रहते थे। उस समय उनके अधीन केवल तीन गाँव की जागीर थी।राजा शंकर शाह और रघुनाथ शाह ने योजना बनाई कि **मुहर्रम के पहले दिन** अंग्रेजों की छावनी पर आक्रमण किया जाए। लेकिन अंग्रेज अधिकारी **क्लार्क** ने इस योजना की भनक लगने पर **गिरधारी लाल दास** नामक व्यक्ति को जासूसी के लिये नियुक्त कर दिया। परिणामस्वरूप, क्लार्क को दो दिन पहले ही सूचना मिल गई और उसने 14 सितम्बर को गढ़ा पुरवा किले पर हमला कर दोनों को गिरफ्तार कर लिया। तीन दिनों तक उन पर **राजद्रोह** का मुकदमा चलाया गया। उनकी कविताओं, जिनमें वे **माँ कालिका** से अंग्रेजी शासन के विनाश की प्रार्थना करते थे, को विद्रोह भड़काने वाला माना गया। इसके साथ ही एक **लाल रेशमी थैली** से प्राप्त पत्र भी पढ़े गये, जो देसी रजवाड़ों, ज़मींदारों और मालगुजारों को भेजे गये थे। इन पत्रों में अंग्रेज शासन को उखाड़ फेंकने का आह्वान किया गया था। **18 सितम्बर 1857** को सुबह राजा शंकर शाह और रघुनाथ शाह को अलग-अलग तोपों के मुँह से बाँधकर उड़ा दिया गया।

इस दुखद घटना के बाद, राजा की पत्नी **रानी नयनी** और **फूल कँवर** ने **मंडला** में अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष किया। जब हार निश्चित जान पड़ी, तो दोनों ने आत्मसम्मान की रक्षा हेतु अपनी कटार अपने शरीर में खोपकर बलिदान दे दिया। राजा शंकर शाह और रघुनाथ शाह की शहादत की खबर से **सम्पूर्ण महाकौशल क्षेत्र** में विद्रोह की ज्वाला और भड़क उठी। **विजयराघवगढ़** के **सरजू प्रसाद** ने अपने सेनापति **रामबोल** और **बंदन चाचा** के साथ मिलकर अंग्रेजों के विरुद्ध जमकर संघर्ष किया, परंतु युद्ध में दोनों सेनापति वीरगति को प्राप्त हुए।



- **वीर बिरजू नायक** : मध्य प्रदेश के बड़वानी जिले की राजपुर तहसील में, नगर पलसूद के पास ग्राम मटली और सावरदा के बीच स्थित एक पहाड़ी पर "**बांडी हवेली**" नामक ऐतिहासिक स्थान स्थित है। यह स्थान वीर **बिरजू नायक** का जन्मस्थल माना जाता है, जो आज भी अस्तित्व में है। वीर बिरजू नायक यहीं से अपने साथियों के साथ मिलकर अंग्रेजों के खिलाफ योजनाएँ बनाते और उन्हें अंजाम देते थे। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। जब स्वतंत्रता सेनानी **तात्या टोपे** पश्चिम निमाड़ क्षेत्र में पहुँचे, तब उन्हें नर्मदा नदी पार करवाकर सुरक्षित स्थान तक पहुँचाने का कार्य **भीमा नायक**, **खाज्या नायक**, **बिरजू नायक** और उनके साथियों ने किया। इस अद्वितीय योगदान के लिये उन्हें "**वीर**" की उपाधि से सम्मानित किया गया। सिंधी घाटी क्षेत्र में वे **वीर बिरजू नायक** के नाम से प्रसिद्ध हो गये। आज भी लोग उनके नाम के साथ "वीर" जोड़ना नहीं भूलते। निवाली से लेकर सिंधी घाटी (राजपुर) तक का क्षेत्र उनका गढ़ माना जाता था।
- **1857 की क्रांति** के समय, अंग्रेजों के विरुद्ध आदिवासियों द्वारा किये गये **अंबापानी विद्रोह** और **सेंधवा विद्रोह** जैसे आंदोलनों में भी उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। ग्राम मटली में स्थित झरने (कुंडी) पर वे नियमित रूप से स्नान करने जाया करते थे। एक दिन अंग्रेजों ने उन्हें धोखे से मारने की योजना बनाई और इसके लिये उनके एक करीबी साथी का उपयोग किया। जब वीर बिरजू नायक झरने पर स्नान के लिये पहुँचे, तब अंग्रेजों के भेजे व्यक्ति ने उन पर हमला कर उनका सिर धड़ से अलग कर दिया।लोककथाओं के अनुसार, सिर कटने के बाद भी वे दौड़ते हुए पलसूद के पास **ग्राम उपला** में स्थित समाधि स्थल तक पहुँच गये थे। यही उपला आज उनका स्मृति स्थल है, जहाँ उनकी वीरता को आज भी सम्मानपूर्वक याद किया जाता है।
- **बादल भोई नामक** : बादल भोई छिंदवाड़ा जिले के एक प्रसिद्ध जनजातीय क्रांतिकारी नेता थे। उनका जन्म सन् 1845 में मध्य प्रदेश के परसिया तहसील स्थित डूँगरिया तीतरा गाँव में एक गोंड परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम **कल्याण परानी** और माता का नाम **विमला परानी** था। उनका **गोत्र 'परानी'** था, जिसे गोंड परंपरा के अनुसार सात प्रमुख गोत्रों में से एक माना जाता है।

'भोई' उनका जातिगत उपनाम नहीं था, बल्कि यह एक **सम्मानजनक उपाधि** थी, जिसका अर्थ होता है— "सम्पन्न और प्रतिष्ठित व्यक्ति"। बादल भोई ने कोई औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं की थी, फिर भी वे एक **कुशल नेतृत्वकर्ता** और दूरदर्शी सोच रखने वाले व्यक्ति थे।



छिंदवाड़ा जिला बेशकीमती लकड़ियों और कोयले के लिये जाना जाता था। अंग्रेजों ने इस प्राकृतिक संपदा के दोहन के लिये स्थानीय लोगों को **मजदूर** बनाकर शोषण करना शुरू कर दिया। अंग्रेज अफसर इन लोगों पर तरह-तरह के **जुल्म** करते थे। यह अन्याय देखकर बादल भोई ने अंग्रेजों के खिलाफ **विरोध की मुहिम** छेड़ दी। सन् 1923 में उन्होंने महात्मा गांधी के साथ **अहिंसात्मक असहयोग आंदोलन** में भाग लिया और इसके चलते **जेल यात्रा** भी की। 21 अगस्त 1930 को बादल भोई ने छिंदवाड़ा से लगभग 45 किलोमीटर दूर **रामकोना** नामक स्थान पर अंग्रेजों के बनाये वनाधिकार कानून का उल्लंघन किया। उन्होंने गाँव के लोगों को एकत्र कर जंगल में प्रवेश किया और वहाँ से **वन उत्पाद** उठाकर बाहर ले आए। इस विरोध के चलते अंग्रेजों ने उन्हें **गिरफ्तार** कर लिया और उनके अन्य साथियों से अलग करके **चांदा सेंट्रल जेल**, चंद्रपुर (महाराष्ट्र) भेज दिया गया। सन् 1940 में अंग्रेजों ने उन्हें **जेल में ज़हर देकर मार डाला**। उनकी **वीरता और बलिदान** की स्मृति को चिरस्थायी बनाने हेतु 8 सितंबर 1997 को **छिंदवाड़ा में जनजातीय संग्रहालय** की स्थापना की गई। यह संग्रहालय बादल भोई के साहस, संघर्ष और देशभक्ति का प्रतीक है।

- **राजा महिपाल सिंह गोंड** : राजा महिपाल सिंह गोंड, भुटगांव के जागीरदार थे। भुटगांव, जबलपुर के निकट स्थित है। सन् 1857 की स्वतंत्रता संग्राम के प्रारंभ होते ही राजा महिपाल सिंह ने भी अंग्रेजी शासन के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। उन्होंने मंडला जिले के रामगढ़ और शाहपुरा क्षेत्र में क्रांतिकारियों के साथ मिलकर अंग्रेजों का डटकर सामना किया। जब रानी अवंति बाई ने अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह का बिगुल बजाया, तब राजा महिपाल सिंह ने भी आगे बढ़कर उनका साथ दिया।

- **राजा गंगाधर गोंड** : 1857 की स्वतंत्रता संग्राम में तत्कालीन जबलपुर जिले की **मानगढ़ जागीर** के राजा **गंगाधर गोंड** ने अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उनके पिता **राजा भोज सिंह** ने भी 1842 में हुए बुंदेला विद्रोह के समय **राजा हिरदेशाह** के साथ मिलकर अंग्रेजों का डटकर सामना किया था।

  राजा गंगाधर गोंड ने अपनी सेना के साथ **बावनवीं रेजिमेंट** की दो कंपनियों का साहसपूर्वक मुकाबला किया। उनकी वीरता से घबराकर अंग्रेजों ने उनके ऊपर **500 रुपये का इनाम** घोषित कर दिया, फिर भी वे उन्हें गिरफ्तार करने में असफल रहे।

- **इमरत भोई सरेआम** : वीर इमरत भोई सरेआम का जन्म मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा जिले के जुन्नारदेव क्षेत्र में, नवेगांव के समीप स्थित उमराठी ग्राम में **9 जुलाई 1836** को हुआ था।

  वे एक कुशल पहलवान के रूप में प्रसिद्ध थे और युवावस्था में ही वीरता के लिये पहचाने जाने लगे थे। स्वतंत्रता संग्राम के समय, उन्होंने **तात्या टोपे** के सहयोगी और हर्राकोट के जागीरदार **महावीरा सिंह** की ओर से अंग्रेजी सेना के विरुद्ध भीषण युद्ध किया। इस युद्ध में उन्होंने एक **अचूक तीरंदाज** के रूप में शत्रुसेना का सामना किया। अंततः इसी युद्ध में लड़ते हुए वे **वीरगति को प्राप्त** हुए।

- **दल्ला गोंड** : सन् 1857 की स्वतंत्रता संग्राम में **दल्ला गोंड** एक प्रमुख क्रांतिकारी के रूप में जाने जाते हैं। वे **मनकहरी** के राजा **रणमत सिंह** के विश्वस्त सहयोगी थे। राजा रणमत सिंह की ओर से दल्ला गोंड ने **पानघाटी की लड़ाई** में अंग्रेजी सेना का वीरता से सामना किया।

- **राजा अमान सिंह गोंड** : राजा अमानसिंह, जो मध्य प्रदेश के **भुंडेरा गोसलपुर** के निवासी थे, ने **1857 की स्वतंत्रता संग्राम** में सक्रिय रूप से भाग लिया। उनके क्रांतिकारी योगदान से अंग्रेज सरकार घबरा गई और उन्हें पकड़वाने के लिये **100 रुपये का इनाम** घोषित कर दिया गया।

- **बकरु भाऊ गोंड** : बकरु भाऊ मध्य प्रदेश के मंडला ज़िले के मोहगांव गाँव के निवासी थे। वे सन् 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख क्रांतिकारियों में से एक थे। उन्होंने **रामगढ़ के विद्रोहियों** को सहयोग और समर्थन प्रदान किया था। बकरु भाऊ ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संघर्ष कर देशभक्ति का परिचय दिया।

- **गुलाब पुढारी** : गुलाब पुढारी मध्य प्रदेश के लखनादौन क्षेत्र के रंगमोरी गाँव के निवासी थे। गुलाब पुढारी ने अपने साथियों के साथ मिलकर **केदारपुरा पुलिस चौकी** पर हमला किया और वहाँ से शस्त्र लूट लिये। उन्हें पकड़ने के लिये अंग्रेज़ों ने उन पर **50 रुपये का इनाम** घोषित किया था।

- **अमरू भोई** : अमरू भोई का जन्म 20 मई 1840 को मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा जिले की तामिया तहसील के उमग्वाह गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम भगत और माता का नाम पारोवाई था। बचपन से ही अमरू तीरंदाजी में निपुण थे। उनकी अचूक तीरंदाजी से प्रभावित होकर स्वतंत्रता संग्राम के महान सेनानी **तात्याटोपे** ने उन्हें अपने सैन्य दल में शामिल कर लिया। ब्रिटिश अफसर **रिचर्डसन** के अनुसार, मात्र लंगोटी पहनने वाला यह बाल सेनानी अमरू भोई पेंच नदी के तट पर ब्रिटिश सेना के छक्के छुड़ा देता था। 3 मार्च 1858 कोजब अमरू भोई शहीद हुए, उस समय उनकी आयु 18 वर्ष से भी दो महीने कम थी।

- **मंशु ओझा** : सन् 1942 के ऐतिहासिक **भारत छोड़ो आंदोलन** में बैतूल के **मंशु ओझा** ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध कई क्रांतिकारी गतिविधियाँ संचालित कीं। उन्होंने आज़ादी की लड़ाई में सक्रिय भाग लिया और अनेक साहसिक कार्यों को अंजाम दिया। नवंबर 1942 में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और **20 जुलाई 1944** तक **नरसिंहपुर जेल** में बंद रखा गया। इस दौरान उन्हें कठोर यातनाएँ दी गईं, लेकिन उनका आत्मबल नहीं टूटा। अंततः, **28 अगस्त 1981** को **घोड़ाडोंगरी, ज़िला बैतूल** में उनका देहावसान हो गया।

- **रघुनाथ सिंह मंडलोई** *** : रघुनाथ सिंह मंडलोई, जो टांडा बरूद के निवासी थे, स्थानीय भील और भिलाला समुदाय के प्रतिष्ठित नेता माने जाते थे। उन्होंने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध हुए एक महत्वपूर्ण विद्रोह का नेतृत्व किया। उनके प्रभाव से निमाड़ क्षेत्र में विद्रोह की ज्वाला धधक उठी। अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कम्पनी की सेना ने अक्टूबर 1858 में बीजागढ़ के किले में उन्हें घेर लिया और अंततः बंदी बना लिया गया।



- **सीताराम कंवर*** : सन् 1857 की स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, वर्तमान मध्य प्रदेश का निमाड़ क्षेत्र—उस समय होलकर और बड़वानी रियासतों के नर्मदा पार स्थित भागों में आता था—ब्रिटिश शासन के विरुद्ध एक बड़े विद्रोह का केंद्र बना। इस क्षेत्र में विद्रोह का नेतृत्व **सीताराम कंवर** नामक एक साहसी सेनानी ने किया। सीताराम कंवर ने सतपुड़ा की पर्वतमालाओं में रहने वाले भील समुदाय को अंग्रेजों के विरुद्ध संगठित किया और विदेशी शासन को उखाड़ फेंकने के लिये प्रेरित किया। उन्होंने **तात्या टोपे** और **पेशवा** के साथ संपर्क स्थापित कर विद्रोह को एक व्यापक रूप देने का प्रयास किया।

  ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की शक्तिशाली सेना का सामना सीताराम कंवर ने अपनी सीमित शक्ति और संसाधनों के साथ साहसपूर्वक किया। अंततः अक्टूबर 1858 में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। कैद के दौरान ही उन्होंने इस संसार से विदा ली।

- **सुरेन्द्र साय** : संभलपुर राज्य के राजकुमार **सुरेन्द्र साय** ने केवल 18 वर्ष की आयु से ही अंग्रेजों के षड्यंत्रों के विरुद्ध जीवनपर्यंत सशस्त्र संघर्ष किया। 23 जनवरी 1809 को संभलपुर के निकट **खिंडा** नामक स्थान में जन्मे सुरेन्द्र साय ने गोंड और विझल जनजातीय समुदायों के अधिकारों के लिये लगातार आवाज उठाई। वे केवल एक योद्धा नहीं थे, बल्कि जनजातीय समाज के स्वाभिमान के प्रतीक भी थे।

- **1857 के स्वतंत्रता संग्राम** में सुरेन्द्र साय ने अंग्रेजों को कड़ी चुनौती दी। उस समय उनका संघर्षक्षेत्र संभलपुर से लेकर कालाहांडी और बिलासपुर तक विस्तृत था। लंबे संघर्ष के बाद, सन् **1862** में उन्हें अंग्रेजों द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया और **मध्यप्रदेश के बुरहानपुर जिले** स्थित **असीरगढ़ किले** में कैद कर दिया गया। वहाँ, 23 मई 1884 को इस महान स्वतंत्रता सेनानी ने अपनी अंतिम साँस ली।

- **बिरसा गोंड** : 22 अगस्त 1942 को, हजारों आदिवासियों ने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान घोड़ाडोंगरी स्थित सरकारी बांस डिपो को आग के हवाले कर दिया। यह घटना उस समय के ब्रिटिश शासन के विरुद्ध एक बड़ा जनआंदोलन बन गयी थी। इस आंदोलन के दौरान, जब अंग्रेजों ने गोलियाँ चलाईं, तब **बेहरी ढाना** गाँव का सपूत **बिरसा गोंड** शहीद हो गया। उनका बलिदान आज भी आदिवासी समाज के लिये प्रेरणा का स्रोत है।

- जंगल सत्याग्रह पर प्रकाश डालिये [MPPSC GS-1 (Main) 2022 | 11 M]
- सिवनी सत्याग्रह (टुरिया) [MPPSC GS-1 (Main) 2019 | 3 M]

जंगल सत्याग्रह*** : जंगल सत्याग्रह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक महत्वपूर्ण अध्याय है। इस आंदोलन में आदिवासी समुदाय ने अंग्रेजों द्वारा बनाये गये शोषणकारी जंगल कानूनों के विरुद्ध आवाज उठाई। यह सत्याग्रह विशेष रूप से मध्य प्रदेश में 1930 के दशक में आयोजित किया गया और यह आदिवासियों के साहस, संघर्ष और बलिदान का प्रतीक बन गया।

अप्रैल 1930 में, **वीरांगना दुर्गावती** के समाधि स्थल पर हजारों की संख्या में आदिवासी एकत्र हुए थे। उन्होंने अंग्रेजों के अन्यायपूर्ण वन कानूनों का विरोध किया और अपने परंपरागत अधिकारों की पुनः स्थापना की माँग की। यह आंदोलन न केवल स्वतंत्रता संग्राम का भाग था, बल्कि यह आदिवासी समाज की आत्मसम्मान और अधिकारों की रक्षा के लिये किया गया एक ऐतिहासिक प्रयास भी था।

टुरिया जंगल सत्याग्रह जिला सिवनी *** **:** टुरिया जंगल सत्याग्रह मध्य प्रदेश के सिवनी जिले में हुआ एक ऐतिहासिक जन आंदोलन था, जो ब्रिटिश शासन के जंगल कानूनों के विरुद्ध किया गया था। इसकी शुरुआत **दुर्गाशंकर मेहता** के नेतृत्व में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने की थी। इस आंदोलन में स्थानीय आदिवासी समुदाय ने भी सक्रिय भागीदारी निभाई, जिनमें प्रमुख नेतृत्व **मूका लोहार** ने किया। सिवनी जिले के आदिवासी लोगों ने अंग्रेजों के कठोर जंगल कानूनों का विरोध करते हुए जंगल से **चंदन के बगीचों की घास** काटी। यह कदम उनके द्वारा ब्रिटिश शासन के अन्यायपूर्ण कानूनों के खिलाफ एक शांतिपूर्ण प्रतिरोध था। 9 अगस्त 1930 को, इस सत्याग्रह के दौरान पुलिस ने आंदोलनकारी जनसमूह पर गोलीबारी कर दी। इस घटना में चार लोग शहीद हुए—तीन महिलायें: **पुड्डों बाई**, **रैना बाई** और **बेमा बाई** तथा एक पुरुष: **विरजू भोई**। यह आंदोलन न केवल जंगल कानूनों के विरुद्ध संघर्ष का प्रतीक है, बल्कि यह आदिवासी समाज की स्वतंत्रता आंदोलन में भूमिका को भी दर्शाता है। टुरिया जंगल सत्याग्रह आज भी आदिवासी वीरता और बलिदान की मिसाल माना जाता है।





घोडा डोंगरी जंगल सत्याग्रह जिला बैतूल : आदिवासी जनआंदोलनों के इतिहास में **घोड़ा डोंगरी** और **बैतूल** का विशेष महत्व है। घोड़ा डोंगरी में **जंगल सत्याग्रह** का प्रस्ताव **द्वारिका प्रसाद मिश्र** द्वारा लाया गया था। किंतु सत्याग्रह प्रारंभ होने से पहले ही उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया, जिसके परिणामस्वरूप इसका नेतृत्व **एम. एस. अणे** ने संभाला। **10 जुलाई 1930** को घोड़ा डोंगरी में आंदोलन उग्र और हिंसक हो उठा। प्रदर्शनकारियों ने रेलवे स्टेशन और लकड़ी के एक बड़े टाल में आग लगा दी थी।

जंगल सत्याग्रह के दौरान **शाहपुर** क्षेत्र में आंदोलन का नेतृत्व **बंजारी सिंह कोरकू** और **गजन सिंह कोरकू** ने किया। इस आंदोलन में पुलिस की गोली से **कोमा गोंड** शहीद हो गया। इसी प्रकार, **जम्बाड़ा** गाँव में गिरफ्तार किये गये आदिवासियों को छुड़ाने के लिये जब भीड़ एकत्रित हुई, तो पुलिस की गोलीबारी में **रामू गोंड** और **मकडू गोंड** शहीद हो गये।

मध्य प्रदेश के आदिवासी भाइयों ने **सविनय अवज्ञा आंदोलन**, **व्यक्तिगत सत्याग्रह आंदोलन** और **भारत छोड़ो आंदोलन** जैसे प्रमुख आंदोलनों में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। सन् 1939 में **बदराटोल डोंगरगढ़** में **रामधील गोंड** ब्रिटिश अत्याचारों का विरोध करते हुए शहीद हो गये।

घोड़ा डोंगरी और इसके आसपास के गाँव 1942 के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान आदिवासी आंदोलन से प्रभावित हुए। इस आंदोलन का नेतृत्व गोंड सरदार **विष्णु सिंह** ने किया, जिन्होंने वनांचल के आदिवासी समुदाय को संगठित किया। **19 अगस्त 1942** को लगभग **5,000 आदिवासी** घोड़ा डोंगरी रेलवे स्टेशन के पास एकत्रित हुए। उन्होंने रेल की पटरियाँ उखाड़ दीं और **रानीपुर थाना** को आग के हवाले कर

दिया। इसके साथ ही, **घोड़ा डोंगरी डाकघर** भी जला दिया गया। जब आदिवासियों ने **बोंगदो** पर कब्जा कर लिया, तब **दिल्ली-मद्रास रेलमार्ग** का यातायात अवरुद्ध हो गया।

22 अगस्त 1942 को स्वतंत्रता संग्राम के दौरान एक महत्वपूर्ण घटना घटी। इस दिन पाँच लाख से अधिक बाँसों के गठ्ठों में आग लगा दी गई। यह विरोध अंग्रेजी शासन की वन नीतियों के विरुद्ध था, जो आदिवासियों के जीवन और आजीविका पर प्रभाव डाल रही थीं। घटना की सूचना मिलने पर **हीकेरशन**, जो उस समय के वन अधिकारी थे, मौके पर पहुँचे और आदिवासियों पर गोली चलाने का आदेश दे दिया। इस गोलीबारी में **वीरसा गोंड** शहीद हो गये, जबकि **जिर्रा गोंड** को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया, जहाँ उनकी मृत्यु हो गयी।

गंजन सिंह कोरकू

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास में **जंगल सत्याग्रह** एक अविस्मरणीय अध्याय के रूप में दर्ज है। सन् 1930 में मध्य भारत के बैतूल जिले से इस आंदोलन की शुरुआत हुई। इस सत्याग्रह में वनवासी समुदाय ने अंग्रेजी शासन के अन्याय के विरुद्ध संगठित होकर मोर्चा खोला।
इस आंदोलन के प्रमुख नायक **गंजन सिंह कोरकू** थे। उन्होंने 22 अगस्त 1930 को **बंजारीढाल** में लगभग 500 पुरुषों और महिलाओं की भीड़ को संबोधित किया। जब शाहपुर की पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार करने का प्रयास किया, तब पुलिस और लोगों के बीच संघर्ष हो गया। इस संघर्ष में पुलिस ने अत्यधिक बर्बरता का प्रदर्शन किया। आखिरकार गंजन सिंह को गिरफ्तार कर लिया गया और उन्हें **पाँच वर्ष के कारावास** की सज़ा सुनाई गई। जेल से मुक्त होने के बाद भी वे **राष्ट्रीय आंदोलन** में सक्रिय रहे और भारत को स्वतंत्र होते हुए देखा। सन् 1963 में उनका निधन हो गया।

EXERCISE – 16

1. टंट्या भील ने किस प्रसिद्ध क्रांतिकारी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी से आक्रमण की गोरेल्ला युद्ध शैली सीखी थी। [MPPSC Ayurveda Medical Officer 2021]
(a) तात्या टोपे (c) कुंवर सिंह
(b) नाना साहेब पेशवा (d) शंकर शाह

2. टंट्या भील का वास्तविक नाम क्या था ? [MPPSC Civil/Forest (Prelim) 2020]
(a) टांटिया (c) बिजनिया
(b) गणपत (d) टुण्ड्रा

3. महानायक टंट्या 'मामा' किस आदिवासी जनजाति से संबंधित है? [MPPSC Civil / Forest (Prelim) 2024]
(a) कोल (c) भील
(b) गोंड (d) भारिया

4. भील क्रांतिकारी भीमा नायक एवं अंग्रेजों के बीच सतपुड़ा पर्वतों में 'पंच वावली' नामक स्थान पर निर्णायक युद्ध किस वर्ष में लड़ा गया? [MPPSC Forest (Main) 2023]
(a) 1856 (c) 1857
(b) 1858 (d) 1859

5. भीमा नायक का संबंध किस रियासत से था ? [MPPSC Civil / Forest (Prelim) 2023]
(a) मंडला (c) किशनगढ़
(b) बड़वानी (d) मुड़ियादो

6. स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पिता पुत्र की सही जोड़ी चुनिए। [MPPSC Ayurveda Medical Officer 2021]
(a) शंकर शाह – भभूत सिंह
(b) शंकर शाह – रघुनाथ शाह
(c) रघुनाथ शाह – माले राव
(d) नाना साहिब – शंकर शाह

7. टूरिया जंगल सत्याग्रह का नेतृत्व किसने किया? [MPPSC Civil / Forest Prelims 2025]
(a) ठाकुर मोहकम सिंह (c) गंजन सिंह कोरकू
(b) रामू गोंड (d) मूका लोहार

8. निम्न लिखित में से कौन भारतीय आदिवासियों के रॉबिनहुड़ के नाम से प्रसिद्ध है? [MPPSC Forest (Main) 2021]
(a) दलपत शाह (c) टंट्या भील
(b) विरसा मुंडा (d) रघुनाथ शाह

9. जनजाति नेता सीताराम कंवर और रघुनाथ सिंह मंडलोई भिलाला अंग्रेज़ विरोधी क्रांति में कब शामिल हुए थे ? [MPPSC Civil Prelims 2023]
(a) 1842 ई. (c) 1927 ई.
(b) 1857 ई. (d) 1942 ई.

10. स्वर्गीय श्री बादल भोई कौन थे? [MPPSC Civil Prelim 2024]
(a) प्रसिद्ध आदिवासी समाजसेवी
(b) प्रसिद्ध आदिवासी संगीतकार
(c) प्रसिद्ध आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी
(d) प्रसिद्ध आदिवासी कलाकार

11. स्वतन्त्रता सेनानी रघुनाथ सिंह मण्डलोई सम्बन्धित हैं। [MPPSC Civil/Forest (Prelim) 2024]
(a) भारिया जनजाति (c) कोरकू जनजाति
(b) भिलाला जनजाति (d) बैगा जनजाति

1. (a), 2. (a,d), 3. (c), 4. (d), 5. (b), 6. (b), 7. (d), 8. (c), 9.(b), 10. (c), 11.(b),

Chapter

17

मध्यप्रदेश से संबंधित अन्य जनजातियां और युवा गृह

17.1 अबूझमाड़िया जनजाति

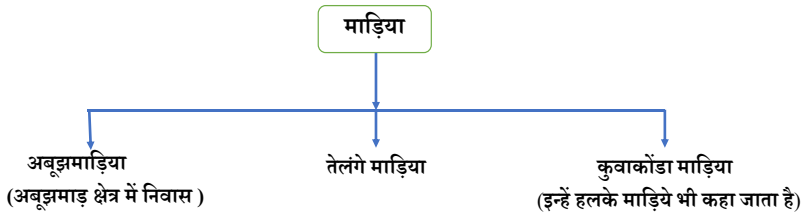
माड़िया जनजाति मुख्य रूप से छत्तीसगढ़ राज्य के **नारायणपुर जिले** के **अबूझमाड़** क्षेत्र में निवास करती है। इसी क्षेत्र के नाम पर इन्हें स्थानीय बोली में "अबूझमाड़िया" कहा जाता है।



मध्य प्रदेश में यह जनजाति **बालाघाट** और **छिंदवाड़ा** जिलों में निवास करती है। यह जनजाति शहरी और ग्रामीण समाज से अलग-थलग, अबूझमाड़ क्षेत्र के घने वनों और ऊँचे पहाड़ों से घिरे प्राकृतिक परिवेश में रहती है।

अबूझमाड़िया जनजाति अबूझमाड़ क्षेत्र को **"मेटाभूमि"** अर्थात **"पर्वतीय भूमि"** कहती है, और स्वयं को **"मेटा कोईतोर"** अर्थात **"पर्वतीय भूमि के निवासी"** कहकर संबोधित करती है।

- **उत्पत्ति** : माड़िया जनजाति की उत्पत्ति के संबंध में ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं। यह जनजाति **गोंड जनजाति की एक उपजाति** मानी जाती है।



- **जन्म संस्कार** : अबूझमाड़िया जनजाति में **जन्म** को एक सामान्य और प्राकृतिक घटना माना जाता है। इस जनजाति की मान्यता के अनुसार, गर्भवती स्त्री को नए या बढ़ते हुए फूल, पत्ते और शाखा को तोड़ने की अनुमति नहीं होती। इसे अशुभ माना जाता है। **प्रसव** घर के समीप बनी एक विशेष झोपड़ी में होता है, जिसे "**कुरमा लोन**" कहा जाता है। इस प्रक्रिया में गाँव की दो-तीन स्त्रियाँ सहायता करती हैं। शिशु की **नाल** काटने के लिये चाकू या तीर का उपयोग किया जाता है। नाल के झड़ने के बाद या आमतौर पर **8वें दिन**, **नामकरण संस्कार** किया जाता है। अबूझमाड़िया समुदाय **पुनर्जन्म** में विश्वास करता है। इसलिये शिशु का नाम रखने से पहले यह जानने की कोशिश की जाती है कि उस शिशु के रूप में किस पूर्वज का पुनर्जन्म हुआ है। जिस पूर्वज की पहचान होती है, शिशु का नाम उसी पूर्वज के पिछले जन्म के नाम के आधार पर रखा जाता है।

- **निवास स्थान** : अबूझमाड़िया जनजाति के आवास प्रायः घने वनों, पहाड़ी ढलानों या पहाड़ों के समीप स्थित समतल स्थलों पर बनाये जाते हैं। पूर्व समय में यह जनजाति **पेंदा खेती** (स्थानांतरित कृषि) करती थी, जिसके कारण ये लोग एक नियत अवधि के बाद अपने निवास स्थान को बदलते रहते थे। परंतु वर्तमान समय में **शिक्षा**, **पेयजल**, **स्वास्थ्य**, **पोषण** और **राशन दुकान** जैसी बुनियादी सुविधाओं के विकास तथा पेंदा खेती में कमी आने के कारण इनकी बसाहट अब स्थायी होती जा रही है। अबूझमाड़िया जनजाति के घरों के चारों ओर **बांस** या **लकड़ी** के खंभों की बाड़ होती है। घरों का **मुख्य भाग "लोन"** कहलाता है, जो आवास का केंद्र होता है।



- **आर्थिक जीवन** : अबूझमाड़िया जनजाति के लोग मुख्य रूप से वनों पर निर्भर रहते हैं। वे वनों से कंदमूल, भाजियाँ, पत्तियाँ, फूल-फल, बांस का कोमल तना (जिसे **बास्ता** या **करील** कहा जाता है), तथा विभिन्न प्रकार के मशरूम आदि का संकलन करते हैं। यह संकलन कार्य परिवार के सभी अर्धकार्यशील और कर्मशील सदस्य मिलकर करते हैं। ये वस्तुएँ उनके लिये मुख्य रूप से खाद्य सामग्री का काम करती हैं। अबूझमाड़िया जनजाति की आर्थिक गतिविधियों में **कृषि** सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। परिवार के सदस्य वर्षभर कृषि से संबंधित कार्यों में व्यस्त रहते हैं। इनकी कृषि पद्धति **पेंदा कृषि, दीपा कृषि और स्थायी कृषि** तीन प्रकार की होती है। कृषि उत्पादों में ये लोग मुख्यतः **कोदो**, **कुटकी**, **धान**, **कोसरा**, **मूँग**, **उड़द** आदि अनाज का उत्पादन करते हैं।

  - मध्य प्रदेश कि स्थानान्तरी कृषि करने वाली तीन जनजातियों के नाम लिखिए? [MPPSC (Civil Main) GS-I 2020 | 3 M]
  - पेण्डा कृषि से क्या अभिप्राय है? [MPPSC GS-1 (Main) 2018 | 15 M]

- **परिवारिक संरचना** : अबूझमाड़िया जनजाति में पारिवारिक गठन के आधार पर **केंद्रीय संयुक्त** तथा **विस्तृत परिवार** पाए जाते हैं। इन परिवारों में वैवाहिक स्थिति के अनुसार **एकल विवाही** (एक पत्नी वाले) तथा **बहुपत्नी विवाही** (एक से अधिक पत्नियाँ रखने वाले) प्रकार भी मिलते हैं। अबूझमाड़िया समाज में परिवार **पितृसत्तात्मक** होता है, अर्थात् परिवार का प्रमुख स्थान पिता को प्राप्त होता है सम्पूर्ण अबूझमाड़िया समाज को **गोत्र**, **वैवाहिक** तथा **सामाजिक संबंधों** के नियमन हेतु दो बहिविवाही अर्धशों में विभाजित किया गया है— इन्हें "**अक्कोमामा**" और "**दादाभाई**" कहा जाता है।
  - "**अक्कोमामा**" शब्द वैवाहिक संबंधियों या उनके गोत्रों के लिये प्रयुक्त होता है।
  - "**दादाभाई**" शब्द रक्त संबंधियों या उनके गोत्रों के लिये प्रयोग किया जाता है।
- **सामाजिक संघटन** : प्रत्येक पारा या टोला का प्रमुख **पंच** या **पारा मुखिया** कहलाता है। कई पारों से मिलकर एक पूरा ग्राम बनता है, जिसका नेतृत्व **पटेल** करता है। पटेल, सभी पंचों का प्रमुख होता है और ग्राम स्तर पर प्रशासन का कार्य देखता है। कई ग्रामों को मिलाकर एक **परगना** बनता है। अबूझमाड़िया क्षेत्र अनेक परगनों में बँटा होता है। प्रत्येक परगना का प्रमुख **परगना माझी** कहलाता है। परगना माझी अपने परगना के सभी ग्रामों के पटेलों का नेतृत्व करता है।

  परगना माझी का मुख्य कार्य अपने परगना क्षेत्र में **कानून व्यवस्था बनाये रखना** होता है
- **विवाह** : जनजाति में **एकल** तथा **बहुपत्नी विवाह** दोनों प्रचलित हैं। विवाह सामान्यतः **मई-जून माह** में "**ककसाड़ त्यौहार**" के पश्चात किया जाता है। इस जनजाति में **वधूमूल्य प्रथा** प्रचलित है, जिसके अंतर्गत विवाह के समय वर पक्ष द्वारा वधू पक्ष को **रुपये**, **शराब**, **कोसरा** (बाँस की बनी टोकरियाँ), **अनाज**, **मुर्गा**, **दो कपड़े**, **तलदोया** (पगड़ी) और **पिंगोड़ गेतलांग** (गहने) दिए जाते हैं। समाज में **सहमति विवाह** को प्राथमिकता दी जाती है। जीवनसाथी चुनने के लिये कई प्रकार की विवाह पद्धतियाँ अपनाई जाती हैं, जैसे— **लमसेना विवाह** (लामडे वायता) **विनियम विवाह** (कोविडिदांग) **पलायन या प्रेम विवाह** (गोचूट वायता), **अपहरण विवाह** (पोयस तनाना) — लड़की को जबरन ले जाकर विवाह करना **हठ विवाह** (ओड़ी वायता) **पुनर्विवाह**
- **लोक-नृत्य** : अबूझमाड़िया जनजाति के स्त्री-पुरुषों को **नाच-गान का विशेष शौक** होता है। ये लोग विभिन्न **मेला, मड़ई**, और **तीज-त्यौहारों** में उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं। इन अवसरों पर युवक-युवतियाँ अपने रीति-रिवाजों और सांस्कृतिक परंपराओं के अनुसार लोकनृत्य और गायन प्रस्तुत करते हैं। इनके लोकनृत्य और गीतों में विविध वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया जाता है, जैसे— **ढोल**, **मांदर**, **बांसुरी**, **नगाड़ा**, और **तुड़बुड़ी**। इन वाद्य यंत्रों की धुन पर यह समुदाय **गेड़ी नाच**, **काक्सर**, और **रिलों नृत्य** करते हैं,
- **मृत्यु संस्कार** : अबूझमाड़िया जनजाति में किसी व्यक्ति की मृत्यु होने पर अंतिम संस्कार के दो तरीके प्रचलित हैं— **दाह संस्कार** और **दफ़नाना**। यदि मृत्यु **प्राकृतिक रूप से** हुई हो, तो शव को **दफ़नाया** जाता है। लेकिन यदि मृत्यु **अप्राकृतिक कारणों** से हुई हो, जैसे— दुर्घटना, गंभीर बीमारी या वन्य प्राणी के हमले से, तो शव का **दाह संस्कार** किया जाता है। मृत्यु के कुछ समय बाद, मृतक की स्मृति में एक **मृतक स्तंभ** स्थापित किया जाता है, जिसे स्थानीय भाषा में "**हनालगट्टा**" कहा जाता है। यह स्तंभ मृतक के गोत्र के अनुसार निर्धारित भूमि पर स्थापित किया जाता है। अबूझमाड़िया समुदाय का विश्वास है कि मृतक पूर्वजों के स्तंभों का **आकार समय के साथ बढ़ता** है।

17.2 अगरिया जनजाति



अगरिया जनजाति एक पितृवंशीय, पितृसत्तात्मक और पितृनिवास पर आधारित जनजाति है। यह जनजाति मुख्य रूप से भारत के छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और झारखंड राज्यों में निवास करती है।

अगरिया जनजाति की दो प्रमुख उपजातियाँ होती हैं – **पथरिया अगरिया** और **खुटिया अगरिया**।

- **पथरिया अगरिया** : वे लोग होते हैं जो लोहे को पत्थर पर रखकर हथौड़ी से पीटते हैं और उससे औजार बनाते हैं।
- **खुटिया अगरिया** : वे होते हैं जो लोहे को खूंटी (लोहे की छड़) पर रखकर गर्म करते हैं और फिर उसे पीटकर औजार तैयार करते हैं।

सरगुजा क्षेत्र में इन्हें **असुर अगरिया** भी कहा जाता है। अगरिया जनजाति पारंपरिक रूप से लोहे के औजार बनाने के कार्य में निपुण मानी जाती है, जो उनकी विशेष पहचान भी है।



मध्यप्रदेश की गोंड जनजाति और उनकी उपजातियों में आस्था केंद्रों पर दीप जलाने की परम्परा है। हिरनौटी दीया दीपक का एक प्रकार है,जो अगरिया जनजाति के द्वारा बनाया जाते है। मध्य प्रदेश में जनजती संग्राहलय के बाहर इनकी एक सुंदर झांकी प्रदर्शित की गयी है।

- **अगरिया जनजाति का इतिहास** : अगरिया जनजाति के बारे में कोई ठोस ऐतिहासिक प्रमाण नहीं मिलता, लेकिन लोककथाओं के अनुसार इसे गोंड जनजाति की एक उपजाति माना जाता है, जो गोंडों से अलग होकर विकसित हुई।

  कहा जाता है कि गोंड जनजाति में दो भाई रहते थे, जो कंदमूल संग्रह और शिकार के माध्यम से अपनी आजीविका चलाते थे। एक दिन दोनों भाइयों में किसी बात को लेकर झगड़ा हो गया। झगड़े के बाद एक भाई घर छोड़कर जंगल की ओर चला गया और वहाँ एक झोपड़ी बनाकर रहने लगा। रात में भूख लगने पर उसने आग जलाई और कंदमूल खोजने की कोशिश की, ताकि उन्हें भूनकर खा सके। लेकिन उसे कुछ भी खाने को नहीं मिला। भूख, गुस्से और निराशा में उसने पास पड़े एक पत्थर को आग में डाल दिया और वहीं सो गया।

  सुबह जब वह उठा, तो उसने देखा कि वह पत्थर लोहे का अयस्क था, जो आग में पिघलकर लोहा बन गया था। यह देखकर उसने लोहे को पिघलाने और ढालने की प्रक्रिया को समझ लिया। इसके बाद उसने इसे ही अपनी आजीविका का साधन बना लिया। तभी से उसके वंशजों को **अगरिया** के नाम से जाना जाने लगा। यह कथा अगरिया जनजाति के उद्भव और उनके पारंपरिक लौह शिल्प कौशल की शुरुआत को दर्शाती है।

- **अगरिया जनजातियों का व्यवसाय** : अगरिया जनजाति का मुख्य व्यवसाय **लोह अयस्क से लोहा बनाना** होता है। यह कार्य पारंपरिक तरीके से किया जाता है। पहले लोह अयस्क को कोयले के साथ मिलाकर मिट्टी से बनी लगभग 3 से 4 फीट ऊँची भट्टी में डाला जाता है। फिर उस भट्टी के नीचे आग जलाकर उसे गर्म किया जाता है। इस प्रक्रिया में महिलाये चमड़े की बनी **धौंकनी** पर खड़ी होकर अपने पैरों से दबाकर हवा देती हैं, जिससे आग तेज जलती है और अयस्क पिघलकर लोहा अलग हो जाता है। इसके बाद उसी लोहे से कई उपयोगी वस्तुएँ तैयार की जाती हैं, जैसे— कुल्हाड़ी, फावड़ा, हंसिया, कुदाली, तीर की नोक आदि। ये वस्तुएँ या तो रुपये के बदले या स्थानीय निवासियों से अन्न के बदले दी जाती हैं। इसके अतिरिक्त, अगरिया जनजाति के जिन लोगों के पास खेती योग्य भूमि होती है, वे उसमें कोदो, कुटकी, मक्का, उड़द और मूँग जैसी फसलें बोते हैं। यह जनजाति जंगलों से **तेंदूपत्ता**,**महुआ**, **गुल्ली** और **कंदमूल** भी एकत्र करती है। बरसात के मौसम में वे अपने भोजन के लिये **मछली पकड़ने** का कार्य भी करते हैं।



- **अगरिया जनजातियों का महत्वपूर्ण त्यौहार** : नवाखानी, दशहरा, होली, करमा पूजा आदि
- **लोकगीत एवं लोकनृत्य** :
  - **लोकगीत-** करमा गीत, ददरिया, सुवा गीत, विवाह गीत, फाग आदि प्रमुख है।
  - **लोकनृत्य-** करमा नृत्य, दिवाली में पड़की एवं विवाह में विवाह नृत्य प्रमुख है।

> कौन-सी जनजाति 'लोहासुर' को अपना देवता मानती है? [MPPSC (Civil Main) GS-I 2016 | 3 M]

- **अगरिया जनजातियों के देवी-देवता** : अगरिया जनजाति के प्रमुख देवी-देवताओं में **बूढ़ा देव**, **लोहासुर**, **ठाकुर देव**, **दूल्हा देव**, **शीतला माता**, **बाघ देव**, **जोगनी** और **घुरलाघाट** शामिल हैं। इन देवताओं के अतिरिक्त, यह जनजाति हिंदू धर्म के देवी-देवताओं में भी आस्था रखती है और उनकी पूजा करती है।अगरिया समुदाय के लोग कई बार **काले जादू**, **टोना-टोटका**, **भूत-प्रेत** और **अंधविश्वास** पर भी विश्वास करते हैं। इनका धार्मिक जीवन परंपराओं और लोक मान्यताओं से गहराई से जुड़ा होता है। **दशहरा** के दिन यह समुदाय विशेष रूप से **लोहासुर** देवता को **काले मुर्गे की बलि** अर्पित करता है, जिसे वे एक पवित्र धार्मिक कृत्य मानते हैं।
- **अगरिया जनजातियों का विवाह** : अगरिया जनजातियों का विवाह ढुकू (घुसबैठ) व उढ़रीया (सहपालयन) कुछ सामाजिक दंड लेकर विवाह के रूप में मान्यता दी जाती है। विधवा, पुनर्विवाह होता है।

17.3 भिम्मा जनजाति

भिम्मा जनजाति संख्या की दृष्टि से अत्यल्प है, भिम्मा पांडुलिपि के अनुसार 1980 में मण्डला और डिण्डोरी जिलों में भिम्माओं की संख्या मात्र 181 थी। भिम्मा एक अज्ञान (सीधी, सरल) जनजाति है। मध्यप्रदेश के **मण्डला** और **डिण्डोरी** जिलों में निवास करती है।

- **उत्पत्ति** : प्राचीन समय की बात है, जब वर्षा नहीं हो रही थी। चारों ओर सूखा पड़ गया था और फसलें नष्ट हो चुकी थीं। गोंड ठाकुर खेती के लिये पानी को तरसने लगे थे। वे जानते थे कि वर्षा कराने वाले देवता **भीमसेन** हैं और उन्हीं की कृपा से पानी बरसता है। परंतु इस बार भीमसेन देवता नाराज़ हो गये थे। गाँव में वर्षा के लिये **भीम पूजा** का आयोजन करने की तैयारी की गई। उसी गाँव में **मूमा** नाम का एक गोंड बालक रहता था, जिसे संगीत का बहुत शौक था। जब मूमा ने **तूमा बाजा** लेकर गीत गाना शुरू किया, तो उसकी पत्नी भी उसके साथ नाचने लगी। उन्हें देखकर गाँव के अन्य युवक भी तूमा लेकर मैदान में आ गये और बाजा बजाने लगे। युवतियाँ भी उनके साथ नाचने लगीं। देखते ही देखते मैदान में एक आनंददायक सभा जम गयी। थोड़ी ही देर में आकाश में बादल घिरने लगे और तेज़ रफ्तार से वर्षा होने लगी। इस प्रकार भीमसेन की पूजा पूरी हुई और गाँव को वर्षा मिली।

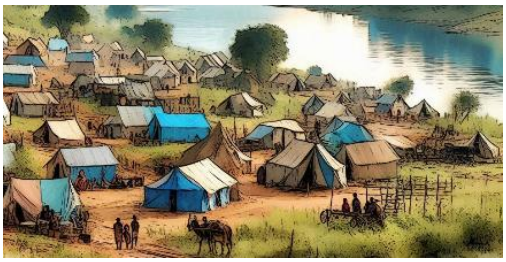


- **वेशभूषा और श्रृंगार** : भिम्मा जाति के पुरुष प्रायः कमीज, बंडी, कुर्ता, जैकेट और धोती पहनते हैं। ये लोग अपने दाहिने कान के ऊपरी भाग को छिदवाकर उसमें सोने का एक छोटा छल्ला पहनते हैं, जिसे "**उतरना**" कहा जाता है। भिम्मा पुरुष अपने शरीर पर बहुत अधिक गोदना नहीं गुदवाते। वे प्रायः दायीं या बायीं कलाई पर अपना नाम, किसी देवता का नाम या बिच्छू का चित्र गुदवाते हैं। भिम्मा जाति की महिलाये पुरुषों की अपेक्षा अधिक श्रृंगारप्रिय होती हैं। वे साड़ी और पोलका पहनती हैं। प्रायः हर स्त्री के पास कम से कम दो साड़ियाँ और दो पोलके अवश्य होते हैं।महिलाये अपने कानों में झुमका, भुजाओं में बहुंटा, हाथों में छन्नी, और गले में छूटा या मूंगे की माला पहनती हैं। यही इनके प्रमुख आभूषण होते हैं। भिम्मा महिलाये भी गोदना गुदवाना पसंद करती हैं, परंतु अन्य आदिवासी महिलाओं की तरह पूरे शरीर पर गोदना नहीं गुदवातीं। वे केवल माथे पर बिंदी के स्थान पर, गाल और ठोड़ी पर एक-एक गोदने का निशान बनवाती हैं। इसके अलावा, कुछ महिलाये नाक में भी गोदना करवाती हैं। कलाई, भुजा और हाथ के पंजों पर भी थोड़ा-थोड़ा गोदना गुदवाया जाता है।



- **आवास या निवास स्थान** : भिम्मा जाति एक निराश्रित जनजाति है। इनके पास न तो अपने गाँव होते हैं और न ही स्थायी घर। वे अधिकतर दूसरों के घरों में रहते हैं। वर्ष के लगभग आठ माह तक वे अपनी *मंगेतरी यात्रा* पर होते हैं और इधर-उधर भटकते रहते हैं। इस दौरान जो इनके डेरे होते है उन्हे **खेत** कहा जाता है।

जब वर्षा ऋतु का आगमन होता है, तो वे उन गाँवों की ओर लौटते हैं जहाँ उन्हें किसानों से आश्रय मिलता है। ये वही गाँव होते हैं जहाँ वे वर्षा ऋतु के चार महीने, जिन्हें *चौमासा* कहते हैं, बिताते हैं। ये प्रायः गोंड या ठाकुर समुदाय के घर होते हैं, जो पहले से उनसे जुड़े रहते हैं। भिम्मा जाति के लोग चौमासे भर उन घरों में रहकर कृषि संबंधी मजदूरी करते हैं।



- **भिम्मा के देवता और उनकी पूजा** : भिम्मा जनजाति का मुख्य देवता बारापेन (जिसे "बड़ा देव" या महादेव भी कहा जाता है) है। यह समुदाय मानता है कि उनकी उत्पत्ति बारापेन से हुई है और मृत्यु के पश्चात आत्मा पुनः उसी में लीन हो जाती है।

  बारापेन की पूजा सामान्यतः 5 वर्ष, 6 वर्ष या 12 वर्ष के अंतराल पर की जाती है। हालाँकि, प्रतिवर्ष जेठ महीने में भी वे बारापेन की पूजा करते हैं, जो "छोटी पूजा" कहलाती है।

  बारापेन के अलावा भिम्मा जनजाति के अन्य देवी-देवताओं में नारायण देव, दूल्हा देव, पुरखा देव, रात माई और शीतला माई प्रमुख हैं।

ठर्रा

भिम्मा अपने हाथ में "ठर्रा" देते हैं। दीवाली की रात में खरगोश की वीट को अपने दायें या बायें हाथ की कलाई पर रखकर उसमें आग लगाते है। आग जलने पर कलाई का वह हिस्सा जल जाता है । वहां दाग उभर आता है। इसे ही ठर्रा कहते है।

- **शादी/ विवाह** : मंडला के अन्य आदिवासियों में जितने प्रकार के विवाह प्रचलित है, भिम्मा जनजाति में उतने ही प्रचलित है। **जैसे – चढ़ विवाह, लमसना विवाह , पैठुल (करेली) विवाह ,विधवा को चूड़ी पहनाना, बहु विवाह आदि।**
- **मृत्यु संस्कार** : भिम्मा जनजाति में मृत्यु के पश्चात मृतक का अंतिम संस्कार **दफनाने** की परंपरा के अनुसार किया जाता है। मृत्यु से पहले, यदि संभव हो, तो व्यक्ति को **चाँदी के सिक्के** पर थोड़ा सा **दूध-भात** या **दही-शक्कर** खाने को दिया जाता है। इस क्रिया को "**सामरा खिलाना**" कहा जाता है।

  भिम्मा जनजाति का विश्वास है कि यह भोजन माया से अंतिम छुटकारा दिलाता है और अगले जन्म में उसी को भोजन रूप में प्राप्त होता है। उनका मानना है कि इस प्रकार का अंतिम भोजन अगले जन्म में व्यक्ति को **धनवान** बनाता है।

17.4 कोरबा जनजाति

कोरबा जनजाति मूलतः छोटे नागपुर क्षेत्र (जो वर्तमान में छत्तीसगढ़ का हिस्सा है) से आयी मानी जाती है। वर्तमान में यह जनजाति मुख्य रूप से छत्तीसगढ़ के **बिलासपुर**, **रायगढ़** और **सरगुजा** जिलों में निवास करती है। इसके अलावा, यह मध्य प्रदेश के छत्तीसगढ़ से लगे सीमावर्ती जिलों में भी पायी जाती है। कोरबा जनजाति मुख्यतः **धातु गलाने** का कार्य करत है। पर्वतीय क्षेत्रों में निवास करने वाले कोरबा को "**पहाड़ी कोरबा**" कहा जाता है, जबकि मैदानी क्षेत्रों में रहने वाले कोरबा "**डीह कोरबा**" कहलाते हैं।



- पहाड़ी कोरबा, मध्य प्रदेश की आदिम जनजातियों में से एक हैं, जिनका जीवन-स्तर आज भी बहुत प्रारंभिक अवस्था में है। यह उनकी दैनिक जीवनशैली में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। वे शारीरिक स्वच्छता से बहुत दूर हैं। उनके सिर के बाल मैल के कारण रस्सी जैसी जटाओं में बदल जाते हैं। महिलाये गंदे और मैले कपड़े पहनती हैं और शरीर पर मैल की परत जमी रहती है।
- कोरबा समाज में "**मांझी**" एक सम्मानजनक पदवी मानी जाती है। इनकी अपनी पंचायत होती है जिसे "**मैयारी**" कहा जाता है। पंचायत का संचालन गाँव के कोरबा समुदाय द्वारा किया जाता है, जिसमें एक प्रमुख व्यक्ति होता है जिसे "**मुखिया**" कहा जाता है। पंचायत में गाँव के बुजुर्ग और समझदार लोग सदस्य के रूप में शामिल होते हैं।
- कोरबा जनजाति में "**धुकू विवाह**" नामक परंपरा प्रचलित है। इस प्रथा के अंतर्गत कोई युवक और युवती बिना विधिवत विवाह किये साथ रह सकते हैं। "धुकू" शब्द का अर्थ होता है

मैयारी क्या है ?? [MPPSC (Civil Main) GS-II 2020 | 3 M]

"**ढुकना**" या "**घुसना**"। जब कोई युवती बिना शादी किये किसी पुरुष के घर में जाकर रहने लगती है, तो उसे "**ढुकनी**" कहा जाता है और पुरुष को "**धुकू**"। ऐसे जोड़ों को समाज में मान्यता तो मिलती है, लेकिन ढुकनी महिलाओं को **सिंदूर लगाने की अनुमति नहीं** होती है।

17.5 हल्बा जनजाति

मध्यप्रदेश के बालाघाट***, लांजीगढ़, छिंदवाड़ा, सिवनी और मंडला जिलों के कुछ क्षेत्रों में निवास करती है। इसके अलावा, यह जनजाति छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र और ओडिशा राज्यों में भी पाई जाती है। हल्बा एक मिश्रित जनजाति मानी जाती है, जो गोंड और हिंदू समुदाय के मेल से उत्पन्न हुई है। "हल्बा" शब्द की उत्पत्ति "**हल**" शब्द से मानी जाती है, जो कृषि कार्यों से जुड़ा हुआ है। बीजापुर क्षेत्र के हल्बा लोग यह मान्यता रखते हैं कि उनके पूर्वज **राजा अनाम देव** थे, जो वारंगल से आए थे।

हल्बा जनजाति के लोग **हल्बी भाषा** बोलते हैं। यह जनजाति मुख्यतः कृषि कार्यों में संलग्न रहती है, इसलिये इसे **कृषि समुदाय** के रूप में जाना जाता है।

17.6 कंवर जनजाति

कंवर जनजाति महानदी के उत्तरी पहाड़ी क्षेत्रों में निवास करती है। इसकी उत्पत्ति महाभारत काल के कौरव वंश से मानी जाती है। ऐसी मान्यता है कि जब कौरवों को पांडवों ने हस्तिनापुर के युद्ध में पराजित किया, तो वे पहाड़ों में बस गये। 'कंवर' शब्द को 'कौरव' का विकृत रूप माना जाता है। **रसेल और हीरालाल** के अनुसार, इस जनजाति को विभिन्न नामों से जाना जाता है जैसे— **कंवर**, **कवर**, **कौर** और **सिरदार** (जो एक सम्मानसूचक शब्द है)। यह जनजाति कई अंतर्विवाही समूहों में विभाजित है, जिनमें प्रमुख हैं— **कमलवंशी**, **राठिया**, **पैकरा**, **दूध कंवर**, **चेरवा**, **चांटी**, **रोतिया**, **तंवर** और **बैराग**।

कंवर जनजाति के लोग देखने में गौड़ों के समान होते हैं— इनका रंग गहरा काला, मुख चौड़ा, नाक चपटी और होंठ मोटे होते हैं। फिर भी इन्हें अन्य जनजातियों की तुलना में बेहतर माना जाता है। ये लोग स्वच्छता में विश्वास रखते हैं और अपने घरों को साफ-सुथरा बनाये रखते हैं।

> महाभारत युद्ध के बाद, कौरव वंश की दो गर्भवती स्त्रियाँ बचकर जंगलों में भाग गयी। उनमें से एक ने पुत्र और दूसरी ने पुत्री को जन्म दिया, जिन्हें कंवर जनजाति के पूर्वज माना जाता है। दंतकथाओं के अनुसार, गर्भवती कौरव स्त्री को एक बैरागी साधु ने शरण दी। उसी से "बैरागी कंवर" नाम की उत्पत्ति हुई।
>
> कंवर जनजाति महाभारत के नायक श्रीकृष्ण को पूजती है और उनकी स्त्रियाँ छाती पर कृष्ण का चित्र गुदवाती हैं। कवर जनजाति पण्डो जनजाति को अपना शत्रु मानती है।

▷ **प्रमुख विशेषताएँ** :

- यह जनजाति **मध्यप्रदेश** और **छत्तीसगढ़** के सीमावर्ती जिलों में निवास करती है।
- अविभाजित मध्यप्रदेश में यह जनजाति **तीसरी सबसे बड़ी जनजाति** थी।
- वर्तमान में यह **शहडोल जिले** में भी पाई जाती है।
- कंवर जनजाति में अंतिम संस्कार **हिंदू प्रथाओं** के अनुसार किये जाते हैं।
- इस जनजाति के पंचायत प्रमुख को **गौंटिया** कहा जाता है, जो आमतौर पर सैन्य कार्यों में भी सक्रिय होता है।
- ये लोग **सगराखण्ड देवता** की पूजा करते हैं।
- **'बार नृत्य'** इस जनजाति का पारंपरिक लोकनृत्य है, जिसे वे मनोरंजन के अवसरों पर करते हैं।

17.7 पनिका जनजाति

पनिका अथवा परिका जनजाति मध्य प्रदेश के सीधी और शहडोल जिलों में पाई जाती है। यह जनजाति द्रविड़ प्रजाति की सदस्य मानी जाती है। पनिका जनजाति के प्रमुख उपवर्ग हैं: **शक्ति**, **साकेत**, **पनिका** और **कबीर पंथी**। पनिका समुदाय की मान्यता है कि संत कबीर का जन्म जल में हुआ था और उनका पालन-पोषण एक पनिका महिला द्वारा किया गया था। इसी कारण ये लोग कबीर के अनुयायी होते

हैं और स्वयं को "**कबीरहा**" कहलाना पसंद करते हैं। पनिका जाति वस्त्र निर्माण के कार्य में संलग्न रहती है, इसी कारण इन्हें "**बुनका**" भी कहा जाता है। इनका आर्थिक जीवन मुख्यतः **कृषि** पर आधारित होता है। ये लोग **कुशल आखेटक** (शिकारी) भी होते हैं। इनका मुख्य भोजन है: **पेज**, **उड़द**, **मूंग** और **चावल**। कबीरहा लोग **मांस और मदिरा का सेवन नहीं करते** तथा संत कबीर की तरह **निर्गुण विचारधारा** के उपासक होते हैं। पनिका जनजाति की अपनी एक पंचायत होती है, जो गाँव के सभी विवादों के निपटारे के लिये उत्तरदायी मानी जाती है।



17.8 खैरवार जनजाति



मध्य प्रदेश की **खैरवार जनजाति**, जो मुख्य रूप से **पूर्वी एवं उत्तरी मध्य प्रदेश** के जिलों में निवास करती है, की पूरी अर्थव्यवस्था और जीवन पद्धति **खैर** या **कत्थे** के वृक्षों पर आधारित रही है।, खैर वृक्ष से **कत्था** निकालने के कार्य में लगे रहने के कारण इस जनजाति को **खैरवार** कहा गया। स्थानीय भाषा में इन्हें **खैरूआ** भी कहा जाता है। इस जनजाति का प्रमुख वितरण **उमरिया**, **सीधी**, **अनूपपुर** तथा **शहडोल** जिलों में पाया जाता है।

- खरियागढ़ (कैमूर पहाड़ियों) को यह अपना मूल निवास स्थान मानते है ।
- पन्ना छतरपुर में इन्हें **कोंदार** कहा जाता है।

17.9 उरांव जनजाति

मध्य प्रदेश के सीधी, सिंगरौली, अनूपपुर और शहडोल जिलों में निवास करने वाली **उरांव जनजाति** की उत्पत्ति **द्रविड़ समुदाय** से मानी जाती है। यह जनजाति मुख्यतः छत्तीसगढ़ राज्य में निवास करती है। उरांव लोग दक्षिण भारत से आए थे। इनका प्रमुख कार्य **खेती और मज़दूरी** रहा है। इनके गाँव का मुखिया "**महतो**" कहलाता है, जबकि धार्मिक कार्यों के लिये पुरोहित को "**बैगा**" कहा जाता है।

समाज में विवादों को सुलझाने के लिये जनजाति की पंचायत "**परहा**" होती है जिसका प्रमुख "**परहा राजा**" होत है। उरांव जनजाति **ईसाई धर्म** को सबसे अधिक स्वीकार करने वाली जनजातियों में से एक मानी जाती है।

इनके प्रमुख पारंपरिक **गोत्रों** में **मिज**, **लकड़ा** और **केरकेट्टा** शामिल हैं। युवाओं के रहने और सामूहिक गतिविधियों के लिये बनाये गये भवन को "**धुमकोरिया**" कहा जाता है।

धाँगा प्रथा

यह प्रथा मध्यप्रदेश की हलमा प्रथा के समान है, जिसमें जनजाति वर्ग के लोग कृषि कार्यों में एक-दूसरे की सहायता करते हैं।- **भील -हलमा** , **उरांव – धाँगा**, **थारू – बांगा** , **भुमिजो -बागाल**

उरांव जनजाति **महादेव** की पूजा "**सरना**" नाम से करती है। इनके अनुसार, महादेव इनके सबसे बड़े देवता हैं। **साल पेड़ों के समूह** को स्थानीय भाषा में **सरना** कहा जाता है, और यही पूजा का प्रमुख स्थान होता है।

EXERCISE – 17

1. कंवार जनजाति म.प्र. के किस जिले में पाई जाति है। [MPPSC AM 2021]
(a) बालाघाट (c) सिंगरौली
(b) मण्डला (d) शहडोल

2. कौन-सी जनजाति वन्य प्राणियों के शिकार एवं अन्य अपराधों के लिये अधिक जानी जाती है [MPPSC Tax Assistant 2012]
(a) पारधी (c) कोरकू
(b) अगरिया (d) इनमें से कोई नहीं

3. कोरबा जनजाति की पंचायत को कहते है [MP Dairy Federation Exam 2016]
(a) मैयारी (c) रोकरी
(b) मैक्स (d) रासा

4. अबूझमारिया किसकी उपजाति है ? [MPPSC Forest (Main) 2024]
(a) गोंड (c) सहरिया
(b) बैगा (d) भील

5. अबूझमाड़िया जनजाति मध्यप्रदेश के किस जिले में पायी जाती है [MP Vyapam Labour Inspector Exam 2017]

(a) खंडवा
(b) रीवा
(c) इंदौर
(d) छिंदवाड़ा

6. हल्बा जनजाति का मुख्य निवास जिला है। [MP Dairy Federation Exam 2016]

(a) रीवा
(b) बालाघाट
(c) सीधी
(d) जबलपुर

7. 'ढुकु विवाह' किस जनजाति में प्रचलित है? [CGPSC Civil (Pre) 2020]

(a) पण्डो
(b) कोरवा
(c) मुरिया
(d) कमार

8. भिम्मा जनजाति के लोग मध्यप्रदेश के किन जिलों में निवास करते हैं? [MPPSC Civil / Forest (Prelim) 2024]

(a) बैतूल व छिंदवाड़ा
(b) मंडला व डिंडौरी
(c) रीवा व सतना
(d) सीधी व शहडोल

Hint : लोक सेवा आयोग द्वारा इस प्रश्न को विलोपित कर दिया गया है।

9. अगरिया जननाति अपने जाती है। [MPPSC Assistant Veterinary Surgeon 2023; MPPSC Principal Assistant Director (Technical) Exam 2023]

(a) सुपारी शिल्प
(b) काष्ठ शिल्प
(c) मृत्तिका शिल्प
(d) लौह शिल्प

10. अगरिया जनजाति का परम्परागत कार्य क्या है। [CGPSC (SEE) Exam 2016; CGPSC (Registrar) Exam 2021]

(a) लौह शिल्प
(b) काष्ठ शिल्प
(c) गोदना शिल्प
(d) बांस शिल्प
(e) इनमें से कोई नहीं

11. अगरिया जनजाति की मुख्य आजीविका क्या है? [MPPSC Forest (Main) 2021]

(a) लोहा गलाना
(b) खेती करना
(c) मछली पकड़ना
(d) कृषि उपकरण एवं औजार बनाना

12. मृतक स्तंभ स्थापित करने की परंपरा किस जनजाति की विशेषता है? [CGPSC (SEE) Exam 2016]

(a) माड़िया
(b) भतरा
(c) हल्बा
(d) उरांव
(e) इनमें से कोई नहीं

युवा गृह (घोटुल)

एक प्रकार के सामाजिक विश्वविध्यालय



जनजातीय समाज के सामने हमेशा से सबसे बड़ी चुनौती यह रही है कि वे अपनी आने वाली पीढ़ियों को अपने **सांस्कृतिक**, **धार्मिक**, **आर्थिक** और **सामाजिक मूल्यों** से कैसे जोड़े रखें। समुदाय के भीतर **सामूहिकता बनी रहे**, लोग **आपसी समन्वय के साथ रहें**, अपनी पसंद के जीवनसाथी और मित्रों का चयन कर सकें तथा **पूरे कबीले में एकजुटता बनी रहे**।

उस समय वन संसाधन ही जीविकोपार्जन का मुख्य स्रोत थे। ऐसी स्थिति में **सामूहिक जीवन ही उनकी असली शक्ति और पहचान** होता था। इन कठिन परिस्थितियों में अपनी युवा पीढ़ी को **सामाजिक दायित्वों, परंपराओं (रीति-रिवाजों), मान्यताओं** और अपने **इतिहास के प्रति जागरूक** बनाना उनके लिए अनिवार्य था। शायद इसी आवश्यकता से **'युवा गृह व्यवस्था'** की परंपरा जन्मी।



जनजाति परम्पराओं में जानकारी (*knowledge*) को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाने वाली यह **सहकारिता के सिद्धांत पर आधारित** संस्था (युवा गृह) विश्व की लगभग **प्रत्येक जनजाति समाज** में किसी न किसी रूप में विद्यमान है।

- युवागृह अंग्रेजी शब्द **डारमेट्री** (*Dormitory*) का हिन्दी रूपान्तर है।

युवागृह होता क्या है ?

यह कबीले के केंद्र या किनारे पर झाड़-फूस से बना एक गोलाकार, बड़े आकार का सामुदायिक हॉल होता था, जिसके साथ कुछ छोटी-छोटी झोपड़ियाँ भी जुड़ी हो सकती थीं। जनजातीय समूह के आकार और स्थान की उपलब्धता के अनुसार इनमें थोड़ी-बहुत भिन्नता हो सकती थी।

सामान्यतः रात्रिकालीन भोजन (*Diner*) करने के पश्चात् समुदाय के लगभग सभी **अविवाहित युवक** एवं **युवतियाँ** *** यहाँ एकत्र होते थे। वे आपस में खेलते, गीत-नृत्य करते, किस्से-कहानियाँ साझा करते, हास-परिहास द्वारा मनोरंजन करते और अपने दिनभर के अनुभवों का आदान-प्रदान करते थे कि किसने क्या किया, कहाँ क्या हुआ आदि।

- इसमें जोड़ों में रहने वाले युवकों को **'चेलक'**** और युवतियों को **'मोटियारी'**** कहा जाता था।
- चूँकि इस व्यवस्था को बनाए रखने और संचालित करने की जिम्मेदारी कबीले की होती थी, इसलिए कबीले की सभा किसी वृद्ध महिला या विधवा स्त्री को इसका संचालक नियुक्त कर देती थी, जो इस पूरी व्यवस्था को सुचारू रूप से चला सके।
- इस व्यवस्था के अंतर्गत युवाओं को एक साथ रहने, काम करने और मनोरंजन करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था। उन्हें अपने समुदाय के रीति-रिवाजों, परंपराओं और इतिहास के बारे में भी सिखाया जाता था।

बोली की विविधता के कारण यह संस्था **भोटिया** या **भारिया जनजाति** में **"रंगबंग"**, **ऊराँव** में **"धूमकुरिया"***, **मुण्डा** और **हो** में **"गतिओरा"***, **भुइयाँ** में **"धनगरवस्सी"***, तथा **मुरिया** और **गोंड** जनजाति में **"घोटुल"*** गारो में **"नोक-पाँते"** के नाम से जानी जाती है।

मध्यप्रदेश के आदिवासी जनजाति के युवागृह

जनजाति	युवागृह
मुडिया, गोंड	घोटुल
भुइयाँ	धागरबांसा
भारिया	रंग-बंग
उरांव	धुमकोरिया
मुण्डा	गतिओरा

कुछ जनजातियों में लड़कों और लड़कियों के युवा गृह अलग-अलग भी होते हैं, जैसे **कोयनक नागाओं** में लड़कों के युवागृह को **"मोरंग"**, और लड़कियों के युवागृह को **"यो"** नाम से जाना जाता है।

इसके उद्देश्य क्या थे ?

जनजातीय समाज के युवा-युवतियों को उनके **समाज की संस्कृति** तथा अन्य बातों में दीक्षित करने के लिए युवागृह की स्थापना की जाती थी। यह केवल **शयनगृह** और **यौन प्रशिक्षण का केन्द्र** ही नहीं थे, बल्कि इसकी सामाजिक भूमिका भी महत्वपूर्ण होती थी।

- युवागृह के सदस्य सामूहिक रूप से कार्य करते है, जिससे पारस्परिक स्नेह, सद्भावना और एकता की भावना को प्रोत्साहन मिलता है जो **"समाजवादी व्यवस्था"** के प्रतीक है।

- एक शैक्षणिक संस्था के रूप में युवागृह अपने सदस्यों को उनकी संस्कृति, परंपराओं, विश्वासों और जनजातीय नियमों के अनुसार व्यवहार करने पर बल देता है।
- यह अगली पीढ़ी तक **सांस्कृतिक धरोहर को पहुंचाने में सहायक** होता है। इसलिए इसे **सामाजिक शिक्षा का प्रमुख केंद्र** या **सामाजिक विश्वविद्यालय** कहा जाता है।
- इन संस्थायो में **प्रशिक्षण का कार्य, संस्था के संचालन का कार्य हम-उम्र साथियों** के द्वारा ही किया जाता है, जिसके माध्यम से जनजाति जीवन में **सहकारिता का प्रादुर्भाव** हुआ।

युवागृह का पतन

युवागृह (घोटूल) जनजातीय समाज के युवाओं की पाठशाला थी, जहाँ वे अपनी संस्कृति, सहकारिता, अनुशासन और आर्थिक क्रियाओं की शिक्षा लेते थे। यह स्थान न केवल उनके लिए एक शिक्षा केंद्र था, बल्कि समाज की एकता और सामूहिक निर्णय का प्रतीक भी था, क्योंकि यहाँ युवा और युवतियाँ एक साथ बैठकर गीत गाते, नृत्य करते और अपने पूर्वजों की कहानियाँ सुनते थे। घोटूल उनके लिए एक **पवित्र स्थान** था, जहाँ वे अपनी **पहचान और संस्कृति** को सीखते और सहेजते थे।

हालाँकि, कालांतर में घोटूल का स्वरूप बदला और यह स्थान अब केवल युवाओं की पाठशाला नहीं रहा, बल्कि इसे अतिथियों को ठहराने के लिये भी **अतिथि गृह** के रूप में इस्तेमाल किया जाने लगा। अब यह लोगों की **चौपाल** बन गया, जहाँ सामूहिक चर्चाएँ होती थीं।

उपनिवेश काल में जब **ईसाई मिशनरियों** और **अंग्रेज** अधिकारियों ने घने वन क्षेत्रों में प्रवेश किया। उन दिनों **घोटूल को अतिथि गृह के रूप में इस्तेमाल किया जाता था**, लेकिन यह समय घोटूल के लिए एक **अंधेरे दौर** की शुरुआत थी। अंग्रेज अधिकारी और ईसाई मिशनरी भोले-भाले आदिवासी लोगों को प्रलोभन देकर उनकी कन्याओं के साथ अनैतिक कार्य करने लगे, जिसके कारण **कन्याओं ने घोटूल में जाना बंद कर दिया**। धीरे-धीरे यह स्थान **अपनी पवित्रता खोने लगा** और लोगों ने इसे **हीन भावना** से देखना शुरू कर दिया।

इस प्रकार, घोटूल, जो कभी समाज की **गौरवशाली पाठशाला** थी, अब **उपेक्षा का शिकार** हो चुकी थी।

पतन के अन्य कारण

- मुख्य धारा के साथ संपर्क में आने से युवकों और युवतियों के लिए नये आमोद-प्रमोद केंद्र विकसित हो गये हैं।
- आधुनिक शिक्षा के प्रसार से युवागृह को पिछड़ेपन का प्रतीक मानने लगे हैं।
- अधूरे और अविकसित ज्ञान के कारण युवागृहों के विरुद्ध भ्रामक प्रचार हुआ। जैसे कि वरीयर एल्विन और कई पश्चिमी मानवशास्त्रियों ने इन्हें यौन क्रीड़ा के स्थल के रूप में परिभाषित कर भ्रम फैलाया।
- युवा सांस्कृतिक गतिविधियों में सक्रिय भाग न लेकर केवल मनोरंजन के उद्देश्य से वहाँ जाने लगे।

------- *Exercise* ------

1. निम्नलिखित में से किस विकल्प में जनजाति का नाम वहाँ प्रचलित युवा गृह के नाम से सुमेलित नहीं है। [MPPSC Forest (Main) Re-exam 2019]
(a) माडिया- घोटुल
(b) मुण्डा- गतिओरा
(c) भुइया- रंग भंग
(d) उरांव- धुमकोरिया

2. जनजातीय जीवन में गोटुल प्रतिनिधित्व करता है। [MPPSC Forest (Main) Re-exam 2019]
(a) क्षेत्रीय देवता का
(b) विवाह के स्वरूप का
(c) युवा संगठन का
(d) परम्परावादी नेता का

3. 'घोटुल प्रथा के बारे में निम्नलिखित में से सत्य कथन कौन सा है? [MPPSC Assistant Director Kisan Kalyan and Krishi Vikas 2019]
(a) घोटुल में सम्मिलित होने वाली लड़कियाँ मुटियारी' कहलाती हैं
(b) घोटुल में सम्मिलित होने वाले लड़के 'चेलिक कहलाते हैं
(c) वेरियर एल्विन ने 'घोटुल प्रथा' की विस्तृत विवेचना की है
(d) उक्त सभी कथन सत्य हैं

4. धुमकुरिया किस जनजाति का युवागृह है। [CGPSC Civil (Pre) 2018, 2019]
(a) नगेसिया
(b) कमार
(c) उरांव
(d) भैना

5. किस जनजाति के युवागृह को **'गीतुओना'** कहा जाता है? [CGPSC Civil (Pre) 2020]
(a) उराँव
(b) कमार
(c) बिरहोर
(d) बैगा

6. 'धुमकुरिया' निम्नलिखित में से किस जनजाति से संबंधित है? [CGPSC Asst. Geohydrologist, Geophysicist, Chemist 2019]
(a) उराँव
(b) कमार
(c) बैगा
(d) मुरिया

7. किस जनजाति में युवागृह को 'घोटुल' कहते है? [CGPSC (ADA) 2020; CG Vyapam (Sahayak parigojan Khetrapal) 2022; CGPSC (ECH) 2017; CGPSC (CMO) 2019]
(a) भतरा
(b) पहाड़ी कोरवा
(c) मुरिया
(d) बिरहोर

Answer-key : 1. (c), 2. (c), 3. (d), 4. (c), 5. (c), 6. (a), 7. (c)

CHAPTER 18

मध्यप्रदेश के लोकनृत्य एवं संगीत

मध्यप्रदेश का लोक संगीत एक बहुआयामी सांस्कृतिक परंपरा को दर्शाता है। इसमें वर्ष भर विभिन्न **उत्सवों, अनुष्ठानों, व्रत-उपवासों, मड़ई-मेले, पूजा-पाठ और प्रणय-बन्धनों** को लोकगीतों और संगीत के माध्यम से मनाया जाता है।

लोक जीवन में संगीत और नृत्य की गहरी भूमिका रही है। आदिकाल में जब मानव जीवन अत्यंत सरल था, वह पर्वतों और नदियों की घाटियों में रहता था। अनुकूल परिस्थितियों में वह आनंदित होता था, जबकि प्रतिकूल परिस्थितियों में दुःखी और शोकग्रस्त हो जाता था। उसके भीतर कभी **क्रोध, भय और उग्रता**, तो कभी **उल्लास, उमंग और कौतूहल** की भावनाएँ जन्म लेती थीं। इन भावनाओं को व्यक्त करने के लिए उसने पहले शारीरिक क्रियाओं का सहारा लिया, जो आगे चलकर **नृत्य, गीत और वाद्य यंत्रों** में परिवर्तित हो गयी।

संगीत और नृत्य की परंपराओं के आधार पर मध्यप्रदेश को चार भागों में विभाजित किया गया है, जो विभिन्न अंचलों की लोक संस्कृति और सांगीतिक विविधता को दर्शाते हैं।

1.	मालवा	उज्जैन एवं भोपाल संभाग (भोपाल, राजगढ़ एवं सीहोर)
2.	निमाड़	इन्दौर संभाग
3.	बुन्देलखण्ड	सागर, ग्वालियर, चम्बल संभाग
4.	बघेलखण्ड	रीवा, महाकौशल(जबलपुर) संभाग

मध्यप्रदेश के लोक संगीत को सांस्कृतिक और राष्ट्रीय चेतना के स्तर पर अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा दिलाने में **पद्मश्री शेख गुलाब** और **पद्मश्री हबीब तनवीर** का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। सन् 1958 में हबीब तनवीर ने "**नया थियेटर**" की स्थापना की। उन्होंने छत्तीसगढ़ अंचल के लोक कलाकारों को साथ लेकर लोक रंगमंच को एक नई दिशा दी। उनके प्रयासों से न केवल क्षेत्रीय लोक संस्कृति को मंच मिला, बल्कि देश-दुनिया में इसे पहचान भी प्राप्त हुयी।

18.1 लोक नृत्य

लोक नृत्य प्रकृति की एक अनोखी देन है। इसे प्रकृति-दर्शन का दूसरा नाम भी कहा जाता है। भारतीय परंपरा के अनुसार, **नटराज शिव** को नृत्य कला का आदि स्रोत माना जाता है। नृत्यकला के दो प्रमुख रूप—**तांडव** और **लास्य**—भगवान शिव तथा माता पार्वती की देन माने जाते हैं।

लोक मान्यताओ में भगवान शंकर और माता पार्वती को प्रकृति का प्रतीक माना जाता है। इसलिए लोक नृत्य को भी प्राकृतिक उपज के रूप में देखा जाता है। भगवान शिव के तांडव नृत्य के अवलोकन से अनेक लोक नृत्यों की **पदचालें** जैसे—**सैला**, **झूमर**, **लहकी**, **सजनी** आदि रूप में दिखायी देती हैं। इससे सिद्ध होता हैं कि "तांडव" स्वयं लोक नृत्य का ही एक आदिम रूप है।

मध्य प्रदेश में विविध प्रकार के लोक नृत्य प्रचलित हैं। अध्ययन की दृष्टि से, इन लोक नृत्यों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है—**जन-जातीय नृत्य**, **क्षेत्रीय नृत्य**

मध्यप्रदेश के जन- जातीय लोक नृत्य



▶ माड़िया/ मुरिया जनजाति के लोक नृत्य

- **गवर नृत्य** : गवर नृत्य को "**सींग नृत्य**" या "**बाइसन हार्न माड़िया नृत्य**" के नाम से भी जाना जाता है। यह नृत्य मुख्य रूप से छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले के दक्षिणी भाग में निवास करने वाली माड़िया जनजाति द्वारा किया जाता है।
  जब खेतों से फसल कटकर खलिहान में पहुँचती है, तब इस अवसर पर फसल

की चढ़ौती दी जाती है। उसी समय पारंपरिक रूप से गवर नृत्य का आयोजन होता है।

- **करमा नृत्य** : घोटुल के प्रांगण में उत्सव और उल्लास के अवसर पर नृत्य आयोजित किया जाता है। यह नृत्य आमतौर पर दो पंक्तियों में, आमने-सामने खड़े होकर किया जाता है। इसमें प्रायः केवल लड़के और लड़कियाँ ही भाग लेते हैं। नृत्य विशेष प्रकार के दो-पंक्ति वाले गीतों पर आधारित होता है, जिन्हें प्रश्नोत्तर शैली में गाया जाता है। इन गीतों के माध्यम से सामाजिक व्यवहार, प्रेम, हास्य और व्यंग्य जैसे विषयों को प्रस्तुत किया जाता है।
- **हुलकी नृत्य** : **हुलकी नृत्य** भी जनजाति का एक प्रमुख नृत्य है। इसमें लड़के और लड़कियाँ मिलकर समूह में नाचते हैं।
- **माँदुरी नृत्य** : माँदुरी नृत्य एक पारंपरिक जनजातीय नृत्य है, जिसमें **माँदुरी** नामक लोक वाद्य यंत्र प्रमुख होता है। माँदुरी लकड़ी से बनी होती है और इसका आकार ढोलक के समान होता है। यह एक पुरुष प्रधान नृत्य है। इस नृत्य में प्रत्येक नर्तक के गले में माँदुरी बंधी रहती है। वे उसे बजाते हुए गोल घेरे में नृत्य करते हैं। नर्तकगण विभिन्न तालों पर माँदुरी बजाते हैं और भिन्न-भिन्न गतियों के साथ नाचते हैं।

▶ गोंड़ जनजाति के लोक नृत्य

- **करमा नृत्य** : मानव जीवन का मूल आधार "**कर्म**" है। श्रीकृष्ण ने भी पवित्र **गीता** में कहा है — *"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन"*, जिसका तात्पर्य है कि मनुष्य का अधिकार केवल कर्म करने में है, फल की चिंता किए बिना।
  इसी कर्म की भावना को व्यक्त करता है **करमा नृत्य**, जो श्रम और साधना की सुंदर प्रस्तुति है। यह नृत्य मुख्य रूप से **गीत-प्रधान** होता है और गोंड़ आदिम जनजाति का एक प्रमुख **लोक नृत्य** माना जाता है। करमा गीतों में **श्रृंगार**, **श्रम**, **कर्म**, **प्रकृति-सौंदर्य** और **आराधना** की झलक स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। ये गीत न केवल मनोरंजन का माध्यम होते हैं, बल्कि गोंड़ जनजाति की **संस्कृति**, **कला**, और **जीवन-दर्शन** को भी जीवंत रूप में प्रस्तुत करते हैं। मध्यप्रदेश प्रदेश में **करमा नृत्य** विभिन्न शैलियों में देखने को मिलता है। यद्यपि यह नृत्य मूल रूप से **गोंड जनजाति** का पारंपरिक लोक नृत्य है, फिर भी **भुइंहार**, **बैगा**, **उराँव**, **कोरकू**, **देवार** आदि अन्य आदिवासी समुदाय भी अपने कुछ लोक नृत्यों को करमा नृत्य के रूप में प्रस्तुत करते हैं। करमा को मध्यप्रदेश में **लोक नृत्यों का राजा** कहा जाता है। यह नृत्य न केवल गोंड संस्कृति का प्रतीक है, बल्कि समुदाय के बीच **मैत्री, सहयोग और सामूहिकता** की भावना को भी बढ़ावा देता है। **करमा नृत्य** में प्रमुख लोक वाद्य **माँदर** होता है, जिसे लोक वाद्यों का राजा माना जाता है। इसके अलावा **टिमकी** जैसे अन्य वाद्य भी इस नृत्य में प्रयुक्त होते हैं।
- **सैला नृत्य** :"सैल" या "शैल" शब्द का अर्थ होता है—पर्वत। "सैला" एक पारंपरिक पर्वतीय नृत्य है, जो विशेष रूप से विंध्य और सतपुड़ा वन क्षेत्रों में निवास करने वाली गोंड जनजाति का प्रमुख **वीर नृत्य** माना जाता है। इस नृत्य में पर्वत जैसी दृढ़ता, साहस, बल, ऊर्जा और वीरता की झलक स्पष्ट रूप से दिखायी देती है। सैला नृत्य में पद संचालन, हाथों की मुद्राएँ और पैंतरों में वीरता के गुण भरे होते हैं। नर्तकगण नृत्य करते समय अपने हाथों में लकड़ी से बने अस्त्र-शस्त्र जैसे—लाठी, भाला, तलवार, बंदूक या लंबे-लंबे डंडे रखते हैं, और युद्ध की विभिन्न कलाओं का प्रदर्शन करते हुए नृत्य करते हैं। यह नृत्य केवल **पुरुषों द्वारा** किया जाता है
- **रीना नृत्य** : मध्यप्रदेश के विंध्याचल और सतपुड़ा पर्वतों के पूर्वी भाग में निवास करने वाली **गोंड जनजाति** का एक प्रमुख पारंपरिक नृत्य **"रीना नृत्य"** है। यह नृत्य मुख्य रूप से **दीपावली** के बाद **शीत ऋतु** में किया जाता है। वास्तव में, **सैला नृत्य** और **रीना नृत्य** एक-दूसरे के पूरक माने जाते हैं। जिस गाँव में पुरुष सैला नृत्य करते हैं, वहीं उसी समय आसपास की महिलाएँ रीना नृत्य करती हैं। जब तक सैला नृत्य चलता है, तब तक रीना नृत्य भी पूरे उत्साह और उल्लास के साथ चलता रहता है। रीना नृत्य में भी, सैला नृत्य की तरह, **"गिरदा उत्सव"** की परंपरा प्रचलित है।
- **गिरदा उत्सव** : गोंड जनजाति के पारंपरिक उत्सवों में **गिरदा उत्सव** का विशेष महत्त्व है। इस उत्सव में गोंड समुदाय पूरे उत्साह, उमंग और सामाजिक उल्लास के साथ **सैला लोकनृत्य** का वार्षिक आयोजन करता है। यह आयोजन न केवल मनोरंजन का माध्यम होता है, बल्कि आपसी सहयोग और सामूहिकता का जीवंत उदाहरण भी प्रस्तुत करता है। इस उत्सव की एक विशेष परंपरा यह है कि एक गाँव का नर्तक दल प्रतिवर्ष दूसरे गाँव जाकर **सैला-रीना** नृत्य प्रस्तुत करता है। यह परंपरा वर्षों से चली आ रही है और आज भी पूरी निष्ठा से निभाई जाती है। नर्तक दल जब दूसरे गाँव में पहुँचता है, तो गाँव का पटेल (ग्राम प्रमुख) उनके ठहरने और स्वागत की व्यवस्था करता है। वहाँ दल अपना पड़ाव डालता है और उत्सव का आयोजन होता है।

- **बिरहा नृत्य** : बिरहा नृत्य एक पारंपरिक नृत्य है, जिसमें आपसी सद्भाव और सामाजिक एकता की भावना अन्तर्निहित होती है। यह नृत्य **विशुद्ध रूप से वैवाहिक अवसरों** पर किया जाता है और विशेष रूप से **मंडला जिले** में प्रचलित है। मंडला जिले में यह नृत्य मुख्यतः **गोंड** और **परधान** जातियों द्वारा विवाह के अवसर पर किया जाता है। वहीं **बघेलखंड** क्षेत्र के कुछ भागों में **अहीर**, **गड़रिया** और **बारी** जातियों में भी बिरहा नृत्य की परंपरा देखी जाती है। **वाद्य यंत्रों की दृष्टि से**, मंडला जिले के बिरहा नृत्य में **नगाड़ा**, **गद** और **टिमकी** प्रमुख होते हैं। इनका एक समूह बनाकर नृत्य प्रस्तुत किया जाता है। जबकि बघेलखंड क्षेत्र में बिरहा नृत्य के समय **ढोलक** और **शहनाई** का उपयोग किया जाता है।
- **कहरवा नृत्य** : मंडला जिले में यह नृत्य विशेष रूप से विवाह के अवसर पर किया जाता है। इसमें स्त्री और पुरुष दोनों ही उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं।
- **भड़ौनी नृत्य** : भड़ौनी लोक नृत्य मध्य प्रदेश के सतपुड़ा क्षेत्र में निवास करने वाली **गोंड जनजाति** का एक पारंपरिक नृत्य है। यह एक **गीतप्रधान नृत्य** होता है, जो विशेष रूप से **विवाह के शुभ अवसर** पर किया जाता है। गोंड आदिवासी समाज में जब बारात प्रस्थान करने वाली होती है, तो उससे पूर्व आँगन में बने मंडप के नीचे महिलाएँ भड़ौनी नृत्य में मग्न हो जाती हैं। इस नृत्य में पुरुष भी भाग लेते हैं।
- **पूजा नृत्य** : पूजा नृत्य एक पारंपरिक और अनुष्ठानिक नृत्य है, जो धार्मिक भावना से जुड़ा होता है। यह नृत्य **मंडला जिले की गोंड जनजाति** और **रायगढ़ जिले की उराँव जनजाति** में विशेष रूप से प्रचलित है। **गोंड जनजाति** ज्येष्ठ मास में किसी सुविधाजनक तिथि को एक सार्वजनिक उत्सव का आयोजन करती है, जिसे "**बिदरी पूजा**" कहा जाता है। इस अवसर पर पूजा नृत्य किया जाता है, जो श्रद्धा और आस्था से पूर्ण होता है।

  उराँव जनजाति, रायगढ़ जिले में, चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की किसी शुभ तिथि को गाँव में एक आयोजन करती है, जिसे "**साल वृक्ष पूजा**" या "**सरना पूजा**" कहा जाता है। इस पूजा में भी पूजा नृत्य की परंपरा निभायी जाती है।
- **सजनी** : सजनी नृत्य गोंड जनजाति का एक पारंपरिक लोकनृत्य है, जो **सजनी गीत** पर किया जाता है। यह नृत्य विशेष रूप से उस समय किया जाता है जब किसी लड़की को लेने के लिए समधी (वर पक्ष) घर आते हैं।
- **सुआ नृत्य** : जब खेतों में धान की फसल पककर लहराने लगती है, तब **सुआ नृत्य** किया जाता है। यह नृत्य विशेष रूप से खुशी और उत्सव के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है।
- **गेंडी नृत्य** : इस नृत्य में कलाकार लंबी डंडियों, जिन्हें **गेंडी** कहा जाता है, पर खड़े होकर नृत्य करते हैं। यह नृत्य केवल संतुलन ही नहीं, बल्कि चपलता और कौशल की भी माँग करता है। इसमें कई जटिल चालें और गतियाँ शामिल होती हैं, जो इसे विशेष रूप से आकर्षक बनाती हैं।
- **गोड़ो नृत्य** : गोड़ो नृत्य गोंड जनजाति का एक पारंपरिक नृत्य है, जिसे विशेष रूप से **बीज बोने के समय** आयोजित किया जाता है। यह नृत्य खेती की शुरुआत के अवसर पर सामूहिक रूप से किया जाता है।
- **गोंचो नृत्य** : गोंचो गोंड जनजाति का एक प्रमुख पारंपरिक नृत्य है। यह नृत्य विशेष रूप से अनुष्ठान के रूप में किया जाता है। गोंचो नृत्य का आयोजन **अच्छी वर्षा की कामना** के लिए किया जाता है।

▶ बैगा जनजाति के लोक नृत्य



- **दशहरा नृत्य** : दशराहा नृत्य **बैगा जनजाति** का एक प्रमुख सामाजिक नृत्य है। इसकी कोई निश्चित पारंपरिक रचना नहीं होती, बल्कि बैगा समुदाय में प्रचलित विभिन्न लोक नृत्यों को मिलाकर इसे प्रस्तुत किया जाता है। यह नृत्य एक वार्षिक उत्सव के रूप में मनाया जाता है। इस उत्सव के दौरान पुरुषों और महिलाओं के नृत्य दल पास के दूसरे गाँवों में जाकर सामाजिक रस्मों का पालन करते हैं। दशराहा नृत्य मुख्य रूप से **रीति-रिवाजों और परंपराओं** पर आधारित होता है। इसमें नृत्य की अपेक्षा परंपराओं का अधिक महत्व होता है।म नृत्य में प्रयुक्त प्रमुख वाद्य यंत्र हैं — **माँदर**, **टिमकी** और **ठिसकी**।

- **बैगानी करमा** : मध्य प्रदेश के मंडला जिले के एक विशेष क्षेत्र में **बैगा जनजाति** निवास करती है। इस क्षेत्र को **बैगा चक** कहा जाता है, बैगा जनजाति के लोकनृत्यों में **करमा** एक प्रमुख नृत्य है। यह नृत्य **विजयादशमी** से आरंभ होकर वर्षा ऋतु की शुरुआत तक चलता है। करमा नृत्य विशेष रूप से **मांदर** की थाप पर किया जाता है। युवतियाँ घर से निकलकर पूरी रात समूह में करमा नृत्य करती हैं। करमा नृत्य को मुख्यतः **चार प्रकारों** में बाँटा गया है। यह विभाजन पैरों की गति और ताल पर आधारित होता है।
  - करमा यरी
  - करमा याप
  - करमा झुलनी
  - करमा लहकी

  करमा नृत्य करम की प्रेरणा देने वाला नृत्य है। यह आनुष्ठानिक नृत्य गीत जातीय संस्कृति की समृद्धि का द्योतक है।



- **झरपट नृत्य** : बैगा जनजाति की बोली में **"झरपट"** शब्द का अर्थ होता है—**छेड़-छाड़**। यह एक पारंपरिक **नृत्य** है, जो विशेष रूप से बैगा समुदाय में प्रचलित है। झरपट एक **गीत-प्रधान नृत्य** होता है, जिसमें नृत्य के साथ गाए जाने वाले गीतों की विशेष भूमिका होती है। ये गीत प्रायः **श्रृंगारिक (प्रेमभाव से जुड़े)** होते हैं। झरपट नृत्य की एक प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें **सवाल-जवाब** की शैली अपनायी जाती है, जो इसे लोकप्रिय लोकनृत्य **ददरिया** के समान बनाती है।



- **रीना नृत्य** : रीना नृत्य गोंड जनजाति का एक पारंपरिक लोकनृत्य है, जिसे केवल स्त्रियाँ ही करती हैं। यह नृत्य पंक्ति बद्ध होकर अथवा आमने-सामने गोल घेरे में किया जाता है। इस नृत्य में महिलाएँ **मांदर** और **टिमकी** जैसे पारंपरिक वाद्ययंत्रों की लय पर ताल मिलाकर नृत्य करती हैं।
- **सैला नृत्य** : सैला एक पारंपरिक नृत्य है, जो चांदनी रात में किया जाता है। यह नृत्य विशेष रूप से **शरद पूर्णिमा** की रात को युवक-युवतियों द्वारा समूह में किया जाता है। **बैगा जनजाति** इस नृत्य को अपने आदि देव को प्रसन्न करने के लिए करती है। सैला नृत्य न केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक है।
- **बिलमा नृत्य** : गोंड और बैगा जनजाति कुवारी लड़कियों को जीवन साथी चुनने का अवसर प्रदान करने वाला नृत्य है। इसे बिरहा नृत्य भी कहां जाता है।
- **भड़ौनी नृत्य** : भड़ौनी नृत्य एक पारंपरिक **विवाह नृत्य** है, जो विशेष रूप से गोंड जनजाति में प्रचलित है। जब बारात आँगन में पहुँच जाती है और बाराती वहाँ बैठ जाते हैं, तब स्त्रियाँ नृत्य प्रस्तुत करती हैं। इस नृत्य के दौरान वे हल्की-फुल्की हास्यात्मक गालियाँ भी देती हैं, जो विवाह की परंपरा और उत्सव के उल्लास का हिस्सा मानी जाती हैं।
- **परधौनी नृत्य** ***: परधौनी एक पारंपरिक विवाह नृत्य है, जो गोंड जनजाति में विशेष रूप से प्रचलित है। यह नृत्य बारात की अगवानी के समय किया जाता है।इस नृत्य में पुरुष हाथ में फरसा लेकर उत्साहपूर्वक नाचते हैं। नगाड़ा और टिमकी की तेज़ ताल इस नृत्य में विशेष उत्तेजना और ऊर्जा भर देती है।



▶ भिम्मा जनजाति के लोक नृत्य

- **भीमा नृत्य** : मध्यप्रदेश के **मंडला** और **डिंडोरी** जिलों में "भीमा" या "भिम्मा" नाम की एक जनजाति पायी जाती है। इस जनजाति का प्रमुख पेशा **भीमा नृत्य** है। इनके जीवन का मुख्य आधार माँगकर खाना है, जिसे यह अपनी नियति मानते हैं।**भीमा नृत्य** को यह समुदाय अपनी पैतृक संपत्ति मानता है। यह नृत्य "किंदरा" वाद्ययंत्र की लय, ताल और मधुर गीतों की धुनों पर किया जाता है। गीत की पहली पंक्ति पुरुष गाते हैं और दूसरी पंक्ति महिलाएँ गाकर नृत्य करती हैं।

▶ कोल जनजाति के लोक नृत्य

- **कोलदहकी नृत्य** : मध्य प्रदेश के शहडोल जिले तथा उससे सटे हुए मंडला जिले की निवास तहसील और डिंडौरी तहसील के सीमावर्ती क्षेत्रों में **कोल** आदिम जनजाति निवास करती है।**कोलदहकी नृत्य**, कोल जनजाति का पारंपरिक सामाजिक और जातीय नृत्य है। इसे **कोलहाई नाच** के नाम से भी जाना जाता है।

▶ भील जनजाति के लोक नृत्य



- **बड़वा नृत्य** : बड़वा नृत्य वर्षा ऋतु में किया जाने वाला एक पारंपरिक अनुष्ठानिक नृत्य है। यह नृत्य विशेष रूप से **आषाढ़ मास** की पूर्णिमा की रात को किया जाता है, जब पूर्ण चंद्रमा उदित होता है। इस अवसर पर **भील जनजाति** के लोग अपने देवी-देवताओं की पूजा करते हैं और **अच्छी फसल की कामना** के साथ बड़वा नृत्य का आयोजन करते हैं। यह नृत्य पूजा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होता है।

  इस नृत्य में केवल पुरुष ही भाग लेते हैं। नाचते समय उनकी मुद्रा ऐसी होती है जैसे उनके शरीर में देवी या देवता की भावात्मक छाया आ गयी हो। बड़वा नृत्य मूलतः **एक धार्मिक अनुष्ठान** का रूप है।
- **अँटिया नृत्य** : अँटिया नृत्य (डंडहार नृत्य) एक पारंपरिक नृत्य है, जिसे केवल पुरुष वर्ग द्वारा किया जाता है। इस नृत्य में हाथों में छोटे-छोटे डंडे लिए जाते हैं और विविध प्रकार की पद-गतियाँ अपनायी जाती हैं।
- **भगोरिया** ***: फागुन माह में होली से पूर्व **भीलांचल** क्षेत्र में **भगोरिया हाट** लगते हैं। इन हाटों के आयोजन के समय जो पारंपरिक नृत्य होता है, उसे **भगोरिया नृत्य** कहा जाता है।
- **डोहिया** : डोहिया नृत्य भी **भगोरिया हाटों** में किया जाता है। इस नृत्य में युवक और युवतियाँ आमने-सामने खड़े होकर विभिन्न प्रकार से अंगों का संचालन करते हैं। वे कभी आगे बढ़ते हैं, कभी पीछे हटते हैं और कभी दाएँ-बाएँ झुककर झूमते हुए नृत्य करते हैं।
- **गहर** : होली के अवसर पर गोंड जनजाति में गहर नृत्य किया जाता है। यह नृत्य उनकी सांस्कृतिक पहचान और सामूहिक उत्सव का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होता है।इस नृत्य की विशेषता यह है कि इसमें स्त्री-पुरुष दोनों भाग लेते हैं, और एक व्यक्ति जोगी की भूमिका निभाता है। नृत्य के समय युवकों के हाथों में फालियाँ, लट्ठ, तीर-कमान आदि होते हैं, जबकि जोगी के हाथ में मूसल रहता है। नृत्य के दौरान बजने वाले वाद्यों की चालें पहले से निश्चित होती हैं, जो लय के हर मान पर बदल जाती हैं। नृत्य करने वाले कलाकार इतने निपुण होते हैं कि जैसे ही ताल या धुन में बदलाव आता है, वे अपनी चाल, मुद्राएँ और भाव-भंगिमाएँ उसी के अनुसार बदल लेते हैं और नई-नई भंगिमाओं का निर्माण करते हैं। इस नृत्य में मुख्य रूप से ढोल, बीना और कुंडी जैसे वाद्ययंत्रों का प्रयोग किया जाता है, जो नृत्य को और अधिक जीवंत बना देते हैं।



- **डोहो** : यह एक मनौती से जुड़ा हुआ धार्मिक उत्सव है, जो विशेष रूप से **भील जनजाति** द्वारा मनाया जाता है। इस उत्सव के दौरान भील युवक और युवतियाँ रात्रि में "**डोहो**" लेकर घर-घर जाकर नृत्य करते हैं। **डोहो** एक छोटी मिट्टी की मटकी होती है, जिसके चारों ओर छोटे-छोटे छिद्र बने होते हैं। इस मटकी के अंदर दीपक जलाया जाता है और फिर उसे सिर पर रखकर नृत्य किया जाता है। यह नृत्य **ग्यारस से दीपावली की अमावस्या** तक प्रतिदिन किया जाता है। उत्सव के अंतिम दिन डोहो को गाँव के देवस्थान पर ले जाकर वहाँ छोड़ दिया जाता है। भील समुदाय में इस नृत्य को विशेष स्थान प्राप्त है, और इसे **भील नृत्यों का गजरा** कहा जाता है।
- **गरबी** : जनजाति में दीपावली के पर्व पर **गरबी नृत्य** किया जाता है। यह नृत्य विशेष रूप से **श्रावण मास** और **नवरात्रि** के समय **बड़वा** (जनजातीय पुजारी) द्वारा किया जाता है।

विवाह नृत्य (भील जनजाति के)

- **पुरूष डांग साला नृत्य**: जब घर से बारात रवाना होती है, तो रास्ते में एक विश्राम स्थल पर कुछ समय के लिए ठहराव किया जाता है। इस विश्राम के दौरान स्त्री और पुरुष अलग-अलग समूहों में बाँटकर पारंपरिक नृत्य करते हैं।
- **लात मार साला नृत्य**: यह नृत्य वधू पक्ष की स्त्रियों द्वारा बारात की आगवानी के समय किया जाता है। यह पारंपरिक नृत्य हर्ष और स्वागत की भावना को व्यक्त करता है।
- **फरकणी साला नृत्य**: जब वर और वधू पक्ष के स्त्री-पुरुष एक-दूसरे से मिलते हैं, तो वे एक विशेष प्रकार का नृत्य करते हैं। इस नृत्य में वे गोल-गोल घूमते हुए एक-दूसरे के सामने आते हैं और प्रतीकात्मक रूप से एक-दूसरे को "काटते" हैं। इसी कारण इस नृत्य को फरकनी साला नृत्य कहा जाता है।
- **पख्यो नृत्य**: लग्न (विवाह) के पश्चात वर और वधू पक्ष की महिलाएँ आपस में मिलकर पारंपरिक नृत्य करती हैं। वे सामूहिक रूप से एक-दूसरे के गले में हाथ डालती हैं और आपसी हँसी-ठिठोली करते हुए चिढ़ाने की भाव-भंगिमा में **पख्यों नृत्य** प्रस्तुत करती हैं।
- **घोर नाच**: आमने सामने खड़े होकर चिटकोरा हाथ में लेकर स्त्रियां द्वारा किया जाने वाला नृत्य है।
- **लोहरी नृत्य**: लोहरी नृत्य, घोर नाच के समान ही एक वैवाहिक नृत्य है। परंतु दोनों में एक मुख्य अंतर होता है। **घोर नाच** पंक्ति में किया जाता है, जबकि **लोहरी नृत्य** अर्धवृत्त (आधा घेरा) बनाकर किया जाता है।

▶ सहरिया जनजाति के लोक नृत्य

- **लूर नृत्य** : **सहरिया जनजाति** में भी विवाह के दौरान नृत्य का विशेष स्थान होता है। जब वधु को हल्दी चढ़ाई जाती है, तब से लेकर बारात के आगमन तक, अवसर के अनुसार उमंग और उत्साह से भरे नृत्य आयोजित किए जाते हैं। इस नृत्य को **"लूर नृत्य"** कहा जाता है। इस नृत्य में स्त्री-पुरुष दोनों भाग लेते हैं। पुरुषों की एक टोली अलग नृत्य करती है, जबकि महिलाएँ अपनी अलग नृत्यशैली में मग्न रहती हैं। नृत्य के दौरान बीच-बीच में हँसी-मजाक का माहौल भी बनता है, जिससे वातावरण और भी आनंदमय हो जाता है।
- **लहँगी नृत्य** : सहरिया जनजाति का **लहंगी नृत्य** उनकी सांस्कृतिक परंपराओं का एक महत्वपूर्ण भाग है। इस नृत्य में पुरुष छोटे-छोटे डंडों को हाथ में पकड़कर एक-दूसरे पर लयबद्ध रूप से हल्की चोट करते हुए नाचते हैं। यह नृत्य केवल पुरुषों द्वारा ही किया जाता है। भुजरिया पर्व के अवसर पर, जब भुजरियों का विसर्जन किया जाता है, तब सहरिया समाज की महिलाएँ अपने सिर पर भुजरियाँ रखकर आगे चलती हैं और उनके पीछे-पीछे पुरुष **लहंगी नृत्य** करते हुए चलते हैं।
- **दुल-दुल घोड़ी नृत्य** : दुल-दुल घोड़ी नृत्य एक रोचक और मनोहर लोकनृत्य है, जो विशेष रूप से **सहरिया जनजाति** में लोकप्रिय है। यह नृत्य मुख्यतः विवाह जैसे उत्सवों पर पुरुषों द्वारा किया जाता है। इस नृत्य में लकड़ी, बाँस की कमची या उससे मिलती-जुलती किसी वस्तु से घोड़ी का आकार तैयार किया जाता है। इस घोड़ी के बीच बनी खाली जगह में नर्तक खड़ा होता है, जिससे वह घोड़ी पर सवार व्यक्ति जैसा प्रतीत होता है। नर्तक का वेश और श्रृंगार बिल्कुल दूल्हे की तरह किया जाता है, जिससे वह विवाह का दृश्य प्रस्तुत करता है।

  नृतक के साथ एक विदूषक भी होता है, जो स्त्री वेश में स्वांग रचता है। यह पात्र हास्य का वातावरण बनाता है। इस नृत्य के साथ प्रायः **लाँगुरिया गीत** या **हास्य रस** से भरे गीत गाए जाते हैं, जिनसे दर्शकों में हँसी का माहौल बन जाता है। इस नृत्य के प्रमुख वाद्य यंत्र होते हैं—**ढोल**, **झींका** और **नगड़िया**।
- **राया उर्फ राई नृत्य** : बुंदेलखंड क्षेत्र में **राई नृत्य** की एक प्राचीन परंपरा है, जिसमें नृत्यांगना के लटके-झटके, आँख मिचौली और अक्खड़पन का सुंदर चित्रण देखने को मिलता है। इसी प्रकार, **सहरिया जनजाति** में भी राई के समान एक नृत्य परंपरा पायी जाती है, जिसे **"राया नृत्य"** कहा जाता है। यह उनका एक रसिक नृत्य है।

  राया नृत्य और **राई नृत्य** के बीच मुख्य अंतर यह है कि जहाँ राई नृत्य में नृत्यांगना (बेड़नी) स्वयं नृत्य करते हुए भाव-भंगिमा प्रस्तुत करती है, वहीं सहरिया जनजाति के राया नृत्य में **पुरुष ही बेड़नी का रूप धारण कर** नृत्य करता है।

▶ कोरकू जनजाति के लोक नृत्य

- **ढाँढल नृत्य** : ढाँढल नृत्य मध्यप्रदेश में निवास करने वाली कोरकू जनजाति का प्रमुख नृत्य है। ढाँढल नृत्य कोरकुओं का आनन्द-दायक नृत्य है। चैत्र- बैसाख में जब फसल कटकर घरों में आ जाती है, तब खेती-बाड़ी से फुर्सत का समय होता है। इन्हीं महीनों की रातों में युवक-युवतियाँ ढाँढल नृत्य में आनंद मग्न होती हैं। ढाँढल नृत्य पाँच प्रमुख पारम्परिक नृत्य रचनाओं में नाचा जाता है । ढाँढल

नृत्य मध्यप्रदेश की **कोरकू जनजाति** का एक प्रमुख और आनंददायक पारंपरिक नृत्य है। यह नृत्य विशेष रूप से **चैत्र** और **बैसाख** के महीनों में किया जाता है, जब फसलें कटकर घरों में आ जाती हैं और खेतों का कार्य समाप्त हो जाता है। इन महीनों में, जब कोरकू जनजाति के लोगों को खेती-बाड़ी से कुछ फुर्सत मिलती है, तब गाँवों की रातों में युवक-युवतियाँ ढाँढल नृत्य करते हैं और इसमें आनंद मग्न हो जाते हैं। ढाँढल नृत्य पाँच प्रमुख पारम्परिक नृत्य रचनाओं में नाचा जाता है-

- टाड़ा ढाँढला : सम संख्या में दो घेरे होते है।
- पडोप ढाँढला : यह नृत्य आमने सामने ताली देकर किया जाता है।
- भील ढाँढला : प्रत्येक व्यक्ति के हाथ में एक डंडा होता है।
- सिडीकू ढाँढला : नर्तक घेरे में न खड़े होकर समान्तर आमने सामने मुख कर खड़े होते है।
- चाचरीज ढाँढला : उपरोक्त चारो ढॉढल होने के बाद अन्त में किया जाने वाला ढॉढल चाचरीज ढॉढल कहलाता है।

- **देव दशहरा नृत्य** : **चैत्र माह** में **देव धाम** के अवसर पर किया जाता है। यह नृत्य **पडियार** समुदाय द्वारा **धाम गीत** पर किया जाता है।
- **थापटी नृत्य** : यह एक स्त्री प्रधान समूह नृत्य है, जिसे मुख्यतः कोरकू जनजाति की महिलाएँ मिलकर प्रस्तुत करती हैं। इस नृत्य में महिलाएँ अपने हाथों में **झांझ** और **चिटकोरा** नामक वाद्य यंत्र लेकर नृत्य करती हैं। चिटकोरा वाद्य यंत्र की प्रमुखता के कारण इस नृत्य को **"चिटकोरा नाच"** भी कहा जाता है। इस नृत्य के साथ जो गीत गाए जाते हैं, उन्हें **थापती सिरिंज** कहा जाता है।
- **चाचरी नृत्य** : चैत्र मास में किये जाने वाला पुरुष प्रधान नृत्य है। इसके किसी भी प्रकार के वाद्य यंत्रो का प्रयोग नहीं होता है।
- **डंडा नाच** : जिरोती एक प्रमुख पर्व है, जिसमें पुरुषों द्वारा विशेष नृत्य किया जाता है। यह नृत्य इस त्योहार की पहचान होता है और इसे पुरुष प्रधान नृत्य माना जाता है।
- **चिल्लुडी नाच** : कुआर के महीने में कुवाँरी युवतियों द्वारा किया जाने वाल समूह नृत्य है। जिरोती एक प्रमुख पर्व है, जिसमें पुरुषों द्वारा विशेष नृत्य किया जाता है। यह नृत्य इस त्योहार की पहचान होता है और इसे पुरुष प्रधान नृत्य माना जाता है।
- **ठाठया नाच** : दीपावली की रात्रि को और दूसरे दिन पड़वा केा यह नाच किया जाता है।
- **गादली नृत्य** : शादी विवाह के अवसर पर कोरकू स्त्रियों का प्रसिद्ध नाच है।

▶ बंजारा जाति के लोक नृत्य

- **बंजारा नृत्य** : मध्य प्रदेश के **खरगोन** और **मंदसौर** जिलों में **बंजारा जाति** निवास करती है। यह एक घुमंतू जाति है, जिस कारण इनके पारंपरिक नृत्यों की संख्या अधिक नहीं है। फिर भी, **ब्याह-शादी** जैसे विशेष अवसरों पर स्त्री और पुरुष दोनों मिलकर नाचते-गाते हैं। बंजारा नृत्य की एक विशेषता यह है कि इसमें नृत्य करते समय स्त्री-पुरुष एक-दूसरे का हाथ नहीं पकड़ते। वे अलग-अलग घेरे बनाकर नाचते हैं। नृत्य के दौरान पुरुषों के हाथों में **रूमाल** रहता है, जबकि स्त्रियों के हाथ खाली रहते हैं। स्त्रियाँ नृत्य करते समय चक्कर लगाती हैं, नीचे झुकती हैं, ताली बजाती हैं, हाथों को मटकाती हैं और कभी-कभी उँगलियों से **मुद्राएँ** भी बनाती हैं। नृत्य की सबसे अनोखी विशेषता यह है कि **बंजारिनें अपने सिर पर पीतल के बड़े-बड़े घड़े रखकर नाचती हैं**, जिससे उनका संतुलन और लय दर्शकों को आकर्षित करता है।

▶ कंजर जाति के लोक नृत्य

- **तलवार नृत्य** : यह नृत्य कंजर जाति के लोक नर्तकों द्वारा किया जाता है। इसमें वे अपने हाथों में तलवार लेकर नृत्य करते हैं, इस कारण इसे **तलवार नृत्य** कहा जाता है। इस नृत्य में तलवार चलाने के विभिन्न दाँव-पेंच को नृत्य के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। **उड़ी**, **हूल**, **डूब** और **काट** जैसे पैतरों का प्रदर्शन बड़े कौशल के साथ किया जाता है।
- **मटकी नृत्य** : यह विवाहोत्सव का रंगीला और रसीला नृत्य है। मँगनी मुहूर्त के दिन से ही मटकी नृत्य प्रारंभ हो जाता है। खूब मटक-मटक कर नाचे जाने के कारण इस नृत्य का नाम मटकी नृत्य पड़ा है। नृत्य के समय घड़े का एक कलश जलाकर बीच में रख दिया जाता है और उसके आसपास गोल घेरे में स्त्रियाँ नाचती हैं। वे ताली भी बजाती है और कभी चुटकी भी बजाती हैं। यह नृत्य गीत के साथ चलता है।

- **लहरा नृत्य** : लहरा लहरा कर नाचे जाने के कारण इसका नाम लहरा नृत्य पड़ा है। यह नृत्य स्वतंत्र रूप से वाद्य की ताल पर केवल महिलाओं द्वारा नाचा जाता है। महिलाएँ हाथों और उंगलियों से तरह-तरह की मुद्राएँ बनाती हैं। लहरा नृत्य किसी भी खुशी के अवसर पर किया जाता है।
- **अहीर या राउत नृत्य** : "अहीर" या राउत" नृत्य की परम्परा सम्पूर्ण मध्यप्रदेश में है। राउत, अहीर एवं ग्वालों का यह नृत्य भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं से सम्बन्धित माना जाता है। यह जाति मंडला, बुन्देलखंड में अहीर, बरेदी, ग्वाल कही जाती हैं। सिवनी, छिंदवाड़ा में ग्वाला, बैतूल ठाठ्या एवं मालवा में कानगुवालिया के नाम से जानी जाती है। प्रत्येक अंचल में इनके इसी जातीय नाम से पारम्परिक लोक नृत्य प्रचलित हैं। इस नृत्य में केवल पुरूष ही भाग लेते हैं।
- **गरवी नृत्य** : यह नृत्य वर्षा ऋतु के अनंतर में श्राद्ध पक्ष में नवाई (नवाखानी) के अवसर पर नाचा जाता है। प्रायः सभी आदिम जातियों में यह प्रथा है कि कोई भी नया अनाज स्वयं खाने के पहिले वे उसे अपने देवी-देवताओं तथा पितरों को चढ़ाते हैं। इसे नवाखानी पर्व कहते हैं। गरवी नृत्य वास्तव में पितृ पूजा व प्रकृति पूजा का नृत्य है। इस सामूहिक नृत्य में स्त्री-पुरूष दोनों भाग लेते हैं। नृत्य में तालियाँ भी बजाई जाती हैं तथा गरवी लोचपूर्ण मादक नृत्य है।

जनजाति	नृत्य
माड़िया/मुरिया जनजाति	गवर नृत्य, करमा नृत्य, हुलकी नृत्य, मॉदुरी नृत्य
गोंड़ जनजाति	करमा नृत्य,सैला नृत्य, सुआ नृत्य, सारपाटा नृत्य, कलपाड़ी नृत्य, डंडार नृत्य, रीना नृत्य, गिरदा उत्सव, बिरहा नृत्य, कहरवा नृत्य , भड़ौनी नृत्य, पूजा नृत्य गेंड़ी, गोंचो नृत्य
बैगा जनजाति	दशहरा नृत्य, बैगानी नृत्य, करमा नृत्य, झरपट नृत्य, परधोनी नृत्य, रीना नृत्य, सैला नृत्य, भड़ौनी नृत्य, बिलमा नृत्य,
भिम्मा जनजाति	भीमा नृत्य
कोल जनजाति	कोलदहकी नृत्य
भील जनजाति	बड़वा नृत्य, अँटिया नृत्य, भगोरिया, डोहिया, गहर, डोहो, गरबी, पुरूष डांग साला नृत्य , लात मार साला नृत्य, फरकणी साला नृत्य, पख्यो नृत्य , घोर नाच , लोहरी नृत्य, पाली, नेवताली, राई बुडालिया नृत्य
सहरिया जनजाति	लूर नृत्य ,लहँगी नृत्य ,दुल-दुल घोड़ी नृत्य, राया उर्फ राई नृत्य
उराँव जनजाति	सरहुल नृत्य, टुण्टा नृत्य
कोरकू जनजाति	ढाँढल नृत्य, देवदशहरा नृत्य,चाचरी नृत्य और गोंगोल्या नाच, थापती नाच, ढांढ़ल नाच और डोडबली नाच, जिरोती के अवसर पर डंडा नाच। होरोरया और चिल्लुडी नाच, पड़वा पर ठाठया नाच, चिटकोरा नाच, चाचरी नृत्य, डंडा नाच और गादली नृत्य।
मेघवाल जाति	हाथ डांडिया रास नृत्य, सिरमा डांडिया नृत्य, गरवी नृत्य, हीश नृत्य

मध्यप्रदेश के क्षेत्रीय लोक नृत्य

क्षेत्रीय लोक नृत्य वे नृत्य होते हैं, जो किसी जाति या वर्ग विशेष की परंपरा से हटकर उस विशेष क्षेत्र की पहचान, सामूहिक परंपराओं और रीति-रिवाजों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन नृत्यों में उस क्षेत्र या अंचल के पुरुष और महिलाएँ समान रूप से अपनी इच्छा अनुसार भाग लेते हैं। ये नृत्य आत्मीय स्नेह, सामूहिक सहभागिता और सांस्कृतिक जुड़ाव के प्रतीक होते हैं।मध्य प्रदेश के क्षेत्रीय लोक नृत्य भी इसी आत्मीयता का उदाहरण हैं। इनमें स्थानीय मान्यताओं, परंपराओं और सामाजिक भावनाओं का स्वाभाविक समावेश होता है, जो इन्हें सांस्कृतिक आस्था का प्रतीक बनाते हैं।

क्षेत्र	नृत्य
बुंदेलखंड	राई , सैरा नृत्यराई नृत्य, बधाई नृत्य, कानरा नृत्य, रावला नृत्य
बघेलखंड	केहरा नृत्य, दादर नृत्य, कलसा नृत्य, केमाली नृत्य, जश नृत्य, बेंवर नृत्य
मालवा	मटकी नृत्य, आड़ा-खड़ा नाच, रजवाड़ी नृत्य, बनोला और छल्ला नृत्य, भोपा नृत्य, फूलपाती नृत्य, गनगौर नृत्य, गरबा नृत्य, केरवा नृत्य, फुन्दी नृत्य, भोजली परब नृत्य, बाँछड़ियों का नाच
निमाड	गणगौर लोकनृत्य, काठी नृत्य, फेफारिया नाच, मांडल्या नाच, आड़ा खड़ा नाच, डंडा नाच, गम्मत, रासलीला

▷ बघेलखंड

- **केहरा नृत्य** : बघेलखंड में केहरा नृत्य की प्रथा मुख्यतः बारी जाति में है। यह गीत प्रधान नृत्य है। इस नृत्य के लिए समय की कोई सीमा नहीं होती है। शादी-विवाह, बच्चे का जन्म, कोई मंगलकारी सामाजिक या धार्मिक उत्सव आदि के अवसर पर केहरा नृत्य का आयोजन किया जाता है। गीत के रूप में दोहे गाये जाते हैं।
- **दादर/ बिरहा/अहिराई नृत्य** : जातीय नृत्यों की परम्परा में दादर नृत्य भी बघेलखंड का एक बहु-प्रचलित लोक नृत्य है। इस नृत्य का प्रचलन यहाँ रहने वाली बारी, कोल कोटवार, चर्मकार एवं कहार जातियों में विशेष रूप से है। इन जातियों में दादर निकालने की प्रथा है। यह एक सांस्कृतिक रीति-रिवाज है जो शादी-विवाह के अवसर पर बारात आगमन के समय घराती एवं बराती दोनों की ओर से मिलकर सम्पन्न होता है।
- **कलसा नृत्य** : यह नृत्य बघेलखंड अंचल का जातीय नृत्य है। यहाँ निवास करने वाली गड़रिया, अहीर एवं तेली जातियों में इस नृत्य की परम्परा है। इन जातियों में जब शादी-विवाह का शुभ अवसर होता है, बारात की अगवानी के अवसर पर सामान्यतः पुरूष वर्ग अपने सिर पर सात कलसे रखकर सन्तुलन का विशेष प्रदर्शन नृत्य के द्वारा करता है। ये कलसे क्रमशः बड़े से छोटे होते हैं। नगड़िया, ढोलक एवं शहनाई आदि लोक वाद्यों. का प्रयोग इस नृत्य में परम्परागत ढंग से किया जाता है।
- **केमाली नृत्य**: बघेलखंड में साजन - सजनई की प्रथा है। साजन का अर्थ समधी और समधी के आत्मीय स्वागत सत्कार को सजनई कहते हैं। यह नृत्य इस अंचल में निवास करने वाली चर्मकार जाति में विशेष रूप से पाया जाता है। स्त्री-पुरूष दोनों ही समान रूप से इस नृत्य में भाग लेते हैं।
- **जश नृत्य**: जश नृत्य को जवाँरा नृत्य भी कहते हैं। चैत्र में नवरात्रि और कुआँर में दुर्गा पूजा अवसर पर जवाँरा विसर्जन के समय देवी की आराधना स्वरूप उपासकों द्वारा इसका आयोजन होता है।
- **बेंवर नृत्य**: बेंवर को अटारी नृत्य भी कहते हैं। इस नृत्य की परंपरा मंडला, छिंदवाड़ा एवं सिवनी जिले के कुछ भागों में है। इस नृत्य के पीछे यह मान्यता है कि बेंवर नाचने से खेतों में जंगली जानवर आकर फसल को नुकसान नहीं पहुँचाते हैं। अतः जब खेतों में फसल लहराती है तब गांवों में नवयुवक बेंवर नाचते हैं। बेंवर नृत्य केवल युवकों द्वारा किया जाता है।

▷ बुन्देलखंड

- **राई नृत्य**: राई नृत्य बुन्देलखंड अंचल का सुप्रसिद्ध प्रतिनिधि लोक नृत्य है। बुन्देलखंड में निवास करने वाली **बेड़िया जाति** का यह जातीय नृत्य है। राई नृत्य श्रृंगार प्रधान है, इसके नृत्य और गीत दोनों में श्रृंगार रस की झलक दिखाई देती हैं। नृत्य का प्रारंभ वाद्यों की मिली-जुली तान से होता है, इसे गम- भरना कहते है। राई नृत्य की छटा विखेरती हुई बेड़नी जब चुन्नटदार और घेरदार घाघरे में मोरनी के समान बल डाल, तिरछी नजर कर एक हाथ कमर पर रख और दूसरा हाथ हवा में लहराकर, घूँघट की ओट हटाकर, पैरों में बँधी हुई घुँघरूओं की झंकार के साथ पंचम में तान छेड़कर गाती है। उस समय सार वातावरण श्रृंगार रस में डूब जाता है, युवा, प्रौढ़, दंतहीन पुरुष समा में खोकर अपनी सुध बुध खो बैठते है।

> बेड़िया जाति के लोग खेती-किसानी करते हैं और खेतिहर मजदूर भी होते हैं। घरों में सभी सदस्य बीड़ियाँ बनाते हैं, किन्तु राई नृत्य उनकी आजीविका का प्रमुख साधन है। बेड़िया समाज में लड़की पैदा होने पर बहुत खुशी मनती है ओर लड़का पैदा होने पर निराश होते हैं। बेड़िया समाज में माता को प्रधानता दी गई है। संतानें माता के नाम से जानी जाती है।

- **सैरा नृत्य**: यह नृत्य बुन्देलखंड का प्रसिद्ध नृत्य है। ब्याह - शादी या कजली विसर्जन के अवसर पर होने वाला यह वीरोचित नृत्य है। इस नृत्य में पुरुष भाग लेते हैं,कहीं-कहीं स्त्री पुरूष दोनों सम्मिलित होते हैं। इस नृत्य से अवसरानुसार वीर रस और श्रृंगार रस दोनों की अभिव्यक्ति होती है। ब्याह - शादी के समय श्रृंगार रस का समावेश होता है।

> राजा के महल के बाहर एक धोबी अपनी पुत्री की शादी कर रहा था। रात्रि के समय नृत्य और गायन की मधुर ध्वनि राजा के कानों तक पहुँची। वह मंत्र-मुग्ध हो गया और सिपाहियों को आदेश दिया कि नाचने वालों को महल के अन्दर बुलाया जाये। राजा का आदेश सुनते ही पूरा धोबी परिवार डर गया। परंतु उन्हे जब यह ज्ञात हुआ कि राजा ने उन्हें नाचने के लिए बुलाया है।तो उन्होंने रात भर जम कर नृत्य किया। राजा और रानी ने कानरा नृत्य खूब जी भरकर देखा। तथा उन्हे उपहार प्रदान किया। इसी समय रानी ने राजा से कहा कि इन नर्तकों का श्रृंगार राजसी है, किन्तु इनके सिर पर कलगी नहीं है, अत: इन्हें राज - दरबार की ओर से कलगी दी जाये। तभी से कानरा नर्तक अपने सिर पर साफा में कलगी खोंसते हैं, जिसे वे "शाही कलगी" कहते हैं।

- **कानरा नृत्य**: बुन्देलखंड में कानरा नृत्य का पारम्परिक चलन **धोबी, कुम्हार, कोरी, ढीमर, रैदास** आदि जातियों में पाया जाता है। कानरा नृत्य इन जातियों में जन्म एवं ब्याह - शादी के अवसर पर अपनी खुशी जाहिर करने के लिए करते है। यह नृत्य पूरी रात होता है। कानरा नृत्य एवं उसमें गाए जाने वाले गीत धार्मिक भावनाओं से ओत-प्रोत होते हैं। कानरा नृत्य में रेंकड़िया, ढोलक, लोटा आदि वाद्य बजाए जाते हैं।
- **रावला नृत्य**:बुन्देलखण्ड अंचल में रावला नृत्य की पहचान हास्य प्रधान नृत्य के रूप में है। इस में स्त्री का वेश धारण कर पुरुष विभिन्न आकर्षक भाव-भंगिमाओं का प्रदर्शन करते हुए खुलकर नृत्य करता है। नृत्य करते हुए कभी दुल्हन का रुप धारण करता है अपनी हरकत से दर्शकों में हास्यरस का संचार करना इस नृत्य की मूल प्रवृत्ति होती है। स्त्री वेश धारी नृत्यांगना के साथ एक विदूषक भी होता है।
- **बधाई**: बुंदेलखण्ड के ग्रामीण अंचलों में शादी-ब्याह के अवसर पर बधाई नृत्य करने की परंपरा है। इस नृत्य में स्त्री-पुरुषों की संयुक्त भूमिका होती है।
- **ढिमरयाई**: ढिमरयाई लोक नृत्य बुंदेलखण्ड के ग्रामीण अंचल में अधिक प्रचलित है। ढीमर जाति के लोग इस नृत्य को करते हैं, इसलिए इसे ढिमरयाई नृत्य कहते हैं। शादी-ब्याह एवं नव दुर्गा आदि अवसरों पर यह नृत्य किया जाता है।

▷ मालवा

- **डंडा नृत्य**: मध्यप्रदेश के हर एक क्षेत्र में डंडा नृत्य नाचने की परम्परा है। क्षेत्र के प्रभाव, मान्यता एवं रीतियों के अनुसार डंडा नृत्य की गति, चाल, रचना, वाद्य, ताल-लय एवं गीतों की धुन में भिन्नता पायी जाती है। परन्तु सभी क्षेत्रों में डंडा नृत्य गोल घेरे में ही किया जाता है। क्षेत्र एवं भाषा के अनुसार डंडा नृत्य का नामकरण अलग-अलग पाया जाता है। मालवा में अंटिया नृत्य, सिवनी, छिन्दवाड़ा में चाँचर नृत्य, मंडला, जबलपुर एवं बुन्देलखंड के कुछ भागों में डंडा - डोहरी, बालाघाट में डंडहार, बैतूल में डंडा-सिरिज, रायगढ़ में टुण्टा एवं शिवपुरी, ग्वालियर जिले में लँहगी के नाम से प्रचलित है। डंडा नृत्य का नाम विभिन्न क्षेत्रों में भले ही अलग-अलग हो, किन्तु डंडा नृत्य की शैली प्राय: एक सी ही रहती है।
- **आड़ा नाच/आड़ा - खड़ा नाच**: **आड़ा - खड़ा नाच** में एक महिला(अधिकतम पाँच से छ: महिलाये) नाचती है। नाचने वाली महिलाओं पर अन्य महिलाएँ अनाज या पैसा आदि निछावर करती हैं। आड़ा नृत्य के साथ ढोल बजाया जाता है। इस वाद्य को वादक डंडे और बाँस की कमची से बजाता है। वादक कलाकार को मालवा में **ढोली या दमामी** कहकर पुकारा जाता है।
- **रजवाड़ी नृत्य**: मालवा के लोक नृत्यों में रजवाड़ी नृत्य का भी महत्वपूर्ण स्थान है। यह सांस्कारिक मांगलिक एवं धार्मिक अवसरों पर होने वाला प्रमुख नृत्य है। विवाह, मुंडन संस्कार, संजा पर्व, फूलपाती पर्व, नवरात्रि, होली, गणगौर आदि के दौरान विशेष रूप से रजवाड़ी नृत्य की धूम रहती है। इस नृत्य की विशेषता है कि उत्सव(अवसर) के अनुसार नृत्य के साथ गाए जाने वाले गीत बदल जाते हैं। इस नृत्य की लय अत्यन्त विलम्बित होती है। रजवाड़ी नृत्य भी मालवा में **महिलाओं का नृत्य** है।
- **बनोला और छल्ला नृत्य**: मालवा में विवाह के अवसर पर बनोला निकालने और छल्ला कहने की प्रथा है। बनोला का अर्थ बाना है। छल्ला का अर्थ छंद है। बनोला- छल्ला नृत्य मालवा के ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में युवाजनों द्वारा किया जाता है।
- **भोपा नृत्य**: मालवा में भैरव के पुजारी को "भोपा" या "पंडा" कहते हैं। भोपा लोग मूलत: गाँवों में काश्तकारी करते हैं। खेती से समय निकालकर ये लोग भैरव बाबा के पुजारी के रूप में भिक्षा-वृत्ति हेतु गाँव-गाँव का भ्रमण करते हैं। हाथ में सैली लिए भैरवनाथ का कोड़ा लेकर भक्ति रस के गीत गाते हुए एकल नृत्य करते हैं।
- **फूलपाती नृत्य**: मध्यप्रदेश के मालवा अंचल का यह क्षेत्रीय लोक नृत्य है। बसन्ती बहार से परिपूर्ण यह नृत्य मालवा के गाँव एवं नगर में समान रूप से आयोजित होता है। फूलपाती नृत्य महिलाओं का विशेष नृत्य है। फूल और पत्तियों के संयोग से सजा पीतल का कलश इस नृत्य का मुख्य आधार है। मालवा अंचल में यह नृत्य एक प्रथा के रूप में प्रचलित है।
- **गनगौर नृत्य**: मध्यप्रदेश में "गणगौर" पर्व का आयोजन पूर्ण श्रद्धा के साथ मालवा एवं निमाड़ अंचल में किया जाता है। यह लोकोत्सव मालवा में चैत्र के महीने में महिलाएँ गीत के साथ उमंग में नृत्य करती हुयी गाजे-बाजे के साथ किसी तालाब, पनघट, नदी या जलाशय के तट पर पूजा के लिए जाती हैं वहाँ खुलकर नृत्य किया जाता है।

- **मटकी नृत्य**: मालवा क्षेत्र में अधिकतर लोक नृत्य स्त्रियों द्वारा ही सम्पन्न होते हैं, जो शादी-ब्याह, पर्व-त्यौहार या किसी मांगलिक अवसर पर किया जाता हैं। मटकी लोक नृत्य मौलिकता एवं मर्यादा का प्रतिरूप है। मटकी लोक नृत्य, मालवा का प्रमुख जाना-पहचाना नृत्य है। मटकी का अर्थ नृत्य के रूप में "मटकना " है अर्थात् स्त्रियों द्वारा कलात्मक ढंग से मटक मटक कर किया जाने वाला नृत्य "मटकी नृत्य" है। नृत्य की कोई सीमावंधि नहीं होती। महिलाएँ अपनी ऊर्जा के अनुसार झुक-झुक कर घेर-घूम कर उछलकर या लहर देकर मन भरकर नाचती हैं। प्रत्येक स्थिति में मटकना ही प्रमुख विधा होती है। मटकी नृत्य की तुलना मालवा के खेतों में हवा के तेज झोकों में लहराती गेहूँ की फसल से की जा सकती है। इस नृत्य को करने वाली महिला को **झेला***** कहा जाता है।
- **गरबा नृत्य**: गरबा नृत्य" मूल रूप से गुजरात का है। मध्यप्रदेश के मालवा क्षेत्र में भी यह नृत्य सांस्कृतिक जीवन का एक प्रमुख अंग है। इसे देवी दुर्गा के आराधना स्वरूप किया जाता है। इस नृत्य का आयोजन महिलाओं द्वारा किया जाता है, किन्तु किशोरियाँ ही विशेष रूप से इस नृत्य में सम्मिलित होती हैं। कुँआर मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा (परिवा या पड़वा) से प्रारंभ होकर यह नृत्य शरद पर्णिमा तक चलता है।
- **केरवा नृत्य**: यह लोक नृत्य मालवा का पारम्परिक मस्ती भरा नृत्य है। इसमें नर्तकगण दोनों हाथ ऊपर की ओर उठाकर नृत्य करते हैं। इसी मुद्रा में पद संचालित होते हैं। कभी-कभी पद संचालित करते हुए घेरा भी बनाया जाता है। यह नृत्य पैरों को सरकाते हुए भी किया जाता है।
- **फुन्दी नृत्य**: मालवा के जन जीवन में इस नृत्य का अपना अलग स्थान है मटकी नृत्य की लय के साथ ही यह नृत्य प्रारंभ हो जाता है। वास्तव में यह मटकी नृत्य का सह नृत्य है। महिलाएँ मटकी नृत्य करते-करते तुरन्त फुन्दी नृत्य करने लगती हैं। इस नृत्य में महिलाएँ आपस में एक-दूसरे का हाथ क्रास मुद्रा में पकड़कर तेजी से गोल चकरी लगाती हैं।
- **भोजली परब नृत्य**: रक्षाबन्धन एवं कजलियों का पावन पर्व मनाया जाता है। गाँवों में भुजरियाँ विसर्जन हेतु पारम्परिक जलूस निकाला जाता है। यह जुलूस गाँव के किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के घर आँगन से प्रारंभ होकर किसी जलाशय में जाकर समाप्त हो जाता है। इसी खुशी एवं उल्लास में लोक नृत्यों का आयोजन अनायास हो जाता है, जिसे "भोजली परब नृत्य" कहते हैं।
- **बाँछड़ियों का नाच**: मालवा अंचल में बाँछड़ियों का नाच व्यवसायिक वंश परम्परा की धरोहर है। मालवा में बाँछड़ी एक जाति निवास करती है, जो खेतिहर श्रमिक के साथ अन्य व्यवसायों के द्वारा अपना जीवन- यापन करती है, किन्तु इनका अपना वंशानुगत नृत्य भी एक व्यवसाय है। इनका यह लोक नृत्य पूर्ण रूप से पर- मनोरंजन प्रदान करने वाला होता है। यौवन का प्रभाव भी इनकी वेशभूषा और नृत्य में आकर्षक ढंग से पड़ता है। नृत्य का प्रमुख वाद्य "ढोल" होता है।

▷ निमाड़ के लोकनृत्य

- **गणगौर लोकनृत्य**: गणगौर नृत्य निमाड़ अंचल का पारंपरिक आनुष्ठानिक नृत्य है। यह चैत्र माह में पढ़ने वाले गणगौर पर्व में किया जाता है। गणगौर एक लोक देवी है, जो पार्वती का प्रतीक है। मूर्तियाँ बनाकर घर-घर में पूजा करने की प्रथा है। गणगौर में दो तरह के नृत्य होते हैं एक झालरिया, दूसरा झोला झालरिया नृत्य में स्त्रियाँ अलग समूह में और पुरुष अलग समूह में हिस्सा लेते हैं। वर्तमान में श्री हीरालाल साद, श्री प्रभाकर दुबे, श्रीमती साधना उपाध्याय का गणगौर नृत्य दल गणगौर नृत्य दलों में श्रेष्ठ माना जा सकता है।
- **काठी नृत्य**: काठी, निमाड़ अंचल का पारम्परिक लोक नृत्य-नाट्य है। पार्वती की तपस्या से संबंधित मातृ पूजा का त्यौहार नृत्य है। **ढीक** काठी का मुख्य वाद्य है। काठी नर्तक बाना पहनकर गाँव-गाँव जाकर नाचते गाते हैं। महाशिवरात्रि का काठी के नृत्य दल पंचमढ़ी, सिरवेल, महादेव, बीजागढ़, चारवा, बडकेश्वर महादेव मंदिर में पहुँचकर जल चढ़ाते हैं, वहाँ काठी के कई दल दिन भर नाचते-गाते हैं और शाम को घर लौट आते हैं।

> फेफरिया [MPPSC (Civil Main) GS-I 2019 | 3 M]

- **फेफारिया नाच**: फेफारिया पारंपरिक समूह नाच है। स्त्री और पुरुष जोड़ी बनाकर गोल घेरे में नाचते हैं। फेफारिया वाद्य के कारण इस नाच का नाम फेफारिया नाच पड़ा। फेफारिया एक प्रकार की फुंगी है जिसकी आवाज शहनाई से मिलती-जुलती है।
- **मांडल्या नाच**: माडल्या नाच ढोल पर किया जाता है। माडल्या एक पारंपरिक समूह नृत्य है। पुरुष ढोल बजाता है। काँसे की थाली का तीव्र स्वर नृत्य को अधिक उत्तेजक बनाता है। मांडल्या नाच **केवल महिलापरक** है। महिलाएँ ढोल की थाप पर गति बदलती हैं, हाथ और पैरों की विभिन्न मुद्राओं को प्रदर्शित करती हैं।

- **आड़ा खड़ा नाच**:निमाड़ में जन्म, मुंडन संस्कार और विवाह के अवसर पर कई नृत्य किये जाते हैं। इन नृत्यों को आड़ा या खड़ा कहा जाता है। महिलाएँ घूंघट डाले झुककर हाथ और घुटनों को नृत्य गतियों के अनुरूप लय के साथ ऊपर-नीचे और कमर पर ले जाती हैं।
- **डंडा नाच**: चैत्र वैशाख की रातों में, विशेषकर गणगौर पर्व, पर निमाड़ के किसान डंडा नाच करते हैं। इसमें 20 से 25 तक पुरुष नर्तक होते हैं। नर्तकों के दोनों हाथों में एक डंडा होता है डंडा लेकर नाचने के कारण इसका नाम डंडा नाच पड़ा। डंडा नाच के प्रमुख वाद्य ढोल और थाली हैं।
- **गम्मत**: गम्मत निमाड़ी जनजीवन का सबसे बड़ा साधन है। गम्मत व्यंग्य का जीवन्त रूप है। समाज की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक बुराइयों और विद्रूपों पर चोट करना गम्मत का एक खास काम है। बुंदेली में स्वाँग, छत्तीसगढ़ में माचा, महाराष्ट्र में तमाशे का जो स्थान है, वही गम्मत का निमाड़ में है। गम्मत निमाड़ का लोकरंग है, विशेषकर नवरात्रि में गाँव-गाँव में गम्मतें की जाती हैं। गम्मत का मंच चारों ओर खुला होता है। बीच में एक खंभा गाड़कर उसके चारों ओर कपड़े का चंदोवा तान देते हैं। गम्मत में एक विदूषक होता है।
- **रासलीला**: भादों में कृष्ण जन्माष्टमी के आसपास निमाड़ के गाँवों में रासलीला का आयोजन किया जाता है। कृष्ण लीला की विभिन्न प्रसंगों की प्रस्तुति रासलीला में की जाती है। रासलीला में विदूषक और अन्य पात्र अपने अभिनय से गाँव के दर्शकों को बाँधे रखते हैं।

18.3 मध्यप्रदेश के क्षेत्रीय लोकनाट्य

▷ **बुंदेलखंड के लोकनाट्य** : मध्यप्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र में मुख्य रूप से **रामलीला, रहस, भड़ैती, नोटंकी** और **स्वांग** का मंचन किया जाता है।

- **रामलीला**: बुंदेलखंड के साथ ही प्रदेश के विभिन्न अंचलों में, रामलीला का आयोजन संस्कृति की प्रवाहमान परंपरा के रूप में सदियों से चला आता है। रामलीला के मंचन में रामचरित मानस की चौपाइयों और दोहों का भरपूर प्रयोग किया गया है। रामलीला का मंचन करने वाली मंडलियाँ, राज्य के साथ-साथ, प्रदेश के बाहरी शहरों अयोध्या, काशी आदि स्थानों से आती हैं।
- **नौटंकी**: नौटंकी अपने नाम के अनुसार ही व्यंग्य और हास्य से भरा लोक नाट्य है। मेलों में नौटंकी की मंडलियाँ आकर कई बार एक एक पखवाड़े तक नौटंकी का प्रदर्शन करती हैं । बुंदेलखंड की नौटंकी को हाथरस की नौटंकी से अनुप्रेरित माना जाता है। इस क्षेत्र में नौटंकी के आयोजन की लोकप्रिय कथा लोक काव्य आल्हा है। इसके साथ ही नौटकी का जो दूसरा आधार है ख्याल गायकी पर आधारित है।
- **भड़ैती**: स्वतंत्रता के पूर्व राजा-महाराजाओं और जागीरदारों के शौर्य और साहस की अतिरंजित गांथाओं को गाने और प्रदर्शित करने वाले भाँडों के नाम पर इस लोक नाट्य की शैली का विकास हुआ।
- **रहस**: लोकनाट्य रहस एक आनुष्ठानिक नाट्य विद्या है जिसे प्रमुखतः ग्रामीण अंचलों में श्रद्धा, भक्ति और मनोरंजन के सम्मिलित भाव से आयोजित किया जाता है। यह केवल मनोरंजन नहीं बल्कि आध्यात्म की कलात्मक अभिव्यक्ति है। रहस का अर्थ रास या रासलीला है। इसमें संगीत-नृत्य प्रधान कृष्ण के विविध लीलाभिनय किए जाते हैं। इसे एक ही पखवाड़े में सम्पन्न किया जाता है।

▷ **बघेलखंड के लोक नाट्य**

- **छाहुर**: यह बुंदेलखंड का एक लोकप्रिय लोक नाट्य है। इस इलाके में छाहुर का आयोजन हर साल दीपावली से लेकर गोपाष्टमी तक किया जाता है। इस लोक नाट्य की सबसे बड़ी विशेषता है कि यह एक जातिपरक लोक नाट्य है जिसके पात्र पशुपालन के व्यवसाय से जुड़े यादव समुदाय के लोग होते हैं। इसके आयोजन के लिए चौपाल में एक साधारण-सा मंच बनाया जाता है। पात्र भी कोई बहुत ज्यादा साज-सज्जा नहीं करते हैं। इस नाट्य का केंद्र बिन्दु छाहुर होता है जो अपने साहसिक कारनामों के लिए जाना जाता 'है। छाहुर के आयोजन में स्त्री पात्र की भूमिका पुरुष पात्र भी करते हैं।
- **मनसुखा:-** मनसुखा एक लोक प्रहसन हैं । यह रास का बघेली रूपांतर है । इसमें दो मंच और दो पदों का प्रयोग होता है। साथ में मेकअप का स्थान भी होता है । मनसुख उर्फ विदूषक महोदय और गोपियों में नोंकझोंक चलती है, मसखरों को गाँवों में मनसुख लाल भी कहते हैं ।
- **हिंगोला -** हिंगोला एक मंच रहित सीधा और सरल नाट्य रूप है। .

- **लकड़बघा:-** लकड़बघा आदिवासी युवक-युवतियों का लोकनाट्य है, जो खुले मंच पर अभिनीत होता है। यह विवाह के बाद खेला जाता है।

> माच [MPPSC (Civil Main) GS-I 2021 | 3 M]
> 'तुर्रा कलंगी' लोकनाट्य का वर्णन कीजिए। [MPPSC (Civil Main) GS-I 2023 | 5 M]

▷ मालवा के लोक नाट्य

मालवा में मुख्य रूप से माच, स्वांग, नकल, कलंगी तुर्रा, रामदंगल नाटयो का मंचन किया जाता है।

- **माच**: भारतीय लोकनाट्य शैलियों में माच एक पूर्ण विकसित और लोकप्रिय लोकनाट्य परंपरा है। मालवा में लोक मंच के रूप में माच लगभग दो सौ वर्षों में लोकानुरंजन का सबल माध्यम बना हुआ है। माच संस्कृत के **मंच से** बना है। मंच से माच की निर्माण स्पष्ट है। माच के विकसित रूप ने मौलिक आत्मीयता और निजता उज्जैन की लोक बस्तियों में प्राप्त की। उज्जैन माच की उत्स भूमि है। माच केवल गेय परंपरा नहीं है, बल्कि वह अभिनय की रंगशाला ढोलक और सारंगी माच की जान हैं। माच के प्रवर्तक गुरु या उस्ताद कहलाते हैं। उस्तादों के अपने-अपने अखाड़े होते हैं। माच को प्रतिष्ठा दिलाने वाले गुरुओं में सर्वश्री गोपालजी, बालमुकुन्दजी, राधाकिशनजी, कालूरामजी और भेरूलालजी का बुनियादी और उल्लेखनीय योगदान है। राधाकिशनजी अखाड़े के श्री सिद्धेश्वर सेन तथा कालूरामजी के पोते श्री **ओमप्रकाश शर्मा** माच को वर्तमान स्वरूप प्रदान करने तथा आधुनिक रंगमंच पर माच को जोड़ने में परंपरागत व मौलिक स्थान रखते हैं।
- **स्वाँग**: स्वाँग बुंदेलखण्ड का पारंपरिक लोकनाट्य है। बुंदेलखण्ड में स्वाँग का स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है। स्वाँग प्रायः लोकनृत्य राई के विश्राम के क्षणों में किया जाता है। इसलिए स्वाँगों की अवधि अधिक- से-अधिक पंद्रह से बीस मिनट तक होती है, इसी के अनुरूप बुंदेली स्वाँग का स्वरूप भी निर्धारित हुआ। बुंदेलखण्ड में इसे नकल उतारना कहते हैं। स्वाँग का अर्थ रूप धारण करने से लिया जाता है। स्वाँग भारतीय लोक की अति प्राचीन परंपरा है। स्वाँग का मूल उद्देश्य हास्य और व्यंग्य के माध्यम से शुद्ध मनोरंजन करना है। राई नृत्य किसी भी समय किया जाता है, विशेषकर जन्म, विवाह तथा अन्य खुशी के अवसर पर तभी स्वाँग भी होता है। स्वाँग का कोई विशेष मंच नहीं होता। जहाँ राई नृत्य किया जाता है, उसी जगह स्वाँग भी किये जाते हैं।

▷ निमाड़ के लोक नाट्य

: निमाड़ के महत्वपूर्ण लोक नाट्यों में गम्मत, पाती स्वांग, पनवाड़ी स्वांग, काठी,रासमंडल, ठोठ्या और खमरास प्रमुख है-

- **गम्मत**: गम्मत निमाड़ का सामुदायिक लोक नाट्य है। यह लोक नाट्य गाँव लोग आपस में मिल-बैठकर रचाते हैं। इसके लिए 8-10 लोगों की जरूरत होती। सामान्य रूप से इस लोक नाट्य का आयोजन त्यौहारों के मौके पर किया जाता है। प्रमुख त्यौहारों के मौके पर गम्मत का आयोजन होता है।
- **स्वांग**: निमाड़ी स्वांग प्रदेश के दूसरे क्षेत्रों में होने वाले स्वांग की तरह ही है बस इसमें संवाद और शैली निमाड़ी होती है। वहीं निमाड़ में स्वांग दो रूपों, स्वरूप स्वांग और है। स्वांग के अभिनय की अवधि कम होती है जबकि गम्पत के मंचन की अवधि पर्याप्त होती है तथा वह काफी विस्तारित स्वरूप में होती है।
- **पाती स्वांग**: यह गणगौर के अवसर पर महिलाओं के द्वारा खेला जाने वाला यह लोक नाट्य है। इस लोक नाट्य का उद्देश्य मनोरंजन होता है। इस लोक नाट्य को माता की मूठ रखने के रोज से नौ दिन तक गाँव की लड़कियाँ खेलती हैं।
- **पनवाड़ी स्वांग**: यह महिलाओं के द्वारा विवाह के अवसर पर किया जाने वाला स्वांग है। इसके आयोजन में लग्न के दूसरे रोज वर-वधु पक्ष की समधिनें दूसरी महिलाओं के साथ गीत गाती हुयी किसी जल स्रोत मसलन कुएँ, बावड़ी अथवा नदी तक जाती है।
- **ठोठ्या**: ठोठ्या भी पाती और पनवाड़ी स्वांग की तरह ही महिला परक लोक नाट्य है, लेकिन इसकी मुख्य विशेषता यह है कि इसमें कलाकार भी महिलाएँ ही होती हैं और दर्शक भी महिलाएँ ही। इस लोक नाट्य का आयोजन उस रोज होता है जब घर से बारात, विवाह करने के लिए वधु पक्ष के घर जाती है।
- **काठी**: यह निमाड़ का एक लोकप्रिय लोक नाट्य है। काठी आयोजन करने वाले लोक कलाकार एक मंडली के रूप में होते हैं जिन्हें भगत कहते हैं। इस नाट्य के दौरान भगत आपस में सवाल-जवाब करते हैं तथा इस दौरान वे दर्शकों से भी संवाद बनाए रखते हैं। इस इलाके में काठी लोक नाट्य की प्रमुख कथाएँ राजा हरीशचंद्र, भिलनीवाल है।

18.3 लोक नृत्य गीत (Folk Songs)

मध्यप्रदेश की लोकनृत्य परंपरा अत्यंत वैभवशाली और समृद्ध है। इन लोकनृत्यों के साथ गाए जाने वाले लोकगीत भी उतने ही समृद्ध और भावपूर्ण होते हैं। प्रदेश के लगभग सभी लोकनृत्यों के अपने विशेष और निर्धारित लोकगीत होते हैं, जिन्हें लोक नर्तकगण नृत्य करते समय स्वयं गाते हैं।

नृत्य के समय, इन गीतों को गाने में वाद्य यंत्र बजाने वाले कलाकारों की भी सक्रिय भागीदारी होती है। इन लोकगीतों के माध्यम से केवल मनोरंजन ही नहीं होता, बल्कि यह गीत संपूर्ण लोकसंस्कृति के संरक्षक के रूप में भी कार्य करते हैं।

मध्यप्रदेश न केवल भारत का एक विशाल राज्य है, बल्कि यह अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति बहुल प्रदेश के रूप में भी प्रसिद्ध है। इस प्रदेश के भौगोलिक क्षेत्र में चार प्रमुख सांस्कृतिक अंचल फैले हुए हैं—बुंदेलखंड, मालवा, निमाड़ और बघेलखंड। यह राज्य अपनी मिश्रित संस्कृति के लिए जाना जाता है और विविध परंपराओं का अद्भुत संगम प्रस्तुत करता है। यहाँ की संस्कृति का प्रभाव लोक जीवन पर भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, विशेषकर लोकगीतों में। मध्यप्रदेश के विभिन्न अंचलों में ऋतुओं, तीज-त्योहारों, उत्सवों एवं संस्कारों के अवसर पर समय और साधनों के अनुसार लोकगीतों का गायन किया जाता है। प्रदेश के अलग-अलग क्षेत्रों की अपनी लोक बोलियाँ हैं, जिनमें भावनाओं की अभिव्यक्ति बहुत सहज और स्वाभाविक होती है। यहाँ यह कहावत प्रसिद्ध है— "पाँच कोस में बदले बोली, दस कोस में पानी"

क्षेत्र	गीत
बुन्देलखंड	राई, बम्बुलियां फाग, मामुलियां, कजरी, झूला, लाँगुरिया, सितम, भगतें, सैरा, नौटंकी आल्हा, वसदेवा आदि।
बघेलखंड	ढोंढिया, कबीर, हिंगाला, ठढ़गिता, बनगिता, बिरहा, केहरा, नैनजुगानी, जिंदवा, जतवा गीत, पुतरी पूजन के गीत, विदेशिया गीत, सरमन गाथा गायन, इत्यादि।
मालवा	ढाँणा गीत, संजा, कानग्वालिया, मामेरा, बनोला और छल्ला, फूलपाती, गाल गीत, कलगी- तुर्रा, मटकी, आड़ाखड़ा रजवाड़ी, केरवा, माच, तेजा जी और ढोला-मारू की गाथा आदि।
निमाड	रेणुबाई के गीत, सांजा-फूली के गीत, किचाली भरना, बांजुली गीत, नरवत के गीत, गरबा, गरबी, गबलन, गणगौर आदि।

▷ बुन्देलखण्ड

- **संचत गीत**: "संचत" शब्द का अर्थ संतति या संतान है। यह शब्द संतति का अपभ्रंश है। बुन्देलखण्ड अंचल में दुल्हिन के आगमन के पश्चात "दादरे" का बुलउआ (आमंत्रण) होता है। इस अवसर पर नई बहू द्वारा दादरा गाने का दस्तूर निभाया जाता है। इस हर्षोल्लास के अवसर पर सास, ननद, जेठानी, देवरानी तथा मोहल्ले-पड़ौस की महिलाएँ ढोलक व गड़ुए (लोटा) की संगति पर खनकती हुई लय में समवेत स्वरों में विभिन्न सुमधुर, मनोरंजक तथा श्रृंगार रस में सराबोर दादरें गाती हैं। जिनमे संतान की अभिलाषा के सुंदर गीत भी होते है।
- **सरिया गीत**: बुन्देलखण्ड अंचल में शिशु जन्म, विशेष रूप से पुत्र जन्म के तुरंत बाद, अपार हर्ष और उल्लास के वातावरण में जो लोकगीत महिलाएँ गाती हैं, उन्हें **सरिया गीत** कहा जाता है।
- **सोहर गीत**: पुत्र रत्न प्राप्ति पर पुत्र जन्मोत्सव का पारम्परिक आयोजन किया जाता है। दादा, दादी एवं सभी परिवारजनों के लिए यह अपार हर्ष का समय होता है। मंगल कामना की पूर्ति स्वरूप हर्षोल्लास प्रकट करते हुए इस पुनीत अवसर पर बुन्देलखण्ड में "सोहर" गीत गाये जाते हैं।
- **बधाई**: जब भाई के घर भतीजे का जन्म होता है, तो बहन इस खुशी के मौके पर धूमधाम से अपने परिवारजन और नाते-रिश्तेदारों के साथ बाजे-गाजे के साथ भाई के घर पहुँचती है। यह अवसर परिवारिक प्रेम और पारंपरिक रीति-रिवाजों से भरा होता है। बहन नवजात शिशु के लिए **टोपी**, **संगुलिया**, **खटोला** और अन्य साज-सज्जा की सामग्री लेकर जाती है। साथ ही, भाई और भाभी के लिए भी नए वस्त्र उपहार स्वरूप दिए जाते हैं। यह एक पारंपरिक दस्तूर है, जो सामाजिक जुड़ाव और स्नेह को दर्शाता है। नाते-रिश्तेदार भी अपनी इच्छानुसार शिशु के लिए उपहार स्वरूप वस्त्र, खिलौने या अन्य सामग्री लेकर आते हैं। कई बार बहनें अपने भतीजे के लिए **सोने या चाँदी के आभूषण** भी ले जाती हैं, जिससे बच्चे के प्रति स्नेह और शुभकामना प्रकट होती है।

- **बम्बुलियाँ**: बम्बुलियाँ को भोला का गीत कहा जाता है। भोला शब्द भगवान शिव के लिए प्रयुक्त होता है। अतः भोला के गीत का अर्थ है भगवान शंकर की स्मृति में गाये जाने वाले गीत। कहीं-कहीं बम्बुलियों को "बाबा के गीत" भी कहते हैं।
- **रमटेरा/लमटेरा**: बुन्देलखण्ड अंचल में यात्रा गीत के रूप में "रमटेरा" भी गाये जाते हैं। रमटेरा का विकृत नाम रमदेश है। इस अंचल में "टेरना" का अर्थ पुकारना होता है। अतः रमटेरा का अर्थ को पुकारना अथवा स्मरण करना है। अनेक विद्वानों ने "रमटेरा" को बमबुलिया का दूसरा नाम तथा दूसरा प्रकार भी कहते है।इन्हीं गीतों को कहीं-कहीं रमटेरा (रामटेरा) भी कहते हैं।
- **ख्याल**: "ख्याल" एक प्रमुख सगुण लोक भजन गायन शैली का नाम है। ख्याल का गायन परम्परागत रूप से पुरुषों द्वारा होता है। ख्याल के पाँच अवयव हैं:- सुमरनी (स्तुति), टेक, दौड़, उड़ान तथा ख्याल। सबकी धुनें प्रायः अलग होती हैं।
- **ढोला**: सगुण लोक भजन की अन्य गायन शैली ढोला है। ढोला गायन की निश्चित धुन व शैली है। ढोला में अधिकतर कृष्ण की बाल्य लीला का वर्णन रहता है। इस का प्रचलन बुन्देलखण्ड अंचल के दतिया, चरखारी, पन्ना तथा छतरपुर में अधिक है। परम्परागत रूप से ढोला का गायन पुरुष प्रधान है।
- **गारी**: लोकभजन की एक गायन शैली गारी है, जिसके अन्तर्गत राम बनवास की गारी, सीता हरण की गारी, कृष्णावतार की गारी, रामावतार की गारी, गंगावतरण की गारी इत्यादि प्रमुख हैं।
- **खंजरी (खंजडी) के भजन**: खंजड़ी बजाकर गाये जाने के कारण इन विशिष्ट लोक भजनों का नाम " खंजड़ी के भजन" के नाम से प्रचलित हो गया। ये पुरुष वर्ग के एकल भजन हैं। निर्गुण तथा सगुण, दोनों प्रकार के भजन खंजड़ी के साथ गाने की परम्परा बुन्देलखण्ड में है।
- **धुवियाऊ भजन**: बुन्देलखण्ड के धोबी समाज में लोटा तथा सूप की संगति पर लोक भजन गाये जाते हैं। धुन तथा लयात्मकता की दृष्टि से ये अन्य भजनों से अलग हैं। कोरीयाऊ भजन,कोरी समाज में कबीर पंथी लोक भजन, उनकी निजी शैली में गाये जाते हैं, जिनमें कबीर का आध्यात्मवाद, रहस्यवाद तथा गुरु-उपदेश का विशेष उल्लेख मिलता है।
- **कीर्तन**: लोक भजनों के अतिरिक्त बुन्देलखण्ड में भक्ति गायन की एक अन्य लोक विधा भी है, जिसे कीर्तन कहते हैं। लोक भजन एकल व सामूहिक दोनों रूप में गाये जाते हैं, किन्तु "कीर्तन" केवल सामूहिक रूप में ही होता है। कीर्तन का आयोजन प्रायः अखण्ड रामायण पाठ, तीज-त्यौहार, किसी धार्मिक कृत्य तथा भक्ति भावना से कभी भी किया जाता है।
- **बिलवारी**: बुन्देलखण्ड में गाये जाने वाले श्रम गीतों में "बिलवारी" का विशिष्ट स्थान है, जिसकी एक निश्चित धुन तथा लयात्मकता के साथ - साथ अत्यंत सरस तथा मधुर गायन विधा है। बुन्देलखण्ड में परम्परागत रूप से महिलाएँ ही "बिलवारी" गाती हैं। इनमें नारी मनोभावनाओं की श्रृंगारिक भावाभिव्यक्ति के विविध स्वरूपों का सहज चित्रण मिलता है।
- **चकिया गीत**:चक्की चलाना एक श्रमशील कार्य है। चक्की चलाने का कार्य प्रायः महिलाओं द्वारा सम्पन्न होता है। इस कार्य से उत्पन्न होने वाली थकान, पीड़ा तथा ऊब दूर करने के लिए महिलाएँ चक्की चलाते समय जो गीत गाया करती हैं, उन्हें चकिया या जतसार गीत कहते हैं। ये गीत ग्रामीण क्षेत्रों में, आंचलिक बोली में गाये जाते हैं। बुन्देलखण्ड में इन गीतों की परम्परा विशिष्ट रूप से है।
- **दिनरी/ अनबोलना**: बुन्देलखण्ड अंचल में चैत्र मास अपार खुशियाँ लेकर आता है। इस समय कृषि कार्य जोरो पर चल रहा होता है। बुन्देलखण्ड के कृषि गीतों के अन्तर्गत बिलवारी व दिनरी स्त्रियाँ गाती हैं तथा यहाँ का पुरुष वर्ग कृषि कार्य करते समय "अनबोलना" गाता है।
- **कजरी**: मध्यप्रदेश के बघेलखण्ड तथा बुन्देलखण्ड अंचलों में "कजरी गाने की परम्परा है। "कजरी का नामकरण श्रावण में घिरने वाले बादलों की कालिमा के कारण पड़ा है।
- **मल्हार**: मध्यप्रदेश के बुन्देलखण्ड अंचल में कजरी, झूला, राछरा, मँगादा आदि की भाँति "मल्हार" भी वर्षा ऋतु में गाया जाने वाला लोकगीत है। मल्हारें विशेष रूप से श्रावण तथा भादौं में गाई जाती हैं।
- **रसिया**: रसिया मूलतः उत्तरप्रदेश के कृष्ण जन्मा बृज क्षेत्र की लोकप्रिय लोकगीत विधा है। इस क्षेत्र में "रसिया", फाग या होली का एक विशेष प्रकार है, जिसका गायन विशेष रूप से होली पर्व पर किया जाता है, इसका गायन बृज क्षेत्र में प्रचलित हो गया। "रसिया"

सम्बोधन श्रीकृष्ण के लिये किया गया है। बृज के लोक नाट्य "रास" में "रसिया" गीतों का विशिष्ट स्थान है

- **राई**: बुन्देलखण्ड में "राई" मुख्य लोकनृत्य है, किन्तु लोकगीत के रूप में भी राई की लोकप्रियता अत्यधिक है। राई नृत्य बेड़िया जाति की महिलाओं की बहुमूल्य धरोहर होते हुए उनके जीवकोपार्जन का साधन है। यह जाति छतरपुर, सागर, दमोह के विभिन्न क्षेत्रों में निवास करती है। फलस्वरुप इन जिलों में राई नृत्य का प्रचलन सर्वाधिक है।
- **नौरता (सुअटा)**: बुंदेलखंड क्षेत्र में आश्विन मास की नवरात्रि के अवसर पर बालिकाओं द्वारा खेले जाने वाला एक पारंपरिक संगीतमय धार्मिक खेल **नौरता** कहलाता है। इसे कुछ स्थानों पर **सुअटा** भी कहा जाता है। इस खेल का मूल उद्देश्य एक सुयोग्य वर की प्राप्ति की कामना करना होता है। इस परंपरा में जो गीत गाए जाते हैं, उन्हें **नौरता** या **सुअटा के गीत** कहा जाता है। नौरता शब्द का अर्थ है *नवरात्रि*, जबकि *सुअटा* एक अत्याचारी राक्षस का नाम था जो कन्याओं का अपहरण करता था।

  कहानी के अनुसार, सुअटा राक्षस के अत्याचारों से मुक्ति पाने के लिए कुंवारी कन्याओं ने नवरात्रि के नौ दिनों तक व्रत रखा और देवी गौरी (पार्वती) की पूजा-अर्चना की। देवी पार्वती, बालिकाओं की भक्ति से प्रसन्न होकर उन्हें अभयदान देती हैं और सुअटा राक्षस का वध करके कन्याओं को उसके आतंक से मुक्त कर देती हैं।
- **झेंझी (झंझरी)** : नौरता की प्रत्येक रात्रि को बालिकाएँ झेझी या झंझरी फिराती है। झेझी और झंझरी समानार्थी शब्द हैं, जिसका अर्थ मिट्टी का एक छोटा घड़ा या मटका है, जिसके ऊपरी भाग में चारों तरफ अनेक छिद्र कर दिये जाते हैं। तथा आधे घड़े तक राख भर दी जाती है तथा इस राख पर एक जलता हुआ दीपक रख दिया जाता है। रात्रि होते ही बालिकाओं का यह खेल आरम्भ हो जाता है। एक बालिका सिर पर झंझरी अर्थात् छिद्रयुक्त प्रकाशमान घड़ा रख लेती है।
- **चंदा-तरैयाँ (साँझी)**: मध्यप्रदेश के ग्वालियर क्षेत्र में बालिकाएं एक गीतमय खेल खेलती हैं जिसे सांझी या चंदा-तरैयाँ कहा जाता है।
- **मामुलिया**: बुन्देलखण्ड में बालिकायें एक अति सुन्दर गीतमय खेल खेलती हैं। जिसका नाम "मामुलिया" है। मामुलिया प्रायः श्रावण, भादों व क्वाँर मास में खेला जाता है। "बुन्देलखण्ड की कुँवारी बालिकाएँ भादों मास में (कहीं-कहीं क्वॉर के कृष्णपक्ष में भी) मामुलिया का गीतमय खेल खेलती हैं। इसके लिये कोई निश्चित तिथिया वार नहीं होती है।
- **बुंदेली लोकगीत**: शौर्य और श्रृंगार की धरती बुंदेलखण्ड की कला और संस्कृति सबसे अलग है। यहाँ के लोक गीतों में शौर्य और उत्कर्षण श्रृंगार के भाव गुंफित होते हैं। यहाँ के लोक गायन के तारत्व के दो मुख्य स्वर हैं, एक षडज और दूसरा मध्यम पुरुषपरक और बाल सुलभ लोक गायन का स्वर प्राय: षडज यानी 'सा' होता है और वन्य संस्कार गीतों में महिलाएँ मध्यम यानी 'म' स्वर से गाती हैं। लोकगीतों के विषय पारिवारिक पृष्ठभूमि लिये हुए होते हैं, जिनमें लोकजीवन की सामाजिकता का सम्पुट होता है। लोकगीतों में लोकधुनों की माधुरी का वैविध्य बुंदेली लोकगीतों की खास पहचान है, जिसमें भी तरह के लोक राग देश में प्रचलित हैं वे सब बुंदेली लोकगीतों की परंपरा से प्रयुक्त हुए हैं।
- **आल्हा गायन**: आल्हा गान वीर रस प्रधान काव्य है। आल्हा की रचना लोककवि जगनिक ने लगभग एक हजार वर्ष पहले की थी। आल्हखंड की मूल भाषा बुंदेली थी, इस कारण जगनिक द्वारा लिखी आल्हा ऊदल की बावन लड़ाइयाँ लोककाव्यो में सहज रूप से विराजमान हो गई। जगनिक द्वारा लिखित आल्हागाथा का प्रामाणिक रूप आज तक नहीं मिल पाया है, लेकिन आल्हा का लोकप्रचलित रूप बुंदेलखण्ड के गाँव के अल्हैत आज भी गाते हैं। फिर भी आल्हा की मूल कथा में अंतर नहीं आया है। उसमें लोक गाथा की गेयता और आल्हा और ऊदल के जीवन की घटनाओं में कोई खास फेरबदली आज तक नहीं हुई है। आल्हा प्रायः वर्षा ऋतु में गाया जाता है। कहीं-कहीं आल्हा गायन खड़े होकर भी क्या जाता है। बुंदेलखण्ड में कई गायक ऐसे हैं, जिन्हें आल्हा ऊदल की बावन लड़ाइयाँ कण्ठस्थ हैं। आल्हा छन्द के कारण इसका नामकरण आल्ह खंड पड़ा। आल्ह खंड संसार की सबसे लंबी गाथाओं में से एक है।
- **फाग गीत**: फाग गायन होली के अवसर पर होता है। फागुन माह के लगते ही समूचे बुंदेलखण्ड में ठाकुर फाग, ईसुरी फाग, राई फाग शुरू हो जाते हैं, जो होली जलने के बाद रंगपंचमी तक चलते हैं। स्त्री-पुरुष एक-दूसरे पर रंग गुलाल लगाकर गीत गाकर नृत्य करते हुए ठाकुर फाग खेलते हैं। ठाकुर फाग में मृदंग, टिमकी और मजीरा बजाया जाता है। ठाकुर फाग में स्त्रियाँ जिराई का खेल खेलती हैं। स्त्रियाँ

लकड़ी अथवा सोटियों से गीत गाते हुए पुरुषों पर बार करती हैं और पुरुष चतुराई से वार से बचते हैं। जिराई का आकार अँग्रेजी के H अक्षर के समान होता है। ईसुरी की चौकड़ियाँ फाग बैठकर गायी जाती है। राई फाग राई नृत्य के साथ गाई जाती है।

- **बेरायटा गायन**: बेरायटा मूलतः कथा गायन शैली है, जिसमें मुख्य रूप से महाभारत कथाओं के साथ अनेक ऐतिहासिक चरित, लोक नायकों की कथाएँ गाई जाती हैं। बेरायटा गायन केन्द्रीय रूप से एक व्यक्ति गाता है और सहयोगी गायक मुखिया का साथ देते हैं और कथा को आगे बढ़ाने के लिए हुंकारा देते हैं, बीच-बीच में कुछ संवाद भी बोलते हैं। बेरायटा गायन में लोककथाओं का भी गायन किया जाता है। बेरायटा गायन में कलात्मकता के साथ-साथ प्रसंगानुकूल हाथ और चेहरे के हाव-भाव गायन शैली को प्रभावशाली बनाने में सक्षम होते हैं।
- **देवारी गायन**: देवारी गायन दोहों पर केन्द्रित होता है। अहीर, गवली, बरेदी, धोसी आदि जातियों में देवारी गायन और नृत्य करने की परंपरा है। दीपावली के अवसर पर ग्वाल बाल सिर पर मोरपंख धारण कर घर-घर देवारी माँगते हैं, नेग पाते हैं और ऊँचे स्वर में दोहा गाकर, ढोलक नगड़िया, बाँसुरी की समवेत धुन पर तेजी से नृत्य करते हैं। देवारी के दोहों के विषय कृष्ण-राधा प्रेम प्रसंग, भक्ति तथा वीर रस से पूर्ण होते हैं।
- **जगदेव का पुवारा**: पुवारा मूलतः भजन शैली में है। देवी की स्तुति से संबंधित एक लम्बा आख्यान जिसे भक्त कहते हैं, चैत्र और क्वार मास में गाते हैं। इस अवसर पर जँवार गीत भी गाये जाते हैं। देवीगीतों को लद के नाम से भी जाना जाता है। देव गीतों की लोकधुनें मधुर होती हैं।

मालवा

- **पगल्या गीत**: शिशु के जन्म के उपरांत मालवा में 'पगल्या' अर्थात् नवजात शिशु के पद-चिन्ह एक पत्र में अंकित कर सगे-संबंधी के घर भेजने की परंपरा है। उल्लेखनीय बात यह है कि जिस परिवार में यह पगल्या पत्र पहुँचता है उस घर में भी जच्चा तथा बधाव गीत गूजने लगते हैं।
- **ढाना गीत**: मालवा में "ढाना गीत" महिलाओं द्वारा गाया जाने वाला शौकिया गीत है। ढाना गीतों में प्राय: पनघट का वर्णन रहता है। सिर पर घड़ा रखे हुए अनायास ही नारियों के मुख से ढाना गीत के बोल पनघट पर या पनघट की ओर आते-जाते समय निकल पड़ते हैं। मालवा में "ढाणा" एवं बुन्देलखण्ड तथा बघेलखण्ड में इन्हे "पनघट" कहा जाता है।
- **हीड़ गायन**: मालवा में दीपावली/ श्रावण के महीने के अवसर पर "हीड़" गाया जाता है। मालवा में अन्य अंचलों की तुलना में हीड़ गायन की एक अलग विशेषता है। हीड़ मालवी लोकगीतों का एक प्रकार है। यह कथात्मक लोकगीत होता है। लोक गायक इसे कंठस्थ कर वर्णनात्मक शैली में गाते हैं। हीड़ गीतों में गोप या गूजर जाति की जीवन शैली, सामाजिक ढाँचा, ऐतिहासिक वृत्तान्तों का रोचक वर्णन होता है। हीड़ का प्रधान नायक **देवनारायण** है। गोपों-गूजरों का प्रधान कथावृत्त होने के कारण हीड़ इन्हीं जातियों में सर्वाधिक प्रचलित है।
- **दहका**: ये फाग गीत कथात्मक होते है। इस फाग के दो प्राकर हैं (1) मुरेरा दंहका (2) छुट्टा दंहका
- **गणगौर पर्व**: गणगौर देवी की आराधना एवं पूजन करने से कुँवारी कन्याओं को सुयोग्य वर, सुहागवती स्त्रियों को अखण्ड सौभाग्य तथा संतानहीन नारियों को संतति प्राप्त होने का वरदान मिलता है। इस पर्व पर गाये जाने वाले लोकगीतों को गणगौर के गीत कहा जाता है।
- **जवारा गीत**: जंवारा गीत देवी माँ के प्रति आत्मिक साधना के गीत हैं, जिनमें जन-जन की भक्ति भावना निहित होती है। इन गीतों के भावार्थों में मनुष्य शक्ति से शक्ति प्राप्तकर सद्वृत्ति जागृत करने तथा राक्षसी भावनाओं को नष्ट करने की मनोकामना पूर्ण करने का प्रयास करता है।
- **गरबा गीत**: मध्यप्रदेश के पश्चिमी भाग में स्थित मालवा एवं निमाड़ समृद्ध लोकांचल हैं। नवरात्रि के प्रारंभ होते ही गरबा नृत्य गीतों की जो धूम मचती है वह शरद पूर्णिमा को अपनी चरम सीमा पर पहुँचकर विराम पाती है। इस अवसर पर "गरबा घट" की सांस्कृतिक परम्परा अंचल की विशिष्टता है। मिट्टी के एक छिद्रयुक्त घट पर गरबा देवी का चित्र तथा सजावट के लिए बेलबूटे बनाये जाते हैं। एक

जलता हुआ दीपक घट के भीतर तथा एक दीपक घट के मुँह पर रखा जाता है। इसे "गरबा घट" कहते हैं। कुआँरी कन्याएँ गरबा घट को अपने सिर पर रखकर गरबा गाती हुई सामूहिक रूप से पूरे गाँव का भ्रमण करती हैं, तत्पश्चात् किसी एक स्थान पर ठहरकर जमीन पर "गरबा घट" स्थापित कर पूजा आदि करती हैं। पूजा के उपरांत कन्याएँ उसके चारों ओर मंडलाकार घूम-घूम कर गरबा गीत गाती हुई गरबा नृत्य करती हैं।

- **गौरा-पूजा गीत**: इस अंचल में गौरा पर्व दीपावली के पर्याय के रूप में गोंड़ व कंवर आदिम जाति के लोग पूरी तन्मयता के साथ मनाते हैं। गौरा-पूजा का प्रारंभ मूलतः कार्तिक अमावस्या के 7 दिन पूर्व से होने की मान्यता है, किन्तु कहीं-कहीं 5 या 3 दिन पूर्व भी प्रारंभ होने का प्रचलन पाया जाता है। दिनों का यह अन्तर संभवतः सामर्थ्य पर निर्भर करता प्रतीत होता है। छत्तीसगढ़ में शंकर को "गौरा" और पार्वती को "गौरी" कहा जाता है। जातीय व्यवस्था के अन्तर्गत इस जाति के तीन प्रभाग माने जाते हैं, यथा- कोरवा अहीर, जुझौतिया अहीर या ढड़ोर। सम्पूर्ण अहीर जाति अपने को श्रीकृष्ण का वंशज मानती है। दिवाली की मध्य रात्रि में इनके मुखों से मृदंग, थाली और बंशी की मिश्रित लय तालों के साथ "दिवारी गीतों" के मादक स्वर फूट पड़ते हैं। दीपावली त्योहार में इनकी अनेक सांस्कृतिक परम्पराओं में छाहुर बाँधना, छाहुर देना, गाय खिलाना, दिवारी उगाहना, चंडी बाँधना, पहुवा निकालना एवं मड़ई ब्याहना आदि प्रमुख हैं। इस अवसर पर गाये जाने वाले लोकगीत "दिवारी गीत" कहलाते हैं।
- **मालवी लोकगीत**: मालवा में पुंसवन, जन्म, मुंडन, जनेऊ, सगाई विवाह के अवसर पर पारंपरिक लोकगीत गाने की प्रथा है। पर्व-त्यौहार, ऋतु, अनुष्ठान संबंधी गीतों के गाने की परंपरा भी समूचे मालवांचल में मिलती है। मालवी लोक गायन में एक प्रकार से बोली की मिठास के साथ वहाँ की प्रकृति, धरती और संस्कृति की समृद्धि और सौन्दर्य के पगे मूल स्वर सहज रूप से सुनाई देते हैं।
- **भरथरी गायन**: मालवा में नाथ सम्प्रदाय के लोग चिंकरा पर भरथरी कथा गायन करते हैं। चिंकारा नारियल की नट्टी, बाँस और घोड़े के बालों से निर्मित एक प्राचीन और पारम्परिक वाद्य है। चिंकारा बालों से बने धनुष से बजाया जाता है जिससे मधुर ध्वनि निरंतर निकलती है। भरथरी, गोपीचंद कथा, गोरखवाणी, कबीर, आदि के भजन गाते है, नाथ पंथी लोग भोर में मालवा के गाँवों में आज भी मिल जाते हैं।
- **निरगुणी भजन गायन**: मालवा की निर्गुणी लोक पद गायन परंपरा बहुत पुरानी है। निरगुणिया भजनों में कबीर के अध्यात्म की छाप होती है, जिसमें नश्वर शरीर और अमर आत्मा तथा परमात्मा संबंधी तत्वों की सरल ग्रामीण प्रतीकों में विवेचना होती है। निरगुणिया भजनों में इकतारा और मँजीरे के स्वरों के साथ मालवा की लोकधुनों और मालवी बोली का माधुर्य देखा जा सकता है।
- **संजा गीत**: संजा गीत मूलतः किशोरियों की पारंपरिक गायन पद्धति है। इसमें किसी प्रकार का संबंध नहीं होता। पितृपक्ष में किशोरियाँ संजा पर्व मनाती हैं। गोबर और फूल पत्तियों से संजा की सुंदर आकृतियाँ बनाती हैं, शाम को उनकी पूजा आरती करती हैं तथा संजा गीत गाती हैं।

> कलगी-तुर्रा की उत्पत्ति संबंधी एक पुरानी कथा प्रचलित है। चंदेरी के राजा शिशुपाल की राजसभा में दो प्रमुख खयाल गायक **तुकनगिर** और **शाह अली फकीर** थे। दोनों ही अपनी-अपनी खयाल गायिकी के पारंगत थे। एक बार राजदरबार में दोनों का मुकाबला हुआ। दोनों ने एक दूसरे से बढ़-चढ़कर जवाब दिये। राजा के लिए यह निर्णय करना मुश्किल था कि दोनों में कौन श्रेष्ठ है ? राजा ने दोनों को पुरस्कृत किया। तुकनगिर को अपनी पगड़ी का हीरा जड़ित तुर्रा और शाहअली फकीर को माणक मोती से जड़ी कलगी भेंट की। तब से तुकनगिरि के खयाल गायिका का नाम तुर्रा और शाह अली फकीर की गायिकी कलगी के नाम से अभिहित हुई।

- **बरसाती बारता**: बरसाती बारता ऋतु कथा गीत है। बरसाती बारता का कथन और गायन बरसात के समय में किया जाता है। इसलिए इसका नाम बरसाती बारता पड़ा। मालवा के गाँव में घरों में बैठकर बरसाती बारता रात-रात भर कही और गायी जाती है। बरसाती बारता की शैली चम्पू काव्य की तरह होती है, जिसमें मालवी गद्य और पद्य का चरम उत्कर्ष देखा जा सकता है। ऋतु गीतों में मालवा में बारह मासा ने गीत भी प्रायः बरसात में गाए जाते है।

बघेलखण्ड

- **सोहर**: "सोहर" गीतों का गायन केवल हर्षोल्लास ही व्यक्त नहीं करता, अपितु यह एक मांगलिक कृत्य भी है। बघेलखण्ड में सोहर गीत पुत्र जन्म, कटाई काढ़ने, छठी और बरहों के अवसर पर गाये जाते हैं। पुत्र-जन्म के बारहवें दिन शुभ मुहूर्त में बरहौं अथवा बरहिया

का उत्सव मनाया जाता है। इस अवसर पर बड़ी धूम-धाम के साथ मंगल वाद्य बजाये जाते हैं तथा हर्षोल्लास के साथ सोहर गाये जाते हैं।

- **दादर**: बघेलखण्ड में पुत्र-जन्म पर उच्च तथा इतर वर्गों में समान रूप से दादर गाने का प्रचलन है। उच्च वर्ग में दादर, विशेष रूप से बरहों के दिन अथवा उसके एक-दो दिन पश्चात् गाई जाती है। किन्हीं-किन्हीं जातियों में छठी के दिन से ही दादर गाना आरम्भ हो जाता हैइस क्षेत्र में निवास करने वाले इतर वर्ग में जेसे चर्मकार, कोटवार, पनका तथा गोंड़ में संतान जन्म पर आरंभ से ही दादर गाने का प्रचलन है।
- **ददरिया गीत**: यह गीत बहुधा सवाल जवाब के रूप में गाया जाता है। यह विशेषता इसकी मूल परम्परा में भी दृष्टिगत होती है। ददरिया गीतों में श्रृंगार रस के पुरजोर भाव पाये जाते हैं। दो पंक्तियों के इस छन्द में यौवन का उन्माद, प्रेमानुराग एवं आलिंगन की आतुरता छलकती प्रतीत होती है। इसके श्रृंगारिक पद हृदयस्पर्शी होते हैं। प्रेमपरक संवेदना, प्रणय प्रदर्शन, मान-मनुहार, अनुग्रह तथा प्रेमाकर्षण आदि के भाव ददरिया गीतों में कूट-कूट कर भरे पाये जाते हैं।
- **करमा गीत**: मध्यप्रदेश की गोंड़ आदिम जाति का यह अतिप्रिय तथा पारम्परिक लोकगीत है। करमा गीत में श्रमिक वर्ग हँसी-मजाक, व्यंग एवं लोक गीतों की मधुर प्रस्तुति के साथ दिन-दिन भर एक ही गति से काम करता रहता है,
- **टप्पा गीत**: बघेलखण्ड अंचल में निवास करने वाली आदिम जातियों का यह प्रिय गीत है। छत्तीसगढ़, मण्डला आदि की "ददरिया" की भाँति यह गीत यहाँ के जन-साधारण को अपनी श्रंगारिक अभिव्यक्ति से आनन्द-विभोर करता है। बघेलखण्ड में इसे क्षेत्रीय नाम से जाना जाता है। यह लखौरा के आसपास "ददरिया" भगवानपुर क्षेत्र में "बनगिता" तथा शहडोल जिले के कुछ भागों में गजमोजा के नाम से प्रचलित है।
- **बघेली लोकगीत**: बघेली लोकगीत की गायन शैली मध्यप्रदेश के अन्य अंचलों से थोड़ी भिन्न है क्योंकि बघेली बोली अवधी से प्रभावित है। बघेली लोकगीतों का मूल स्वर तीव्र मध्यम है। इनमें बघेलखण्ड की जातियों और जनजातियों की आंतरिक ऊर्जा का उत्कर्ष देखा जा सकता है। बघेली लोकगीतों में लोक की व्यापकता, सरलता, भाव प्रवणता और सुबोधता सहज रूप से देखी जा सकती है। बघेली लोकगीतों में जहाँ पारंपरिक कल्पना का वैभव प्रसारित है वहीं बघेलखण्ड की संस्कृति की झाँकी भी प्रतिबिम्बित होती है। लोकगीतों में जितनी लोकरागों की विविधता और विषयों की विभिन्नता मिलती है उतनी किसी अन्य लोक विधा में नहीं दिखायी देती है।
- **बसदेवा गायन**: बसदेवा बघेलखण्ड की एक पारंपरिक गायक जाति है जिन्हें **हर बोले** कहा जाता है। बसदेवा मूलतः गाथा गायक हैं। श्रवणकुमार की कथा गायन करने के कारण इन्हें सरमन गायक भी कहा जाता है। बसदेवा परंपरा से कई तरह की कथा और गाथाएँ गाते हैं। वसदेवा सिर पर कृष्ण की मूर्ति और **पोला(पीला)***** वस्त्र धारण कर हाथ में चुटकी पैजन और सारंगी लिये गाते हैं। वसदेवा गायक कई-कई यजमान के लिए गाँव-गाँव निकल पड़ते हैं। वसदेवा मुख्यतः दो गायक होते हैं। मुख्य गायक गाथा की पंक्ति उठाता है, दूसरा पंक्ति समाप्ति तक उसे उसी राग में तेजी से दुहराता है और अंत में हर गंगे की टेक हर पंक्ति के बाद लगाते है। वसदेवा जाति रामायण कथा के साथ कर्ण कथा, मोरध्वज, गोपीचंद, भरथरी, भोले बाबा आदि लोक नायकों की चरित्र कथा आते हैं।
- **बिरहा गायन**: वघेलखण्ड में बिरहा गायन परम्परा सभी व्यक्तियों में पायी जाती है। बिरहा की गायन शैली सर्वथा मौलिक और माधुर्यपूर्ण है। बिरहा प्राय: खेत, सुनसान राहों में सवाल जवाब के रूप मैं गाया जाता है। कहीं-कहीं बिरहा बिना वाद्यों और सवाद्य गाये जाते हैं। कानों में उँगली लगाकर ऊँची ढेर के साथ बिरहा गाया जाता है। गायक गाते समय भौंहों को नचाता है, तब ऐसा लगता है, जैसे कोई प्रश्न पूछ रहा हो। उतरती रात में बिरहा की तानें आकर्षक और कर्णप्रिय लगती हैं। बिरहा श्रृंगार परक विरह गीत हैं।
- **विदेसिया गायन**: विदेसिया गायन समूचे वघेलखण्ड में मिलता है। गड़रिया, तेली, कोटवार जाति के लोग विदेसिया गायन में परंपरा से विशेष दक्षता रखते हैं। विदेसिया की राग लंबी और गंभीर होती है। बिदेसिया का गायन प्राय: जंगल अथवा सुनसान जगह में किया जाता है। बिदेसिया विछोह और मिलन की अभिलाषा के गीत हैं जिनमें लोकनायक, नायिका के मन की आतुरता का सहज चित्रण होता है। जिसमें उपालंभ भी होता है। उतरती गहरी सुनसान रात में बिदेसिया गीतों की तानें सुनने वालों को बैचेन कर देती है।

- **फाग गायन**: बघेलखंड में फाग गायन की परंपरा सबसे भिन्न और मौलिक है। यहाँ नगाड़ों पर फाग गायन किया जाता है। फान गायनों में पुरुषों की मुख्य भागीदारी होती है। सामूहिक स्वरों में फाग गीतों की पंक्तियों का गायन नगाड़ों की विलंबित ताल पर शुरू होता है।

निमाड़

- **मसाण्या गीत**: मध्यप्रदेश के निमाड अंचल में मृत्यु गीतों को "मसाण्या गीत" अर्थात् "श्मशान के गीत" कहा जाता है। मसाण्या गीत वृद्धजनों की मृत्यु पर विशेष रूप से गाये जाते है। बच्चों तथा युवक-युवतियों की मृत्यु पर इन गीतों को गाने की सामाजिक अनुमति नहीं है।

  "मसाण्या" प्रौढ़ व अधेड़ व्यक्ति ही गाते हैं, मसाण्या गीत वैराग्य भावना से ओतप्रोत निर्गुण लोक भजन है। निमाड़ी जन संत सिंगा जी के निर्गुण भजनों से इतने प्रभावित हैं कि वे अनजाने ही इन भजनों को भी मसाण्या गीत के नाम से कभी-कभी गाने लगते हैं।

  "कोरकुओं में मृत्यु गीत गाने की प्रथा है। कोरकू बूढ़ी महिलायें मृत्यु के तीसरे दिन या दसवें दिन मृत्यु गीत गाती हैं, इन मृत्यु गीतों को क्षेत्र की विभिन्नता के आधार पर **कायखोज, सिडोली, सिरिन्ज, मिमलाव, फुलजगनी, गाथा** या **दशा** कहा जाता है।

- **कलगी-तुर्रा**: कलगी-तुर्रा प्रतिस्पर्द्धात्मक लोक गायन शैली है। यह एक प्राचीन लोकगायिकी है। इस गायन शैली का प्रसार एक समय कर्नाटक से लगाकर उत्तरप्रदेश तक था। निमाड़, मालवा, बुंदेलखण्ड और मण्डला में कलगी तुर्रा गायन मंडलियाँ अभी भी मौजूद है।चंग की थाप पर रात-रात भर कलगी तुर्रा गाया जाता है। इसके दो अखाड़े होते हैं, एक कलगी अखाड़ा दूसरा तुर्रा अखाड़ा। अखाड़े के गुरु को उस्ताद कहते हैं। कलगी-तुर्रा का आध्यात्मिक पक्ष भी है। कलगी दल शक्ति और तुर्रा दल शिव को बड़ा बताने की कोशिश करता है।
- **संत सिंगाजी भजन**: संत सिंगाजी के पद समूचे **निमाड़ और मालवा** के हिस्से में इतने लोकप्रिय हुए कि निमाड़ के सिंगाजी के पद गायन की एक अलग शैली बन गई। संत सिंगाजी ने निमाड़ी में **कई सौ आध्यात्मिक पदों की रचना** की। कहते हैं मृदंग और झाँझ के साथ उच्च स्वर में भजन गाने की शैली का विकास स्वयं सिंगाजी ने किया था। तब से लगातार आज तक निमाड़ के गाँव-गाँव में संत सिंगाजी के भजन गाये जाते हैं। उनमें नागझिरी के श्री दगडू गप्पल और हरसूद की सुश्री जीवनता खेड़े मण्डलियाँ की आज की संत सिंगाजी भजन गायन शैली की श्रेष्ठ मण्डलियाँ कही जा सकती हैं।
- **निरगुणिया गायन शैली**: ये गायक भगवान के **निराकार रूप** को मानते है। निरगुणिया गायन शैली का मुख्य आधार वाद्य **हकतारा और खड़ताल** रहे हैं। इकतारे पर भजन गाते हुए कई साधु अथवा भिक्षुक गाँव शहर की गलियों में मिल जाते हैं। ये प्रायः निरगुणिया भजन ही गाते हैं। निमाड़ में निरगुणिया भजन गायक इकतारे के साथ झाँझ, मृदंग लगाकर भी गाते हैं। निरगुणिया गायन को नारदीय भजन भी कहा जाता है।
- **फाग गायन**: होली के अवसर पर फाग गीत गाये जाते हैं, जो प्रायः कृष्ण और राधा पर केंद्रित होते हैं। दो या तीन ढफ बजाते हुए ऊँचे स्वर में सामूहिक रूप से पुरुष वर्ग फाग गायन करता है, जिसमें हँसी-मजाक, ठिठौली, छेड़छाड़ के गीत प्रमुख होते हैं। स्त्रीपरक फाग गायन अलग होता है।
- **गरबा गीत**: निमाड़ में गरबा स्त्रीपरक आनुष्ठानिक लोक गायन है। नवरात्रि में गरब की स्थापना के साथ महिलाएँ ताली की थाप पर गरबा गीता गाती हैं, जिसकी गायन शैली सर्वथा अलग होती है। इसके साथ नृत्य प्रवृतियाँ भी है।
- **गरबी गीत**: गरबी प्राय: पुरुषपरक लोकगायन है। इसे झाँझ - मृदंग के साथ गाया-बजाया जाता है। गरबी गीत निमाड़ी लोकनाट्य गायन का एक प्रमुख अंग है। गरबी भक्ति, श्रृंगार और हास्य परक होती है। गरबी की गायन शैली द्रुत में होती है, जो नृत्य और बैठकी गायिकी दोनों में चलती है। गरबी मूलतः देवी गीत है।
- **गवलन**: गवलन मूलतः कृष्ण लीला गीत है। इसके गायन की पद्धति गरबी से भिन्न होती है। गवलन गीतों का मुख्य उपयोग रासलीला में किया जाता है। गवलन गीत पुरुषपरक हैं, जो झाँझ, मृदंग और ढोलक पर गाये जाते हैं।
- **नाथपंथी गायन**: निमाड़ में नाथ जोगियों में सर्वथा अलग प्रकार के लोकगायन की पद्धति है। नाथजोगी भगवा वस्त्र पहने हाथ में रेकड़ी अथवा रूँ-रूँ बाजा बजाते गाते गाँव शहर में दिखाई देते हैं। नाथ जोगी प्रायः गोरख, कबीर अथवा भरथरी गाथा गाते हुए मिल जाते हैं ! निमाड़ की नाथ जोगी महिलाएँ प्राय: सुबह-सुबह परभाती गाती हुई मिलती हैं और घर-घर से नेग लेती हैं।

गीत	सम्बद्ध	विशेषता
रेलो गीत	भील, कोरकू,मुरिया	युवा युवतियों का गीत
हरदौला की मनौती	बुंदेलखण्ड, बघेलखण्ड	वीर गीत
चौकड़िया फाग	बुंदेलखण्ड	ईसुरी की रचनाएं गायी जाती है
सिंगाजी और दलूजी	निमाड	वीर गीत
बम्बुलिया	बुंदेलखण्ड	धार्मिक गीत
सैर, राछरे, मलारे, बिलावटी, गोटे, रावल आदि	बुंदेलखण्ड	
आल्हा	सम्पूर्ण मध्यप्रदेश	जगनिक कृत वीर गीत
लावनी (निर्गुण तथा श्रृंगारी)	मालवा, निमाड	निगणी दार्शनिक गीत, जबकि श्रृंगारी प्रणय संबंधी गीत
माच	मालवा	लोकनाटय संगीत संवाद
ददरिया	बुंदेलखण्ड	गायन की शैली

EXERCISE – 18

1. बिरहा किस आदिवासी जनजाति की महिलाओं का लोकप्रिय लोकगीत है? [MPPSC Civil Prelims 2024]

(a) गोंड (c) भील

(b) कोल (d) सहरिया

2. हीड गायन की प्रथा किस क्षेत्र में है? [MPPSC Assistant Veterinary Surgeon Exam 2023; MPPSC Principal Assistant Director (Technical) Exam 2023]

(a) बुन्देलखण्ड (c) मालवा

(b) बघेलखण्ड (d) निमाड़

3. 'माच परम्परा' का संबंध निम्न में से किससे है ? [Computer programmer Examination 2021]

(a) लोकगायन (c) लोकनाट्य

(b) लोकगीत (d) लोकनृत्य

4. निम्नलिखित में से कौन-सा वाद्य यन्त्र, 'घन वाद्य' का उदाहरण है? [MP Assistant Geologist exam 2023]

(a) मंजीरा (c) बांसुरी

(b) नगाड़ा (d) अलगोजा

5. सागर के आचलिक क्षेत्रों में दीपावली के अवसर पर कौन-सा लोकनृत्य प्रचलित है ? [MPPSC Civil Prelims 2023]

(a) मौनी नृत्य (c) फेफरिया नृत्य

(b) मांडल्या नृत्य (d) डंडा नृत्य

6. निम्नलिखित में से कौन पारंपरिक माच गायन शैली से सम्बद्ध है? [MPPSC Civil Prelims 2024]

(a) कालूराम बामनिया

(b) सत्येंद्र सिंह लोहिया

(c) भगवतीलाल राजपुरोहित

(d) ओम प्रकाश शर्मा

7. गम्मत लोकनाट्य का सूत्रधार क्या कहलाता है? [MPPSC Civil Prelims 2024]

(a) घूघरमाल (c) कुडगर्या

(b) ठोठ्या (d) खमरास

8. 'नौरता' लोकनृत्य का संबंध मुख्यतः किस क्षेत्र से है? [MPPSC Taxation Assistant Exam 2022]

(a) बुन्देलखण्ड (c) पश्चिमी निमाड़

(b) पूर्वी निमाड़ (d) मालवा

9. निम्नलिखित भील नृत्यों में से किसमें, केवल महिलाएं भाग लेती हैं? [MP Forest service mains 2022]

(a) बाट्या नृत्य (c) घण्ण नृत्य

(b) राठ्या नृत्य (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

10. मध्यप्रदेश के किस क्षेत्र में "मनसुखा" लोक नाट्य प्रचलित है? [MPPSC Civil Prelims 2025]

(a) पूर्वी निमाड़ (c) बघेलखण्ड

(b) मालवा (d) पश्चिमी निमाड़

1. (a), 2. (c), 3. (c), 4.(b), 5.(a), 6.(d), 7.(c), 8. (a), 9. (a), 10.(c)

Chapter

19

मध्यप्रदेश में संस्कृति की विभिन्न विधायें, साहित्य और साहित्यकार, संगीत और संगीतकार

भारत के हृदय के रूप में पहचाना जाने वाला **मध्यप्रदेश** प्राचीन काल से ही अपनी **गौरवशाली सांस्कृतिक परंपरा** के लिए प्रसिद्ध रहा है। यहाँ साहित्य, संगीत, रंगमंच और कला जैसे क्षेत्रों में समृद्धि के दर्शन होते हैं।

यहाँ स्थित विश्व की प्राचीनतम नाट्यशाला, **खजुराहो** के भव्य मंदिर, **तुलसीदास** का **चित्रकूट**, **साँची** का स्तूप, और **माँडू** के ऐतिहासिक महल इसकी सांस्कृतिक विरासत को उजागर करते हैं। यह प्रदेश **कालिदास**, **भर्तृहरि** और **बाणभट्ट** जैसे महान साहित्यकारों की कर्मभूमि भी रहा है।

मध्यप्रदेश ने न केवल अपनी प्राचीन परंपराओं को संरक्षित रखा है, बल्कि समय के साथ उन्हें और अधिक समृद्ध भी किया है। इस प्रदेश की सीमाएँ **छत्तीसगढ़**, **उत्तर प्रदेश**, **राजस्थान**, **गुजरात** और **महाराष्ट्र** जैसे पाँच राज्यों से मिलती हैं। इन राज्यों के साथ हुए सांस्कृतिक संपर्क और कलाओं के आदान-प्रदान ने मध्यप्रदेश की **सांस्कृतिक विविधता** को और अधिक व्यापकता प्रदान की है। इन्हीं कारणों से मध्यप्रदेश को **"लघु भारत"** भी कहा जाता है।

19.1 साहित्य :

प्राचीन काल से ही मध्यप्रदेश में साहित्य सृजन की समृद्ध परंपरा रही है। संस्कृत के कई महान साहित्यकार इसी भूमि पर जन्मे, जिन्होंने भारतीय साहित्य को नई दिशा दी। मध्यकाल और आधुनिक काल में हिंदी भाषा का विकास हुआ और यह प्रदेश की मुख्य भाषा बन गई ।

संस्कृत के महान साहित्यकारों में **आदि कवि वाल्मीकि**, **महाकवि कालिदास**, **बाणभट्ट**, और **भर्तृहरि** जैसे विद्वान मध्यप्रदेश की धरती से जुड़े रहे हैं।अविभाजित मध्यप्रदेश के अंबिकापुर में भारत की प्राचीनतम नाट्यशाला के अवशेष प्राप्त हुये है। कहा जाता है कि **महाभारत** के कुछ अंशों की रचना भी इसी क्षेत्र में हुई थी। **भास**, **भरतमुनि**, **वात्स्यायन** और **राजशेखर** जैसे महान साहित्यकारों का संबंध भी इसी प्रदेश से रहा है। **राजा भोज** जैसे कला और संस्कृति के महान संरक्षक मध्यप्रदेश की ही ऐतिहासिक धरोहर हैं। **हिंदी साहित्य का विकास** चार प्रमुख कालों में विभाजित किया जाता है—**वीरगाथा काल** के महान लोककवि **जगनिक** ने बुंदेलखंड में **आल्हखंड** की रचना की, जो आज भी जनमानस में लोकप्रिय है।

भक्तिकाल मे **कबीर** के भजनों ने प्रदेश की जनता को गहराई से प्रभावित किया। उनके शिष्य **धर्मदास** ने बांधवगढ़ (मध्यप्रदेश) में अपनी गद्दी स्थापित की। **महाप्रभु वल्लभाचार्य** का संबंध छत्तीसगढ़ और गढ़ा से रहा, और **तुलसीदास** का प्रसिद्ध **चित्रकूट** भी यहीं स्थित है।**केशव**, **हरिराम व्यास**, **संत प्राणनाथ**, **गोप महापात्र** और **नरहरि** जैसे कवियों ने भी यहाँ रहकर अपनी रचनायें लिखीं। **रीतिकाल** में भी अनेक प्रसिद्ध कवि मध्यप्रदेश से जुड़े रहे। रीतिकाल के प्रवर्तक **केशव** के अलावा, **बिहारी**, **अक्षर अन्नय**, **पद्माकर**, **बोधा**, **ठाकुर** और **महाराजा विश्वनाथ सिंह** जैसे कवियों की रचना भूमि भी यही रही। रीतिकाल की अधिकांश रचनायें राजाश्रय में हुईं। मध्यप्रदेश के राजाओं ने बड़े स्तर पर कवियों को संरक्षण दिया। **आधुनिक काल** हिंदी साहित्य की शुरुआत लगभग 150 वर्ष पहले मानी जाती है। इस काल में **खड़ी बोली** का विकास हुआ, जो क्षेत्रीय बोलियों के मिश्रण से बनी और साहित्य का रूप काव्य से गद्य की ओर अग्रसर हुआ।

भारतेन्दु हरिश्चंद्र को आधुनिक हिंदी साहित्य का पुनर्जागरणकर्ता माना जाता है। उन्हें सहयोग देने वाले साहित्यकारों में **जबलपुर के ठाकुर जगमोहन सिंह** का नाम उल्लेखनीय है। इस काल में **नाटक**, **कहानी**, **उपन्यास**, **निबंध**, **यात्रावृत्तांत**, **संस्मरण**, और **आलोचना** जैसी विधाओं का उदय हुआ, जिनमें मध्यप्रदेश के साहित्यकारों का भी विशेष योगदान रहा।

- **रीवा नरेश विश्वनाथ सिंह** द्वारा रचित नाटक '**आनंद रघुनंदन**' को आचार्य **रामचंद्र शुक्ल** ने हिंदी का पहला नाटक माना है।
- **नरसिंहपुर** में जन्मे **डॉ. रामकुमार वर्मा** को हिंदी का पहला कहानीकार माना गया।
- **हरिशंकर परसाई** ने व्यंग्य को एक नई ऊँचाई तक पहुँचाया।
- **दुष्यंत कुमार** ने हिंदी ग़ज़ल को लोकप्रिय बनाया।

❖ आलोचना के क्षेत्र में भी प्रदेश का योगदान उल्लेखनीय रहा। **छतरपुर** निवासी **मिश्र बंधु** द्वारा रचित पुस्तक **'मिश्र बंधु विनोद'** हिंदी साहित्य के इतिहास की आधारभूमि मानी जाती है।

मध्यप्रदेश की प्रमुख साहित्यिक पत्रिकाएँ : मध्यप्रदेश से अनेक साहित्यिक पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हैं, जिनमें प्रमुख हैं: **पहल**, **आवेग**, **तनाव**, **सापेक्ष**, **वसुधा**, **कृति**, **साक्षात्कार**, **नया पथ**, **प्रसंग**, **कला वार्ता**, **कंक**, **साम्य**, **वीणा**, **अंतत:**, **इसलिए**, **नया विकल्प** आदि।

19.2 साहित्यकार :

▶ **कालिदास** : भारतीय संस्कृति के अत्यंत लोकप्रिय और महान कवि **कालिदास** के कुल, जन्मस्थान और जन्मतिथि के विषय में इतिहास मौन है। उनके जीवन से जुड़ी अधिकांश जानकारी किंवदंतियों और मान्यताओं पर आधारित है। कालिदास को उज्जैन के गुप्त शासक **चंद्रगुप्त विक्रमादित्य** के दरबार के **नवरत्नों** में से एक माना जाता है। यद्यपि कुछ विद्वान उनकी रचनाओं की शैली और संस्कृत नाटककार **अश्वघोष** से समानता के आधार पर उन्हें **प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व** का मानते हैं तथा **मालव नरेश विक्रमादित्य** के दरबार का रत्न मानते हैं।



एक प्रचलित किंवदंती के अनुसार, प्रारंभ में कालिदास एक सामान्य व अशिक्षित व्यक्ति थे। उनका विवाह एक विदुषी राजकुमारी से हुआ, जिसने उन्हें उनकी मूर्खता के कारण घर से निकाल दिया। इसके पश्चात, उन्होंने **देवी सरस्वती** की आराधना की और उनसे कवित्व शक्ति प्राप्त की। कालिदास **भगवान शिव (महाकाल)** के अनन्य भक्त माने जाते हैं। देवी की कृपा से प्राप्त ज्ञान के बल पर उन्होंने **मेघदूत**, **अभिज्ञान शाकुंतलम्**, **कुमारसंभव** जैसे अनेक महान ग्रंथों की रचना की और संस्कृत साहित्य को अमूल्य योगदान दिया।

रचनायें : संस्कृत साहित्य के महान कवि और नाटककार कालिदास की **सात प्रामाणिक रचनाये** हैं। इनमें तीन नाटक और **चार काव्य** शामिल हैं। **तीन प्रमुख नाटक** हैं:**अभिज्ञान शाकुन्तलम्, विक्रमोर्वशीयम्, मालविकाग्निमित्रम्** तथा **चार प्रमुख काव्य** हैं: **मेघदूतम्, कुमारसंभवम्, रघुवंशम्, ऋतुसंहार** इन रचनाओं में *अभिज्ञान शाकुन्तलम्* को कालिदास की सर्वश्रेष्ठ कृति माना जाता है। इसका अंग्रेजी में अनुवाद प्रसिद्ध विद्वान **विलियम जोन्स** ने किया था। इसका विषय राजा दुष्यंत और शकुंतला की कथा पर आधारित है। 'रघुवंशम्' में रामायण से संबंधित घटनाओं को वर्णित किया गया है। 'कुमारसंभवम्' में शिव और पार्वती के विवाह तथा उनके पुत्र कार्तिकेय के जन्म की कथा है। '**मालविकाग्निमित्रम्**' से शुंग वंश के इतिहास की जानकारी मिलती है, जबकि 'विक्रमोर्वशीयम्' में उर्वशी और पुरुरवा की प्रेमकथा का वर्णन है। कालिदास का खंडकाव्य 'मेघदूतम्' संस्कृत साहित्य में अत्यंत लोकप्रिय और विशिष्ट स्थान रखता है। इसमें एक विरही यक्ष की कथा है, जो अपनी प्रियतमा को मेघ के माध्यम से संदेश भेजता है। इस काव्य में कवि ने मानवीय भावनाओं और प्रकृति का अत्यंत सुंदर और संवेदनशील चित्रण किया है। 'ऋतुसंहार' में छह ऋतुओं के सौंदर्य और प्रभाव का वर्णन किया गया है।

▶ **भर्तृहरि** : संस्कृत भाषा के एक महान कवि **भर्तृहरि** उज्जयिनी (वर्तमान उज्जैन) के राजा थे। *प्रबंध चिन्तामणि* नामक ग्रंथ के अनुसार, प्रसिद्ध सम्राट **विक्रमादित्य** उनके छोटे भाई थे। भर्तृहरि ने रानी **पिंगला** के सौंदर्य से प्रभावित होकर उनसे तीसरा विवाह किया था। परंतु कालांतर में जब उन्हें रानी की चरित्रहीनता का पता चला, तो उन्होंने राजपाट त्याग दिया और वैराग्य का मार्ग अपना लिया।

कुछ विद्वान भर्तृहरि को राजा और साहित्यकार के रूप में दो अलग-अलग व्यक्तियों के रूप में भी देखते हैं। वहीं, कुछ लोगों का मानना है कि वे नाथ संप्रदाय के सिद्ध गुरु **गोरखनाथ** के शिष्य थे। लोक परंपरा में यही भर्तृहरि **भरथरी** नाम से प्रसिद्ध हैं।



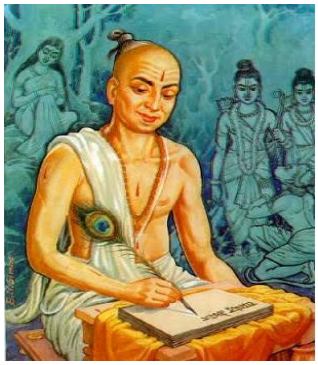
भर्तृहरि की गुफायें उज्जैन

इतिहास में भर्तृहरि को **व्याकरण**, **न्याय**, और **मीमांसा** शास्त्रों का प्रकांड विद्वान माना गया है। वे **व्याकरणाचार्य** के रूप में प्रसिद्ध थे और उन्हें *पदवाक्यप्रमाणज्ञ* की उपाधि प्राप्त थी। उनके नाम से संबंधित दो प्राचीन गुफायें आज भी विद्यमान हैं—एक **उज्जैन** में और दूसरी **वाराणसी** (बनारस) के पास स्थित है।

रचनायें : **श्रृंगार शतक**, **नीति शतक**, **वैराग्य शतक** उनकी प्रसिद्ध रचनायें हैं। इनमें श्रृंगार, नीति और वैराग्य पर पृथक-पृथक तीन सौ स्वतंत्र श्लोक हैं।

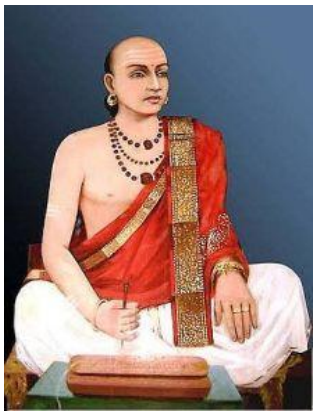
- **भवभूति** : भवभूति संस्कृत के मूर्धन्य (श्रेष्ठ) रूपककार के रूप में प्रसिद्ध हैं। उनका समय 8वीं शताब्दी ईस्वी माना जाता है, क्योंकि 8वीं शताब्दी के वामन और 9वीं शताब्दी के राजशेखर ने अपने ग्रंथों में भवभूति का उल्लेख किया है। भवभूति का जन्म पद्मपुर नामक स्थान में हुआ था। इनके पिता का नाम नीलकंठ और माता का नाम जानकर्णी था। इनकी शिक्षा ज्ञाननिधि नामक गुरु के सान्निध्य में हुई। कुछ विद्वान भवभूति को कुमारिल भट्ट का शिष्य भी मानते हैं। संभवत: इनका मूल नाम श्रीकंठ था, जबकि दार्शनिक रूप में ये **अम्बेक** नाम से प्रसिद्ध थे। कल्हण के अनुसार भवभूति को कन्नौज नरेश यशोवर्मन का आश्रय प्राप्त था और वे उज्जयिनी के निवासी माने जाते हैं। संस्कृत साहित्य में उनके योगदान को देखते हुए उन्हें "भारतीय मिल्टन" के नाम से भी जाना जाता है।

  भवभूति [MPPSC (Civil Main) GS-I 2017 | 3 M]



  रचनायें : संस्कृत साहित्य के महान नाटककार **भवभूति** ने तीन प्रसिद्ध नाटक लिखे—**महावीर चरित**, **मालती माधव** और **उत्तररामचरित**। इन नाटकों की शैली अन्य नाटकों से बिल्कुल भिन्न और विशिष्ट है। भवभूति के नाटकों में सबसे लोकप्रिय नाटक **"मालती माधव"** है। इस नाटक में उज्जैन दरबार के मंत्री की कन्या **मालती** और एक करुण छात्र **माधव** के प्रेम को दर्शाया गया है।

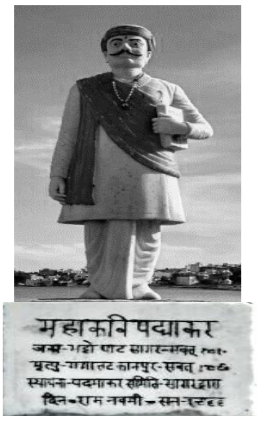
- **बाणभट्ट** : बाणभट्ट संस्कृत के प्रसिद्ध गद्यकारों में से एक थे। उनके पूर्वज सोन नदी के किनारे स्थित **प्रीतिकूट ग्राम** के निवासी थे। उनकी माता का नाम **राजदेवी** तथा पिता का नाम **चित्रभान** था। ऐसा माना जाता है कि अपनी रचना **'कादम्बरी'** में, उन्होंने **शुक-शावक** के मुख से अपने ही जीवन का वर्णन किया है।



  बाल्यावस्था में ही उनके माता-पिता का देहांत हो गया था, जिससे उनका पालन-पोषण ठीक प्रकार से नहीं हो सका। इस कारण वे कम उम्र में ही देशाटन पर निकल पड़े। उन्होंने विभिन्न स्थानों का भ्रमण किया और जीवन के अनेक अनुभव प्राप्त किए।
  बाणभट्ट का स्वभाव अत्यंत **नम्र** तथा **स्वाभिमानी** था। वे सम्राट **हर्षवर्धन** के दरबार में प्रमुख लेखक के रूप में उपस्थित थे और उन्होंने हर्षवर्धन के पराक्रमों का वर्णन अत्यंत प्रभावशाली ढंग से किया है। उन्हें **प्रख्यात वात्स्यायन वंश** में जन्म लेने का गर्व था। उन्होंने अपने जीवन में कई सामाजिक रूढ़ियों का अतिक्रमण किया और राजदरबार में रहते हुए भी कभी अपने **स्वाभिमान** से समझौता नहीं किया।
  रचनायें : बाणभट्ट की दो प्रामाणिक कृतियाँ हैं - पहली **'हर्षचरित'** जो एक ऐतिहासिक उपन्यास है जिसमें हर्षवर्धन के जीवन का कुछ विवरण दिया है। इसमें उन्होंने आत्मकथा का कुछ अंश भी प्रस्तुत किया है, जो संस्कृत साहित्य में दुर्लभ है। दूसरी **'कादंबरी'** में एक राजकुमारी के भाग्य का वर्णन है। 'कादम्बरी' की कथा वस्तु अत्यंत जटिल है जिसकी कथा में कथा और उस कथा में भी कथा चलती रहती है। इसकी कथा का प्रधान भाग एक तोते से कहलवाया जाता है। यही तोता बाद में पुण्डरीक भूमि सिद्ध होता है। यह कथा का उपनायक है और कथा की नायिका कादम्बरी है। कहानी का श्रोता नृप शूद्रक है जो उक्त में कथा नायक चन्दपीड निकलता है। परिमार्जित संस्कृत गद्य में लिखित प्रेमकथाओं के रूप में ये रचनायें अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

- **केशवदास** : हिन्दी साहित्य के रीतिकाल के प्रथम आचार्य और महान कवि **केशवदास** का जन्म 1555 ईस्वी में **सनाढ्य ब्राह्मण परिवार** में हुआ। वे **काशीनाथ मिश्र** के पुत्र थे। केशवदास ओरछा नरेश के भाई **इंद्रजीत सिंह** के दरबार में कवि के रूप में कार्यरत थे, जहाँ उन्हें गुरु के समान सम्मान प्राप्त था। उन्होंने अपनी प्रसिद्ध रचना **'कविप्रिया'** इंद्रजीत सिंह की पतिव्रता गायिका **रायप्रवीन** को शिक्षा देने के उद्देश्य से लिखी थी। यह रचना एक **काव्य-शास्त्रीय ग्रंथ** के रूप में जानी जाती है। केशवदास की मृत्यु 1617 ईस्वी में हुई। यह भी उल्लेखनीय है कि प्रसिद्ध हिन्दी कवि **बिहारी** उनके पुत्र थे।
  रचनायें : केशवदास द्वारा रचित नौ प्रामाणिक ग्रंथ प्राप्त होते हैं। इनके नाम हैं - रामचंद्रिका, रसिकप्रिया, वीरसिंह चरित, कविप्रिया, विज्ञान गीता, रतन बामनी, जहाँगीर जस चंद्रिका, नखसिख, छन्दमाला। इनके काव्य में क्लिष्टता और छंदों की अधिकता है तथा उनकी

शैली वक्रतापूर्ण है, इसीलिए उन्हें 'कठित काव्य का प्रेत' और 'हृदयहीन कवि' भी कहा जाता है।



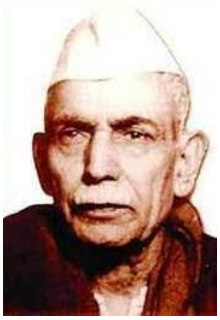
- **पद्माकर** : पद्माकर **तैलंग ब्राह्मण** थे। इनका जन्म 1773 ई. में सागर में हुआ था। इनके पिता **मोहन लाल भट्ट** बाँदा से सागर आये थे। पद्माकर सागर, जयपुर, जैतपुर, सुगरा, दतिया, सितारा, उदयपुर, ग्वालियर तथा जागीरदार गोसाई अनूपगिरी (उपनाम हिम्मत, बहादुर) के आश्रय में रहे। 1833 में कानपुर में इनकी मृत्यु हुई।

  रचनायें : पद्माकर के द्वारा 9 ग्रंथो पद्माकरण, जगद्विनोद, हिम्मत बहादुर विरुदावली, प्रताप सिंह विरुदावली, जयसिंह विरुदावली, प्रबोध पचास, राम रसायन, गंगालहरी, आलीजाह प्रकाश, हितोपदेश, कलि पचीसी की रचना की गयी है।

- **भूषण** : भूषण प्रसिद्ध कवि चिंतामणि व मतिराम के भाई थे। इनके पिता का नाम पंडित रत्नाकर त्रिपाठी था। रीतिकाल में वीर रस को काव्य का मुख्य विषय बनाकर इन्होंने अपना अलग स्थान बनाया। ये अनेक राजाओं के आश्रय में रहे और चित्रकूट के सोलंकी राजा रुद्र से इनको भूषण की उपाधि मिली थी। अनेक राजाओं के आश्रय प्राप्त भूषण के मनोनुकूल आश्रयदाता शिवाजी एवं छत्रसाल थे। भूषण राष्ट्रीय स्वाभिमान और तेजस्वी व्यक्तित्व के कवि थे। इसीलिए उन्होंने शिवाजी और छत्रसाल जैसे वीर नायकों को अपनी रचनाओं का विषय बनाया। हिन्दुत्व के रक्षकों के गुणमान के बाद भी इन्हें राष्ट्रीय कवियों में स्थान दिया जाता है।

  रचनायें : मुख्य रचनायें **शिवराज भूषण**, **शिवाबावनी** और **छत्रसाल दशक** तथा **भूषण उल्लास**, **भूषण हजारा** और **दूषण उल्लास** है। उन्होंने अपनी रचनाओं में अनेक ऐतिहासिक तथ्यों का उल्लेख किया है।

- **पं. माखनलाल चतुर्वेदी** : 'भारतीय आत्मा' के रूप में प्रसिद्ध पं. माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म सन् 1899 ई. में मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के बावई (वर्तमान माखननगर) ग्राम में हुआ था। आपने शिक्षा पूरी करने के पश्चात कुछ वर्षों तक अध्यापन कार्य किया। इसी समय आपने साहित्य सृजन की दिशा में कदम बढ़ाया।



  हिंदी के अतिरिक्त आपने संस्कृत, बांग्ला, मराठी, अंग्रेज़ी, गुजराती आदि भाषाओं एवं उनके साहित्य का भी स्वाध्याय किया। आपकी पहली रचना 'रसिक मित्र' पत्रिका में ब्रजभाषा में प्रकाशित हुई थी। आप 'प्रभा' पत्रिका के संपादक मंडल के सदस्य रहे और 'कर्मवीर' के संपादक भी नियुक्त हुए।

  आपने राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भाग लिया। असहयोग आंदोलन में भाग लेने के कारण आपको जेल जाना पड़ा। 'पुष्प की अभिलाषा' नामक आपकी प्रसिद्ध कविता बिलासपुर जेल में ही लिखी गई थी।

  राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत कविताओं के साथ-साथ आपने प्रेम और प्रकृति पर आधारित कविताएँ भी रचीं। स्वतंत्रता संग्राम में आपके योगदान के लिए स्वतंत्र भारत में आपको पद्मभूषण सम्मान से अलंकृत किया गया। 30 जनवरी, 1968 को खंडवा (मध्य प्रदेश) में आपका निधन हुआ।

  रचनायें : माखनलाल चतुर्वेदी की संपूर्ण रचनावली 10 खण्डों में प्रकाशित हुई है। उनकी रचनाओं में मुख्य हैं - हिम किरीटिनी, हिम तरंगिनी, मरण ज्वार, घुमवलय, बिजुरी, काजल औज रही, युगचरण, समर्पण (सभी काव्य), साहित्य देवता (गद्यगीत), कृष्णार्जुन युद्ध (नाटक), वनवासी (कहानी / संग्रह), कला का अनुवाद (कहानी), समय के पाँव (संस्मरण), चिन्तक की लाचारी (भाषण), रंगों की बोली है।



- **सुभद्रा कुमारी चौहान** : इनका जन्म सन् 1904 ई. में *कवियों की नगरी* इलाहाबाद (प्रयागराज) में हुआ। बचपन से ही उन्हें साहित्य के प्रति गहरी रुचि थी। उनका विवाह खंडवा के ठाकुर लक्ष्मण सिंह चौहान के साथ हुआ। विवाह के पश्चात उनके जीवन की दिशा में नया मोड़ आया। महात्मा गांधी के आंदोलनों से प्रेरित होकर उन्होंने राष्ट्रप्रेम से संबंधित कविताएँ लिखीं।

  स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के कारण उन्हें कई बार जेल भी जाना पड़ा। वे मध्य प्रदेश विधानसभा की सदस्य भी रहीं। अपनी रचनाओं के लिए उन्हें दो बार **सक्सेरिया पुरस्कार** से सम्मानित किया गया।

सन् 1948 में बसंत पंचमी के दिन एक सड़क दुर्घटना में उनका दुखद निधन हो गया। काव्य रचना की प्रेरणा उन्हें अपने परिवार से ही मिली। उनकी प्रारंभिक रचनायें 'सरस्वती' एवं 'माधुरी' नामक पत्रिकाओ में प्रकाशित हुई।

रचनायें : मुकुल, त्रिधारा, सीधे सादे चित्र, बिखरे मोती, उन्मादिनी, झाँसी की रानी, सभा के खेल, राखी की चुनौती, बचपन। 'मुकुल' उनका काव्य संग्रह है। 'सभा का खेल' में बालोपयोगी रचनायें संकलित हैं तथा 'बिखरे मोती' और 'उन्मादिनी' उनके कथा संग्रह हैं।

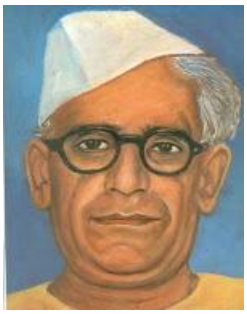
> सुभद्रा कुमारी चौहान
> [MPPSC (Civil Main) GS-I 2017 | 3 M]

▶ **गजानन माधव मुक्तिबोध** : गजानन मुक्तिबोध का जन्म **14 नवंबर 1917 श्योपुर कलाँ** में हुआ था। उनकी मृत्यु **11 सितंबर 1964** को हुई। छायावादोत्तर हिन्दी कविता को सर्वथा नवीन दिशा की ओर ले जाने वाले साम्यवादी विचारधारा को स्वीकार करके चलने वाले गजानन मुक्तिबोध की **ख्याति प्रगतिवादी** कवि के रूप में भी हैं। उज्जैन में स्कूली शिक्षा तथा स्नातक इंदौर से किया। समाचार पत्र समता (जबलपुर) को सेवाएँ दी कवि, पत्रकार, समीक्षक, कथाकार, अध्यापक सभी रूपों में इन्होंने सम्मान पाया। अपनी पूरी पीढ़ी में मुक्तिबोध का व्यक्तित्व विशिष्ट हैं।



रचनायें : चाँद का मुँह टेढ़ा है, नये निबंध, भूरी-भूरी खाक धूल, एक साहित्यिक की डायरी, नई कविता का आत्म संघर्ष, नए साहित्य का सौंदर्य शास्त्र, कामायनी एक पुनर्विचार, भारत इतिहास और संस्कृति, चम्बल की छाती।

▶ **बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'** : बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' हिन्दी की प्रगतिशील, सांस्कृतिक, धारा के अन्यतम कवि थे। इनका जन्म 9 दिसंबर 1897 को शाजापुर में हुआ। उन्होंने 'प्रभा' एवं 'प्रताप' के संपादक के रूप में कार्य किया। ये प्रमुख रूप से कवि थे। किंतु गद्य पर भी उनका समान अधिकार था। उनकी संपादकीय टिप्पणी अत्यंत प्रभावशाली होती थी। गणेश शंकर विद्यार्थी पर बालकृष्ण शर्मा नवीन ने दो काव्य लिखे - **'प्राणर्पण' और 'आत्मोसर्ग'** का लेखन किया। आपका निधन 29 अप्रैल सन् 1960 को हुआ।



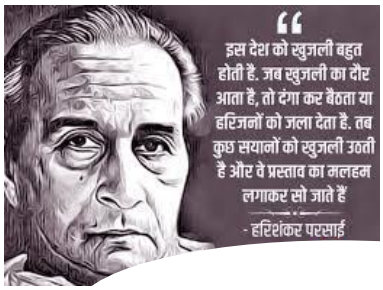
रचनायें : **कुमकुम**, **रश्मिरेखा**, अपलक, विनोबा स्तवन, **उर्मिला**, हम विषपायी जन्म के, क्वासि, प्राणार्पण

▶ **भवानी प्रसाद मिश्र** : भवानी प्रसाद मिश्र की गणना प्रयोगवादी कवि के रूप में की जाती है। इनका जन्म 23 मार्च, 1914 को ग्राम खिरिया जिला होशंगाबाद में हुआ था। बचपन से ही वर्धा आश्रम में गांधीजी के सानिध्य में रहे, जिससे स्वाभाविक रूप से गांधी दर्शन से प्रभावित हुए। सन् 1942 में राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय होने के कारण कारावास भी भोगना पड़ा। सेवाग्राम से निकलने वाली 'महिलाश्रम' पत्रिका के अलावा 'कल्पना' का संपादन भी किया। आकाशवाणी में नौकरी की तथा संपूर्ण गांधी वाड्मय के संपादक मंडल में रहे। नई दिल्ली स्थित गांधी प्रतिष्ठान एवं सर्वोदयी विचार मार्ग से संयुक्त रहे।' बुनी हुई रस्सी' पर आपको साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। आपका निधन सन् 1985 में हुआ।



रचनायें : **'गीतफरोश', 'चकित है दुख'**, **'अंधेरी कविताएँ'**, **'गांधी पंचशती'**, **'बुनी हुई रस्सी'**, **'खुशबू के शिलालेख'**, **'व्यक्तिगत', 'परिवर्तन के लिए'**, **'अनाम तुम आते हो'** प्रमुख हैं **'दूसरा सप्तक'** में उनकी रचनायें शामिल की गयी। गांधी पंचशती उनका महाकाव्य है।

▶ **हरिशंकर परसाई** : हिन्दी के प्रख्यात **व्यंग्य लेखक एवं साहित्यकार** हरिशंकर परसाई का जन्म **22 अगस्त 1924** ई. को जमानी में हुआ, आपकी मृत्यु 10 अगस्त 1995 को होशंगाबाद में हई। परसाई जी ने नागपुर से हिंदी में एम.ए. करके कुछ वर्षों तक अध्यापन करने के पश्चात् स्वतंत्र लेखन प्रारंभ किया, तथा जबलपुर से **'वसुधा'** पत्रिका निकाली जिसे घाटे के बावजूद कई वर्षों तक चलाया। उन्होंने **'प्रहरी'** का संपादन भी किया। हिन्दी की अनेक पत्र-पत्रिकाओं के लिए नियमित रूप से व्यंग्य-रचनायें लिखीं एवं स्तंभ लिखे। वे हिन्दी के शीर्ष व्यंग्य-लेखक थे। उन्हें हिंदी साहित्य में अविस्मरणीय योगदान के लिए पद्मश्री से अलंकृत किया गया। इसके अलावा उन्हें



साहित्य अकादमी पुरस्कार, म.प्र. सरकार का शिखर सम्मान, म.प्र. हिन्दी साहित्य सम्मेलन का **'भवभूति अलंकरण'** भी प्रदान किया गया तथा जबलपुर वि.वि. ने मानद डी.लिट् उपाधि प्रदान की।

रचनायें : 'हँसते हैं रोते हैं', **'जैसे उनके दिन फिरे'**, **'रानी नागफनी की कहानी'**, **'तट की खोज'**, 'तब की बात और थी', **'भूत के पाँव पीछे'** 'पगडंडियों का जमाना', **'सदाचार का ताबीज'**, 'कान्त मुझे भी है', 'अंत में', 'विकलांग श्रद्धा का दौर', 'पूछिए परसाई से' (स्तम्भ लेखन)

- **मुल्ला रमूजी** : 'मुल्ला रमूजी' अपनी विशिष्ट व्यंग्य शैली, **गुलाबी उर्दू जनक** की ख्याति प्राप्त साहित्यकार मुल्ला रमूजी का जन्म **21 मई 1896** को भोपाल में हुआ। मुल्ला रमूजी के पिता मोहम्मद सालेह अफगानिस्तान से नवाब सुन जहाँ बेगम के जमाने में भोपाल आकर शासकीय सेवा में नियुक्त हुए। बारह वर्ष की आयु में मुल्ला रमूजी ने कुरान हिफ़्ज (कण्ठस्थ) कर लिया था। मदरसा सुलेमानियाँ में इब्तेदाई शिक्षा छठी कक्षा तक प्राप्त करके भोपाल रियासत के दफ्तर कुल में मुलाजिम हुए लेकिन उच्च शिक्षा के लिए कानपुर चले गए। सन् 1921 में मुल्ला रमूजी की पहली किताब **'गुलाबी उर्दू'** प्रकाशित हुई और उर्दू साहित्य जगत में उनकी नई शैली की वजह से किताब ने सभी को आकर्षित किया। वे शायरी भी करते थे एवं अंग्रेजों तथा अंग्रेजी शासन के खिलाफ व्यंग्यात्मक नज्में लिखते थे।

  रचनायें : इन्तिखाबे गुलाबी उर्दू, मजमुआ गुलाबी उर्दू, मीकालात गुलाबी उर्दू, खवातीन सवाने मुल्ला रमूजी, अंगुरा, शादी, औरत जात, लाठी और भैंस, मुसाफिरखाना, सुबह की लताफत, मजामीन मुल्ला रमूजी, खतूते मुल्ला रमूजी, दीवाने मुल्ला रमूजी, शिफाखाना, जिन्दगी, मुला रमूजी, गुलाबी उर्दू गुलाबी, शायरी जेग, मशहिरे भोपाल, तारीख।

- **शरद जोशी** : श्री शरद जोशी का जन्म 23 मई 1931 को मध्यप्रदेश के **उज्जैन** में हुआ था। जोशी जी ने अपनी आरंभिक शिक्षा के कुछ दिनों बाद लेखन कार्य में अपनी रुचि लगा दी। आप सन् 1956 तक **'नई दुनियाँ'** के परिक्रमा व्यंग्य-स्तम्भ के स्थायी लेखक रहे जोशी जी ने सूचना विभाग में दस वर्षों तक कार्य किया। इसके बाद आप जनसम्पर्क अधिकारी के रूप में कार्य करते रहे रहे।



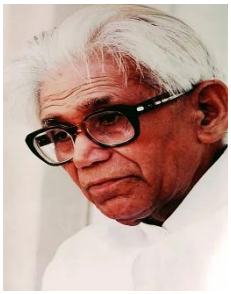
  रचनायें : पिछले दिनों, यथासंभव, परिक्रमा, रहा किनारे बैठ, जीप पर सवार इल्लियां , फिर किसी बहाने, अंधों का हाथी, एक था गधा, तिलिस्म (कहानी संग्रह) में, मैं और केवल में आदि जोशी जी की सुप्रसिद्ध व्यंग्य रचनायें हैं।

- **आचार्य नंददुलारे वाजपेयी** : आचार्य नंददुलारे वाजपेयी का जन्म 4 सितम्बर, 1906 को मगरायर गाँव उन्नाव जिला उत्तरप्रदेश में हुआ था आपके पिता का नाम श्री गोवर्धन वाजपेयी था। सन् 1923 में आपका विवाह श्रीमती सावित्री मिश्रा के साथ हुआ। आरंभिक शिक्षा घर में प्राप्त करने के बाद आपकी स्कूली शिक्षा हजारीबाग में हुई। 1925 में उन्नतम शिक्षा हेतु काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया जहाँ उनका संपर्क श्री सूर्यकांत त्रिपाठी 'निरालाजी' से हुआ और वे श्री निराला के साथ राष्ट्रीय क्रियाकलापों में भाग लेने लगे। फलतः राष्ट्रीय चेतना उनके चिन्तन का केन्द्र बन गई। वाजपेयी जी लगातार 4 वर्षों तक सूरसागर पत्रिका का सम्पादन किया था। सन् 1941 में वाजपेयी जी को काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग का प्रोफेसर नियुक्त किया गया।



  रचनायें : हिन्दी साहित्य : बीसवीं शताब्दी, आधुनिक साहित्य, नए प्रश्न, राष्ट्रभाषा की कुछ समस्याएँ, राष्ट्रीय साहित्य तथा अन्य निबंध, प्रकीर्णिका, हिन्दी साहित्य सृजन और समीक्षा, रीति और शैली, हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास है।

- **डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन'** : डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन' का जन्म झगरपुर गाँव में **14 अगस्त, सन् 1915** में हुआ। यह गाँव वर्तमान में उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले में हैं। इनकी प्रारंभिक शिक्षा रीवा में हुई। **विक्टोरिया कॉलेज ग्वालियर से उन्होंने बी. ए.** और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से एम. ए., पी.एच.डी. की माधव कॉलेज, उज्जैन और होल्कर कॉलेज, इंदौर में आप अध्यापन करते रहे। आप लंबे समय विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन के कुलपति रहे। सुमनजी अपने विद्यार्थी जीवन से ही कविता लिखा करते थे। सन् 1936 में इनका कविता संग्रह **'हिल्लोल'** प्रकाशित हुआ।



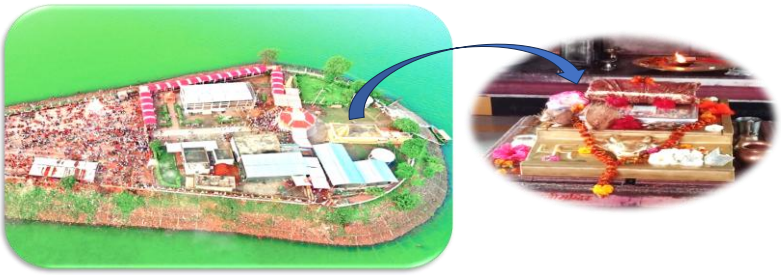
रचनायें : हिल्लोल, जीवन के गान, प्रलय, सृजन, विश्वास बढ़ता ही गया, पर आँखे नहीं भरी, विन्ध्य हिमालय, मिट्टी की बारात, युग का मोल। 'विश्वास बढ़ता ही गया' पर आपको देव पुरस्कार प्राप्त हुआ तथा 'मिट्टी की बारात' साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत है।

- **ईसुरी** : बुंदेलखण्ड के अद्वितीय प्रतिभा सम्पन्न लोक कवि का जन्म चैत्र शुद्ध 10 संवत 1998 ई. में **ग्राम मेंढ़की***** में हुआ था। पं भोलानाथ तिवारी उनके पिता थे। बाल्यावस्था में ही माता-पिता के देहांत के बाद मामा भू-धर नायक के घर उनका पालन-पोषण हुआ। एक अत्यंत सुंदर महिला रजऊ के सौंदर्य, उससे प्रेम एवं उसका विरह ही ईसुरी के सृजन की मूल प्रेरणा बना। ईसुरी का अधिकांश जीवन ग्राम बागौरा में बीता। उन्होंने छतरपुर नरेश के राजकवि का प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया। ईसुरी बुंदेली के मानक कवि हैं। उनकी काव्य प्रतिभा असाधारण और आशु काव्य प्रवृत्ति विलक्षण थी।

  रचनायें : ईसुरी आजीवन विभिन्न जमींदारों के कारिंदा (कर्मचारी) के रूप में गाँव-गाँव घूमते हुए ग्रामीण परम्परा तथा जनता से सीधे जुड़े थे। ईसुरी की फागें संकलन कृष्णानंद गुप्त द्वारा ईसुरी प्रकाश संकलन गौरीशंकर द्विवेदी द्वारा, ईसुरी सतसई सं. गुणसागर सत्यार्थी। विशेष बुंदेली के सर्वप्रमुख कवि, बुंदेली फाग में चौकड़िया का आरंभ किया। इनके फाग अत्यंत प्रसिद्ध है इसुरी के समवयस्क दो और प्रतिभाशाली कवि हुए जिनके नाम गंगाधर और ख्यालराम थे ईसुरी इन दोनों में वरिष्ठ और श्रेष्ठ थउनकी स्मृति में शरद पूर्णिमा को ग्राम पीपल्या में उनकी समाधि पर मेला लगता है।

- **सिंगाजी** : सिंगाजी कबीर की परंपरा के संत हैं। कबीर के राम की तरह सिंगाजी के राम भी निर्गुण निराकार ब्रह्म हैं। उन्होंने भी बहुदेववाद का विरोध किया। पूजा-पाठ, जाति वर्ग, वर्ण-भेद, कर्मकाण्ड, मूर्तिपूजा, रोजा नमाज आदि बाह्य आडम्बरों के वे विरोधी थे। सिंगाजी की रचनायें वाचिक परम्परा में प्राप्त होती है, कहा जाता हैं कि उन्होंने 1100 रचनायें रची हैं। भजनों के अतिरिक्त उनका साहित्य प्राय: प्रकाश में आ चुका है।

  रचनायें : साखी भजन, उपदेश, आत्मध्यान, दोपबोध, नरद, शरद, देश की वाणी, बाणावली, सातवार, पन्द्रह तिथि और बारहमासी। सिंगाजी की काव्य भाषा निमाड़ी है। भजनों की भाषा पर खड़ी बोली का जबरदस्त प्रभाव है।



खंडवा से 45 किमी दूर संत सिंगाजी की समाधी स्थित है। जो 458 साल पुरानी है,यह इंदिरा सागर बांध के बेकवाटर क्षेत्र के बीच मौजूद हैयह प्रदेश का पहला मानव निर्मित टापू है। इस टापू पर हर साल शरद पूर्णिमा पर मेल लगता है।

19.3 संगीत एवं नृत्य परम्परा

- **तानसेन** : संगीत सम्राट तानसेन की जीवन की तथ्यपूर्ण जानकारी प्राप्त नहीं होती है। वे ब्राह्मण थे, तथा इनके बचपन का नाम रामतनु पांडे था। तानसेन की उपाधि उन्हें राजा रामचंद्र से प्राप्त हुई थी। उनकी शिक्षा ग्वालियर के प्रसिद्ध संगीतकारों के सानिध्य में सम्पन्न हुई। ग्वालियर से वे वृन्दावन चले गये, जहाँ उन्हें स्वामी हरिदास से शिक्षा मिली। सबसे पहले तानसेन को शेरशाह सूरी के पुत्र दौलत खाँ का आश्रय मिला। इसके बाद वे राजा रामचंद्र के दरबार में आए। यहीं से उनकी प्रसिद्धि सर्वत्र फैलते हुए दिल्ली तक पहुँची। संवत् 1619-20 में तानसेन दिल्ली पहुँचे और उनकी प्रसिद्धि को देखते हुए अकबर ने उन्हें अपने दरबार में नव रत्नों में स्थान दिया। उनके गायन के विषय में प्रचलित है कि दीपक राग गाने से दीपक जल जाया करते थे और मेघराग गाने से वर्षा होने लगती थी। वे ध्रुपद के महानतम गायक थे। उन्होंने बहुत से ध्रुपदों की रचना की जो आज भी संगीत ग्रंथों में मिल जाते हैं। उनके नाम से संगीत सार और संगीत रागमाल नामक दो संगीत ग्रंथ भी प्राप्त हुए हैं। भारतीय संगीत जगत के इतिहास में उनका नाम सबसे ऊँचा है।

  - गुरु : स्वामी हरिदास, गोविन्द स्वामी, मो. गौस, बैजू, बक्शू, कर्ण, महमूल, मकरंद
  - संरक्षण : दौलत खाँ, रीवा के राजा रामचंद्र, एवं मुगल सम्राट अकबर

- ग्रंथ : संगीतसार एवं रागमाला

▶ **अलाउद्दीन खाँ** : मध्यप्रदेश को विश्व में ख्याति दिलाने वाले प्रसिद्ध सरोद वादक बाबा अलाउद्दीन खाँ का जन्म **1 अक्टूबर 1962** को त्रिपुरा के **शिवपुरा गाँव** *** में हुआ था। इनके पिता का नाम साधू खाँ व माता का हरसुन्दरी देवी था। इनके बचपन का नाम आलम था। अल्पायु से ही संगीत में रुचि होने के कारण शालेय शिक्षा का परित्याग कर दिया और कलकत्ता आ गए।

विभिन्न गुरुओं से पखावज, वायलिन, क्लानेंट, बाँसुरी तथा शहनाई बजाना सीखा। उस्ताद अली अहमद खाँ एवं रामपुर के सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ उस्ताद बजीर खाँ से सरोद सीखा। उन्होंने रबाव और मोह रवाँ से ध्रुपद सीखा।। **महाराज बृजनाथ सिंह** के निमंत्रण पर उस्ताद रामपुर मैहर आए और इसी को अपनी कर्मस्थली बनाया। पहले विश्वयुद्ध के बाद फैली बीमारियों से पूरे भारत में हजारों लोग मरे और बच्चे अनाथ हुए। ऐसे 28 अनाथ बालकों को बाबा ने आश्रय देकर संगीत में दक्ष किया और मैहर बैण्ड का गठन किया। उन्हें तानसेन संगीत समिति से **आफताबे हिन्द'** कलकत्ता संगीत संस्थान से **'भारत गौरव',** भातखण्डे संगीत विद्यालय, लखनऊ से **'संगीताचार्य'** की उपाधि प्राप्त हुई। सन् 1958 में पद्मभूषण 1971 में पद्मविभूषण अलंकरण प्राप्त हुआ। संगीत में आपके योगदान को चिरस्थायी बनाए रखने के लिए आपके नाम पर 1979 में संगीत अकादमी स्थापित की गई जो शास्त्रीय संगीत और नृत्य के संरक्षण, संवर्धन और विस्तार के लिए कार्य कर रही है। इनके इकलौते पुत्र श्री अली अकबर खाँ ने अपने पिता की कीर्ति को आगे बढ़ाया। उन्होंने अपनी पुत्री अन्नपूर्णा का विवाह पं. रविशंकर से किया भारतरत्न पं. रविशंकर सितार सीखने बाबा के पास आते थे। उन्होंने गुरु शिष्य परम्परा का सच्चा निर्वाह करते हुए योग्य शिष्यों की कई पीढ़ियाँ रचीं उनके शिष्यों में मुख्य थे, रविशंकर, पन्ना लाल घोष, निखिल बनर्जी, ज्योतिन भट्टाचार्य आदि 6 सितंबर 1972 को भारत का यह महान संगीतज्ञ संसार से विदा हो गया।

- गुरू : नीलू गोपाल, नंदबाबू, हाबूदत्त, अहमदअली खाँ, उस्ताद वजीर खाँ से सरोद, रबाब व मोह खाँ से धुपद्र
- संरक्षण : मैहर महाराज बृजनाथ सिंह
- उपाधियाँ : भारत गौरव, आफताबे हिन्दु, संगीताचार्य, संगीतनायक
- सम्मान : पद्मभूषण, पद्मविभूषण

▶ **कुमार गंधर्व** : भारतीय शास्त्रीय संगीत जगत में पं. कुमार गंधर्व का नाम एक क्रांतिकारी संगीतकार के रूप में स्थापित है। उनका जन्म 1924 को **सुलेभावी गाँव (कर्नाटक)** में हुआ। उनका मूल नाम **शिवपुत्र** था तथा उनके पिता का नाम **श्री सिद्धार मैदा** था। 6 वर्ष की आयु में ही उन्होंने श्री वझे बुआ के रिकार्ड की नकल सुनाकर सबको आश्चर्य में डाल दिया। संगीत की व्यवस्थित शिक्षा मुम्बई के प्रो. देवधर और सुश्री अंजनी बाई मातेकर से प्राप्त हुई। तपेदिक होने के कारण वे स्वास्थ्य लाभ हेतु सुदूर दक्षिण से देवास आकर बस गए, जहाँ मालवी लोकगीतों की ओर उनकी रुझान हुई।

संगीत क्षेत्र में उनके अप्रतिम योगदान को सम्मानित करने और नए संगीतकारों को प्रोत्साहन देने के लिए म.प्र. सरकार ने उनके नाम पर कुमार गंधर्व सम्मान की स्थापना की है। 12 जनवरी, 1991 को देश के इस महान संगीतज्ञ ने संसार से विदा ली।

- गुरू : बी.आर. देवधर, अंजनीबाई, मातेकर,
- रचनायें : अनूप राग विलास
- सम्मान : म.प्र. शासन द्वारा कालिदास एवं शिखर सम्मान, संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार एवं पद्मविभूषण।

▶ **राजा चक्रधर सिंह** : राजा चक्रधर सिंह का **जन्म 1905** में हुआ था। राजा नटवर सिंह आपके पिता थे। उन्हें चाचा नारायण सिंह से संगीत की प्रेरणा तथा भूपदेव सिंह और लक्ष्मण सिंह से तबला वादन की शिक्षा मिली। वे देश के मूर्धन्य तबला वादकों में से एक थे। वे सितार बजाने में भी प्रवीण थे। एक संगीतकार के रूप में उन्होंने **'तालतोयनिधि'**, **'रागरत्न',** **'मंजूषा'** नामक पुस्तकें लिखीं। रागरत्न मंजूषा में राग रागनियों का वंशवृक्ष है जबकि तालयोयनिधि में 380 मात्रा तक के तालों का चक्र सहित वर्णन किया गया। प्रसिद्ध नर्तक पं. कार्तिक राम उन्हीं के शिष्य थे और उन्हीं के संरक्षण में **रायगढ़ कत्थक** घराने का जन्म हुआ। उन्हें संगीत सम्राट की उपाधि मिली थी।

- गुरू : लाल नारायण सिंह, भूपदेव सिंह, लक्ष्मन सिंह

- रचनायें : रागरत्न मंजूषा, तालतोयनिधि (संगीत विषयक), मूरज वर्ण पुष्पाकर नर्तन सर्वस्य (नृत्य संबंधी) तथा अल्कापुर मायाचक्र, रस्मरास (सभी साहित्यक)
- उपाधि : संगीत सम्राट

▶ **पं. कार्तिक राम** : बिलासपुर के **भँवरतान गाँव** में सन् 1912 में कार्तिक राम का जन्म हुआ। बाल्यावस्था से ही नृत्य में अत्यधिक रुचि को देख उनके पिता कुन्जराम ने छत्तीसगढ़ नृत्य 'गम्मत' में पारंगत कलाकार माखनलाल को उन्हें सौंप दिया।

राजा चक्रधरसिंह ने कार्तिक राम को गणेशत्सोव के दौरान **गम्मत नृत्य** करते देखा व मोहित होकर उन्हें अपने आश्रम में ले लिया तथा कत्थक नृत्य के शिक्षण की व्यवस्था कर दी। पं. जयलालजी, लच्छन महाराज, सुन्दरप्रसाद जी तथा शम्भु महाराज ने पं. कार्तिक राम को शिक्षा दी। पं. कार्तिक राम ने सन् 1936 में दिल्ली में अखिल भारतीय संगीत सम्मेलन में चुनौती भरा नृत्य प्रस्तुत किया जहाँ उनकी असाधारण नृत्य कला पर विशेष **सम्मान व नृत्य सम्राट** की उपाधि मिली। सन् 1970 में कमला नेहरू संगीत महाविद्यालय रायपुर में एक वर्ष तक नृत्य शिक्षण देने के बाद टाटा नगर नृत्य शिक्षण देने के बाद टाटा नगर नृत्य कला केन्द्र में उन्होंने नृत्य शिक्षण का कार्य किया।

- गुरु : लखनलाल, पं. जयलाल, लच्छन महारज, सुंदरप्रसाद, शंभू महाराज
- संरक्षण : राजा चक्रधरसिंह
- सम्मान, उपाधि : नृत्य सम्राट, मध्यप्रदेश शासन का शिखर सम्मान, संगीत नाटक अकादमी अवार्ड, सूर श्रृंगार परिषद बम्बई से सम्मान प्राप्त हुआ।
- विशेष : गम्मत के श्रेष्ठ कलाकार अपने समय के असाधारण नृत्यकार रायगढ़ घराने की विलक्षण विशिष्टतम 'अतिविलम्बित' लय पर असाधारण अधिकार, भजन, गजल, व ठुमरी गायन।

▶ **उस्ताद हाफिज अली खाँ** : उस्ताद हाफिज अली खाँ संगीत के क्षेत्र में अटल शुद्धतावादी और **उस्ताद अलाउद्दीन** के गुरु भाई थे। इनका जन्म संवत् 1892 में ग्वालियर में हुआ। सरोद की शिक्षा अपने पिता **नन्हे खाँ** से प्राप्त की थी। सरोद का प्रचलन भारत में उनके पूर्वजों के द्वारा ही किया गया था। उनके पूर्वज अफगानिस्तान से रीवा के दरबार में आये थे। उस्ताद हाफिज अली खाँ को रामपुर के उस्ताद वजीर खाँ से संगीत की शिक्षा मिली और वे **सेनिया घराने***** की बीनकार परंपरा के सच्चे उत्तराधिकारी बने। उस्ताद अलाउद्दीन खाँ उनके गुरु भाई थे। उन्होंने बृन्दावन के चुकालाल एवं गनेशीलाल से ध्रुपद सीखा और गनपत राव से ठुमरी की शिक्षा ली। ग्वालियर के महाराजा माधवराज सिंधिया ने उस्ताद हाफिज अली खाँ को अपने दरबार में संगीतज्ञ के रूप में शामिल कर सम्मानित किया। ये **माधव संगीत महाविद्यालय ग्वालियर***** में भी नियुक्त हुए।

इन्हें 'आफताब ए सरोद', 'संगीत रत्नालंकार' से अलंकृत किया गया। उन्हें संगीत नाटक अकादमी का सर्वोच्च पुरस्कार भी दिया गया। सन् 1960 में से पद्मभूषण की उपाधि से सम्मानित भी किए गए। विश्व प्रसिद्ध सरोद वादक अमजद अली खाँ इन्हीं के पुत्र हैं। उस्ताद के शिष्यों में अमजद अली खाँ, मुबारक अली खाँ और रहमत अली खाँ के नाम शामिल हैं। उनके पुत्र अमजद अली खां ने पिता की स्मृति में ग्वालियर में एक सरोद घर की स्थापना को है। संवत् 1972 में लगभग 80 वर्ष की आयु प्राप्त करके चिरण्योति में विलीन हो गये।

▶ **कृष्ण राव पंडित** : 26 जुलाई सन् 1893 में जन्में कृष्णराव पंडित ने अपने **पिता शंकरराव पंडित व निसार हुसैन खाँ** से संगीत की शिक्षा प्राप्त की। 1907 मैं उन्होंने अपना पहला कार्यक्रम दिया। 1913 में महाराज सतारा के यहाँ संगीत शिक्षक, तदनंतर पाँच वर्षों तक ग्वालियर दरबार में रहे। पिता की स्मृति में ग्वालियर में **गंधर्व महाविद्यालय***** की नींव डाली।

- गुरू : पिता - शंकरराव पंडित, निसार हुसैन खाँ
- रचनायें : विधिवत संगीत शिक्षा के लिए अनेक पुस्तकें लिखीं जैसे संगीत सरगम सार, संगीत प्रवेश, संगीत आलाप संचारी, तबला वादन शिक्षा, सितार जलतरंग वादन शिक्षा, हारमोनियम वादन शिक्षा।
- उपाधियाँ : गायक शिरोमणि (सरदार पटेल द्वारा), संगीत रत्नालंकार (ग्वालियर दरबार) संगीत शिरोमणि (मुल्तान संगीत सभा द्वारा) गायन विशारद, संगीत मार्तण्ड, ताल सम्राट (पटियाला दरबार), गायन महर्षि (संकेश्वर पीठके शंकराचार्य) सुर बिलास
- सम्मान : तानसेन सम्मान, पद्म भूषण

- विशेष : स्वतंत्र गायक के रूप में उन्होंने अपनी विशिष्ट पहचान बनायी, गायकी की जटिलता उनकी विशेषता थी। ग्वालियर में उन्होंने संगीत विद्यालय की स्थापना की। अनगिनत रेडियो कार्यक्रमों का प्रसारण एवं संगीत सम्मेलनो का आयोजन किया।

▶ **शंकर राव पंडित** : अपनी पीढ़ी के गायकों में खयाल गायक शंकर राव पंडित विशिष्ट स्थान रखते हैं। उनका जन्म 1862 में ग्वालियर में हुआ था। बाल्यकाल से ही अपने पिता **श्री विष्णु पंडित** के साथ उस्ताद हद्दू- हस्सू खाँ की महफिलों में जाते थे, जिससे उनके मन में महान संगीतज्ञ बनने की प्रेरणा जगी। संगीत की प्रारंभिक शिक्षा उन्हें बालकृष्ण बुबा से प्राप्त हुई। पंडित शंकर राव के गायन पर मुग्ध होकर निसार हुसैन खाँ ने उन्हें अपना शिष्य बना लिया।

संगीत क्षेत्र में उनकी सेवा के लिए उनको राष्ट्रपति पदक प्रदान किया गया तथा सर्वश्रेष्ठ गायक की उपाधि से विभूषित किया गया था। 1917 में इनका निधन हुआ। उनके सुपुत्र डॉ. कृष्ण राव पंडित भारत के उच्च कोटि के संगीतज्ञों में गिने जाते हैं।

- गुरू : निसार हुसैन खाँ, बड़े बालकृष्ण बुवा, हद्दू खाँ के गायन से प्रेरणा ली।
- सम्मान : राष्ट्रपति पदक, संगीत नायक
- विशेष : खयाल गायकी में अत्यंत निष्णात, उच्च कोटि के संगीत शिक्षक भी थे। निःस्वार्थ भाव से संगीत सेवा की। कृष्ण राव पंडित इनके पुत्र थे।

मध्यप्रदेश के प्रमुख संगीतकार						
क्र.	नाम	संभाग / स्थान	विधा गायन / वादन	जन्म	मृत्यु	विशेष उपलब्धि
1.	तानसेन	ग्वालियर		1506	1585	अकबर के नवरत्न
2.	उस्ताद अलाउद्दीन खाँ	सतना	सरोद	1881	1972	सम्पूर्ण जीवन कला के विकास में समर्पित मृदंगाचार्य उपाधि तथा गांधर्व महाविद्यालय से सम्मानित
3.	मृदंगाचार्य गोविंद राव बुरहानपुर	इंदौर	मृदंगवादक			
4.	अमीर खाँ	इंदौर	ख्याल गायन	1913		
5.	कुमार गंधर्व	देवास	ख्याल गायन	1924	1995	कबीर भजनों में प्रसिद्धि एवं अनुपराग विलास पुस्तक का प्रकाशन
6.	अली अकबर खाँ	सतना	ख्याल गायन	1922		
7.	अमीर खाँ	ग्वालियर	सितार वादक		1919	
8.	हाफिज खाँ	ग्वालियर	सरोद वादक		1998	
9.	राजा भैया पूँछवाले	ग्वालियर	सरोद वादक	1882		संगीत पर सात पुस्तकें लिखी
10.	शंकर राव पण्डित	ग्वालियर	ख्याल गायन		1917	
11.	नारायण राव पण्डित	ग्वालियर	ख्याल गायन	1917		संगीत अध्यापक रहे
12.	अमजद अली खाँ	ग्वालियर	ख्याल गायन	1945		प्रसिद्ध सरोद वादक

▶ **राजा भैया पूँछवाले** : राजा भैया पूँछवाले का जन्म 12 अगस्त 1882 को ग्वालियर में हुआ था। उनका मूल नाम बालकृष्ण आनंद राव आप्टेकर था। आनंदराव इनके पिता का नाम था। बुंदेलखण्ड में पूँछ नामक गाँव की जागीर के कारण यह घरना पूँछवाले के नाम से जाना जाता है। उन्होंने अपने पिता से सितार तथा वामनराव और बलदेवजी से गायन की शिक्षा ली। वामन बुवा से उन्होंने ध्रुपद सीखा और अपनी लगन और निष्ठा के बल पर शंकर राव पंडित का शिष्यत्व प्राप्त किया। जब राजा भैया स्वरलिपि पद्धति सीखने के लिए बंबई गए तब उनका संपर्क पंडित विष्णु नारायण भातखंडे से हुआ जिन्होंने राजा भैया की संगीत साधना और गुणों से प्रभावित होकर उन्हें ग्वालियर

की सीमाओं से निकालकर अखिल भारतीय प्रतिष्ठा दिलायी। भातखंडे की स्वरलिपि पद्धति का राजा भैया पर भी प्रभाव पड़ा। बंबई से लौटकर राजा भैया माधव संगीत विद्यालय में अध्यापक हुए। तानसेन सम्मान से सम्मानित बाला साहेब पूँछवाले इनके पुत्र थे।

- गुरू : बलदेव जी, लाला बुवा, वमान बुवा, शंकरराव जी से सुन-सुनकर गायन सीखा। पिता से सितार सीखा।
- रचना : तान मालिका संगीतोपासना, तुमरी तरंगिनी तथा ध्रुपद, धमार गायकी।
- उपाधियाँ एवं सम्मान : संगीत रत्नाकर, संगीताचार्य, सर्वश्रेष्ठ गायक, राष्ट्रपति पदक।
- विशेष : खयाल, तुमरी, टप्पे में विशेष निपुणता, शालेय संगीत के क्षेत्र में श्री राजा भैया पूँछवाले का नाम अग्रणी है। माधव संगीत विद्यालय की स्थापना में प्रमुख योगदान, ग्वालियर घराने के पारंपरिक गायन शैली के प्रमाणिक प्रस्तोता। बड़ी संख्या में स्वरलिपि तैयार कर भावी पीढ़ी के लिए छोड़ा।

▶ **उस्ताद अमीर खाँ** : उस्ताद अमीर खाँ का जन्म सन् 1913 **इंदौर***** में हुआ। संगीत की प्रेरणा इन्हें अपने पूर्वजों से विरासत में मिली। उनके पिता समीर खाँ सारंगी तथा वीणा के ख्यात वादक थे। उन्होंने पिता के सान्निध्य में इंदौर घराना, अमान अली खाँ से भेण्टी बाजार घराना और अब्दुल वहीद खाँ से किराना घराना की संगीत शैलियों को आत्मसात किया है। उनकी मंद-मंद गायनी शैली खयाल गायकी के क्षेत्र में उनका विशिष्ट योगदान था। शास्त्रीय संगीत के साथ ही उन्होंने फिल्म संगीत की तरफ भी ध्यान दिया। **बैजूबावरा, झनक झनक पायल बाजे, गूँज उठी शहनाई** और तानसेन फिल्मों में उन्होंने अपना स्वर दिया। हिन्दुस्तानी गायन के विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में उन्होंने अमेरिका, इंग्लैण्ड आदि स्थानों की यात्रा की और वहाँ अपनी कला का प्रदर्शन किया। उनके प्रमुख शिष्यों में अमरनाथ व हृदयनाथ मंगेशकर आदि नाम उल्लेखनीय हैं। भारत सरकार ने उन्हें पद्मभूषण और मध्यप्रदेश सरकार ने म.प्र. का अकादमी एवार्ड प्रदान किया। सन् 1974 में इनका निधन हो गया।

EXERCISE – 19

1. ख्याल गायन के लिए विख्यात इन्दौर घराने की स्थापना किसने की थी? [MPPEB Patwari 2018]
(a) राम सहाय (c) अल्लादिया खान
(b) अमीर खान (d) मियाँ बक्शु

2. निम्न में से किस गायक का जन्म मध्यप्रदेश में नहीं हुआ। [MPPSC Civil 1997]
(a) तानसेन (c) उस्ताद हाफिज अली खां
(b) उस्ताद अलाउद्दीन खां (d) लता मंगेशकर

3. उस्ताद अलाउद्दीन खान एक प्रख्यात____थै। [MP Police Constable 2022]
(a) गायक (c) सितारवादक
(b) सरोदवादक (d) तबलावादक

4. राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय कहाँ स्थित है। [MP Police constable 2022]
(a) भोपाल (c) ग्वालियर
(b) जबलपुर (d) इंदौर

5. बुंदेलखंड का 'आल्हाखंड' काव्य किस सुप्रसिद्ध लेखक की रचना है? [MPPSC Computer Programmer 2021]
(a) जगनिक (c) चंदबरदायी
(b) सूरदास (d) इनमें से कोई नहीं

6. निम्नलिखित में से कौन पारंपरिक माच गायन शैली से सम्बद्ध है? [MPPSC Civil/Forest (Prelim) 2024]
(a) कालूराम बामनिया (c) भगवतीलाल राजपुरोहित
(b) सत्येंद्र सिंह लोहिया (d) ओम प्रकाश शर्मा

7. किसने रामकथा पर आधारित "आनंद रघुनंदन" नामक नाटक का लेखन किया है? [MPPSC Assistant Professor Exam 2022; MPPSC Forest (Main) 2024]
(a) विश्वनाथ सिंह (c) उमेश कुमार
(b) राजशेखर (d) पदन भटनागर

8. उस्ताद हाफिज़ अली खाँ एक प्रसिद्ध ____ थे। [MPPSC Assistant Veterinary Surgeon 2023; MPPSC Principal Assistant Director (Technical) Exam 2023]
(a) गायक (c) शहनाई वादक
(b) तबला वादक (d) सरोद वादक

9. शंकर राव पंडित का सम्बन्ध किस विधा से था? [MPPSC Civil / Forest (Prelim) 2024]
(a) सितार वादन (c) ख्याल गायकी
(b) मृदंग वादन (d) कत्थक नृत्य

10. पं. कुमार गंधर्व की मृत्यु किस स्थान पर हुई? [MPPSC Assistant Professor music 2024]
(a) देवास (c) धार
(b) उज्जैन (d) इंदौर

11. इनमें से किस अकादमी द्वारा ग्वालियर में 'तानसेन संगीत समारोह' आयोजित कराती है ? [MPPSC Assistant Professor (Music) 2024]
(a) उस्ताद अलाउद्दीन खाँ कला एवं संगीत अकादमी
(b) संगीत एवं डान्स अकादमी
(c) साहित्य कला परिषद
(d) स्वरांजलि संगीत अकादमी

12. मैहर बैंड के प्रणेता ___ थे? [MPPSC Assistant Professor (Music) 2024]
(a) उस्ताद हाफिज़ अली खाँ
(b) उस्ताद अमज़द अली खाँ
(c) उस्ताद अली अकबर खाँ
(d) उस्ताद अलाउद्दीन खाँ

13. कृष्णराव शंकर पंडित निवासी थे? [MPPSC Assistant Professor (Music) 2024]
(a) बम्बई
(b) देवास
(c) अकोला
(d) ग्वालियर

14. मध्य प्रदेश की संगीत राजधानी किस शहर को बोला जाता है? [MP Group-2 – 2017, DAHET 2020]
(a) इंदौर
(b) मैहर
(c) भोपाल
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

15. निम्न में से कालिदास की किस रचना का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद हुआ ? [MPPSC Computer Programmer Exam 2021]
(a) कुमारसंभव
(b) मेघदूत
(c) रघुवंशम
(d) अभिज्ञानशाकुंतलम

16. 'कवि बिहारी' किस राज्य से संबंधित थे? [MPPSC Dental Surgeon Exam 2022]
(a) मध्यप्रदेश
(b) बिहार
(c) राजस्थान
(d) उत्तरप्रदेश

17. 'राम रसायन' के लेखक कौन हैं? [MP State Engineering 2022]
(a) पद्माकर
(b) ईसुरी
(c) राजशेखर
(d) बिल्हण

18. "सतपुड़ा के जंगल" के लेखक कौन है? [MPPSC Assistant Professor 2022]
(a) सुभद्रा कुमारी चौहान (c) नर्मदा प्रसाद खरे
(b) केशव प्रसाद पाठक (d) भवानी प्रसाद मिश्र

19. कालिदास रचित अभिज्ञानशकुन्तलम का अंग्रेजी अनुवाद किसने किया? [MP Forest Service (Main) 2023]
(a) चार्ल्स विल्किन्स (c) वॉरेन हेस्टिंग्स
(b) सर विलियम जोन्स (d) जोनाथन डंकन

20. 'मुकुल' किसकी प्रसिद्ध साहित्यिक रचना है? [MPPSC Civil / Forest (Prelim) 2023]
(a) माखनलाल चतुर्वेदी (c) मुकुटधर पाण्डेय
(b) भवानी प्रसाद मिश्रा (d) सुभद्रा कुमारी चौहान

21. 'रामचंद्रिका' किसकी प्रसिद्ध रचना है ? [MPPSC Civil / Forest (Prelim) 2023]
(a) पद्माकर (c) केशवदास
(b) भूषण (d) भवभूति

22. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने दो काव्य - 'प्राणार्पण' तथा 'आत्मोसर्ग' किस पर लिखे ? [MPPSC Civil / Forest (Prelim) 2023]
(a) गणेश शंकर विद्यार्थी
(b) जय शंकर प्रसाद
(c) प्रभाकर माचवे
(d) माखनलाल चतुर्वेदी

23. पुष्प की अभिलाषा नामक रचना मध्यप्रदेश के किस प्रसिद्ध कवि की है। [MP Vyapam Group 2 sub Group 4 exam 2018, MP Vyapam JE Distribution Electrical 2018]
(a) हरिशंकर परसाई
(b) माखनलाल चतुर्वेदी
(c) नाथूराम प्रेमी
(d) गजानन माधव मुक्तिबोध

24. मध्य प्रदेश में उज्जैन के किस प्रसिद्ध संत कवि ने 'नीतिशतक' और 'वैराग्यशतकम्' लिखा था [MP High School TET (PHYSICS) 2019]
(a) कबीर (c) भर्तृहरि
(b) कालिदास (d) भवभूति

25. तानसेन का असली नाम था? [MPPSC Assistant Professor (Music) 2024]
(a) तन्ना मिश्र (c) अन्ना मिश्रा
(b) मकरंद पांडे (d) भारकर उपाध्याय

Chapter 20

साहित्य, संगीत तथा कला क्षेत्र में स्थापित संस्थायें, समारोह और प्रमुख मेले

20.1 साहित्य, संगीत तथा कला क्षेत्र में स्थापित संस्थायें

- **भारत भवन, भोपाल** : भारत भवन की स्थापना 13 फरवरी 1982 को भोपाल में की गई थी। इसका उद्देश्य सृजनात्मक कलाओं का **विकास**, **परिरक्षण**, **अन्वेषण**, **प्रसार-प्रचार** तथा **प्रोत्साहन** करना था। यह संस्था **भारत भवन न्यास अधिनियम, 1982** के अंतर्गत स्थापित की गई। इस भवन की वास्तु-रचना प्रसिद्ध वास्तुविद् **चार्ल्स कोरिया** द्वारा की गई थी।

  भारत भवन विभिन्न खंडों में विभाजित है, और प्रत्येक खंड अलग-अलग कलाओं से संबंधित गतिविधियों के लिए समर्पित है। प्रमुख खंड निम्नलिखित हैं—

  - **रूपंकर** - इस खंड में आदिवासी लोककला और उसकी परिष्कृत कलाओं के सुंदर नमूने संग्रहित हैं। इनमें सुघड़ (परंपरागत रूप से प्रशिक्षित) और अनगढ़ (स्वाभाविक रूप से रचनात्मक) दोनों ही शैलियों के उदाहरण देखने को मिलते हैं। इस खंड में कई **राष्ट्रीय** और **अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियाँ** भी आयोजित की जा चुकी हैं।
  - **वागर्थ** - यह खंड **भारतीय भाषाओं की कविताओं** के लिखित, मुद्रित एवं वाचिक रूपों के संग्रह के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ **संगोष्ठियाँ**, **परिचर्चाएँ** तथा **संवाद कार्यक्रमों** का आयोजन समय-समय पर किया जाता है।
  - **अनहद** - यह खंड **लोक संगीत** और **शास्त्रीय संगीत** का प्रमुख केंद्र है। यहाँ संगीत के विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जिनमें **दुर्लभ वाद्ययंत्रों** का उपयोग विशेष आकर्षण का केंद्र होता है।
  - **रंगमण्डल** - यह खंड **नाट्यशाला** से संबंधित है और इसमें तीन उपखंड हैं—**अंतरंग**, **बहिरंग** और **अभिरंग**। देश-विदेश के कई प्रसिद्ध नाटककारों ने यहाँ अपने नाटकों का मंचन किया है। इस खंड में **नाट्यकला से संबंधित पुस्तकालय** भी स्थित है।
  - **आकार** - आकार खंड में **ग्राफिक्स**, **मूर्तिकला** और **चित्रकला** से संबंधित **कर्मशालाएँ** संचालित होती हैं। यह खंड युवा कलाकारों के प्रशिक्षण और प्रयोग का प्रमुख स्थान है।
  - **प्रकाशन** - भारत भवन से **साहित्य**, **कला** और **समालोचना** से संबंधित **'पूर्वाग्रह'** नामक मासिक पत्रिका तथा ललित कलाओं की अंग्रेज़ी अनियतकालीन पत्रिका **'बहुवचन'** का प्रकाशन होता है।

- **मध्यप्रदेश कला परिषद्** : मध्यप्रदेश कला परिषद् की स्थापना सन् 1952 में हुई। इसका मुख्य उद्देश्य प्रदेश में **संगीत**, **नृत्य**, **ललितकला**, **रंगमंच** आदि कलाओं को प्रोत्साहित करना, उनका संरक्षण और संवर्धन करना है। इस परिषद् के कार्यक्रमों की शुरुआत **राष्ट्रीय नाट्य समारोह** से हुई थी। इसके अंतर्गत मूर्तियों की प्रदर्शनी का आयोजन, खजुराहो नृत्य समारोह का आयोजन, तानसेन समारोह ग्वालियर, एवं काष्ठ शिल्प पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों और प्रदर्शनों का आयोजन किया जाता है।
- **मध्यप्रदेश साहित्य परिषद्** : मध्यप्रदेश साहित्य परिषद् की स्थापना सन् 1954 में मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी द्वारा की गई थी। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य राज्य में साहित्य की उन्नति और विकास में उत्प्रेरक की भूमिका निभाना है। साथ ही, यह संस्था साहित्यकारों को सम्मानित करने और उनकी श्रेष्ठ कृतियों को पुरस्कृत करने का कार्य भी करती है।

  प्रमुख गतिविधियाँ—

  - साहित्यिक पुरस्कारों की स्थापना और उन्हे प्रदान करना
  - सम्मान समारोहों का आयोजन
  - साहित्यिक चर्चाएँ और गोष्ठियों का आयोजन
  - साहित्यिक पुस्तकों और लेखन सामग्री का प्रकाशन

- **मध्यप्रदेश आदिवासी लोक कला परिषद** : आदिवासी लोक कला परिषद् की स्थापना वर्ष 1980 में की गई थी। इस परिषद् का मुख्य उद्देश्य आदिवासी **लोकसंगीत**, **लोकनृत्य**, **लोकनाट्य** तथा **आदिवासी साहित्य** के संरक्षण, दस्तावेजीकरण और विकास का कार्य करना है।

  यह परिषद् न केवल लोककलाओं के संरक्षण का दायित्व निभाती है, बल्कि उनके प्रदर्शन के लिए विभिन्न कार्यक्रमों और आयोजनों का भी संचालन करती है। इसके अंतर्गत **सम्पदा**, **लोकरंग**, **लोक रंजन**, **राष्ट्रीय रामलीला मेला**, **जगार**, **लोकोत्सव**, **नाच समारोह**, **कबीर समारोह** आदि प्रमुख आयोजन किए जाते हैं।

- **कालिदास अकादमी, उज्जैन** : इस अकादमी की स्थापना सन् **1977** में की गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य नृत्य और संगीत का प्रशिक्षण देना, कला प्रदर्शनियों का आयोजन करना, संगीत और नृत्य से संबंधित शोध कार्य करना तथा लोक कलाओं का संरक्षण और प्रचार-प्रसार करना है।

  इसके अतिरिक्त, अकादमी **संगोष्ठियों**, **परिषद् सम्मेलनों**, **अनुशीलन कार्यक्रमों** और **प्रकाशन कार्यों** का संचालन भी करती है। यह अकादमी हर वर्ष प्रसिद्ध **कालिदास समारोह** का आयोजन भी करती है, जो राज्य की सांस्कृतिक गरिमा को दर्शाने वाला एक प्रमुख आयोजन है।

- **उस्ताद अलाउद्दीन खाँ संगीत अकादमी** : इस अकादमी की स्थापना वर्ष 1979 में की गई थी। यह अकादमी महान संगीतज्ञ **उस्ताद अलाउद्दीन खाँ** की स्मृति में स्थापित की गई थी, जिसका उद्देश्य भारतीय शास्त्रीय संगीत का **संरक्षण**, **संवर्धन** और **विस्तार** करना है। यह संस्था न केवल संगीत को बढ़ावा देती है, बल्कि शास्त्रीय संगीत और नृत्य के क्षेत्र में प्रशिक्षण की व्यवस्था भी करती है। अकादमी द्वारा प्रतिवर्ष **मैहर** में *अलाउद्दीन खाँ समारोह* का आयोजन किया जाता है।

- **मध्यप्रदेश संस्कृत अकादमी** : संस्कृत साहित्य को प्रोत्साहन और संरक्षण प्रदान करने के उद्देश्य से इस अकादमी की स्थापना वर्ष 1984 में की गई। अकादमी द्वारा संस्कृत साहित्य को बढ़ावा देने हेतु विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं, जिनमें **व्याख्यान**, **परिचर्चाएँ**, **समारोह**, **संगोष्ठियाँ** और **पुरस्कार वितरण** प्रमुख हैं। इन आयोजनों के माध्यम से संस्कृत भाषा और साहित्य के प्रति जागरूकता बढ़ाई जाती है तथा नई पीढ़ी को इससे जोड़ने का प्रयास किया जाता है।

- **मध्यप्रदेश तुलसी अकादमी** : तुलसी अकादमी की स्थापना वर्ष 1987 में की गई। इस अकादमी का मुख्य उद्देश्य गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित साहित्य का अन्वेषण, प्रचार-प्रसार और संरक्षण करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अकादमी द्वारा व्याख्यान माला, परिचर्चा, संगोष्ठी आदि कार्यक्रमों का आयोजन नियमित रूप से किया जाता है। इस अकादमी के अंतर्गत चित्रकूट में तुलसी शोध संस्थान कार्यरत है, जो तुलसी साहित्य पर गहन शोध कार्य करता है।

- **मध्यप्रदेश उर्दू अकादमी** : इस अकादमी का गठन वर्ष 1976 में किया गया था। मध्य प्रदेश में उर्दू साहित्य के विकास और प्रसार के उद्देश्य से यह संस्था कार्य करती है। अकादमी द्वारा प्रदेशभर में समय-समय पर विभिन्न साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है, जिनका उद्देश्य उर्दू भाषा और साहित्य को प्रोत्साहन देना होता है।

- **मध्यप्रदेश सिंधी साहित्य अकादमी** : सिंधी साहित्य अकादमी की स्थापना वर्ष 1983 में की गई थी। इसका मुख्यालय मध्य प्रदेश की राजधानी **भोपाल** में स्थित है।

  यह अकादमी सिंधी भाषा और साहित्य के प्रचार-प्रसार हेतु विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित करती है, जैसे—परिचर्चाएँ, विचार गोष्ठियाँ, व्याख्यान माला, तथा सिंधी नाट्य प्रस्तुतियाँ। इसके अतिरिक्त, अकादमी "**सिंधी प्रतिनिधि**" नामक पत्रिका का नियमित रूप से प्रकाशन भी करती है, जो सिंधी भाषा और साहित्य को समर्पित है।

- **मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी** : प्रदेश शासन के उच्च शिक्षा विभाग के अंतर्गत कार्यरत **हिन्दी ग्रंथ अकादमी** की स्थापना सन् **1969** में की गई थी। यह अकादमी विश्वविद्यालय स्तर की पुस्तकों का हिन्दी में लेखन, अनुवाद एवं प्रकाशन करती है।

  इसके अतिरिक्त, यह अकादमी द्विमासिक पत्रिका **'रचना'** का भी नियमित प्रकाशन करती है, जो साहित्य, शिक्षा और उच्च अध्ययन से जुड़ी सामग्री प्रस्तुत करती है।

- **पुरातत्व, अभिलेखागार एवं संग्रहालय मध्यप्रदेश** : इस संग्रहालय की स्थापना वर्ष 1956 में की गई थी। इसके पश्चात, वर्ष 1975 में स्थापित **राजकीय अभिलेखागार संचालनालय** का इस संग्रहालय में **संविलयन 16 अगस्त 1994** को किया गया। इस संचालनालय का मुख्य कार्य प्रदेश में बिखरी हुई पुरातत्वीय संपदा का **सर्वेक्षण**, **चिह्नांकन**, **संरक्षण**, **प्रदर्शन** तथा **अनुसरण** करना है। यह संचालनालय प्रदेश की सांस्कृतिक विरासत को सहेजने और संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- **रवीन्द्र भवन, भोपाल** : यह भवन न केवल मध्य प्रदेश, बल्कि पूरे भारत के प्रमुख और श्रेष्ठ नाट्यगृहों में से एक माना जाता है। प्रशासनिक रूप से यह भवन **राजभाषा एवं संस्कृति संचालनालय** के अंतर्गत कार्य करता है।

  रवीन्द्र भवन में दो रंगमंच हैं—एक अंदर का सभागृह रंगमंच और दूसरा बाहर का खुला रंगमंच। सभागृह में कुल **728 दर्शकों** के बैठने की व्यवस्था है, जबकि खुले रंगमंच के सामने लगभग **5000 दर्शक** बैठ सकते हैं।
- **सृजनपीठ :** प्रदेश की प्रमुख सृजनपीठ इस प्रकार हैं.
  - निराला सृजनपीठ, बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय भोपाल
  - प्रेमचन्द सृजनपीठ, विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन।
  - मुक्तिबोध सृजनपीठ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर।
  - सुभद्राकुमारी चौहान सृजनपीठ जबलपुर

20.2 सांस्कृतिक समारोह

- **कालिदास समारोह, उज्जैन** : उज्जैन में गुप्तकाल के महान नाटककार और कवि **कालिदास** के सम्मान में प्रतिवर्ष **कालिदास समारोह** बड़े उत्साह और श्रद्धा के साथ आयोजित किया जाता है।इस समारोह में भारत ही नहीं, बल्कि विश्व भर से संस्कृत विद्वान भाग लेते हैं। वे कालिदास के साहित्य, नाट्य और काव्य पर विचार प्रस्तुत करते हैं।

  इस समारोह की शुरुआत कराने में भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति **डॉ. शंकर दयाल शर्मा** का विशेष योगदान रहा है।
- **तानसेन समारोह** : तानसेन समारोह प्रतिवर्ष ग्वालियर स्थित तानसेन की समाधि पर नियमित रूप से आयोजित किया जाता है। यह समारोह भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक प्रमुख आयोजन माना जाता है। इसमें देश भर से शास्त्रीय संगीत के प्रतिष्ठित और मूर्धन्य कलाकार भाग लेते हैं। इसी समारोह के दौरान **मध्य प्रदेश शासन** द्वारा **तानसेन सम्मान** भी प्रदान किया जाता है, जो शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान देने वाले कलाकारों को दिया जाता है।



  यह समारोह सर्वप्रथम **वर्ष 1924** में शुरू हुआ था। हाल ही में **तानसेन समारोह के 100 वर्ष** पूर्ण हुए हैं, जो इस आयोजन की समृद्ध परंपरा और सांस्कृतिक महत्व को दर्शाते हैं।
- **खजुराहो नृत्य समारोह** : यह समारोह देशी और विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने के उद्देश्य से सन् 1976 से प्रति वर्ष आयोजित किया जाता है। सात दिनों तक चलने वाले इस सांस्कृतिक आयोजन में **कत्थक**, **कुचिपुड़ी**, **ओडिसी**, **भरतनाट्यम**, **मणिपुरी** और **मोहिनीअट्टम** जैसे शास्त्रीय नृत्य रूपों के प्रसिद्ध कलाकार अपनी प्रस्तुतियाँ देते हैं। इस वर्ष इस समारोह की **50 वीं वर्षगाँठ** धूमधाम से मनायी गयी। यह आयोजन भारत की सांस्कृतिक विविधता और नृत्य परंपरा की भव्यता को दर्शाने का एक सुंदर माध्यम है।
- **मध्यप्रदेश लोक कला समारोह** : इस समारोह के अंतर्गत सभी चयनित कलाकारों को एक मंच पर एकत्रित कर कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। इस आयोजन में भाग लेने के लिए लोक कलाकारों का चयन **क्षेत्रीय लोक कला समारोहों** के माध्यम से किया जाता है। इससे कलाकारों को अपनी कला प्रदर्शन का अवसर मिलता है और विविध लोक परंपराओं का आदान-प्रदान भी होता है।

- **अलाउद्दीन खाँ समारोह, मैहर** : इस शताब्दी के महान संगीतज्ञ **मैहर के बाबा अलाउद्दीन ख़ाँ** की स्मृति में प्रतिवर्ष **उस्ताद अलाउद्दीन ख़ाँ संगीत अकादमी** द्वारा संगीत और नृत्य का एक भव्य समारोह आयोजित किया जाता है। यह समारोह सन् **1974** से निरंतर आयोजित हो रहा है। इस आयोजन का उद्देश्य भारतीय शास्त्रीय संगीत और नृत्य की समृद्ध परंपरा को बनाए रखना तथा नई पीढ़ी को इससे जोड़ना है।
- **अमीर खाँ समारोह, इंदौर** : यशस्वी गायक **उस्ताद अमीर खाँ** की स्मृति को चिरस्थायी बनाए रखने के लिए, मध्य प्रदेश की **अलाउद्दीन खाँ संगीत अकादमी** प्रतिवर्ष **इंदौर** में **अमीर खाँ समारोह** का आयोजन करती है।
- **राष्ट्रीय रामलीला समारोह** : विभिन्न प्रदेशों की रामलीला मण्डलियों की सहभागिता से प्रतिवर्ष यह समारोह पूर्व में केवल भोपाल में और अब प्रदेश के विभिन्न नगरों में आयोजित किया जाता है।
- **तुलसी उत्सव*****: धनतेरस से दीपावली तक अनगिनत आदिवासी, ग्रामवासी अपने आराध्य रामजी के साथ दीपावली मनाने के लिए हर साल गाते बजाते चित्रकूट पहुँचते हैं। यहीं प्रतिवर्ष मध्यप्रदेश तुलसी अकादमी धनतेरस से दीपावली तक मंदाकिनी तट पर तुलसी उत्सव का आयोजन करती है।

म.प्र. के प्रमुख समारोह	
खजुराहो नृत्य समारोह	खजुराहो
कालिदास समारोह	उज्जैन
उस्ताद अलाउद्दीन खाँ संगीत समारोह	मैहर
मालवा उत्सव	इंदौर / उज्जैन
ध्रुपद समारोह	भोपाल
उस्ताद अमीर खाँ समारोह	इंदौर
माखनलाल चतुर्वेदी समारोह	खंडवा
पद्माकर समारोह	सागर
सुभद्राकुमारी चौहान समारोह	जबलपुर
ओरछा उत्सव	टीकमगढ़
निमाड़ उत्सव	खण्डवा, खरगौन
लोक रंग समारोह	भोपाल
जनजाति फिल्मी उत्सव	इन्दौर
किशोर कुमार सम्मान समारोह	खण्डवा
तानसेन सम्मान समारोह	ग्वालियर
टेपा समारोह	उज्जैन

20.3 प्रमुख मेले

- **सिंहस्थ** : यह ग्रह स्थिति प्रत्येक **बारह साल** में आती है। इसी कारण उज्जैन में लगने वाले कुंभ को सिंहस्थ कहा जाता है। क्षिप्रा नदी के तट पर लगने वाला **सिंहस्थ कुंभ मेला** चैत्र मास की पूर्णिमा से लेकर वैशाख मास की पूर्णिमा तक चलता है। यह पर्व भारत के पवित्रतम स्नानों में से एक माना जाता है। इसमें भाग लेने के लिए देश-विदेश से लाखों श्रद्धालु उज्जैन पहुँचते हैं।

  मध्य प्रदेश में **उज्जैन** एकमात्र ऐसा स्थान है जहाँ कुंभ मेला आयोजित होता है। जब बृहस्पति ग्रह सिंह राशि में प्रवेश करता है, तब यहाँ कुंभ मेला लगता है।
- **रामलीला का मेला** : दतिया जिले की भांडेर तहसील में यह मेला लगता है। 100 वर्षों से अधिक समय से चला आ रहा यह मेला जनवरी-फरवरी माह में लगता है।
- **हीरा भूमिया मेला** : हीरामन बाबा का नाम **ग्वालियर***** और इसके आस-पास के क्षेत्रों में बहुत प्रसिद्ध है। लोक मान्यता के अनुसार, हीरामन बाबा के आशीर्वाद से महिलाओं का बाँझपन दूर होता है। यह मेला कई सौ वर्षों पुराना है और प्रतिवर्ष **अगस्त और सितंबर** माह में आयोजित किया जाता है। हीरामन बाबा से जुड़ी आस्था के कारण इस मेले में दूर-दूर से श्रद्धालु बड़ी संख्या में शामिल होते हैं।
- **नागाजी का मेला** : संत नागाजी की स्मृति में यह मेला लगता है। मुरैना जिले के पोरसा कस्बे में एक माह तक यह मेला चलता है। पहले यहाँ बंदर बेचे जाते थे। अब सभी पालतू जानवर बेचे जाते हैं।
- **तेजाजी का मेला** : तेजाजी सच्चे इंसान थे। उनके पास एक ऐसी शक्ति थी जो शरीर से साँप का जहर उतार देती थी। गुना जिले के भामावड़ में पिछले 70 वर्षों से यह मेला लगता चला आ रहा है। तेजाजी की जयंती पर यह मेला आयोजित होता है। निमाड़ में भी इस मेले का आयोजन होता है।
- **कालूजी महाराज का मेला** : पश्चिमी निमाड़ के पिपल्या खुर्द में एक महीने तक यह मेला लगता है। यह कहा जाता है कि 200 वर्षों पूर्व कालूजी महाराज यहाँ पर अपनी शक्ति से आदमियों और जानवरों की बीमारी ठीक करते थे।

- **जागेश्वरी का मेला** : हजारों सालों से अशोकनगर जिले के चंदेरी नामक स्थान में यह मेला लगता चला आ रहा है। कहा जाता है कि चंदेरी के शासक जागेश्वरी देवी के भक्त थे। वे कोढ़ से पीड़ित थे। देवी के स्थान पर जाने पर देवी की कृपा से राजा का कोढ़ ठीक हो गया और उसी दिन से उस स्थान पर मेला लगना शुरू हो गया।
- **अमरकंटक का शिवरात्रि मेला** : मध्य प्रदेश के शहडोल जिले में स्थित **अमरकंटक** नामक स्थान पर यह मेला आयोजित होता है। यह मेला **शिवरात्रि** के अवसर पर लगता है।
- **महामृत्यंजय का मेला** : मध्य प्रदेश के रीवा जिले में **महामृत्युञ्जय मंदिर** स्थित है। यह मंदिर धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। यहाँ हर वर्ष **बसंत पंचमी** और **महाशिवरात्रि** के अवसर पर भव्य मेला आयोजित किया जाता है,
- **चंडी देवी का मेला** : सीधी जिले के घोघरा नामक स्थान पर चंडी देवी को सरस्वती का अवतार माना जाता है। यहाँ पर मार्च-अप्रैल में मेला लगता है।
- **काना बाबा का मेला** : हरदा जिले के सोढलपुर नामक गाँव में काना बाबा की समाधि पर यह मेला लगता है।
- **शहबुद्दीन औलिया का उर्स** : यह उर्स नीमच में फरवरी माह में आयोजित किया जाता है। जो चार दिनों तक चलता है यहाँ बाबा शहाबुद्दीन की मजार है।
- **मठ घोघरा का मेला*** : सिवनी जिले के मौरंथन नामक स्थान पर शिवरात्रि को 15 दिवसीय मेला लगता है। यहाँ पर प्राकृतिक झील और गुफा भी है।
- **सिंगाजी का मेला** : सिंगाजी एक महान संत थे। पश्चिमी निमाड़ के पिपल्या गाँव में अगस्त-सितंबर में एक सप्ताह का मेला लगता है।
- **बरमान का मेला** : नरसिंहपुर जिले के सुप्रसिद्ध ब्राह्मण घाट पर मकर संक्रांति पर 13 दिवसीय मेला लगता है।
- **धामोनी उर्स** : सागर जिले के धामोनी नामक स्थान पर बाबा मस्तान अली शाह की मजार पर अप्रैल-मई में यह उसे लगता है।
- **देवरी का मेला** : यह मेला सागर जिले के देवरी में खांडेराव मंदिर में लगता है।
- **चरण पादुका का मेला** : छतरपुर जिले के चरण पादुका में भी मकर संक्रांति के अवसर पर मेले का आयोजन किया जाता है। मकर संक्रांति के इस मेले को लोग शहीद मेला भी कहते हैं। चरण पादुका को लेकर एक मान्यता यह भी है कि उर्मिल नदी के किनारे एक बड़ी शिला पर भगवान राम के पैरों के चिन्ह अंकित हैं। ऐसा माना जाता है कि भगवान राम वनवास के समय इस स्थान पर आए थे और यह चरणचिन्ह उन्हीं के हैं।
- **जटाशंकर का मेला** : छतरपुर जिले के जटाशंकर तीर्थ स्थल पर हर अमावस्या को मेला लगता है। जटाशंकर छतरपुर जिले ही नहीं पूरे बुंदेलखंड का मनोरम प्राकृतिक स्थल है।
- **जलविहार मेला** : छतरपुर में ही अक्टूबर-नवम्बर माह में दशहरा और दीपावली के बीच पन्द्रह दिन का जलविहार मेला लगता है।
- **नांदचाँद** : पत्रा जिले के ग्राम बगवार के निकट नांदचाँद का मेला भरता है। सात दिनों तक भरे जाने वाले मेले के लिए प्रसिद्ध इस स्थान पर पत्थरों की शिल्पकला काफी प्रसिद्ध है।
- **कुंडेश्वर का मेला** : टीकमगढ़ जिले के कुंडेश्वर में मकर संक्रांति, शिवरात्रि एवं डोल ग्यारस पर्व पर मेले लगते हैं, जो कई दिनों तक चलते हैं।
- **बड़े बाबा का मेला** : दमोह से करीब 35 किलोमीटर दूर जैन धर्मावलम्बियों का प्रमुख तीर्थ स्थल कुंडलपुर है बड़े बाबा का मेला प्रतिवर्ष माघ शुक्ल पर कुंडलपुर में आयोजित किया जाता है।

20.4 प्रमुख संग्रहालय

मध्य प्रदेश में पुरातात्विक अवशेषों को सुरक्षित रखने के लिए जिन भवनों का निर्माण किया गया है, उन्हें **संग्रहालय** कहा जाता है। राज्य के विभिन्न जिलों में भिन्न-भिन्न राजवंशों के काल में बनी मूर्तियों और अन्य ऐतिहासिक वस्तुओं को संरक्षित करने के उद्देश्य से ये संग्रहालय बनाये गये हैं।

- **शासकीय संग्रहालय भोपाल** : इस संग्रहालय की स्थापना ब्रिटिश काल में सन् 1887 में की गई थी। प्रारंभ में इसे **एडवर्ड म्यूज़ियम** के नाम से जाना जाता था। बाद में, सन् 1964 में मध्य प्रदेश शासन ने इस संग्रहालय को अपने अधीन ले लिया और तब से यह **स्टेट म्यूज़ियम** के नाम से प्रसिद्ध है। यह संग्रहालय प्रदेश की कला, संस्कृति और ऐतिहासिक धरोहरों के संरक्षण का महत्वपूर्ण केंद्र है।
- **केन्द्रीय पुरातत्व संग्रहालय, इंदौर** : इस संग्रहालय की स्थापना सन् **1931** में की गई थी। यहाँ पर ईसा से लगभग **5000 वर्ष पूर्व** के हस्तनिर्मित औजार जैसे — कुठार, लीवर, स्क्रेपर, भाला, हँसिया आदि सुरक्षित रखे गए हैं।यह संग्रहालय प्राचीन इतिहास और मानव सभ्यता की झलक प्रस्तुत करता है। इसमें **2500 से अधिक प्राचीन सिक्कों** का संग्रह भी मौजूद है,
- **शासकीय संग्रहालय धुबेला** : धुबेला संग्रहालय की स्थापना सन् 1955 में मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले के **धुबेला ग्राम** में की गई थी। इस संग्रहालय में क्षेत्रीय इतिहास से जुड़ी हुई अनेक कृतियाँ संग्रहीत हैं। यहाँ विभिन्न महाराजाओं से संबंधित आभूषण, वस्त्र तथा अस्त्र-शस्त्र भी प्रदर्शित किए गये हैं।



- **इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय भोपाल** : इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय की स्थापना सन् 1985 में मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल के श्यामला हिल्स क्षेत्र में की गई। यह संग्रहालय लगभग **235 एकड़** भूमि में फैला हुआ है। यह संग्रहालय भारत में मानव सभ्यता के विकास की कहानी को चित्रों, मॉडलों, लोककलाओं और जीवन शैली से जुड़ी वस्तुओं के माध्यम से दर्शाने वाला **देश का सबसे बड़ा मानव संग्रहालय** माना जाता है। यहाँ विशेष रूप से **जनजातीय समाज के विकास**, उनकी **लोककलाओं**, **परंपरागत भवनों**, **जीवन पद्धतियों** तथा सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करने के लिए कई **स्थायी और अस्थायी प्रदर्शनियाँ** लगाई जाती हैं। साथ ही, विभिन्न जनजातियों के **नमूनार्थ घर** भी बनाए गए हैं,
- **जिला संग्रहालय शिवपुरी** : इस स्थल की स्थापना सन् **1930** में हुई थी। बाद में, सन् **1962** में मध्य प्रदेश शासन ने इसे अधिगृहीत कर लिया। यहाँ लगभग **880 प्रतिमाएँ** संरक्षित हैं।
- **शासकीय जिला पुरातत्व संग्रहालय विदिशा** : विदिशा में इस संग्रहालय की स्थापना 1940 में हुई। सन् 1962 में मध्यप्रदेश सरकार ने इसे अधिग्रहित कर लिया। यहाँ पर जैन तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ काफी रुचिकर हैं यहाँ पर 133 प्रतिमाएँ व सिक्कों का अच्छा संग्रह है।
- पुरातत्व संग्रहालय साँची, रायसेन
- पुरातत्व संग्रहालय, छतरपुर
- केन्द्रीय पुरातत्व संग्रहालय, ग्वालियर
- रीवा महाराजा संग्रहालय वेंकट भवन, रीवा
- सिंधिया संग्रहालय, ग्वालियर
- बिरला म्यूज़ियम, भोपाल
- माधवराव सप्रे पत्रकारिता संग्रहालय, भोपाल
- दूरसंचार संग्रहालय, भोपाल

EXERCISE – 20

1. मध्य प्रदेश तुलसी अकादमी का गठन किस वर्ष किया गया था? [MP Police Constable 2022, MPPEB Police Constable 2022]

(a) 1980 (c) 1987
(b) 1983 (d) 1991

2. मध्य प्रदेश के ..... में सिंहस्थ आयोजित किया जाता है। [MPPEB Police Constable 2022]

(a) चित्रकूट
(b) ओंकारेश्वर
(c) उज्जैन
(d) ओरछा

3. मध्य प्रदेश के निम्नलिखित में से किस जिले में रामलीला का मेला लगता है? [MPPEB Police Constable 2022]

(a) भोपाल
(b) ग्वालियर
(c) कटनी
(d) खंडवा

4. मध्य प्रदेश के किस जिले में अधिकतम मेले और त्योहार आयोजित किए जाते हैं ? [MP Group-2 (Sub-Group-4) 2017, MP High School TET (Political S.) 2019]

(a) उज्जैन
(b) शाजापुर
(c) होशंगाबाद
(d) गुना

5. मध्य प्रदेश के निम्नलिखित जिले में से कौन सा 'गोटमार मेला' के लिए प्रसिद्ध है? [PEB ANM 2018]

(a) अलीराजपुर
(b) बेतुल
(c) खरगोन
(d) छिंदवाड़ा

6. रीवा में महामृत्युंजय मेला आयोजित किया जाता है? [M.P. SI 2017, MP VYAPAM Sub Engineer 2017]

(a) प्रति 2 वर्ष में
(b) प्रति 3 वर्ष में
(c) प्रति वर्ष में
(d) प्रति 5 वर्ष में

7. कोरबा जनजाति की पंचायत को कहते है [MP Dairy Federation Exam 2016]

(a) मैयारी (c) रोकरी
(b) मैक्स (d) रासा

8. पंडित कुमार गंधर्व समारोह ..... में आयोजित किया जाता है। [MP High School TET (SOCIOLOGY) 2019]

(a) देवास
(b) इंदौर
(c) घर
(d) महेश्वर

9. मालवा उत्सव 2017 ____ में आयोजित किया गया था [PEB Patwari Exam. 2018]

(a) इंदौर
(b) भोपाल
(c) खंडवा
(d) खजुराहो

10. मध्य प्रदेश तुलसी अकादमी का गठन किस वर्ष किया गया था? [MP Police Constable 2022, MP Police Constable 2022, MPPEB-Police Constable 2022]

(a) 1980 (c) 1987
(b) 1983 (d) 1991

11. कालू जी महाराज का मेला, मध्य प्रदेश के किस जिले में आयोजित होता है? [MPPSC Principal Assistant Director (Technical) Exam 2023]

(a) खरगौन (c) बालाघाट
(b) बैतूल (d) दमोह

12. मांधाता का मेला, मध्य प्रदेश में कहाँ आयोजित किया जाता है? [MP Forest Service (Main) 2022]

(a) रहली
(b) अमरकण्टक
(c) चन्देरी
(d) खण्डवा

13. 'खजुराहो नृत्य महोत्सव' की शुरुआत किस वर्ष में हुई? [MPPSC Assistant Professor (Music) 2024]

(a) 1975 (c) 1778
(b) 1977 (d) 1980

1. (c), 2. (c), 3. (b), 4. (a), 5. (d), 6. (c), 7. (a), 8. (a), 9. (c), 10. (a), 11. (d), 12. (a)

Chapter 21

मध्यप्रदेश के प्रमुख चित्रकार, लोकचित्र परंपरा

21.1 चित्रकार

- **विष्णु चिंचोलकर** : जन्म सन् **1917** में मध्य प्रदेश के देवास के पास एक गाँव में हुआ था। उन्होंने **इंदौर स्कूल ऑफ आर्ट्स** से विधिवत चित्रकला की शिक्षा प्राप्त की। श्री चिंचोलकर को प्रसिद्ध चित्रकार **श्री देवलालीकर** का मार्गदर्शन भी मिला, जिससे उनकी कला को एक नई दिशा मिली। वे मध्य प्रदेश के शीर्ष चित्रकारों में गिने जाते हैं। उन्हें विशेष रूप से **लैंडस्केप** और **पोर्ट्रेट** चित्रों के निर्माण में दक्ष माना जाता है। विष्णु चिंचोलकर ने चित्रकला के क्षेत्र में कई **नवीन प्रयोग** किए। उन्होंने पारंपरिक साधनों के साथ-साथ **पेड़ की शाखाओं, पत्तियों, बाँस के टुकड़ों, पत्थर के टुकड़ों** तथा **आम की गुठलियों** का भी कलात्मक उपयोग किया और सुंदर कलाकृतियाँ तैयार कीं।
  कुछ समय उन्होंने चित्रकार **माइकल ब्राउन** के साथ भी कार्य किया। सन् **1960** में उन्होंने कलाकारों का एक समूह **"ग्रुप फ्राइडे"** के नाम से स्थापित किया, जिसका उद्देश्य नवोदित कलाकारों को मंच देना और कला के क्षेत्र में नवाचार को बढ़ावा देना था।

- **सैयद हैदर रजा** : श्री हैदर रज़ा का जन्म सन् 1922 में मध्य प्रदेश के नरसिंहपुर ज़िले के बाबरिया ग्राम में हुआ था। सन् 1939 में उन्होंने दमोह से मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की। इसी समय उन्होंने **रामायण** और **गीता** का अध्ययन भी किया। उसी वर्ष वे नागपुर के कला विद्यालय में प्रवेशित हुए। इसके पश्चात उन्होंने मुंबई के **जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट्स** से भी कला की शिक्षा प्राप्त की। सन् 1950 में उन्हें फ्रांस सरकार की ओर से एक छात्रवृत्ति प्राप्त हुई। अपने चित्रों की शुरुआत में उन्होंने प्राकृतिक दृश्यों का चित्रण किया, लेकिन धीरे-धीरे उन्होंने अपने आंतरिक भावों को कैनवास पर उकेरना प्रारंभ किया।



उनकी कला में **पूर्व और पश्चिम** की भावनाओं का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। गहरे मखमली रंगों का **ध्वन्यात्मक प्रभाव** उनकी चित्रकला की प्रमुख विशेषता है। वे चटकदार और समृद्ध रंग योजना का सुंदर प्रयोग करते थे। उनके प्रमुख चित्रों में — **अटल-शून्य की अनन्तता**, **बिन्दु**, **अनसुनी आवाज**, **माँ**, **राजस्थान**, **सफेद फूल**, **फर्टिलिटी**, **नाग अंकुरण**, **स्पंदन** आदि शामिल हैं। सन् 1956 में उन्हें *Pro de la Critique* पुरस्कार प्राप्त हुआ। यह पुरस्कार पाने वाले वे एकमात्र **गैर-फ्रांसीसी** कलाकार थे। सन् 1959 में उन्होंने फ्रांस की कलाकार **जॉनी मेंजिला** से विवाह किया और स्थायी रूप से फ्रांस में रहने लगे। उनकी गणना प्रथम पंक्ति के फ्रांसीसी कलाकारों में की जाती है। वे अमेरिका के **कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय (बर्कले परिसर)** के कला विभाग में अतिथि प्रवक्ता भी रहे। श्री रज़ा ने भारत और पेरिस के अतिरिक्त अमेरिका, जर्मनी, इटली, स्विट्ज़रलैंड और फ्रांस के अनेक नगरों में अपने चित्रों की प्रदर्शनियाँ आयोजित कीं।

भारत सरकार ने सन् 1981 में उन्हें **पद्मश्री** से सम्मानित किया। इसके बाद, सन् 1983 में **ललितकला अकादमी** ने उन्हें **फैलो** चुना। सन् 1992 में मध्य प्रदेश सरकार ने उन्हें **कालिदास सम्मान** प्रदान किया।

- **देवयानी कृष्ण** : देवयानी का जन्म इंदौर में हुआ। उनकी प्रारंभिक शिक्षा श्री देवलालीकर से हुई। सन् 1940 में उन्होंने **जे. जे. स्कूल ऑफ आर्ट्स** से डिप्लोमा प्राप्त किया। सन् 1942 में उन्होंने अपने पति के साथ एक **संयुक्त चित्र प्रदर्शनी** बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में आयोजित की। देवयानी ने तिब्बत की प्रकृति और जनजीवन पर आधारित सुंदर चित्र बनाए, जिन्हें लोगों ने खूब सराहा।



सन् 1946 में उन्हें **अंतर्राष्ट्रीय चित्र प्रदर्शनी** में **प्रथम पुरस्कार** प्राप्त हुआ, जो उनकी कला प्रतिभा का बड़ा प्रमाण माना गया। इसके बाद उन्होंने अपने पति के साथ नार्वे, स्टॉकहोम, चेकोस्लोवाकिया, रोमानिया, हंगरी, स्वीडन, डेनमार्क, नीदरलैंड, जर्मनी, इटली और मियामी जैसे देशों में **एकल चित्र**

प्रदर्शनियाँ आयोजित कीं। देवयानी चित्रकार होने के साथ-साथ **खिलौने भी बनाती थीं**, और यही कारण है कि उनके चित्रों में खिलौनों का प्रभाव साफ दिखायी देता है।

- **नारायण श्रीधर बेन्द्रे** : श्री बेन्द्रे का जन्म सन् 1910 में इंदौर में हुआ। उन्होंने स्नातक की पढ़ाई आगरा से पूरी की। चित्रकला के क्षेत्र में उन्हें प्रारंभिक मार्गदर्शन प्रसिद्ध चित्रकार देवलालीकर जी से प्राप्त हुआ। इसके पश्चात उन्होंने इंदौर के कला शिक्षा संस्थान में भी अध्ययन किया। सन् 1934 में श्री बेन्द्रे ने मुंबई स्थित जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट्स से डिप्लोमा प्राप्त किया। तत्पश्चात वे तीन वर्षों तक कश्मीर सरकार के विजिटर्स ब्यूरो में *कलाकार पत्रकार* के रूप में कार्यरत रहे। इसके बाद वे शांतिनिकेतन में *अतिथि कलाकार* के रूप में भी जुड़े रहे। चित्रकला के गहन अध्ययन के लिए उन्होंने अमेरिका, इंग्लैंड, फ्रांस और हालैंड की यात्रा की। न्यूयॉर्क में उन्होंने प्रसिद्ध कलाकार **अरमिन लेनडेक** से विधिवत कला की तकनीक सीखी।

  श्री बेन्द्रे ने लगभग सभी चित्रकला माध्यमों में कार्य किया, परंतु तैलचित्रों में उनकी विशेष रुचि रही। उनके तैलचित्रों में जलरंगों जैसी स्फूर्ति और ओजस्विता दिखाई देती है। उन्होंने काले रंग का प्रयोग अत्यंत संतुलित और प्रभावशाली ढंग से किया। अपने जीवनकाल में श्री बेन्द्रे को लगभग **30 पुरस्कार** प्राप्त हुए। सन् 1969 में भारत सरकार ने उन्हें **पद्मश्री** की उपाधि से सम्मानित किया।

- **मकबूल फिदा हुसैन** : श्री मक़बूल फिदा हुसैन का जन्म सन् 1916 में महाराष्ट्र के शोलापुर जिले के पंढरपुर नामक ग्राम में हुआ था। उनका जीवन अत्यंत संघर्षपूर्ण रहा। उन्होंने अपने जीवन का अधिकांश समय इंदौर में बिताया। इंदौर में ही उन्होंने प्रसिद्ध चित्रकार देवलालीकर से चित्रकला की शिक्षा प्राप्त की। इसके बाद वे मुंबई चले गये और वहाँ फिल्मों के लिए होर्डिंग बनाने का कार्य करने लगे। हालाँकि वे व्यावसायिक जीवन में सक्रिय रहे, फिर भी उन्होंने स्वयं को सदा चित्रकला की मुख्य धारा से जोड़े रखा।सन् 1950 में उनके चित्रों की पहली एकल प्रदर्शनी आयोजित की गई, जिसने उन्हें ख्याति दिलाई।

  हुसैन साहब के संपूर्ण चित्रकला जीवन का केंद्र बिंदु **भारतीय स्त्री** रही है, जिसमें उन्होंने करुणा, प्रेम और सौंदर्य को चित्रित किया। उन्होंने अनेक सुंदर **पोर्ट्रेट** (रूप-चित्र) और **दृश्य-चित्र** बनाए हैं। वे **घोड़ों** को रेखांकित करने वाले एक प्रख्यात कलाकार के रूप में जाने जाते हैं। घोड़े और **गणेश** उनके प्रिय चित्र-विषयों में शामिल रहे हैं। उन्होंने **"गजगामिनी"** नाम से चित्रों की एक श्रृंखला भी प्रकाशित की और इसी नाम से एक फिल्म का निर्माण भी किया। श्री हुसैन को एक **मनमौजी कलाकार** के रूप में जाना जाता है। वे किसी एक शैली में बंधे नहीं थे, बल्कि नितांत निजी और स्वतंत्र ढंग से कार्य करते थे। उनकी कला प्रतिभा को **पद्मश्री**, **पद्मभूषण**, **कालिदास सम्मान** सहित कई विशिष्ट राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सम्मानों से सम्मानित किया गया है। उनकी चित्रकला की प्रदर्शनियाँ **चीन**, **अमेरिका**, **ईराक** और **यूरोप के विभिन्न देशों** में लग चुकी हैं। हाल ही में वे अपने कुछ चित्रों के कारण चर्चा में भी रहे। उन्होंने **हैदराबाद** में नए कलाकारों को प्रशिक्षित करने के लिए एक संस्था की स्थापना भी की है।

- **देवकृष्ण जयशंकर जोशी** : श्री जोशी का जन्म सन् 1911 में मध्य प्रदेश के महेश्वर नगर में हुआ था। उन्होंने अपनी कला की शिक्षा इंदौर कला विद्यालय में प्रसिद्ध चित्रकार **देवलालीकर** से प्राप्त की। श्री जोशी प्रभाववादी चित्रकला शैली के एक बेजोड़ सर्जक माने जाते हैं। उन्होंने अपने जीवनकाल में लगभग तीन हजार चित्रों और मूर्तियों का निर्माण किया। उनकी प्रमुख कलाकृतियों में **चूड़ियाँ खरीदती दुल्हन**, **लाल पगड़ी**, **साप्ताहिक बाजार**, और **गौरी त्यौहार** विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। सन् 1984 में उनका देहांत हो गया, परंतु उनकी कलाकृतियाँ आज भी कई शासकीय एवं निजी संग्रहालयों में सुरक्षित हैं और दर्शकों को आकर्षित करती हैं।

- **लक्ष्मी शंकर राजपूत** : श्री राजपूत का जन्म सन् 1919 में मध्य प्रदेश के इंदौर शहर में हुआ था। उन्होंने प्रारंभिक कला शिक्षा इंदौर में ही **श्री देवलालीकर** से प्राप्त की, तथा आगे की शिक्षा बंबई (अब मुंबई) के **जे. जे. स्कूल ऑफ आर्ट्स** से प्राप्त की। अपने कला-जीवन की शुरुआत में श्री राजपूत ने **अकादमिक शैली** में चित्र बनाना आरंभ किया, लेकिन बाद में उन्होंने **प्रभाववादी (इंप्रेशनिस्ट) शैली** को अपना लिया। उनका प्रसिद्ध चित्र "**वर्षा आगमन**" न केवल अत्यंत सुंदर है, बल्कि इसके लिए उन्हें **बरदा उकील पुरस्कार** भी प्रदान किया गया था। इसके अतिरिक्त, **मध्य प्रदेश की झाँकी** पर भी उन्हें पुरस्कार प्राप्त हुआ, जो उनके कलात्मक योगदान का प्रमाण है।

21.2 लोक चित्रकला

- **बुंदेली लोकचित्र परंपरा** : बुंदेलखंड में लोकचित्र परंपरा की अपनी एक विशिष्ट पहचान है। यहाँ पर्व-त्यौहारों के अवसर पर बुंदेली महिलाएँ उनसे संबंधित चित्रों का रेखांकन करती हैं और साथ ही उनकी पूजा व कथा भी सुनाती हैं। इस क्षेत्र में वर्ष भर कोई-न-कोई चित्र बनाने की परंपरा प्रचलित है। यह परंपरा बुंदेलखंड की सांस्कृतिक जीवनधारा से गहराई से जुड़ी हुई है और ग्रामीण समाज की धार्मिक आस्था तथा कलात्मक अभिव्यक्ति का प्रतीक मानी जाती है।
  - सुरती : **सुरैती** बुंदेलखंड की पारंपरिक भित्तिचित्र कला है, जिसे विशेष रूप से **दीपावली** के अवसर पर **लक्ष्मी पूजा** के समय बुंदेली महिलाएँ अपने घरों की दीवारों पर बनाती हैं। इस कला में **सुरैती** का जालीनुमा रेखांकन किया जाता है, जो बुंदेली महिलाओं की **कल्पनाशीलता** और **कलात्मकता** का सुंदर उदाहरण होता है। इस चित्र में **देवी लक्ष्मी** की आकृति उकेरी जाती है, और साथ ही **भगवान विष्णु** का भी आलेखन किया जाता है। सुरैती का रेखांकन पारंपरिक रूप से **गेरू** (लाल मिट्टी) से किया जाता है। पूजन के पश्चात् **लक्ष्मी जी की कथा** सुनायी जाती है। **सुरैती**, लोकप्रिय लोककला की दृष्टि से, बुंदेलखंड की सांस्कृतिक पहचान का एक सुंदर और श्रेष्ठ प्रतीक माना जाता है।
  - नौरता : नवरात्रि के अवसर पर गोंड जनजाति की कुंवारी कन्याओं द्वारा एक विशेष प्रकार की भित्ति चित्रकला बनायी जाती है, जिसे **भित्ति उद्रेखण चित्र** कहा जाता है। यह चित्र मिट्टी, गेरू, हल्दी और छुई जैसे प्राकृतिक रंगों और तत्वों से तैयार किया जाता है। चित्र बनाते समय लड़कियाँ पारंपरिक **सुअटा** संबंधी गीत गाती हैं, जो इस सांस्कृतिक प्रक्रिया को और भी आनंदमय बना देता है। इसके साथ ही, **मामुलिया** गोबर से बनायी जाने वाली पारंपरिक लोक कला का एक सुंदर उदाहरण है।
  - मोरते : मोरते एक प्रकार का **विवाह भित्ति रेखांकन** (दीवार पर बनाया जाने वाला चित्र) होता है, जिसे विवाह के समय घर की दीवारों पर सजाया जाता है। यह रेखांकन आमतौर पर किसी दरवाज़े के दोनों ओर की दीवारों पर बनाया जाता है।
    इस रेखांकन में **पुतरी की आकृति** (स्त्री की आकृति) प्रमुख होती है। इसी स्थान पर विवाह समारोह के दौरान **दूल्हा और दुल्हन हल्दी के थापे** (हाथ से हल्दी के निशान) लगाते हैं। यह परंपरा शुभता और मांगलिकता का प्रतीक मानी जाती है।
  - गोदन गोवर्धन : गोवर्धन दिवाली के दूसरे दिन मनाया जाता है। इस दिन **गोबर से गोवर्धन बनाये जाते हैं** और उनकी पूजा की जाती है। यह पर्व ग्रामीण संस्कृति में विशेष महत्व रखता है।



  - भाई दूज के दिन भी गोबर का उपयोग होता है। इस अवसर पर **गोबर से दो पुतलियाँ बनाई जाती हैं**, जिनकी पारंपरिक रूप से पूजा की जाती है। ये पुतलियाँ भाई-बहन के रिश्ते और सांस्कृतिक आस्था का प्रतीक मानी जाती हैं।
  - मोरइला : "मोरइला" का अर्थ मोर के चित्रों से जुड़ा हुआ है। इसे **मोर-मुरैला** भी कहा जाता है। इसका संबंध **भित्ति अलंकरण** (दीवार सजावट) से है। इस कला में सबसे पहले दीवारों को साफ करके उस पर **छुट्टी मिट्टी** (एक प्रकार की लेप वाली मिट्टी) से पोता जाता है। इसके बाद, पतली गीली मिट्टी से मोरों की जोड़ी की आकृतियाँ बनाई जाती हैं। जब यह आकृतियाँ सूख जाती हैं, तो उन्हें **गेरू**, **नील**, **खड़िया** आदि प्राकृतिक रंगों से रंगा जाता है।

- **निमाड़ की लोक चित्रकला** : निमाड़ अंचल में चित्र कला की परंपरा सदियों से चली आ रही है। घर की दीवारों पर कुछ न कुछ रेखांकन अवश्य मिलता हैं। जो परंपरा से बनते मिटते चले आ रहे हैं। पूरे वर्ष पर्व-तिथि त्यौहारों से संबंधित भित्तिचित्रों से संबंधित भित्तिचित्रों का रेखांकन पूजा, प्रतिष्ठान, चर्चा या उनसे संबंधित लोकगीत, कथाएँ, वार्ताएँ चलती ही रहती हैं। हरियाली अमावस्या की जिरोती, नागपंचमी को नाग भित्ति चित्र, कुँआर मास में सांजाफुली, नवरात्रि में नवरत, दशहरे के दिन दशहरे का चित्रण, सेली सप्तमी पर हाथ (थापा), दिवाली पड़वा पर गोवर्धन, दिवाली दूज पर भाईदूज का भित्तिचित्र, दीवाली पर ही व्यापारियों द्वारा शुभ मुहूर्त लक्ष्मीपूजा में गणपति और सरस्वती का हल्दी कुंकुम से रेखांकन, देवप्रबोधिनी ग्यारस पर खोपड़ी पूजन, विवाह में **कुलदेवी का भित्तिचित्र ईरत**, दरवाजों पर सती, मुख्य द्वार पर गणपति पाना, दूल्हा दुल्हन के हाथों में मेंहदी माँडना, दूल्हा-दूल्हन के मस्तक पर



कंचाली भरना, पहले **शिशु जन्म पर पगल्या** का शुभ संदेश रेखांकन, साँतिया, चौक, कलस आदि मेलों-बाजारों में विभिन्न गुदना आकृतियो का रेखांकन निमाड़ की अजस्र लोकचित्र परंपरा है।

भूमि अलंकरण के रूप में **मांडना** सर्वथा एक स्वतंत्र और पूर्ण कला विधा है। दीपावली पर मांडणा घर आँगन, लक्ष्मी पूजा की जगह विशेष रूप से बनाये जाते हैं। मांडणा की कलाकर घर की महिलाएँ होती हैं। मांडणा के दो मूल मिट्टी रंग आदिम काल से प्रचलित हैं - एक गेरू तथा दूसरा खड़िया।

▶ **मालवा की लोकचित्र कला** : मालवा क्षेत्र में लोकचित्रों की दो प्रमुख परंपराएँ पायी जाती हैं। पहली परंपरा वह है, जिसमें पर्व-त्योहारों के अवसर पर घर की महिलाएँ व्रत और अनुष्ठानों के साथ घर की दीवारों पर चित्र बनाती हैं। वे गेरू, खड़िया और चावल के आटे को घोलकर इन चित्रों को बनाती हैं। दूसरी परंपरा पेशेवर चित्रकारों द्वारा निभायी जाती है। ऐसी चित्रकला को "**चित्रावण**" कहा जाता है। चित्रावण मुख्य रूप से घर की बाहरी भित्तियों अथवा मंदिरों के अहातों में बनाया जाता है। मालवा के भित्तिचित्रों की एक समृद्ध परंपरा है। **दिवासा, नाग, भेरू जी, सरवण जन्माष्टमी, संजा, मायमाता** आदि चित्रकला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इनमें से *संजा* एक विशेष पर्व है, जिसे मालवा की किशोरियाँ श्राद्ध पक्ष में पूरे सोलह दिनों तक मनाती हैं।



किशोरियाँ प्रतिदिन गोबर, फूल-पत्तियाँ अथवा चमकीली पत्तियों से संजा की पारंपरिक आकृतियाँ बनाती हैं। अंतिम दिन एक सुंदर **किला (कोट)** बनाया जाता है। शाम को वे संजा की आरती उतारती हैं और समूह में गीत गाती हैं। चित्रावण बनाने वाले कलाकार एक विशेष जाति से होते हैं। इन्हें विवाह जैसे शुभ अवसरों पर घर की बाहरी दीवारों पर विश्रावण (सजावट) करने के लिए आमंत्रित किया जाता है। इन्हें नेग (दक्षिणा) और सम्मान के साथ बुलाया जाता है। चित्रावण कलाकार अपनी चित्रकला में बनी आँखों की संख्या के आधार पर पारिश्रमिक तय करते हैं। इसके अतिरिक्त नेग अलग से दिया जाता है। वे **मंगल कलश**, **मुख्य द्वार की सज्जा**, **कलश लिए महिलाएँ**, **बग्गी में दूल्हा-दुल्हन**, **हाथी पर बारात**, **घुड़सवार**, **पालकी**, **बेलबूटे**, **पशु-पक्षी**, **ब्याही-व्यायण**, तथा **गणेश**, **शंकर-पार्वती** जैसे देवी-देवताओं के रंगीन चित्र दीवारों पर उकेरते हैं। मंदिरों में देवी-देवताओं से जुड़े चित्रों की प्रधानता होती है। चित्रावण में मिट्टी से बने चटख रंगों का उपयोग किया जाता है। इन कलाकारों की विशेषता यह होती है कि वे बिना स्केच के सीधे दीवार पर चित्र बना देते हैं। **उज्जैन के श्री धूलजी महाराज** चित्रावण शैली के सबसे वरिष्ठ और प्रतिष्ठित चित्रकार माने जाते हैं। उनके बनाए चित्र *भारत भवन*, *मानव संग्रहालय*, *मध्यप्रदेश आदिवासी लोककला परिषद*, *भोपाल हस्तशिल्प*, *दिल्ली*, तथा विदेशों तक में संकलित और प्रदर्शित किए गए हैं।

▶ **नाग भित्तिचित्र** : नागपंचमी के दिन बघेली समाज की महिलाएँ घर की भीतरी दीवार पर गेरू या गोबर के घोल से **दूध पीते हुए नाग-नागिन के जोड़े** का चित्र बनाती हैं। इसके बाद वे श्रद्धा से उनकी पूजा करती हैं। यह परंपरा सांपों के प्रति सम्मान और प्रकृति के साथ संतुलन बनाए रखने की भावना को दर्शाती है।

भूमि चित्रों में कोंडर और चौक है। छापा अथवा छापे भी विभिन्न अवसरों पर भीतों पर लगाये जाते हैं। इसी तरह वधू मण्डप में बरायन, दहेंगरा, अगरोहन सजाने की कला भी है।

❖ **मध्यप्रदेश : लोकचित्र कला**

लोकचित्र कला	अंचल	विशेषता
सुरैती	बुंदलेखण्ड	दीपावली में लक्ष्मी पूजा के समय बनाया जाने वाला भित्ति चित्र
नौरता/नवरत	बुंदलेखण्ड निमाड़	नवरात्रि में मिट्टी, गेरू, हल्दी से कुँवारी कन्याओं द्वारा बनाया जाने वाला भित्तिचित्र
मामुलिया	बुंदलेखण्ड	नवरात्रि में गोबर से कुँवारी कन्याओं द्वारा बनाया जाने वाला भित्ति चित्र
मोरते	बुंदलेखण्ड	विवाह के समय मुख्य दरवाजे पर पुतरी का भिति चित्र
गोदन गोवर्धन	सम्पूर्ण मध्यप्रदेश	दीपावली पड़वा पर गोबर से बनाए जाते हैं।
मोरइला (मोर मुरैला)	बुंदलेखण्ड बघेलखण्ड	दीवारों पर विभिन्न रंगों से मोर भित्ति चित्र बनाए जाते हैं।

नाग भित्ति चित्र	सम्पूर्ण मध्यप्रदेश	नागपञ्चमी पर दीवारों पर गेरू से नाग-नागिन का भित्ति चित्र
बरायन/दहेंगरा/अगरोहन	बुंदलेखण्ड बघेलखण्ड	वधू मण्डप में विवाह के अवसर पर बनाए जाते हैं।
मांडना	मालवा, निमाड़	भूमि अलंकरण के रूप में मांडना को त्यौहारों, विशेष रूप से दीपावली के समय घर आँगन में बनाया जाता है।
चित्रावण	मालवा	विवाह के समय घर की मुख्य दीवार पर बनाया जाने वाला भित्ति चित्र
गुदना/मेहँदी	सम्पूर्ण मध्यप्रदेश	हाथ, पैर एवं शरीर के विभिन्न हिस्सों में गुदना गुदवाया जाता है।
कोहबर	बघेलखण्ड	वैवाहिक, आनुष्ठानिक भित्तिचित्र हैं।
तिलंगा	बघेलखण्ड	कोयले में तिल्ली के तेल को मिलाकर तिलंगा का भित्ति चित्र बनाया जाता है।
छठी चित्र	बघेलखण्ड	शिशु जन्म के छटवें दिन छठी माता का गेरू से भित्ति चित्र बनाया जाता है।
नेऊरा नमे	बघेलखण्ड	भादो माह की नवमी को सुहागिन महिलाएँ पारम्परिक भित्ति चित्र बनाकर पूजा करती हैं।
जिरोती	निमाड़	हरियाली अमावस्या को भित्ति चित्र बनाया जाता है।
सांजाफुली	सम्पूर्ण मध्यप्रदेश	क्वार मास में कुँवारी लड़कियों द्वारा बनाया गया भित्ति चित्र
थापा	निमाड़	सेली सप्तमी पर हाथ का थापा लगाया जाता है।
खोपड़ी पूजन	निमाड़	देव प्रबोधिनी ग्यारस को खोपड़ी पूजन किया जाता है।
ईरत	निमाड़	विवाह में कुलदेवी का भित्ति चित्र बनाकर पूजा की जाती है।
पगल्या	निमाड़	पहले शिशु जन्म पर शुभ संदेश का रेखांकन किया जाता है।
कंचाली भरना	निमाड़	विवाह के अवसर पर दूल्हा-दुल्हन के मस्तक पर कँचाली भरी जाती है।

EXERCISE – 21

1. मध्यप्रदेश में प्रतिवर्ष निमाड़ उत्सव कहाँ आयोजित किया जाता है। [MPPSC Civil/Forest (Prelim) 2014]

(a) खजुराहो (c) ओंकारेश्वर
(b) महेश्वर (d) माण्डू

2. कौन सा संगठन मध्य प्रदेश में जनजातीय कला और सांस्कृतिक परंपराओं का सर्वेक्षण और दस्तावेज (डाक्यूमेंट्स) आयोजित करता है? [MPPSC Assistant Quality Controller & Other Equivalent Posts 2018]

(a) कला परिषद (c) भारत भवन
(b) लोक कला परिषद (d) कालिदास अकादमी

3. भोपाल में कला परिषद किस साल स्थापित हुई थी । [MPPSC Assistant Quality Controller & Other Equivalent Posts 2018]

(a) 1952 (c) 1953
(b) 1950 (d) 1951

4. खजुराहो में प्रत्येक वर्ष लोकरंजन नामक राष्ट्रीय त्यौहार आयोजित होता है, जिसका सम्बन्ध निम्नलिखित में से किसके साथ है। [MP Patwari 2018, MP PEB Plant Assistant Electrical 2019]

(a) शास्त्रीय नृत्य (c) लोक नृत्य और कला
(b) शास्त्रीय संगीत (d) हिन्दी फिल्म

5. निम्नलिखित में से कौन मध्यप्रदेश के प्रमुख चित्रकार नहीं है। [MPPSC Civil Prelims 2022]

(a) नारायण श्रीधर बेन्द्रे (c) नाना साहेब पेनसे
(b) विष्णु चिंचालकर (d) अमृतलाल बेगड़

6. मध्य प्रदेश के _____ नाखून कला एवं नाखून पेंटिंग के लिए प्रसिद्ध है एवं इसी में उन्हें पेटेन्ट प्राप्त है। [MP Patwari 2017, Primary School Teacher Test 2020]

(a) वाजिद खान (c) राजा रवि वर्मा
(b) एम.एफ. हुसैन (d) सतीश गुजराल

7. भोपाल में कला परिषद किस साल स्थापित हुई थी ? [MP Group-2 - 2018, MP VYAPAM Draftsman Civil Surveyor 2018]

(a) 1952 (c) 1953
(b) 1950 (d) 1951

Congratulations

To all our successful candidates in

MPPSC STATE FOREST SERVICE

Range Forest Officer (RFO) – 2023



Rank – 1

Arvind Ahirwar

Comprehensive Interview Guidance Programme + Test Series



Rank – 2

Pushpendra Singh Ahirwar

Comprehensive Forestry Course + CIGP



Rank – 3

Narendra Gunare

Test Series + Comprehensive Interview Guidance Programme



Rank – 4

Jitendra Kumar Verma

Comprehensive Forestry Course + CIGP



Rank – 5

Jaishrish Barethiya

Comprehensive Forestry Course + CIGP



Rank – 6

Bhavna Sehariya

Comprehensive Forestry Course + CIGP



Rank – 7

Pradeep Ahirwar

Comprehensive Forestry Course + CIGP



Rank – 8

Anil Kumar Gour

Comprehensive Forestry Course + CIGP



Rank – 9

Aakash Kumar Malviya

Comprehensive Forestry Course + CIGP



Rank - 11

Rajesh Kumar Jatav

Comprehensive Forestry Course + CIGP



Rank - 12

Veerendra Prajapati

Comprehensive Interview Guidance Programme + Test Series



Rank - 13

Dinesh Kumar

Test Series



Rank - 14

Niranjan Dehariya

Comprehensive Forestry Course + CIGP



Rank - 15

Abhinay Chouhan

Test Series



Rank - 18

Sher Singh Ahirwar

Comprehensive Forestry Course + CIGP



Rank - 19

Pradeep Jatav

Comprehensive Forestry Course + CIGP



Rank - 21

Amit Sisodiya

Comprehensive Interview Guidance Programme



Rank - 22

Abhishek Barodiya

Comprehensive Interview Guidance Programme



Rank - 24

Golu Goyal

Comprehensive Interview Guidance Programme + Test Series



Rank - 25

Pawan Raje

Comprehensive Interview Guidance Programme + Test Series

Range Forest Officer (RFO) – 2023



Ravi Kumar

Comprehensive Interview Guidance Programme + Test Series



Kuldeep Singh Baderiya

Comprehensive Interview Guidance Programme + Test Series



Rajesh Kumar Ahirwar

Comprehensive Interview Guidance Programme + Test Series



Arvind Singh Kaunshal

Comprehensive Forestry Course + CIGP



Nidhi Bhaskar

Test Series



Rakesh Malviya

Comprehensive Interview Guidance Programme + Test Series



Vishal Singh Karahaliya

Comprehensive Forestry Course + CIGP



Balendra Kumar

Comprehensive Interview Guidance Programme + Test Series



Vinod Kumar Mahra

Comprehensive Forestry Course + Test Series



Ashutosh Kakodiya

Comprehensive Forestry Course + CIGP



Aman Verma

Comprehensive Forestry Course + Test Series



Ekta Mehra

Comprehensive Interview Guidance Programme + Test Series



Prateek Sonkar

Comprehensive Forestry Course + Test Series



Kalpana Verma

Comprehensive Interview Guidance Programme



Ravindra Taigor

Comprehensive Forestry Course + CIGP



Nikunj Malviya

Comprehensive Forestry Course + CIGP



Vishal Bonder

Test Series



Vijay Kumar

Comprehensive Forestry Course + CIGP



Brajendra Kumar Ahirwar

Comprehensive Interview Guidance Programme + Test Series



Aman Ganer

Comprehensive Interview Guidance Programme + Test Series



Rohit Kumar Rai

Comprehensive Forestry Course + CIGP



Anoop Kaushal

Comprehensive Interview Guidance Programme



Suraj Ahirwar

Comprehensive Forestry Course + CIGP



Jitendra Kumar Verma

Comprehensive Forestry Course + Test Series

Range Forest Officer (RFO) – 2023



Rank - 58

Rajni Bagri

Comprehensive Interview Guidance Programme + Test Series



Rank - 59

Vikash Vasuniya

Comprehensive Forestry Course



Rank - 60

Nitin Kumar Kairana

Comprehensive Interview Guidance Programme + Test Series



Rank - 61

Rajkumar Parihar

Comprehensive Forestry Course + CIGP



Rank - 62

Pavan Rane

Comprehensive Forestry Course + CIGP



Rank - 63

Deepak Baghel

Comprehensive Forestry Course + CIGP



Rank - 65

Rumal Singh Alawe

Comprehensive Forestry Course + Test Series



Rank - 66

Ankit Jamle

Comprehensive Forestry Course + Test S. + CIGP



Rank - 67

Pitendra Kanesh

Comprehensive Forestry Course + CIGP



Rank - 69

Vinay Kumar Kumre

Comprehensive Interview Guidance Programme



Rank - 70

Vinod Chopra

Comprehensive Interview Guidance Programme + Test Series



Rank - 71

Gabbu Parmar

Comprehensive Forestry Course + Test Series



Rank - 73

Om Prakash Ninama

Comprehensive Interview Guidance Programme + Test Series



Rank - 74

Mahendra Pratap Gour

Comprehensive Forestry Course + CIGP



Rank - 75

Ajeet Damor

Comprehensive Interview Guidance Programme + Test Series



Rank - 76

Madhvi Bharati

Comprehensive Interview Guidance Programme + Test Series



Rank - 77

Ashish Chouhan

Comprehensive Forestry Course + CIGP



Rank - 78

Nilesh Tagore

Comprehensive Forestry Course + Test Series



Rank - 79

Ayush

Comprehensive Forestry Course + CIGP



Rank - 84

Pravin Chouhan

Comprehensive Forestry Course + CIGP



Rank - 85

Amit Dudwe

Test Series



Rank - 86

Gourav Sastiya

Comprehensive Interview Guidance Programme + Test Series



Rank - 87

Valsingh Kanesh

Comprehensive Forestry Course + CIGP



Rank - 88

Vineet Thakur

Comprehensive Forestry Course + Test Series

Range Forest Officer (RFO) – 2023



Brajpal Chouhan

Comprehensive Forestry Course + CIGP



Vijaysingh Solanki

Comprehensive Forestry Course



Prakash Markam

Comprehensive Interview Guidance Programme + Test Series



Yogesh Dhande

Comprehensive Interview Guidance Programme + Test Series



Sudhakar Prasad Panika

Comprehensive Interview Guidance Programme + Test Series



Pooja Parte

Comprehensive Forestry Course + CIGP



Jitendra Dhurve

Comprehensive Forestry Course + CIGP



Sudarshan Solanki

Comprehensive Forestry Course



Rohit Solanki

Comprehensive Forestry Course + Test Series



Sawan Chouhan

Comprehensive Forestry Course + CIGP



Devendra Dawar

Comprehensive Interview Guidance Programme + Test Series



Chandu Arve

Comprehensive Forestry Course + Test Series



Virendra Singh Waskel

Comprehensive Forestry Course + CIGP



Pratap Singh Rawat

Comprehensive Forestry Course + CIGP



Sharad Kant Bhalavi

Comprehensive Interview Guidance Programme



Rohit Uikey

Test Series



Sumer Bare

Comprehensive Forestry Course + Test S. + CIGP



Ajay Ashok Solanki

Comprehensive Interview Guidance Programme



Anjna Jamle

Comprehensive Forestry Course + CIGP



Amit Kumar Panika

Comprehensive Interview Guidance Programme + Test Series



Rakesh Kumar Uikey

CIGP



Suraj Waskel

CIGP



Eliman Mehta

Comprehensive Forestry Course



Omkarsingh Jamre

Comprehensive Forestry Course + Test S. + CIGP

MPPSC State Forest Service 2023



Rank - 120

Rajkumari Meravi

Test Series



Rank - 121

Narsingh Dudwe

Test Series + CIGP



Rank - 122

Aashish Brahmne

Test Series + CIGP



Rank - 123

Kirti Baiga

Test Series + CIGP



Rank - 124

Pooja Nigwal

Comprehensive Forestry Course + Test S. + CIGP



Rank - 125

Inder Singh Rawat

Test Series



Rank - 126

Parvesh Kumar Dhurve

Test Series

108 Out of 126 Total Selections in

Range Forest Officer (RFO) – 2023

Online / Offline Batches



Comprehensive syllabus coverage and detailed analysis of PYQs

- Both online / Offline batches
- 2 years of validity with unlimited access.

Study Material



- PYQs and syllabus-based
- Color printed
- Generous use of visual Graphics
- Align with the latest trends and requirements of the exam

Test Series



Personalized feedback with detailed solutions and suggestions for each candidate, ensuring targeted improvement and success in exams.

Leader In Forest Services



A premier institute specializing in forest service exams, including IFoS, ACF, RFO, and ICFRE / ICAR–(ASRB) ARS/NET Examinations.

HORNBILL INSTITUTE FORESTRY

Gwalior

Adarsh Colony, Gole ka Mandir, Morar, Gwalior (M.P.) 474005

+91 72239-70423; +91 78802-71423